राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम.ए.,डी.लिट्.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १००

राजस्थानी-वीर-गीत-संग्रह

द्वितीय भाग

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६८ ई०

वि० सं० २०२५ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९०

प्रधान - सम्पादकीय

प्रस्तुत ग्रन्थ राजस्थानी वीर-गीत-संग्रह का द्वितीय भाग है। इसको प्रकाशित करके प्रतिष्ठान राजस्थान के उन अगणित वीर सैनिकों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने में अपना द्वितीय कदम उठा रहा है। पहले भाग में कुल १८६ गीतों का सम्पादन हुआ था, अब १५२ गीतों की दूसरी खेप राजस्थान के उन साधारण सैनिकों के चरणों में समर्पित है जिन्होंने अपूर्व वीरता और अदम्य साहस को प्रदर्शित करते हुए युद्ध-स्थल में वीरगति प्राप्त की थी और जिनके बलिदान के बिना उनके सेनापतियों एवं राजाओं को विजय-श्री प्राप्त होना असम्भव था। इन गीतों की रचनाओं के लिए वे चारण कवि भी हमारी श्रद्धा के पात्र हैं कि जिन्होंने बड़े-बड़े सेनानायकों और राजाओं की प्रशस्तियों के बदले सामान्य वीरों की अमरकीर्ति को अपने काव्य का विषय बनाया। धन्य है वह वीरभूमि राजस्थान, जहाँ वीरता और बलिदान के असंख्य उदाहरण तथा उनको उपस्थित करने वाले इतने चारण कवि आज भी अपने यश-सौरभ को इस प्रकार के गीतों के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। भारत-भूमि को ऐसे वीरों तथा वीरगाथाकारों पर गर्व है, क्योंकि वे सचमुच उस उदात्त व्यक्तित्व का नमूना पेश करते हैं जो किसी भी राष्ट्र को गौरव प्रदान कर सकता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि इन गीतों से शुद्ध वीरता की प्रेरणा लेकर हमारे नवयुवक स्वदेश की सेवा और सुरक्षा के लिए अपना तन, मन, धन न्यौछावर करने के लिए कृत-संकल्प हों। ऐसा होने पर ही हमारे देश में उस सच्ची स्वतन्त्रता और राष्ट्रीयता का जन्म होगा जिसके आलोक में व्यक्तिगत तुच्छ स्वार्थों को राष्ट्रीय हितों के लिए बिना किसी हिचकिचाहट के त्याग किया जा सकेगा।

इस ग्रंथ का सम्पादन जिस रुचि, लगन और परिश्रम के साथ श्रीसौभाग्यसिंहजी शेखावत ने किया है उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। प्रत्येक गीत के साथ उसका सारांश तथा शब्दार्थ भी दिया गया है अतः यह ग्रंथ साधारण विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी बन गया है। आशा है विश्वविद्यालय तथा अन्य शिक्षा-संस्थायें अपने विद्यार्थियों में सेवा, त्याग और बलिदान की प्रेरणा भरने के लिए इसका उपयोग करेंगे और हमारा सुरक्षा-विभाग अपने वीर सैनिकों का हौंसला बुलंद करने के लिए इससे लाभ उठाएगा।

जयहिन्द, जयहिन्दी।

श्रावणी पूर्णिमा, सं० २०२५
जोधपुर

—फतहसिंह

विषय-सूची

भूमिका

राजस्थानी पद्य साहित्य में गीत छंद का महत्वपूर्ण स्थान है। राजस्थान के गौरवमय अतीत की लक्षाधिक गर्वीली घटनाएँ जिन्हें इतिहास, ख्यात और बात ने विस्मरण कर दिया वे गीतों में जीवित हैं। राजस्थान के विगत एक हजार वर्ष के इतिहास की कड़ियों को जोड़ने में गीतों के योगदान की उपेक्षा नहीं की जा सकती। राजस्थानी कवियों ने दोहा, सोरठा, गीत और कवित्त (छप्पय) के माध्यम से राजस्थानी संस्कृति का सवाक् चित्र अंकित किया है। दोहे और गीत का महत्व स्वीकार करते हुए कहा गया है —

गुणसागर दूहो धणी, गाह महेली सार।
गीत कवित प्रधानड़ा, बीजा पहरेदार।।

गीतों में गुणों का सागर दोहा राजा है, गाथा अन्तःपुर की शिरोमणि पट्टरानी है। गीत और कवित्त प्रधान मंत्री हैं और शेष अन्य छंद पहरेदार सैनिक हैं। उपर्युक्त कथन से छंदों में गीत का प्रधान स्थान निश्चित होता है। किन्तु राजस्थानी साहित्य के विशाल कोष का अवलोकन करने पर यह भली भाँति प्रकट हो जाता है कि दोहा, गाहा और कवित्त से गीतों का महत्व कहीं अधिक बढ़कर है। राजस्थानी कवियों को एक एक गीत पर ग्राम, जागीर, घोड़े, हाथी और लाख लाख रुपयों का पुरस्कार मिलना अन्य छंदों के स्थान पर गीत छंद का महत्व स्वतः ही प्रकट कर देते हैं। गीत की रचना, पाठशैली, साहित्यिक भाषा और ऐतिहासिक घटना-प्रसंगों के ताने-बाने के कारण सामान्य अशिक्षित समाज में दोहे से अधिक प्रसार नहीं हुआ किन्तु शिक्षित समाज में गीत की पूर्ण प्रतिष्ठा रही है। कीर्त्ति के स्थायित्व के लिए विशालकाय उत्तुंग राजप्रासादों, मंदिरों और धर्मशालाओं के स्थान पर गीतों को कहीं अधिक महत्व दिया गया है। यश के लिए 'कै गीतड़ा कै भींतड़ा' को चुनौती देते हुए कविश्रेष्ठ ईश्वरदास राठौड़ ने कहा है—

इम पूछै पाट पटंतर ईसर, मोजै सचूंप अत भला।
कळतै थकै दिहाड़ै कमधज, भींत भली कै गीत भला।।१।।
समवति कहै कलियाण समोभ्रम, नव सहसौ दाखै इम नोख।
भींतां तणा गोखड़ा भांजै, गीतां तणा न भांजै गोख।।२।।
छह गज कळी कांगरा छाजा, पड़ियां ढगल हुवै पाखांण।
भाखै कमध सुणो भूपतियां, कीरत महल अमर कमठांण।।३।।
अेहा वयण दाखवै ईसर, मांझी वंस तणा कुळ मौड़।
झड़सी महलां तणा झरोखा, रहसी गीत कहै राठौड़।।४।।

कीर्त्ति के लिए निर्मित महलों के कंगूरे, छज्जे, झरोखे और अट्टालिकाएं तो समय की चोट खाकर धराशायी हो जायेंगे पर गीतों में रचित यश-महल काल के थपेड़ों में भी नष्ट नहीं होंगे। उनको न शत्रु अपनी तोपों के गोलों से ढहा सकता और न वह अपने अधिकार में ले सकता। जल, वायु और विद्युत का प्रकृति कोप भी गीतों की इमारतों को नष्ट नहीं कर सकता। गीतों के बल पर चारण कवि लक्खा बारहठ, दुरसा आढा, जाडा मेहड़ू, शंकर बारहठ, कर्णीदान कविया, हुकमीचन्द खिड़िया, सांया झूला प्रभृति सहस्रों कवियों ने एक से अधिक 'लाख पासाव' प्राप्त किये थे। राजस्थान में केवल अकेले मारवाड़ (जोधपुर) राज्य में ही चारण कवियों को ३६३ ग्राम ३७६४००) रु० वार्षिक आय की भूमि प्रदान की हुई थी। महाराजा मानसिंह के गुरु लाडूनाथ ने कवियों को एक दिन में २५ हाथी दान में दिए थे।[२] मुगलकाल से लेकर स्वतंत्रता के पूर्वकाल तक की कोई ऐसी युद्ध और वदान्यता की घटना नहीं मिलेगी जिस पर एक से अधिक गीत न रचे गए हों। आधुनिक काल में भारतीय संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा, आवास-निवास तथा आचार-व्यवहार में क्रान्तिकारी परिवर्त्तन होने के साथ ही गीतों का महत्त्व भी इतिहास की सामग्री मात्र रह गया है। इस काल में न गीत रचने वाले विदग्ध कवि रहे और न धैर्य्यपूर्वक श्रवण कर पुरस्कृत करने वाले काव्य-प्रेमी उदार मानव ही। युग के साथ राजस्थानी साहित्य की यह काव्य-शैली भी मृतप्राय: हो गई है। तभी तो किसी निराश गीतकार कवि ने वर्त्तमान युग का चित्रांकन करते हुए लिखा है—

> कवि पूछै प्रेम बतावो कोई, जावां कर उदमाद जठै।
> देसड़ले नर रया अदेवा, कीरत रा बरगाव कठै ॥१॥
>
> मौसर रण तरवार मारणां, देणां हरख रीझियां दान।
> रस जस करण खरीदण रूपग, दुनिया सिर सुजस री दुकान ॥२॥
>
> ठाकर अब रहिया चित मठिया, बुध सठिया करणां मुखवाद।
> पर उपगार न जांणै प्राणी, सुध बुध जाणग सरस सवाद ॥३॥
>
> ववता जस कारण वीतां रा, थिर जीतां रा बोल थया।
> पाछै रया विनां प्रीतां रा, गीतां रा रिझवार गया ॥४॥

कवियों के सम्मान के स्थान पर समाज में अब गीतों के प्रति कोई प्रेम नहीं रहा। कवि को अपने द्वार पर आया देख कर ऐसा भय मानने लगे जैसे कोई यमराज का अनुचर आ धमका हो। उत्साह, आल्हाद और उदारता लुप्त होकर कवियों के प्रति तिरष्कार की भावना फैल गई। उनके द्वार पर आगमन पर स्पष्ट कहा जाने लगा—

---

१. चारणोत्पत्ति परिपत्र कविराजा मुरारिदान, संवत् १९४० का प्रकाशन

२. बांकीदास री ख्यात, सं. नरोत्तमदास स्वामी, पृ. १७२

वीरारस तणो न भावै बरणण, नह भावै मीनूं जस नीत।
गरज नहीं म्हारै गीतां री, गढ़वा काय सुणावै गीत ॥१॥
मोद मचै कर चढ़ियां माया, माथा पच नह मोद मचै।
रच थारां घरकां रा रूपक, रूपग म्हारा काय रचै॥२॥
खोटौ हुवै किसूं गुण खोलै, गांठ बांधियां राख गुण।
बणियौ तूं कायब री वकता, कायब कुंता अठै कुण॥३॥
आखर बावन करे अेकठा, तैं कागळ लिख कीना त्यार।
लापर पणो कियो तो लड़िसूं, चिड़सूं दियूं न कोडी च्यार॥४॥

गीतकारों का निरादर तथा गीतों को वर्णमाला के बावन अक्षरों का एकत्रीकरण मात्र मानने के कारण गीत-लेखकों के वंशजों—जिनके पूर्वजों को हाथियों पर सवारी करवा कर शासक जलेब में चला करते थे, उनकी पालखियों को अपने कंधों पर कोसों तक कहार बन कर ढोने में गर्व का अनुभव करते थे—को खेतों के रक्षक कणवारिये, चौकीदार और सामान्य कोटि के सेवक के रूप में अपना जीवन-निर्वाह करने को बाध्य होना पड़ा। कवि-समाज की मनोवृत्ति और उसकी दशा का दयनीय वर्णन एक गीत में प्रकट है—

खाय प्रभाते राब सूं रोटी दिनूंगे ऊठ जाय खेत,
सोपो पड़्यां व्याळू वदी आवै सूर।
खिलाय हंसाय हाथ ताळी दे रिझाय खासा,
जो इसौ सुपात व्है तो राखल्यां जरूर॥१॥
काम पड़्या भाजी क्यूंही लियावे लेजाय कीणौं,
पीसो ना देण ना तम्बाखू पीणौं पेख।
नूंवौ धान कोरो चोणौं अलूणौं खाय ले नीको,
इसो पात व्है तो म्हांके खिन्दा देणो अेक॥२॥
धींणो सारो अंवेरे जांवण्या तावण्या धोये,
गळो ऊंचो तान टीप गावणां सो गीत।
पीर आठ खुसी रहे ना कोड़ी मनाणो पड़ै,
पात इसो भेजो पत खीलावणो पति॥३॥
कहा काम चाकर नै पैंली ऊठ आप करै,
खरो हूं को घर जारी रहे एक पांय।
देण लेण धाबो-लत्तो न चावे जूनां चांदोड़,
सुपात इसा नैं ऊभा उडीका छां आय॥४॥
वुजीसा कहै छै म्हांका पीर सूं बुलाल्यो बेटा,
हूं जाणूं छूं कोई पैदा अठै ही व्है जाव।
पैलां का सूं आवे ज्यां को कायदो राखणो पड़ै,
सारी आप जांणो म्हांको संकोजी सभाव॥५॥

आगे म्हांके बारेठजी काम नैं घणां छा आछा,
कई बातां जोग छा सुवार लेता काम ।
खेती काज करोड़्या हा बातां भी कहता खासी,
रोगल्या व्है गियां जरां ऊठाय लिया राम ।।६।।

गोलियां नैं छेड़ छाड़ डोढ़ी ऊभा खाता गाळ्यां,
रीझ रीझ कहता म्हांकी साळ्यां घणां रंग ।
हाथों हाथ कहता केई बेर कूट राळ्या हाळ्यां,
पीट ताळ्यां कहता कांई बीगड़्यो प्रसंग ।।७।।

परींडो जो हुवैं रीतो ले आवे ऊठाय पांणी,
ठुकरांणी कहै सो बणावे काम ठीक ।
आ ही चीत आंण रयी इसो कवि आंण मिळे,
जो इसो सुपात व्है तो राखल्यां नजीक ।।८।।

राजस्थान के स्वाभिमानी कवि की दुर्दशा की अभिव्यक्ति उपर्युक्त गीत में मिलती है । अन्ततोगत्वा वाणी-पुत्र को सरस्वती की आराधना से विमुख होकर कृषि के देवता बैल और हल की ओर उन्मुख होना पड़ा । उसने अपने गीतों को हल की नोक से भूमि में गाड़ दिया । गीत कवि की तीखी पीड़ा का स्वर निम्न गीत में फूट पड़ा है—

हरिया हळ हांक मती कर मन हठ, जांच किसन जो दाळिद जाय ।
अवरां नरां न मागै ऊणत, गीत फिटा कर फोग गुड़ाय ।।१।।
सखरा बळद हळां री सागत, कसी कुहाड़ो हाथ सही ।
जिण जिण आगळ फिरै जांचतो, नाई-वर सेवियो नहीं ।।२।।
फिरियो रिणी फतैपुर फिरियो, फिरियो बाव फळोदी दोय ।
बीकानेर हंसार विचाळै, कूवा जिसो न मिळियो कोय ।।३।।
आछा मेह हुवै ऊनाळू, सारी जिण सूं गरज सरै ।
चार महीनां करो चाकरी, कुस रो बाप निहाल करै ।।४।।

इस प्रकार समाज और गीतकारों में सरस्वती की साधना का जो उच्चादर्श था वह २१ वीं शताब्दी के प्रथम चरण में आकर समाप्त सा हो गया । गीतों के सर्जन के लिए जिस वातावरण और मनोभूमि की आवश्यकता थी, वह वातावरण बदल गया । जो गीत सोये हुओं को जगा देते थे, जागृतों को उठा देते थे, उठे हुओं को चलने के लिए प्रेरित करते थे, चलने वालों को जूझार बना देते थे और जूझारों को अमर कर देते थे वे आज स्वयं मर रहे हैं । वीर, शृंगार, वीभत्स, करुण, हास्य और शान्त रस की यह अनूठी निधि द्रुतता से विनष्ट हो रही है ।

प्रस्तुत वीर गीत-संग्रह में १५२ गीत छापे गए हैं। इन से राजस्थान के कतिपय अज्ञात योद्धा प्रथम बार प्रकाश में आ रहे हैं। कितनी ही युद्ध-घटनाओं की जानकारी भी इन के माध्यम से प्रकट हुई है। इतिहास के लिए तो ये महत्वपूर्ण साधन हैं। यहां हम एक दो घटनाओं पर सोदाहरण संकेत दे रहे हैं जिससे इतिहास की दृष्टि से गीतों की कितनी बड़ी उपयोगिता है, स्पष्ट हो जाएगा।

शाहजादा खुर्रम ने अपने पिता बादशाह जहांगीर के शासनकाल में राज्य प्राप्ति के लिए विद्रोह किया था। शाहजादे के पक्ष में तब मेवाड़ के महाराना अमरसिंह प्रथम का द्वितीय राजकुमार राजा भीमसिंह सीसोदिया टोडा का शासक था। वह दुर्घष वीर, कुशल राजनयिक और अनेक युद्धों का विजेता एवं युद्ध-कला-निपुण योद्धा था। हाजीपुर पटना के रणक्षेत्र में जब दोनों पक्षों में युद्धारंभ के लिए घोड़े, हथियार और जिरहबख्तर आदि अपने सैनिकों को दिए जाने लगे, उस समय राजा भीम ने एक कवच अपने विश्वस्त सहयोगी मानसिंह सीसोदिया के लिए सुरक्षित रक्खा। मानसिंह उस समय मेवाड़ में अपने घर गया हुआ था। राजा भीम की मानसिंह के लिए कवच की बात सुनकर वहाँ उपस्थित शस्त्रागार के अधीक्षक ने कहा कि मानसिंह यहां से एक सौ चालीस कोस की दूरी पर मेवाड़ में बैठा है और युद्ध प्रातःकाल होने वाला है। वह युद्ध में कैसे सम्मिलित हो सकता है ? यह सुन कर राजा भीम ने कहा कि मानसिंह ने मुझे वचन दिया था कि युद्ध के समय दोनों सेनाओं के मुकाबिले तक मैं अवश्य उपस्थित हो जाऊँगा। मेरे लिए एक अच्छी जिरह तैयार रक्खी जावे। यही हुआ, जिस समय दोनों ओर की सेनाएँ शस्त्र-संघात के लिए घोड़ों की लगामें उठाने ही वाली थी कि मानसिंह मेवाड़ से प्रस्थान कर सीधा रणक्षेत्र में पहुँचा और उसके लिए रक्खा गया कवच धारण कर राजा भीम के साथ जूझता हुआ धराशायी हुआ। वचन-निर्वाह के ऐसे अनेक प्रसंग गीतों में सहजता से उपलब्ध होते हैं। उक्त युद्ध-घटना पर प्रसिद्ध कवि दुरसा आढ़ा रचित गीत देखिए—

मेवाड़ थकां पूरब गढ़ माल्है, अईयो सकत-हरा उनमांन।
जग परदेस जीवबा जावै, मरवा गयो करारो मांन ॥१॥
मांटी पणो तुहाळो मानां, रहियो घणौं घणा दिन रोस।
कोस हेक मरबा जावै कुंण, कंवळो गयौ हजारां कोस ॥२॥
मानसिंघ धिन धिन मेवाड़ा, अत प्रब भीम तणौ अवसांण।
जोळा हुवै घणां नर जीबा, भेळो हुवो समोभ्रम भांण ॥३॥

पोह वदियौ जहंगीर पातसाह, कहियौ धिन रांणै करण।
ऊगतां सूरज जिम ऊगौ, मानसिंघ वाळौ मरण ॥४॥

जीवित रहने के लिए लोग विदेशों में जाते हैं किन्तु मरने का निश्चय कर विदेश में प्रयाण करने की घटनाएं विरल ही मिलेंगी। वीर-गीतों ने इस कोटि की अनेकानेक घटनाओं को अपने अन्तराल में छिपा कर रक्खा है।

द्वितीय प्रसंग मारवाड़ के जसवंतपुरा परगने के लोहियाणां ठिकाने के युवक कुंवर नरपाल देवल के युद्ध का है। नरपाल २५ वर्ष की आयु में शाही सेना के ५६० सैनिकों को मार कर रणभूमि में खेत रहा था। प्रसंग है कि एक दिन नरपाल के पिता राव धींगाजी दरबार किए हुए बैठे थे, उस समय जालोर की ओर के एक चारण ने आकर अभिवादन किया और सिवाणा के पास एक पथिक राजपूत ने किसी वैश्य की स्त्री को दस्युदल द्वारा लूटने से बचाने की घटना का वृत्तान्त सुनाया और कहा कि वह चार लुटेरों को मार कर स्वयं अपने अंगरखे के पल्ले से कटार पोंछ कर वहीं धराशायी हुआ। राव धींगा ने उस योद्धा के सिर कट पड़ने के पश्चात अंगरखे के छोर से कटार का मज्जन कर म्यान में डालने की बात सुनकर बड़ी सराहना की। राव ने कहा—राजपूत हो तो ऐसा हो वीर हो। इस चर्चा के समय राव धींगा का इकलौता कुंवर भी वहां उपस्थित था। उसने झट से चारण से प्रश्न किया कि कटार को भीतर के पल्ले से साफ किया अथवा बाहर के। इस पर रावजी ने अपने पुत्र पर रुष्ट होकर कहा कि उस राजपूत की वीरता में कोई कमी नहीं है और ऐसे ही वीर हो तो तुम सिर कटने पर भीतर के पल्ले से कटार साफ कर म्यान में डालना। कुंवर ने अपने पिता के मुख से ऐसे शब्द सुनकर प्रतिज्ञा की कि तीस वर्ष की आयु में ऐसा ही करके दिखाऊंगा। अन्त में वह पच्चीस वर्ष की वय में सैयद (अब्दुला खांन[1]) की सेना से लड़ अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण कर स्वर्ग गया। इस तथ्य की पुष्टि का निम्नोक्त गीत पठनीय है—

कियौ वाद हाथे जिकां बात इतरी कही,
दादि जिण दात री जगत दीधी।
सीस पड़ियां पछै हेक अरि साझ नैं,
कटारी मांजि नै म्यान कीधी ॥१॥

पला बिहुवां तणी विगत पड़ी पारियै,
जुगति करि पूछणौ पड़ी जाहरां।
वायदे अहोड़ौ रीस करि बोलियौ,
तूं करै वधोगति लड़ै ताहरां ॥२॥

बरस तीसां तणो तांम कीधो बचन,
परत नह जीवणो जिकै पूठां ।
कांचळी तणा दे बंध बाई कह्यो,
छापिया जिकै में पांच छूठा ॥३॥

देवळां छात बडगात इम दाखियो,
दुरावां बात तो बुरा दीसां ।
देस में राख चीतौड़पत दीजियै,
बचन मारण तणो सात बीसां ।४॥

सांभळे बात चीतौड़पत सांकियो,
सीख द्यो परी कह बचन सूधा ।
दिली जवनेस गुजरात दिस जावतां,
राह पतसाह रा जाय रूधा ॥५॥

घणां दिन आवसी असुरां घरे,
राज में घणा दिन साद रहसी ।
वाद कीधां बिना सयदि क्यूं कर बहै,
वाद कीधां थकां सयदि वहसी ॥६॥

अेक थपि आप री चियारि थापा असुर,
लिखवै किया सर दुसर लड़िया ।
सात बीसी तणै पाखती सैंद रा,
पांच सै साठि रणखेत पड़िया ॥७॥

अभंग घींगा तणो वीर इम उरड़ियो,
भेजियो सनेसो फौज भांजे ।
कमळ पड़ियां पछै मारि अरी म्यान कीधी,
मांहिले पलै तरवारि मांजे ॥८॥

वजन नरपालदे भलो निरवाहियो,
उरड़िया सैंद रा साथ अतरा ।
मारियो हेक तरवारि हूंते मुगल,
साभिया कटारी हूंत सतरा ॥९॥

पूंजियो ससो वाप नर पठायो,
ऊपड़िया फजर घर सूर ऊगो ।
भांजवो जिको भड़ चवां किसूं भड़ां,
पाधरै सैंद रा सुरग पूगो ॥१०॥

इस प्रकार गीतों में अनेक रोचक ऐतिहासिक प्रसंग समाहित पड़े हैं, जिन के विषय में ख्यातें तथा बातें तक मौन हैं । साहित्य और इतिहास की गीत अमूल्य धरोहर है ।

इस संग्रह में प्रकाशित गीत राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी, कुं. देवीसिंहजी मंडावा संसद सदस्य, कुं. सवाईसिंहजी धमोरा आकाशवाणी, जयपुर, ठाकुर सुर्जनसिंहजी झाझड़, कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर तथा मेरे अपने निजी संग्रह से चुने गए हैं। मैं इन सहृदय बंधुओं एवं संस्थाओं के निदेशकों के प्रति कृतज्ञता- प्रकाश करना कर्त्तव्य समझता हूँ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के निदेशक साहित्यमर्मी विद्वान् श्रद्धेय डा० फतहसिंह जी ने राजस्थान के कतिपय वीरों के काव्य-चरित्र को प्रकाश में लाने के लिए मुझे जो अवसर प्रदान किया, उसके लिए मैं डा० साहब का अत्यन्त आभारी हूँ तथा प्रकाशन-तत्परता के लिए साधना प्रेस के साहित्य-प्रेमी व्यवस्थापक श्री हरिप्रसादजी पारीक का कृतज्ञ हूँ।

भगतपुरा (खूड़)
३० जून, १९६८

सौभाग्य सिंह शेखावत
सम्पादक

राजस्थानी वीरगीत-संग्रह

भाग २

१. गीत ठाकर सूरतसिंह चहुवांण रो

तैंडा जोवसी रे खळ आज तमासो, पैंडां रोप खड़ा जुद्ध पग्गा ।
अैंडा बोलणहार अनम्मी, बैंडा जाग त्रम्बागळ बग्गा ॥१॥

भालां कूर अचल्ला भारथ, समळां बागी सोक सरग्गां ।
भीक ऊडांण दियै रण भाला, काळा बावळ खाग करग्गां ॥२॥

आई फौज चाल तो ऊपर, रे जसबोल सबोळ रहल्ला ।
साहे दळां मछरीक हमैं अम, गाहै दळां खग बोह गहल्ला ॥३॥

वीर विच्चखण कीत तणो वर, ढाहण खाग अरिंदा ढूको ।
नाथ तणो सुरतेस नूभै नर, चित ठीक नहीं कुळ रीत न चूको ॥४॥

जेज न कीध ऊंतावळ जूटो, बावळ फौजां ही थाट विभाड़े ।
आयो काम महि थट ऊपर, चावळ वंस चुहाणां चाडे ॥५॥

---

१. गीतसार–गीतकार ने ऊपर लिखित गीत में सूरतसिंह नामक चौहान वंशीय योद्धा का युद्ध-वर्णन किया है। सूरतसिंह चितभ्रमता की व्याधि से अस्वस्थ रहता था। किन्तु शत्रुओं के आ जाने पर उसने उनसे शस्त्र बजा कर अपने कुल-धर्म का पालन कर वीर-गति प्राप्त की। कवि उसे सचेत करते हुए कहता है कि हे अंड-बंड बोलने वाले वीर सूरतसिंह ! युद्ध-वाद्य बज रहे हैं। उठ, जाग और युद्धार्थ पैर रोप कर डट जा और शत्रु को रण क्रीड़ा का कौशल दिखा ।

---

१. तैंडा – तेरा। जोवसी – देखेंगे। खळ – वैरी। तमासो – खेल। पैंडा – मार्ग। अैंडा – अंडबंड, प्रलाप। बोलणहार – बोलने वाले। अनम्मी – अनम्र, वीर, किसी के बंधन को न सहने वाला। बैंडा – पागल, चितभ्रम। त्रम्बागळ – तांबे के पेंदे के नगाड़े। बग्गा – बजने लगे।

२. कूर – कुटिल, दुष्ट। अचल्ला – अविचल, अडिग। भारथ – युद्ध। समळां – चिल्हादि पक्षियों, देवी। बागी – हुई, बजी। सोक – ध्वनि। सरग्गां – शरावलि की, स्वर्ग की ओर। भींक – शस्त्रों की झड़ी। उडांण – उड़ाने को। भाला – हाथ का संकेत। काळा – वीर। बावळ – पागल, उन्मत्त। खाग – खड्ग। करग्गां–हाथों।

३. चाल – चलकर, प्रस्थान कर। तो ऊपर – तेरे पर। जसबोल – यश के वचन। रहल्ला – रहेंगे। मछरीक – चहुवान। हमैं – अब। गाहै – विलोड़न कर। वाहे – चलाकर। गहल्ला – पागल, कीर्तिकथा।

५. जेज – विलम्ब। कीध – की। ऊंतावळ – शीघ्रता से, तत्काल। जूटो – भिड़ गया। बावळ – पागल। थाट – समूह। विभाड़े – संहार करे। आयो काम–काम आया, मारा गया। चाडे – चढ़ाकर।

२. गीत ठाकर जवानींसिंघ पालड़ी री

सत्रां गाहतो गैजूहां ढाहतो वाहतो सार,
महाचंडी भूवळां साहतो आसमांण ।
चत्रबाहां आरोहतो चाहतो अचूंडा चौज,
ऊ आयौ जवानींसिंघ थाहतौ आरांण ॥१॥

चलातौ ससत्रां पत्रां तातौ रत्र पातौ चंडी,
मांसा ग्रीध घपातौ वणातौ रुद्रमाळ ।
लाखां चमू भ्रमातौ वीजेस छळी आभ लागौ,
तंडळां उड़ातौ खळां वागौ निराताळ ॥२॥

पड़ै रीठ पांडीसां गरीठ घज्र भालां पूर,
घीठ सूर जड़ै वज्र आवधां ओधार ।
ऊघड़ै वरम्मा कड़ां नत्रीठा विछोड़ै अंगा,
जठै आकारीठ दूदौ आहुड़े जोधार ॥३॥

---

२. गीतसार—गीतकार ने इस गीत में ठाकुर जवानींसिंह मेड़तिया, पालड़ी के स्वामी के युद्ध में वीरगति प्राप्त करने का वर्णन किया है। जवानींसिंह ने मेवाड़ में मरहठों के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया था। कवि ने युद्ध में तलवारों की बौछार, भालों के प्रहार, कवचों के टूटने और वीरों के अंगों के कट कर गिरने आदि का चित्रोपम वर्णन किया है ।

---

१. गाहतो – मथता, नाश करता। गैजूहां – गजसमूहों को। ढाहतो–गिराता। वाहतो–चलाता। सार – तलवार, शस्त्र। साहतो – उठाता। चत्रबाहां – घोड़े, सेना। आरोहतो – चढ़ता। अचूंडा – भयावना। चौज – मौज, उमंग, विनोद। थाहतो – थाह लेता। आराण – युद्ध ।

२. ससत्रां – शस्त्रों को। पत्रां – पत्र, खप्पर। तातौ – ताजा, गर्म, सद्य। रत्र–लोहू। पातो – पिलाता। ग्रीध – गृद्ध। घपातौ – तृप्त करता। वणातो – बनवाता। रुद्रमाळ – शिव की मुण्डमाला। चमू – सेना। भ्रमातौ – भ्रमित करता। छळी – युद्ध, छल, लिए। आभ लागौ – आकाश को छूता। तंडळा–टुकड़े, मस्तक। खळां – शत्रुओं के। वागो – लड़ने लगा। निराताळ – निर्विलम्ब, अनवरत ।

३. रीठ – शस्त्रों की बौछार। पांडीसां – तलवारों की। गरीठ – भयंकर, हाथी। घज्र – योद्धा, घोड़े। घीठ – ढीठ, वीर। आवधां – आयुधों। ऊघड़ै – खुले। बरम्मा – वर्मों, कवचों। कड़ा – कड़ियाँ। नत्रीठां – अधीर। बिछोड़ै – छोड़े, भिन्न होते हैं। जठै – जहाँ। आकारीठ – महावीर, युद्ध। दूदौ – दूदावत जवानींसिह। आहुड़े – जोश में भर कर टक्कर ले ।

३. गीत रावत अजीतसिंघ, कानौड़ रा भाला रौ

भरळ तेज उडगांण अणी विकटां भळक, पांण घांण बांण अत जहर पायो।
वहै दइवांण रो धांस जवनां विचै, अरचां सिर जांण बीजांण आयो ॥१॥

अभक अहराव फुण हूंत झाळां अजर, क्रोधवंत जटाधर नेत केहो।
प्रबळ भुज धारियां प्रसण हुंत ऊपरां, अजा रो कूंत जमराण अेहो ॥२॥

बांण पाराथ तणौ जांण वीरोध रौ, विखम थट रोध रौ कियां बांसो।
जबर भुज धारियां हणूं बळ जोध रौ, धमक भुजधारियां अरुण धांसो ॥३॥

जगाहर हूंत धक जांण बीजांण रौ, घाट रै संमी कुंण बाथ घाले।
राखणौ धरा रिछपाळ दीवाण रै, सेल अरियांण रै हिये साले ॥४॥

---

३. गीतसार—उपरोक्त गीत में कवि ने कानौड़ के रावत अजितसिंह के भाले की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि अजितसिंह का भाला अति चमकीला तथा उड़ने की शक्ति वाला है। उसकी नोंक अति विकट तथा चमकदार है। वह घड़ते समय विष में बुझाई गई है। जब वह यवन शत्रुओं पर चलता है तब ऐसा आभास होता है मानो बिजली टूट पड़ी हो।

---

१. भरळ – अति चमकयुक्त। उडगांण – उड़ने की शक्ति युक्त, तारागण। अणी – नोंक। भळक – कान्ति युक्त। पांण – घड़ने के बाद तेज करने के लिए पानी अथवा तेल आदि में बुझाने का भाव। घांण – युद्ध, नाश। जहर – विष। पायो– पिलाया हुआ, बुझाया हुआ। वहै – चलता है। धांस – भाला। दइवांण रो – दिवान को, योद्धा का। अरचां सिर – वैरियों पर। जांण – मानो, जानो। बीजांण – बिजली, वज्र।

२. अभक – चंचल, व्याकुल, छेड़ा हुआ। अहराव – सर्प, कालियनाग। फुण हूंत – फन से। झाळां – ज्वाला। अजर – असह्य, जो हजम न हो सके, जरा रहित। जटाधर – शिव। नेत – नेत्र। प्रबळ – प्रबल। प्रसण – वैरी। अजा रो – अजितसिंह का। कूंत – कुंत, भाला। जमराण – यमराज। अेहो – ऐसा।

३. पाराथ तणौ – अर्जुन को। विखम – विषम, भयानक। रोध रौ – रोकने वाला, रौद्र का। बांसो – डंडा। हणूं – हनुमान। बळ – बल, शक्ति। जोध रौ – योद्धा को। अरुण – लाल, रक्तरञ्जित। धांसो – भाला।

४. जगाहर – जगतसिंह के पौत्र। संमी – सामने। कुंण – कौन। बाथ घाले – भुजाओं में पकड़े। राखणौ – रक्षक। दीवाण रै – महाराणा के। अरियांण – वैरियों। हिये – हृदय में। साले – चुभता है, खटकता है।

४. गीत राव रायसिह राठौड़ रा झाला रौ

धनि धनि सुत चंद वाहतां धजवड़, हूवतां अरि मारे उर हूंत ।
ऊकसतां धसतां ओल्हसतां, कसतां वर्ण विकसतां कूंत ॥१॥

राणव राव वदै धन रासा, मारि मारि कहि करता मार ।
छोह दुसार वड़ड़तां छड़तां, पड़चड़ करता सेलड़ा पार ॥२॥

रिम ऊझेल झेलतां रासा, थाट थड़ंव ठेलतां अठेल ।
धन नर निडर नहसतां धसतां, सौं सर जहर पहरतां सेल ॥३॥

—झाला सांदू री कह्यौ

---

४. गीतसार—उपर्युक्त गीत अजमेर-मेरवाड़ा के भिनाय ठिकाने वालों के पूर्वज राव रायसिंह चंद्रसेनोत राठौड़ पर रचा हुआ है। गीतकार ने इस गीत में रायसिंह द्वारा किसी युद्ध में शत्रुओं को संहारने का वर्णन किया है। वह लिखता है कि चन्द्रसेन-तनय रायसिंह धन्य है जिसने शत्रु द्वारा अपने हृदय में तलवार की नोंक घुसाते समय घायल होते हुए भी शत्रु को मार डाला।

---

१. सुत चंद – राव चंद्रसेन के पुत्र, राव रायसिंह। वाहतां – चलाते, वार करते। धजवड़ – तलवार। हूवतां – तलवार का प्रहार विशेष करते। अरि – वैरी। उर – हृदय। हूत – से। ऊकसतां – निकलते। धसतां – प्रवेश करते। ओल्हसतां – बचाव करते, ओट करते। कसतां – खेंचते, कसते। कूंत–भाला, बर्छा।

२. वदै – कहते हैं। रासा – रायसिंह। छोह – उत्साह, जोश। दुसार – द्विभाग वाला भाला, तलवार। छड़तां – चलाते। पड़चड़ – शीघ्रता से। सेलड़ा – सेल, बलम।

३. रिम – शत्रु। ऊझेल – प्रहार, चोट। झेलतां – सहन करते, अपने ऊपर लेते। थाट – समूह। ठेलतां – धकेलते। अठेल – अडिग, जो धकेले न जा सकें। नहसतां – नाश होते, मरते। धसतां – प्रवेश करते। कहर – विपत्ति, संकट। पहरतां – चुभते सेल – भाला।

५. गीत महाराजा जसवंतसिंघ राठौड़ रा भाला रौ

सकज वाहतौ सेल अणठेल नवसांहसौ, खेलियौ खेल खत्रवाट रौ खूब ।
छोह लागे जसै झोरियौ छत्रपती, मोकळा लोह रै बोह महबूब ॥१॥

कूंत पावाहतौ ढाहतौ केवियां, अजड़ रांमत रमै कमंध त्यारां ।
गजण रै नांखिया बाज मचती गहण, सूरहर आभरण पूर सारां ॥२॥

धीविया छड़ाळां किता लोटै धरा, प्रगट रजपूत वट दाख पूरे ।
माल दूजै वधे महाजुध मेळियौ, खाग अणियां तणै बाज खूरे ॥३॥

वाहि चौधार अरि ढोहिया पार विण, रूक साराहियौ दहूं राहां ।
गवाड़े पवाड़ा जसौ धरिया गुमर, समर गांजे व्हौ पातसाहां ॥४॥

—सूजा कवि रौ कह्यौ

---

५. गीतसार—गीतकार ने इस गीत में जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के भाले की प्रशंसा की है। कवि कहता है कि नवसहस्र ग्रामों के स्वामी जसवंतसिंह ने शत्रुओं के शस्त्रों की बौछारों के मध्य अपने महबूब नामक अश्व को आगे बढ़ाकर उन पर भालों के प्रहार करने प्रारम्भ किए ।

---

१. वाहतौ – प्रहार करता, चलाता । अणठेल – स्थिर चरण, अडिग । नवसांहसौ – नव हजार गाँवों का अधिपति, महाराजा जसवंतसिंह । खेलियौ – क्रीड़ा की । खत्र-वाट रौ – क्षत्रियत्व को । छोह – क्रोध, जोश, उत्साह । जसै – महाराजा जसवंतसिंह । झोरियौ – झोंका । मोकळा – घना, बहुत । लोह रै – शस्त्रों के। बोह – घोड़ा, बहने वाला, प्रहारों में । महबूब – घोड़े का नाम ।

२. कूंत – भाला । आवाहतौ – वार करता । ढाहतौ – गिराता, नाश करता । केवियां – दुश्मनों को । अजड़ – तलवार द्वारा । रांमत – क्रीड़ा । रमै–खेलता। कमंध – राठौड़, महाराजा जसवंतसिंह । त्यारां – तब । गजण रै – गजसिंह के पुत्र । नांखिया – डाले, झोंके । बाज – घोड़े । गहण – युद्ध । सूरहर – सूरसिंह का पौत्र । आभरण – आभूषण ।

३. धीविया – चुभाए हुए, घायल हुए । छड़ाळां – भालों से । किता – कतिपय । रजपूत वट – क्षत्रियत्व की ऐंठ या बल । माल दूजै – द्वितीय मालदेव ने । मेळियौ– भिड़ाया, मिलाया । खाग अणियां – तलवारों की नोकें । खूरे – सुम, सैन्य समूह ।

४. वाहि – प्रहार कर । चौधार – भाले विशेष । अरि – वैरी । रूक – तलवार । गवाड़े – गायन, गान करा कर । पवाड़ां – प्रशंसा-काव्य । गांजे – भाले, गर्व खर्वित कर ।

६. गीत महाराणा जवानसिंघ रा भाला रौ

सालौ सीमाड़ां श्रोयणां आलौ भाण रौ कणेठी सोहे,
दकालौ काळ रौ भैरवाण रौ डचाक ।
विलाला पाण रौ दूत नाथ रौ हाक वाळौ,
भालो श्री राण रौ भूतनाथ रौ भचाक ।।१।।

वज्र री ताप कै पांखां धारियां सांप कै वेखौ,
अरिंदां पाप कै प्रळै धाप कै अमाप ।
गढ़ां जैत डायणी बाप कै जवान रौ गांजो,
सिंघ री थाप कै संभूनाथ रौ सराप ।।२।।

जाजुळी धाराळ नारसिंघ री सटा रौ जायौ,
प्रळैकाळ घटा री छटा रौ जायौ पूत ।
रिमां धू उथाळौ चंडी रीस री रटा रौ जायौ,
भालो किनां ईस री जटा रौ जायौ भूत ।।३।।

---

६. गीतसार—उपरोक्त गीत महाराणा जवानसिंह के भाले की प्रशंसा में रचित है। गीतकार महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने महाराणा के भाले को यमराज की चुनौती, वज्र का आतप, पंखधारी सर्प का प्रहार, सिंह की थप्पड़ और शिव का शाप आदि के रूप में चित्रित किया है।

---

१. सालो – शल्य, चुभने वाला। सीमाड़ां – सीमावर्त्ती। श्रोयणां – शोणित, लोहू। आलो – गीला, भीगा हुआ। कणेठी – अनुज, कनिष्ठ। दकालो – गर्जना, दहाड़। डचाक – मुख, बटका। हाकवाळौ – दहाड़ वाला। भचाक – भच ध्वनि करता हुआ, प्रहार करने वाला।

२. पांखां धारियां – पंख आया हुआ, उड़ने वाला। वेखौ – देखे। अरिंदां – वैरियों का। प्रळै – प्रलय। धाप – तृप्ति। अमाप – अपरिमित, अपार। जैत – जीतने वाली। डायणी – प्रेतिनी। जवान रौ – महाराणा जवानसिंह को। गांजो – भाला। थाप – थप्पड़।

३. जाजुळी – प्रज्वलित, तेजस्वी। धाराळ – धारा वाला। सटा रौ – गर्दन के केश। जायौ – जन्मा हुआ। छटा रौ – विद्युत को। रिमां धू – शत्रुओं के मस्तकों को। उथाळौ – उन्मूल करने वाला, उलटने वाला। चंडी रीस – चण्डिका के क्रोध, पार्वती के कोप। रटा री – टक्कर, रटक, कथन। किनां – किंवा। ईसरी – रुद्र, शिव की। जटा रौ – जटा का। जायौ पूत – जन्मा हुआ पुत्र, वीरभद्र। भूत – गण, प्रेत।

कीरती लहेवौ धाकां दहेबौ द्रोयणां कुलां,
छाजै तोनूं अहेबौ छडाळौ हिंदू छात।
साहै जेण बेळां धूजै सातों ही काफरी सूबा,
बांहै जेण बेळां धूजै सातों ही बिलात ॥४॥
—कविराजा सूरजमल्ल मीसण रौ कह्यौ

७. गीत महाराणा भीमसिंघ रा भाला रौ

समर पतीजा बीज बरसाळ रा सार सौ, झाळ रा वतीजा असौ झाळो।
तेज पुंज भाळ रा नयण तीजा तसौ, भतीजा काळ रा जसौ भालो ॥१॥

अनड़ घड़ कुराड़ा राम अहनाण रै, ताणजै सराड़ा करण तेहो।
बैरियां बराड़ा पाड़ बाखांणजै, जाणजै मुराड़ा भूत जेहो ॥२॥

बजर पड़ियाळ बागां बजर बेढ़ री, भवानी चकर भड़ियाळ भाळो।
फोड़ कड़ियाळ पैली तरफ फरहरै, असौ छड़ियाळ भीमेण वाळो ॥३॥

---

७. गीतसार—यह गीत महाराणा भीमसिंह सीसोदिया, मेवाड़-नरेश के भाला शस्त्र की प्रशंसा में कथित है। कवि ने भाले को वर्षाकालीन विद्युत, ज्वाला की लपट, रुद्र के तृतीय नेत्र और यमराज के भतीजे के सदृश अमोघ प्रभावकारी बताते हुए उसकी सराहना की है।

---

४. लहेवो – प्राप्त करना। धाकां – आतंक से। दहेबौ – दहन करना। द्रोयणां कुलां – शत्रुता रखने वाले वंशों। छाजै – शोभा दे। अहेबौ – ऐसा। छड़ाळौ– भाला। साहै – उठावे। जेण वेळां – उस समय। धूजै – कांपने लगते हैं। बिलात – विलायतें।

१. समर – संग्राम। पतीजा – विश्वास देने वाला। बरसाळ रा – वर्षा ऋतु का। सार सौ – विजल सार का। झाळ – अग्नि। वतीजा – लपट, वत्ती। असौ – ऐसा। भाळ – ललाट। नयण तीजा – तीसरा नेत्र, शिव। तसौ – तैसा, जैसा। काळ रा – यमराज का। जसौ – जैसा।

२. अनड़ – बंधन में न आने वाला, अनम्र। कुराड़ा – कुल्हाड़ा, परशु। राम – परशुराम। अहनाण – चिन्ह। ताणजै – खेंचने पर। सराड़ा – बाण, शरावलि। बराड़ा – जबरदस्त। मुराड़ा – प्रेत द्वारा प्रज्वलित अग्नि। भूत–प्रेत। जेहो–जैसा।

३. बजर – वज्र। पड़ियाळ – युद्ध, तलवार। बागां – बजने या चलने पर। वेढ़ री– युद्ध की। भवानी – दुर्गा। चकर – चक्रायुध। भड़ियाळ – मुकाबिला करने पर। कड़ियाळ – कवच। पैली तरफ – उस ओर, इधर से उस पार। छड़ियाळ – भाला। भीमेण वाळो – महाराणा भीमसिंह का।

तण अड़स उदैपुर नाथ सरजात रौ, भक उडण वाज रौ कुडण भांजो।
अजब अणियां भमर साल खळ आज रौ, गजब जमराज रौ कंवर गांजो ॥४॥

डगे पग लगां जांणै भुजंग डांडियौ, सुरंग रंग चाडियौ श्रोणगारी।
वार बरछी कही खळां विप वांडियौ, बीनड़ी काडियौ हाथ वारी ॥५॥

नाग जूटौ किनां निसा तूटौ नखत, चळां सूं बांण खूटौ चलावै।
कूंत छूटौ अठी हूंत जम कौ धकौ, उठी फूटौ थकौ नजर आवै ॥६॥

दुधारौ भुजां दरसाय दीवांण रै, जांण रै आप छत्र छटा जागी।
खुधा रत दमंग झड़वाय खुरसाण रै, लाय सुरताण रै जाय लागी ॥७॥

---

४. तण – पुत्र, तनय। अड़स – महाराणा अरिसिंह। सरजात रौ – उत्तम जाति के लोहे का, समुद्र की ज्वाला का, वाडवाग्नि का। भक – भक्ष्य। उडण वाज रौ – उड़ने वाले सर्प का, शिकरा नाम का पक्षी। भांजो – नाश करने वाला। अणियां भमर – सेना या नोंक वाले शस्त्रों में दुल्हा-स्वरूप। साल – शल्य। कंवर – कुमार, पुत्र। गांजो–भाला।

५. डगे पग – पैर लड़खड़ाते हैं। भुजंग डांडियो – पुच्छ वाला सर्प, सर्प की पूंछ। सुरंग – लाल। चाडियो – चढ़ाया हुआ। श्रोणगारी – रक्त सना। बरछी – बर्छा, भाला। विप – वपु, शरीर। वांडियो – काट डाले। बीनड़ी – दुल्हिन ने। काडियो – निकाला। हाथ वारी – खिड़की से बाहर हाथ।

६. नाग जूटौ – डसने को सर्प झपटा हो, हाथी झपटा हो। किनां – अथवा। निसा – रात में। तूटौ – टूटा। नखत – नक्षत्र। चळां सूं – धनुष की डोरी से। खूटौ – छूटक, समाप्त हुआ। कूंत – भाला। अठी हूंत – इधर से, इस ओर से। जम कौ – यमराज का। धकौ – धक्का, टक्कर। उठी – उस ओर। फूटौ थकौ – फूटा हुआ, घाव पूरित।

७. दुधारौ – दो धारा वाला भाला। भुजां – हाथ में। दरसाय – दीखता है। आप – जल। छटा – बिजली। दमंग – अग्नि के पतंगे, स्फुलिंग। झड़वाय – हवा के झोंके। खुरसाण – खरशान-यंत्र, मुसलमान। लाय – ज्वाला। जाय – जाकर। लागी – लगी।

७. गीत राव जोधा राठोड़ रौ गुरड़ रा बीनांण रौ

नागमंडळ मेवाड़ निरखतौ, कमधज गुरड़ फिरै कौवंख ।
कूंभकरन सिर सकै न काढ़ै, जां डर राफ महाजद पंख ॥१॥

जोधै जंगम थाट जड़ाळै, गुरड़ जेम घाते गहण ।
उड़ण अहि लोचन आहड़ौ, फाड़ण फूंक न सजै फण ॥२॥

बीरम-हरै गुरड़ बाहिवा, लोह झड़प मंडियौ लह ।
नागद्रहौ नागिंद्र नेस अहि, नीसरि आयौ दियै नंह ॥३॥

चंच गुरड़ असमर चालवतौ, सिरहांणै रिणमाल सुत ।
नाग मंडळ मेवाड़ौ नींसर, सिलै न चेजे चख-सुरत ॥४॥

---

७. गीतसार—यह गीत जोधपुर-राज्य के राजा राव जोधा राठौड़ और मेवाड़ के राणा कुंभा के पारस्परिक विग्रह से सम्बन्धित है। गीतकार ने जोधा के आतंक से राणा कुंभा के भयातुर रहने का वर्णन करते हुए लिखा है कि गरुड़ रूपी राव जोधा व्याल रूपी राणा कुंभा आदि शत्रुओं को खोजता नागौर और मेवाड़ के मध्य फिरता है। किन्तु राणा कुंभा राव जोधा के भय से न अपने खड्ग रूपी फन को उठाता है और न डंक मारने तथा फूत्कार करने का साहस करता है।

---

१. नागमंडळ – नागौर। निरखतौ – देखता, खोजता। कमधज-गुरड़ – राठौड़ राव जोधा रूपी गरुड़। फिरै – घूमता है। कौवंख – सर्प, नाग। काढ़ै – निकालता है। जां डर – जिसके भय से।

२. जंगम – घोड़े। थाट – समूह, सेना। जेम – जैसे। घाते – डाले, झोंके, दांव दे। गहण – पकड़ने के लिए। उडण – उड़ने वाला। आहड़ौ – आहड़ नामक स्थान पर रहने के कारण मेवाड़ के शासकों को आहाड़ा कहते हैं, राणा कुंभा। फूंक – फूत्कार। फण – फन।

३. बीरम-हरै – राव वीरमदेव का वंशज, राव जोधा। बाहिवा – चलाने, प्रहार करने। लोह झड़प – शस्त्रों की टक्कर, हथियारों के वार। मंडियौ – जुड़ा। नागद्रहौ – नागदा का स्वामी। नागिंद्र – शेषनाग। नेस – घर।

४. चंच – चोंच, चंचु। असमर – तलवार, असिवर। चालवतौ – चलाता, वार करता। सिरहांणै – सिरहाने, सिर पर। नींसर – निकल कर। सिलै–सिलह। चेजे – चुगा, आहार। चख-सुरत – श्रुतिचक्षु, सर्प।

जोध नरिंद गुरड़ गत जोइयै, दोमझि भीम समूहो दाव ।
पनंग पयाळ कुंभगढ़ पैठौ, पवंग पंखे लागी पंख-वाय ॥५॥

पैठौ अविग्रहि अेकपती जिउ, सोक चडै अेक सामहियौ ।
राव पंखराव रांण अहिराजा, रोहा खूंदौ हुई रहियौ ॥६॥

राव पंखराव वैर वराई कै, घात न मेल्है मेळ घणि ।
गळै रफ पड़ियौ गढ़ रोहे, संकुड़ि कुंभौ सहस फणि ॥७॥

जोधो अरण सहोवर जोवै, द्रिढ़ में अंग आकुळो दरप ।
भार झड़प वीहे सीसोदौ, सकळंक औग्रहि गौ सरप ॥८॥

—बादर सूरो कह्यौ

---

५. नरिंद – नरेन्द्र, राजा । गत – गति, चाल, भाँति । जोइयै – देखें । दोमझि – युद्ध । पनंग – नाग, शेषनाग । पयाळ – पाताल । कुंभगढ़ – कुंभलगढ़, कुंभलमेर । पैठौ – छिप गया, प्रविष्ट हुआ । पवंग पंखे – गरुड़ के पंखों की, गरुड़ की । पंख-वाय – पंखों की हवा ।

६. अविग्रहि – छिपकर, युद्ध का विचार त्याग कर । चडै – चढ़े । पंखराव–पक्षीराज, गरुड़ । रांण – राणा, कुंभकरण । अहिराजा – नागराज, शेषनाग । रोहा खूंदौ–रोका और कुचला हुआ ।

७. घात – दांव, चोट । न मेल्है – नहीं देता, नहीं मिलता । मेळ – मेल-मिलाप । घणि – अधिक, बहुत । गढ़रोहे – गढ़ में बंधन में आया हुआ जैसा । संकुड़ि – संकुचित होकर, सिकुड़ा हुआ । सहसफणि – शेषनाग, सहस्र फनों वाला ।

८. अरण सहोवर – अरुण सहोदर, अरुण का भाई, गरुड़ । द्रिढ़ – दृढ़ । आकुळो – व्याकुल । दरप – दर्प, डर । सीसोदौ – सीसोदिया वंशीय क्षत्रिय, राणा कुंभकर्ण । सकळंक – कलंक सहित । औग्रहि – बच कर । गौ – गया । सरप – सर्प, नाग रूपी राणा कुंभकर्ण ।

८. गीत बिक्रमादीत राठौड़ री पावस रा बीनांण री

संमेळै सघण सहर नर साहण, सांमिण सहुवर चाढ़ि सभीत ।
आरंभ कर अजमेर आवियौ, वरसाळ किनां बिक्रमादीत ॥१॥

पावस जितै पूजतै पारंभ, घै घूबै भड़ सहर घणां ।
ईचिरज हुवा लोक अजमेरां, बड दळ देखै बीक तणा ॥२॥

बीज सिळाव खिवै बीजूजळ, कांठळ जरदां कळह कळ ।
जोधावत दीठौ जोड़ाळै, दळ घण आरख तूझ दळ ॥३॥

मलिकहेम डरे मेछांइण, देखै विसमां कमंध दळ ।
बीकौ हूवैत छोडौ वरसीह, हुवै मेह तौ खड़ौ हळ ॥४॥

---

८. गीतसार–यह गीत बीकानेर राज्य के संस्थापक राव विक्रमादित्य बीका) पर रचित है। कवि ने बीका कि घनघटा-तुल्य अपनी सेना को सजा कर, अजमेर में वंदी राव वरसिंह को बंधन-मुक्त करने का वर्णन किया है। गीत में राव बीका के सैन्य-प्रयाण एवं युद्ध-क्रीड़ा की वर्षा के साथ तुलना की गई है ।

---

१. संमेळै – एकत्रित कर, सम्मिलित कर। सघण – सघन । नर साहण – मनुष्य और घोड़े, अश्व सेना। सभीत – भय सहित। आवियौ – आया। वरसाळ – वर्षाऋतु। किनां – किंवा, अथवा ।

२. घै घूबै – उमड़ कर चारों ओर फैल गए। भड़ – योद्धा, सुभट। घणां–बहुत अधिक। ईचिरज – आश्चर्य। लोक – लोगों को। अजमेरां – अजमेर नगर निवासी, अजमेर के शासकों। बडदळ – विशाल सेना। वीक तणा – राव बीका की, राव विक्रमादित्य राठौड़ बीकानेर के राजा की ।

३. बीज-सळाव – विद्युत के कौंधने की क्रिया का भाव। खिवै–चमक, प्रकाश। बीजूजळ–तलवार। कांठळ – घन घटा। जरदां – कवचों, सनाहों। कळह – युद्ध। कळ – भांति, कला से। जोधावत – राव जोधा का पुत्र, बीका। दळ – समूह। घण – बादल। आरख – समान, तुल्य। कमंध – राठौड़। दळ – सेना।

४. मलिकहेम – अजमेर का राज्यपाल मल्लूखां। मेछांइण – मुसलमान। विसमां – विकट, जबरदस्त, भयावह। मेह – वर्षा। खड़ौ – चलाओ, प्रारंभ करो। हळ– हल यंत्र, कृषि का उपकरण विशेष।

९. गीत राव कलियाणमल राठौड़ रौ

सब झिविया कळह ठांसिया सुजड़ै, घाया सांकळ बांधिया घणी।
मैंगळ सुपह नह लोपै मोटा, तन आंकुस कलियाण तणी ॥१॥

नाइक वसु तणा रेवानद, अरि मोटा नमिया अनंम।
बीकैहरै तणी पह बारण, कार न मेटै हेक क्रंम ॥२॥

आसत नमौ जैत अंगौभ्रम, बडा छातपत बावन बीर।
महि दत असह धैंधीगर मोटा, हितकारिया नह लोपै हीर ॥३॥

जुध सांकळ परठै जैताउत, अरि खांमिया सहित आथांण।
आंकुस कला तणी सिर ऊपर, सांकै हसत मानै सुरतांण ॥४॥

—कुसळा वीठू रौ कह्यौ

---

९. गीतसार—ऊपर के गीत में कवि ने राव कल्याणमल्ल राठौड़ के आतंक का वर्णन किया है। वह कहता है कि कल्याणमल्ल के तप रूपी आतंक के भय से गजराज रूपी राजागण बादशाही नियमों का उल्लंघन करने का साहस नहीं करते। और वे नम्र बने शाही सेवा करते हैं।

---

१. झिविया – मार दिए। कळह – युद्ध में। ठांसिया – दबा दिए। सुजड़ै – तलवार। घाया – चलने की क्रिया का भाव। सांकळ – जंजीर। घणी – स्वामी। मैंगळ – हाथी। सुपह – राजा। लोपै – उल्लंघन करें। आंकुस – अंकुश। तणी – की।

२. नाइक – नायक, पति, राजा। वसु – वसुधा। अरि – वैरी। नमिया – झुके, नम गए। अनंम – अनम्र। बीकैहरै – राव बीका का पौत्र, राव कल्याणमल्ल। पह – राजा। बारण – हाथी। कार – मर्यादा, पंक्ति। हेक – एक। क्रंम – कदम।

३. आसत – शक्ति, विश्वास। जैत – राव जैत्रसिंह। अंगौभ्रम – अंग की भ्रांति देने वाला, वंशज। छातपत – छत्रपति, राजा। असह – दुस्सह, दुश्मन। धैंधीगर – हाथी। हितकारिया – दुत्कारने पर भी। नह – नहीं। हीर – मर्यादा, लकीर।

४. जुध सांकल – युद्ध रूपी जंजीर। परठै – रोके। जैताउत – जैत्रसिंह का वंशधर। खांमिया – बांधे, नाश किये। आथांण – स्थान, किले, घर। सांकै–शंका, भय।

१०. गीत अनां राठौड़ रौ अगस्थि रा बीनांण रौ

प्रंम चा भजनीक वडा पहु बेबे, सूर धीर खग मंत्र सनौ।
समंद सिवा तणा दळ सारे, अगसत जिम जीरवै अनौ ॥१॥

ईसौ मंत्र खाग आवाहे, थीये कोप गरकाब थिया।
तापस बडे कमंध खळ-जळ तिम, सबळ उवर जळ सामविया ॥२॥

अेकण झाट आचमण आंणे, जेम रिख कियौ महण जळ।
करणावत तू कियौ कळह तैं, दुजड़ां मुंहि दिखणाध दळ ॥३॥

मुनि जिम मंत्र कमंध खग क्रमंतै, जुधजळ वधे वछियत जियै।
कळह अनां आचमन करंतै, थांनां कदै न त्रिपत थियै ॥४॥

—गोयंददास सांदू रौ कह्यौ

---

१०. गीतसार—उपरोक्त गीत अन्ना राठौड़ से सम्बन्धित है। गीतकार ने छत्रपति शिवा सीसोदिया की सेना को समुद्र और गीत नायक अन्ना राठौड़ को अगस्त्य मुनि बतला कर गीत की रचना की है। वह कहता है कि एक ओर तो अन्ना परमेश्वर का अनन्य भक्त है और दूसरी ओर महान् तलवार धनी। उसने शिवा के सैन्य रूपी समुद्र को अगस्त्य मुनि की भाँति पान कर लिया।

---

१. प्रंम चा – परमेश्वर का। भजनीक – भजन करने वाला, भक्त। पहु – राजा। बेबे – दोनों। खग – तलवार। सनौ – सहित। सिवा – राजा शिवा सीसोदिया। दळ – सेना। अगसत – अगस्त्य मुनि। जिम – जैसे। जीरवै – हजम करता है, सहन करता है।

२. ईसौ – ऐसा। खाग – खड्‌ग। आवाहे – प्रहार देकर, आवाहन कर। थीये – हुए। गरकाब – गर्क, डूबा हुआ। थिया – हुआ। तापस – तपस्वी, अगस्त्य। खळ – वैरी। जळ – जल, पानी। सबळ – बलवान। उवर – उदर, उर। सामविया – समा लिए।

३. झाट – प्रहार, आक्रमण। आचमण – आचमन। आंणे – लेकर, भर कर। रिख – ऋषि ने, अगस्त्य ने। महणजळ – समुद्र जल। करणावत – कर्ण का वंशज। कळह – युद्ध। दुजड़ां – तलवारों के। मुंहि – मुंह, धारा, सामने। दिखणाध दळ – दक्षिणियों की सेना, शिवा की फौज।

४. क्रमतै – चलाते। कदै न – कभी नहीं। त्रिपत – तृप्त। थियै – हुए, होते हैं।

११. गीत पाबू धांधलोत राठौड़ रौ

छठी आपरो पराई जागणौं कुळ छळां, ऊपरी नरां जिम गिरां आवू।
कवण दध उलांडे गयण मापे कवण, पार कुण प्रवाड़ां लहै पावू ॥१॥

सिव तणा जोग चंडी तणा चिरत सम, जम तणा डांण घण तणा रंग जेम।
अंब तणा तरंग दध नभ तणा ऊंचपण, त्रिजड़ धांधळ तणा जुध तेम ॥२॥

अजमरां बांण जमरांण रा मांण अंग, गुरड़ रा गमण तिम नाथ रा ग्रंथ।
समंद रा धाप आकाश रा माप, सिध-पाल्हरा किला उतराद रा पंथ ॥३॥

हेक कोळू तणी थांन आसाहरा, कमध सिव थांन वड भली कीधी।
कंवळ पड़ियां पछै खळां पाड़ै कितां, सूर मंडळ चडे प्रिथी सीधी ॥४॥

---

११. गीतसार—उपर्युक्त गीत महावीर पाबूजी राठौड़ पर कहा हुआ है। पाबूजी की राजस्थान के पांच प्रसिद्ध लोक देवताओं में गणना है। कवि ने पाबूजी को अपने और दूसरों के कष्टों में पड़ने वाला तथा गिरियों में जैसे अर्बुदगिरि की महिमा है वैसे ही मनुष्यों में उनकी महिमा को उल्लेखनीय कहा है। उनके परिचयों के अपार स्तवन की गणना कर पाना वैसे ही कठिन है जैसे समुद्र को बिना जलयान के पार कर पाना।

---

१. छठी – जन्म के बाद छठा दिन या रात्रि, इस रात्रि को मनाया जाने वाला उत्सव। पराई – दूसरों की। जागणौं – जगने वाला। कुळ छळां – कुल के गौरव-रक्षण के लिए लड़े जाने वाले युद्ध, कुल के लिए। जिम – जैसे, जिस प्रकार। आवू – अर्बुदाचल। कवण – कौन। दध – समुद्र। उलांडे – उलांघे, कूद कर पार करे। गयण – गगन को, आकाश को। मापे – नापे। पार – अन्त। प्रवाड़ां– प्रशंसनीय कार्यों का, परिचयों का। लहै – ले।

२. चंडी – चण्डिका, देवी के। चिरत – चरित्र। जम तणा – यमराज की। डांण– दाव, छलांग, कदम। घण – इन्द्र, धनुष। अंब – जल की। ऊंच पण – ऊँचाई। त्रिजड़ – तलवार। धांधळ तणा – धांधल तनय के। जुध – युद्ध।

३. अजमरां – देवताओं। जमरांण – यमराज। मांण – मान। गमण – गमन, गति। तिम – त्योंही, जैसे। सिध पाल्हरा – सिद्ध पुरुष पाबू का। उतराध रा– उत्तर दिशा का। पंथ – पथ, मार्ग।

४. हेक – एक। कोळू – कोलू नामक स्थान, पाबूजी राठौड़ का ग्राम, कोलू में उनका देवालय है। यह मारवाड़ के पोकरण कस्बे के निकट है। थांन – स्थान, देवालय। आसाहरा – आशा का वंशज। कमध – राठौड़। भली – अच्छा। कंवळ – कमल, शीश। खळां – दुष्टों को, वैरियों को। पाड़ै – धरा पर पटक कर मारें। कितां – कतिपय, अनेक। सूर मंडळ – रवि लोक। चडे – चढ़कर, पहुँच कर। सीधौ – सीधे, सिद्ध हुए।

१२. गीत कंवर नरपाल देवल लोहियाणा रौ

कियौ वाद हाथे जिकां बात इतरी कही, दादि जिण बात री जगत दीधी ।
सीस पड़ियां पछै हेक अरि साभनै, कटारी मांजि नै म्यान कीधी ॥१॥

पला बिहुवां तणी विगत पड़ि पारियै, जुगति करि पूछणी पड़ी जाहरां ।
वायदे अहोड़ी रीस करि बोलियौ, तूं करै बधोगति लड़ै ताहरां ॥२॥

बरस तीसां तणौ तांम कीधो बचन, परत नह जीवणो जिकै पूठां ।
कांचळी तणा दे बंध बाई कह्यौ, छापिया जिकै में पांच छूठां ॥३॥

देवळां छात बडगात इम दाखियौ, दुरावा बात तो बुरा दीसां ।
देस में राख चीतौड़पत दीजियै, बचन मारण तणौ सात बीसां ॥४॥

सांभळे बात चीतौड़पत सांकियौ, सीख द्यो परी कह बचन सूधा ।
दिली जवनेस गुजरात दिस जावता, राह पतसाह रा जाय रूधा ॥५॥

---

११. गीतसार–यह गीत लोहियाणा के कुंवर नरपाल देवल ने शाही प्रान्तपति सैयद की सेना को मार्ग में रोक कर युद्ध लड़ा, जिसका परिचायक है। गीत में नरपाल के हठ ठान कर पांच सौ साठ सैनिकों को धराशायी करने का वर्णन है। कवि का कहना है कि नरपाल ने जिस बात पर विवाद किया था उसको चरितार्थ कर स्वर्ग में गया।

---

१. वाद – विवाद। जिकां – जिन। दादि – दाद दी, सराहना की। पड़ियां – गिरने पर। पछै – पीछे, बाद में। हेक – एक। अरि – शत्रु। साभनै – मार कर। मांजि – मांज कर, साफ कर। कीधी – की।

२. पला – पल्ला; वस्त्र का छोर। बिहुवां – दोनों। विगत – व्यौरा। जुगति – युक्ति। पूछणी – पूछना। जाहरां – जब, प्रकट में। अहोड़ी – झिड़की। बधोगति – बढ़कर, वृद्धि का कार्य। ताहरां – तब, उस समय।

३. बरस – वर्ष। तणौ – का। तांम – तब। परत – प्रत्यक्ष, तदनुपरान्त। जिकै पूठां – उसके पश्चात। कांचळी – कंचुकी। तणा – का। बंध – भाई, बंधु। बाई – बहिन ने। छापिया – लिखे, मंडित किए, निश्चित किए। जिकै – उन, जो। छूठा – छोड़ दिए, निकाल दिए।

४. देवळां छात – देवलों के स्वामी। बडगात – बड़ागात्र। इम – यों। दाखियौ – कहा। दुरावां – दुहरावें, बुरी बतावें। सात बीसां – एक सौ चालीस।

५. सांभळे – सुनकर। चीतौड़पत – चित्तौड़ का स्वामी, महाराणा। सांकियौ – शंकित हुआ। सीख द्यो – यहां से विदा करो, जाने की स्वीकृति दो। परी – दूर। सूधा– सीधे, साफ। दिली – दिल्ली। जवनेस – यवनेश, बादशाह। दिस – दिशा, ओर। पतसाह रा – बादशाह का। रूधा – रोका, रुद्ध किया।

१३. गीत बाघसिंघ चांदावत राठौड़ रौ

सुरां सिधां में महेस जेम बाणावळी पाथ सिध,
मांण में द्रजोण सिधां वदां महाबाह।
दांन में करण सिध धरापती सकौ दाखां,
रूकां सिधां बाघ नै वखांणै दहूं राह ॥१॥

जोग में कैलास वाळौ पण्डू वाळौ पांणां जोध,
ध्रतास्ट वाळौ जोध क्रोध में सधीर।
दान में अरकवाळौ जींकी ईढ़ नकौ दूजौ,
बणै भवानीसिंघ वाळौ सिध महाबीर ॥२॥

कमाळी असुरां काळ काळ सिधी गुड़ाकेस,
इळा लोभ जळासे पयठौ कैरू इंद।
अन्त समै हेम दत्त नकौ आथ हाथ आयौ,
चाव करां दान खाग बियौ बाघ चंद ॥३॥

जटीधू बाणांपति गंधारी सुतन जोध,
भणां जे कौंतेय घरां कुबेर भंडार।
फाबे अेता कमंधां मौड़ बिया फता,
सार नै आचार उभै सराहे संसार ॥४॥

—पदमा खिड़िया रौ कहचौ

---

१३. गीतसार–कवि पदमा खिड़िया ने गीत-नायक बाघसिंह चांदावत को देवताओं में महादेव, धनुर्धरों में अर्जुन, मान-धनियों में दुर्योधन और दानियों में राजा कर्ण की भांति दानी एवं तलवार चलाने वालों में सिद्धहस्त अंकित किया है।

---

१. सुरां – देवताओं में। बाणावळी – बाण चलाने वालों में। पाथ – पार्थ, अर्जुन। मांण – मान, हठ। द्रजोण – दुर्योधन। वदां – कहा जाता है। सकौ – सब कोई। दाखां – कहते हैं। रूकां – तलवारों। दहूं राह – हिन्दू और यवन दोनों धर्मों वाले।

२. जोग – योग विद्या में। पांणां – बलवानों, भुजबली। जोध – पुत्र, योद्धा। ध्रतास्ट – धृतराष्ट्र। अरक वाळौ – सूर्यपुत्र, कर्ण। जींकी – जिसकी। ईढ़ – बराबरी में। नकौ – कोई नहीं। दूजौ – अन्य।

३. कमाळी – शिव। गुडाकेस – अर्जुन। इळा – पृथ्वी। जळासे – जलाशय, तालाब। पयठौ – पैठा। कैरू इंद – कौरवेन्द्र, दुर्योधन। अन्त समै – अन्तिम काल, मृत्यु समय। हेमदत्त – स्वर्णदानी। आथ – अर्थ, धन। खाग – तलवार। बियौ – दूसरा। चंद – राव चांदा।

४. जटी धू – महादेव। कौन्तेय – कर्ण। अेता – इतने। कमधां – राठौड़ों के। मौड़ – मुकुट, श्रेष्ठ। सार – तलवार। उभै – दोनों।

१४. गीत कंवर रुघनाथसिंघ चांदावत री

जिसो संकर रै कंवर गणपती जांणजे, जिसोई अरक घर कसिप जांणां ।
पवन रै सुतन हणमंत जिसो पेखजे, प्रगटियो रतन घर रुघो पांणां ॥१॥

गुणां भरपूर पर सिघ रण गिणीजे, तेज दणियर घणे वधे तुड़-तांण ।
वेख वळवान कपिराव विण कुंण वियो, अडर चांदावतां वणे सुभियांण ॥२॥

कवण मेघा सरस गवर सुत वडाळो, श्रवण अंव घरा सिर वखांणै सूर ।
दियण निज भगत इम वदां लंका दहण, फताहर दियण अथ पखां भरपूर ॥३॥

सुरा अगैवांण अगैवाणां नवग्रहां सदा, दळां रुघपत अगै रहणूं दाखां ।
सिधां कंवरां कंवर रुघो रतनेस सुत, लहण जसवास वहो मुखां लाखां ॥४॥

---

१४. गीतसार–यह गीत कुमार रघुनाथसिंह चांदावत राठौड़ पर रचित है । इसमें कवि ने रघुनाथसिंह को शिव पुत्र गणपति, कश्यप-तनय सूर्य और वायुनन्दन हनुमान के तुल्य बुद्धिमान्, तेजस्वी और पराक्रमी मान कर वर्णन किया है । वह अपने उल्लिखित गुणों के लिए सम सामयिकों में प्रशंसनीय है ।

---

१. जिसो – जैसा । कंवर – कुमार, पुत्र । गणपती – गणेश । जिसोई – वैसाही । अरक – सूर्य । कसिप – कश्यप । पेखजे – देखिए । रतन घर – रतनसिंह के घर में, घराने में । रुघो – रघुनाथसिंह । पांणां – बलवान ।

२. भरपूर – पूर्ण । दणियर – दिनकर, सूर्य । घणो – घना, बहुत । तुड़ तांण – अपने कुल का गौरव बढ़ाने वाला । वेख – देखें । कपिराव – हनुमान । वियो – दूसरा । अडर – निर्भय । सुभियांण – श्रेष्ठ, शुभ, मुखिया ।

३. कवण – कौन । मेघा – बुद्धि में । सरस – समान । गवर सुत – गणेश । अंव घरा – आकाश और पृथ्वी पर । सूर – सूर्य । वदां – कहें । लंका दहण – लंका को जलाने वाला, हनुमान । फताहर – फतहसिंह के पौत्र । अथ – अर्थ, धन । पखां – पक्षों में ।

४. सुरां – देवताओं में । अगैवांण – अग्रगण्य । नवग्रहां – नवग्रहों में, गणेश । दळां – सेना में । रुघपत – रघुनाथसिंह । रतनेस – रतनसिंह का । लहण – लेने वाला । जसवास – धन्यवाद, यशवाणी । वहो – बहुत । मुखां – मुखों से ।

१५. गीत ठाकर रतनसिंघ चांदावत राठौड़ रौ

सत्रां भांजणौ सार अवसांण जीपण समर, लियण जसवास मुखां लाखां ।
दियण धिन दरक असि कड़ां द्रब दिनाई, सिंघाळौ सिघां दस तीन साखां ।।१।।

मांण अदवांनरां तणां बहौ मोड़िया, तोड़िया खळां दळ किया ताबै ।
महाभड़ चंदरा बिड़द बेढ़ीमणां, फताहर तुहाळा भुजां फाबै ।।२।।

थांन हीणा जितां थांन थिर थापिया, थांन धारी दिया नरां उथाप ।
प्रथी साधार चा बिड़द हद पामिया, प्रकट इण हणूमत तणै प्रताप ।।३।।

सार रौ भंमर रतनेस भानां सुतन, भूपति मांन रै मनै भायौ ।
धवंस ढूंढ़ाड़ जळ चाढ़ मारू धरा, इसै छक आपरै दुरंग आयौ ।।४।।

---

१५. गीतसार–उपर्युक्त गीत में कवि ने ठाकुर रतनसिंह चांदावत शाखा के मेड़तिया राठौड़ के युद्ध और दानादि विशेषताओं का वर्णन करते हुए लिखा है कि वह युद्धावसरों पर शत्रुओं को परास्त करने एवं याचकों को घोड़े-ऊँट आदि का दान देने में राठौड़ों की तेरह शाखाओं में अग्रणी है ।

---

१. सत्रां – शत्रुओं । भांजणौ – नाश करने वाला । सार – तलवार, शस्त्र । अवसांण – अवसर । जीपण समर – युद्ध में विजय पाने वाला । जसवास – कीर्त्ति । दियण – देने वाला । दरक – ऊँट । असि – घोड़े, तलवार । द्रब – द्रव्य, धन । सिंघाळौ – श्रेष्ठ । दस तीन साखां – तेरह शाखाओं में, राठौड़ों की तेरह शाखाएँ प्रसिद्ध हैं ।

२. मांण – मान, सम्मान । अदवां – कृपणों । तणां – का । बहौ – बहुत । तोड़िया – तोड़ दिये । खळां दळ – शत्रु-सेना । ताबै – अधीन । महाभड़ – महान् वीर । चंद रा – राव चांदा के । बिड़द – विरुद । वेढ़ीमणां – युद्ध विजेता का । तुहाळा – तेरा । फाबै – फबते हैं, शोभा पाते हैं ।

३. थांन हीणा – स्थान विहीन, बिना जागीर के । जितां – जितने । थांन – स्थान, ठिकानों पर । थिर – स्थिर । थापिया – स्थापित किये । थांनधारी – स्थान वालों को । उथाप – स्थान च्युत कर दिए । प्रथी – पृथ्वी । साधार – आधार, आश्रय । चा – का । हद – सीमा, अपार । पामिया – प्राप्त किए । इण – इस ।

४. सार रौ भंमर – तलवार का रसिक । भानां सुतन – भवानीसिंह तनय । भूपती मांन – महाराजा मानसिंह जोधपुर । भायौ – पसंद आया, अच्छा लगा । धवंस – ध्वंश । जळ चाढ़ – कीर्त्ति मान कर । मारूधरा – मारवाड़ राज्य । छक–उत्साह, जोश, वैभव सहित । दुरंग – दूर्ग में ।

१६. गीत महाराजा अभैसिंघ राठौड़ रौ

सिर छायां राज हमायु समपै, सो इक पीढ़ी राज समाज ।
कर छायां थांरी राजा कमधज, रेणव अनंत पीढ़ियां राज ॥१॥

बात हेत अरु कुरब कियां बिण, सुज कलपव्रछ गरज सरै ।
दन हित बात कुरब कर तूं दै, किसूं कलपव्रछ हौड करै ॥२॥

पारस मिळै करै नह पारस, धात प्रजा सिर कनक धरै ।
राजा तूंझ करै कविराजा, यूं पारस हो तूझ उरै ॥३॥

खळकै लहर समंद जळ खारी, दाझै मछ कछ जीव दुग्रै ।
मीठी लहर तूझ महाराजा, हाथी गांवां तणी हुवै ॥४॥

सुणजे अमी अखाड़ै सुरियंद, पीधां अमर हुवै कवि पाळ ।
सेवक अमर हुवै अजमल सुत, अमी निजर दीठां अजमाल ॥५॥

पांख हमायुं कलपव्रछ पारस, छौळ समंद सुरियंद छभा ।
अवरां नै आं तणी ओपमां, यां ओपम थांरी अभा ॥६॥

---

१६. गीतसार—ऊपर का गीत जोधपुर के महाराजा अभयसिंह राठौड़ पर कहा हुआ है । गीतकार ने अभयसिंह की कृपा का हुमांपक्षी के पंखों की छायां, कलपवृक्ष की कार्यसिद्धि, पारस की स्पर्शता और समुद्र की लहरों की भाँति नाना विशेषताओं के साथ समता करते हुए उनसे भी बढ़ कर वर्णन किया है ।

---

१. हमायुं – हुमां पक्षी । समपै – बख्शें, समर्पण करे । पीढ़ी – पुश्त । कर – हाथ की । कमधज – राठौड़ । रेणव – कवि, चारण ।

२. हेत – प्रेम, प्रीति । कुरब – मान, प्रतिष्ठा, इज्जत । सुज – वह । सरै – सिद्ध हो । हौड – समानता, बराबरी ।

३. पारस – पारस पत्थर, प्रसिद्धि है कि पारस के स्पर्श से लोहा स्वर्ण में बदल जाता है । नह – नहीं । धात प्रजा – धातु रूपी प्रजा । कनक – स्वर्ण । उरै – इधर, कम महत्त्व वाला ।

४. खळकै – छलता है, बहती है । खारी – खारयुक्त । दाझै – जलते हैं । मछ – मत्स्य, मछलियां । कछ – कच्छप । दुग्रै – दोनों । मीठी लहर – दान की मधुर तरंग । गांवां – ग्रामों । तणी – की ।

५. अमी – अमृत । सुरियंद – इन्द्र, राजा । पीधां – पीने पर । कविपाळ–कवियों का पालक । अजमल सुत – अजितसिंह के पुत्र, महाराजा अभयसिंह । दीठां–देखने मात्र से ।

६. पांख – पंख । कलपव्रछ – कल्पवृक्ष । छौळ – लहर, तरंग । समंद – समुद्र । छभा – सभा । अवरां नै – अन्यों को । आं तणी – इनकी । ओपमां–उपमा । यां – इनको । थांरी – तेरी, आपकी । अभा – हे महाराजा अभयसिंह ।

इहि सुर मानव जोड़ न आवै, बहिस किसौ नर हौड बियै ।
घर सारी जोतां छत्रधारी, थारी हौड न किणी थियै ॥७॥
——सांवळदास कविया रौ कह्यौ

१७. गीत दिखणी पवन रा बीनांण रौ जसवंतराव रौ

लियण भरथपुर थाय एकठ फिरंग आय लग, जाय तोपां निकट लाय जूपी ।
वाहि खग धाय दळ बादळां बिखेरै, राय जसवंत दिखण वाय रूपी ॥१॥
वळोवळ तूरठ हमकै मही चळ विचळ, आतसां झळ प्रबळ ढंके असमांण ।
अनळ दिखणाद रा महाबळ जसा अग्र, गया उड प्रघळ दळ सबळ फिरगांण ॥२॥
व्रज दुरग खिसारा तबळ सारा गौरां बजे, दहल पुड़ रसा रा हल हमल दुंद ।
लंक दिस प्रभंजण सारा वेग लागा, विलायत दिसा रा उडे घणां ब्रंद ॥३॥

---

१७. गीतसार—ऊपर के गीत में कवि चैनकरण ने भरतपुर के किले पर अंग्रेजों और जसवंतराव होल्कर के मध्य हुए युद्ध का रूपक मय वर्णन किया है । कवि ने अंग्रेजों की सेना को मेघ घटा और होल्कर को दक्षिण दिशा का प्रबल पवन वर्णित करते हुए लिखा है कि मेघ घटा रूपी अंग्रेज सेना ने तोपों रूपी बादलों से वर्षा रूपी गोले बरसाते हुए भरतपुर के किले को घेर लिया । किन्तु दक्षिण के प्रबल प्रभंजन रूपी जसवंतराव ने अपने खड्ग प्रहारों से उस सेना को बिखेर डाला ।

---

७. सुर – देवता । जोड़ – समतुल्यता में । न आवे – नहीं आते हैं । बहिस – जोश में भरकर, उत्साहित होकर । बियै – अन्य । सारी – समस्त । जोतां – देखते । छत्रधारी – छत्रधारण करने वाले, राजा गण । किणी – किसी से भी । थियै – हुए, होती है ।

१. थाय – हुए । फिरंग – अंग्रेज, फिरंगी । लाय – प्रचंड अग्नि । जूपी – धधकने का भाव । वाहि – चलाकर, प्रहार कर । खग – तलवार । धाय – चलकर, आक्रमण कर । बिखेरै – छिन्न-विछिन्न कर दिए । दिखण – दक्षिण । वाय – वायु, पवन ।

२. वळोवळ – बारम्बार । तूरठ – तूर्यवाद्य । हमकै – अबकी बार, इस बार । मही – पृथ्वी । चळ विचळ – चलायमान । आतसां झाळ – अग्निज्वाला । ढंके – आच्छादित । असमांण – आकाश । अनळ – पवन । जसा–यशवन्त राव होल्कर । प्रघल – अत्यधिक, विशाल, घना । दळ – सैन्य समूह । सबळ–शक्तिशाली ।

३. व्रज दुरग – व्रजभूमि में स्थित दुर्ग, भरतपुर का किला । खिसारा – खिसियाए हुए, खिसके हुए । तबळ – नगाड़े, शस्त्र विशेष । गौरां – अंग्रेजों ने । पुड़ रसा रा – पृथ्वी तल के । हल – हिल कर, चलायमान होकर । हमल – आक्रमण । दुंद – द्वन्द्व, युद्ध । लंकदिस – दक्षिण दिशा के । प्रभंजण – प्रबल वात । घणा – बहुत ।

मुणें अंगरेज दुघंटा जटा मरहटा, झले किम जुध घटा छटा खग झाट।
यम जसा दिखण रा पवन आगै, थटै नह कदै फिरंगी घटा थाट ॥४॥

चैनकरण सांदू री कह्यौ

१८ गीत बहादरसिंघ मेड़तिया रौ

वागी अखंगा काहुळां नाग करतकां सांफलै वहौ,
गुड़ै सिधू वाहुळां जुझाऊ के गाराज।
लड़ै बहादरेस धूत मूंडड़ा गैणाग लागौ,
नत्रीठा वेकटी वागौ खळा धू नाराज ॥१॥

मही चौ धड़क्के तठै लड़क्के सेसरा माथा,
खड़क्के हुड़क्के काळी कड़क्के खाणास।
झड़क्के कटारां पेस रुड़क्के मूंडड़ां जठै,
बड़क्के कंगळा कड़ा जड़क्के वाणास ॥२॥

---

१८. गीतसार–यह गीत युद्ध वीर बहादुरसिंह मेड़तिया जाति के योद्धा से सम्बन्धित है। कवि ने लिखा है कि युद्धार्थ प्रेरित करने वाले काहल नामक वाद्य बजे तथा सिंधू के स्वर गूंजने लगे। और वीर बहादुरसिंह उत्साह से आकाश को स्पर्श करता हुआ वैरियों के मस्तकों पर कृपाणों के प्रहार करने लगा।

---

४. मुणे – कहते हैं। दुघटा – दुर्घट, दुर्जय। जटा – जाट। झले – सहन करे, प्रहार करे। छटा – बिजली। झाट – वार, आघात। अगै – आगे, सामने। थटै – ठहरे, शोभा पावे। कदै – कभी भी। फिरंगी घटा – अंग्रेज सेना। थाट – समूह।

१. वागी – बजी, ध्वनित हुए। अखंगा – अमोघ। काहुळां – युद्धोत्साही ढोल, शीघ्रता, भयानक। नाग – हाथी। सांफळै – युद्ध। गुड़ै। गड़गड़ाहट करे। सिंधू – सैंधव वाद्य, सिंधू राग। जूझाऊ – जूझने वाले। गाराज – गर्जने वाले। धूत– वीर। मूंडड़ा – मस्तक। गैणाग – आकाश। नत्रीठा – अधीर। वेकटी – विकट। धू – मस्तक। नाराज – तलवार।

२. धड़क्के – धड़धड़ की ध्वनि करे। तठै – वहाँ। लड़क्के – झुकते, हिलते, लड़ते। सेस – शेषनाग। माथा – मस्तक। खड़क्के – खड़ खड़ की ध्वनि, गर्जन। हुड़क्के – उमंग में कूदे। लड़क्के – क्रोध में गर्जे, कड़ड़ ध्वनि करें। खाणास – खाने वाली। झड़क्के – झटका, प्रहारध्वनि। रुड़क्के – लुड़कते। मूंडड़ा – मुण्ड, मस्तक। बड़क्के – बड़ड़ की आवाज, टूटने की ध्वनि। कंगळां – कवचों के। कड़ा – लोह की कड़ियां। जड़क्के – चोट करते हैं। वाणास – तलवार।

रत्ता पी गणंक्के कै भंणक्के ये बीमांण रंभा,
लोयणां भणंक्क डंड मणंक्का लेवाण ।
हुवै पंखां भड़क्का ग्रीधाण बीर है हणक्के,
कैमरां संणक्के बाजै खड़क्का केवाण ॥३॥

खिलै महाकाळी दे दे ताळी नचै वीर खेला,
हेला मुण्डमाळी पढ़े संचे हार हेत ।
इखां जंत्र-पाणां बंचै बाहा बाणां बाहा ईसों,
खागां खळां सुभाणी बिरच्चे बीर खेत ॥४॥

कही व्है कुघाटां घाट खगाटां बिछोड़ै कंध,
मही धीम पाटां धू निराटां माळ मैन ।
बीजे रूधे बीखेरी अराबां सूधी आटां बाटां,
सार भाटां बीधूंसै सतारा वाळी सैन ॥५॥

मारहठां कटै कंगी हजारां फिरंगी मैण,
थटै सिंधी हजारां अमीरां तणा थाट ।
दादे काम आयां पछै जोधांण पालटे दीधो,
पोते काम आयां पछै लूटे मेदपाट ॥६॥

---

३. रत्ता – रक्त। रंभा – अप्सरा। लोयणां – नेत्रों। ग्रीधाण – गृद्धपक्षी। बीर – योद्धा, शिव के गण। कैमरां – धनुषों। संणक्के – ध्वनि विशेष। बाजै – बजते हैं होते हैं। खड़क्का – तलवार की प्रहारध्वनि। केवाण – तलवार।

४. खिलै – प्रसन्न हुए, क्रीड़ा करे। बीर – बावन वीर। हेला – आवाज। मुंडमाळी – महादेव। संचै – संग्रह करे। हार – मुण्डमाला। हेत – लिए। इखां – देखे। जन्त्र पांणां – नारद। खागां – तलवारों से। बिरच्चे – करते हैं।

५. कुघाटां – बेडोल, कुरूप। खगाटां – तलवारों। बिछोड़ै – छुड़ावे, छोड़े। कंध – कंधे। धीम – धूम्र। निराटां – अत्यधिक। बीजे – दूसरा। रूधे – रघुनाथसिंह। बीखेरी – छिन्नविछिन्न की। अराबां – तोपों। सूधी – सहित। *आटां-बाटां – इधर-उधर, स्थान बे स्थान।* *सार – तलवार।* भाटां – प्रहारों। बीधूंसै – विध्वंस करे। सतारावाळी – सतारा के स्वामी की, मरहठों की।

६. कंगी – कवचधारी, यूरोपियन। सिंधी – सिंधिया। अमीरां – अमीरों। तणा – का। थाट – समूह। जोधांण – जोधपुर राज्य। पालटे – पलटे, दूसरों के अधिकार में जाए। दीधो – दिया। पोते – पौत्र। मेदपाट – मेवाड़, उदयपुर राज्य को।

अम्मरां वधायो लोक सरायो वैकूंठ वाळी,
सूरां थोक थायौ वेद वचायौ सरव ।
आवा काम परां हूंत पठी घोड़े चाल आयौ,
पायौ जालमेस हूंता सवायौ परव ॥७॥
—प्रभूदान मोतीसर रौ कह्यौ

१६. गीत दुरगादास करणोत राठौड़ रौ

वडा लियां भड़ अनड़ कस तुरंग सजते विखो, अभंग जंग जीत व्रद भुजां ओपै ।
सूर बड सुरंग रंग चढ़ियौ असमरां, किया नवरंग विरंग दुरंग कोपै ॥१॥
प्रगट अकबर लियौ झपट जुध पाधरै, दुरंग थट विकट सुण साह डरियौ ।
खग हटक मन बिच कटक खुणसांण रै, फटक मुर खट हुय पाल फिरियौ ॥२॥
खंड गिणत वरण सुज गया उडै खंगा, पतंग जिम हुती असपत उवर प्रीत ।
सकळ हिंदवांण चै बखत संत सूर तन, चौळ रंग रंग रहे राठौड़ रै चीत ॥३॥

---

१६. गीतसार – ऊपर लिखा गीत प्रसिद्ध राठौड़ वीर दुर्गादास से सम्बन्धित है । गीतकार सबला सांदू ने गीत में महाराजा अजित सिंह के विपत्तिकाल में दुर्गादास ने जोधपुर राजवंश तथा राज्य की रक्षा के लिए जो युद्ध लड़े, उनका ओजस्वी वर्णन किया है । वह लिखता है कि विपत्तिकाल में साथी योद्धाओं का सहयोग प्राप्तकर दुर्गादास ने तलवारों को लाल रंग में रग दी और बादशाह औरंगजेब (नवरंग) के रंग को बिरग कर दिया ।

---

७. अम्मरा – देवताओंने । वधायो – स्वागत किया । सरायो – सराहना की । सुरां – देवताओं । थोक – समूह । थायौ – हुआ । परांहूंत – दूर से । पठौ – वीर युवक । पायौ – प्राप्त किया । जालमेस – जालिमसिंह । हूंता – से । परव – पर्व ।

१. भड़ – योद्धा । अनड़ – बंधन में नहीं आने वाले । कस – सजा, तैयार कर । तुरंग – घोड़ा । सजते – तैयार होते । विखो – विपत्ति काल । अभंग – अनापशनाप, वीर । जंग – युद्ध । व्रद – विरुद । ओपै – उपमा प्राप्त करे, शोभा पावे । सुरंग रंग – लाल रंग । चाढ़ियौ – चढ़ाया । असमरां – तलवारों के । नवरंग – औरंगजेब बादशाह । विरंग – बदरंग । दुरग – दुर्गादासने । कोपै – कोप कर ।

२. झपट – छीनकर । पाधरै – सीधे मैदान में । दुरंग – दुर्गादास के । थट – सेना । खग – तलवार । खुरसांण – बादशाह, यवन । मुर – तीन ।

३. सुज – वह । खगां – तलवारों से । असपति – बादशाह । उवर – उर, हृदय । चै – के । चौळ रंग – लाल रंग । चीत – मन में ।

महल रंग सहल रंग राग रंग न मांने, तीख रंग पांन अभमांन रंग त्याग।
समर पोसाक रंग रीझ पतसाह सुज, खंड दिखिण गयौ चमंके कमंध खाग ॥४॥

आसउत तणी आकाय देखैं अकळ, साहजहां सुतन पटकै घणौ सीस।
रीस सुज हुती मन नींबहर ऊपरो, रौद रौदां सरस काढ़वी रीस ॥५॥

—सबळा सांदू रौ कह्यौ

२०. गीत पाबू धांधलौत राठौड़ रौ

पाबू पाट रै रूप राठवड़ां, सेवै तूझ सधीरा।
वेगड़े पाल्ह लीया वरदाई, सिंध तणा सांढ़ी रा ॥१॥

पावू परबत कीया पाधरा, घरहर पांखर घोड़ै।
सीहा हरै लीया सांढी रा, लाखा ऊपर लोडै ॥२॥

पछम तणी पाबू पाटोधर, बिढ़ै कमंधज वाळी।
पर दीपां हूं आंणी प्रगड़ी, किवळ राय कमाळी ॥३॥

---

२०. गीतसार—उपर्युक्त गीत परम वीर पाबूजी राठौड़ का है। पाबूजी की राजस्थान के लोक देवताओं में गणना होती है। गीतकार ने महावीर पाबूजी द्वारा सिंध के वेगड़ा शासक की ऊँटनियों का बलात् अपहरण कर मारवाड़ में घेर लाने का वर्णन किया है।

---

४. महल—रणवास का। सहल—सैर सपाटे का। राग रंग—नाच गान का। तीख—बड़प्पन को, श्रेष्ठता का। समर—युद्ध। चमंके—चमकते। कमंध—राठौड़।

५. आसउत—आशकरण पुत्र, दुर्गादास। तणी—की। आकाय—बल, शक्ति। साहिजहां सुतन—शाहजहाँ पुत्र औरंगजेब। घणौ—बहुतेरा। रीस—रोष, क्रोध। नींबहर—नींबा का पौत्र दुर्गादास। रौद—शत्रु, यवन। काढ़वी—निकाली।

१. पाबू—पाबूजी राठौड़। पाट रै रूप—पट्टाधिकारी के तुल्य, राजा के सामान। राठवड़ां—राठौड़ क्षत्रियों में। सेवै—सेवा करते हैं, आराधना करते हैं। तूझ—तेरी। वेगड़े—मुहम्मद वेगड़ा, सिंध प्रान्त का शासक, यह प्रान्त अब पाकिस्तान में चला गया है। तणा—का। सांढ़ी रा—सांडियाँ, ऊँटनिएं।

२. परबत—पहाड़ों को। पाधरा—सीधे, सपाट। घरहर—गर्जना। पाखर—घोड़ों के रक्षा कवच, घोड़ों की झूलें। सीहाहरै—राव सिंहा का वंशज, मारवाड़ के राठौड़ राव सिंहा (सियाजी) के वंशज हैं। लोडै—मथकर, विलोड़न कर।

३. पछम तणी—पश्चिम दिशा का। पाटोधर—पट्टाधिकारी, राजा। विढ़ै—लड़कर। कमंधज—कर्मध्वज, राठौड़। पर—अन्य, पराये। दीपां हूं—द्वीपो से। आंणी—लाया। प्रगड़ी—प्रातःकाल। किवळ राय—मुसलमानों के मुखिया की, बादशाह की। कमाळी—क्रमेलक, ऊँटनियाँ।

२१. गीत पाबूजी राठौड़ धांधलौत रौ

सदा रुखाळौ भुरजाळौ पावू कमंधां वंस रौ सूर,
चारणां आसरो थारौ सदा रहै नचीत।
प्रवाड़ां अनेकां इळा नकौ कोई पार पावै,
आवै यूं ऊताळौ साय वंस रौ अदीत ॥१॥

प्रमांणी आसती बातां कळू में ताहरी पुणै,
सुणै साद रोग पीड़ मेट दै संसार।
सांच रौ भरोसो कहां रात दीह करां सेवा,
ऊबारौ विखंमी वार आपरौ आधार ॥२॥

प्रिथमी कीरत्ती सारी प्रचा तो अनेकां पेखै,
देखै देस देसां में प्रदेसां साथे देख।
करै रोग प्रेत-चाळौ सांकड़े ऊवेल करै,
पेलै व्याध टाळौ इसौ दूसरौ न पेख ॥३॥

---

२१. गीतसार—ऊपर लिखित गीत महावीर पावूजी राठौड़ से सम्बन्धित है। गीतकार ने पावूजी की वीरता, विवाह, खीचियों से युद्ध, वीरगति प्राप्त करने और उनकी कृपा से सांसारिक व्याधियों के नाश आदि का सविस्तार वर्णन किया है। इसमें उनके परिचयों और प्रवाड़ों की प्रशंसा की गई है।

---

१. रुखाळौ – रक्षक। भुरजाळौ – बुर्जवाला, गढ़पति। कमंधां – राठौड़। सूर – सूर्य, वीर। आसरो – आश्रय। नचीत – निश्चिंत। प्रवाड़ा – प्रशस्ति काव्य। इळा – पृथ्वी। नकौ – कोई नहीं। ऊताळौ – सत्वरता से। साय – सहायता पर। अदीत – आदित्य, सूर्य।

२. प्रमांणी – प्रामाणिक। आसती – आस्तिकता की, समर्थता की। कळू – कलियुग। ताहरी – तेरी। पुणै – कहते हैं। साद – शब्द, आवाज। पीड़ – पीड़ा, कष्ट। मेट दै – मिटा देता है। दीह – दिन। ऊबारौ – बचाओ, उद्धार करे। विखंमी वार – विषम समय में।

३. सारी – समस्त। प्रचा – परिचय, चमत्कारी कार्य। पेखै – देखें। प्रदेसां – विदेशों में। प्रेत चाळौ – भूत प्रेतात्माओं के उपद्रव। सांकड़े – संकट समय में। ऊवेल – रक्षा, सहायता। पेलै – नष्ट करे, निवारण करे। व्याध – व्याधि। टाळौ – दूर करे। इसौ – ऐसा।

आहंसी राम री बंधु सेस री औतार ओपै,
कळानिधी कोपै मेघनाद पै करूर ।
राकसां बिणास करे अजादा मही री राखी,
जकौ साखी सूरचंद खिती री जरूर ॥४॥
धांधळां आचार धरै पधारै सरूप धारै,
धारै मनां घोड़ी काज बीचारै सधीर ।
आसती सगती थारै ओपमां बछेरी आछी,
क्रांमती सांमळां साथे आवियौ कंठीर ॥५॥
बतावौ देवळा बाई काळमी कठैक बंधी,
बणै बात भूठी नकौ लेण री बिचार ।
बिचारे पाल रा सवाल अंबिका ऊचार बोली,
देऊं ना अछेरी हूं तौ अंगजी दातार ॥६॥
खोड़लो खितीस धरा जायेलौ विसेस खोटो,
बूड़ा वाळौ भाहेलौ सीतळावाळौ बहांण ।
दुस्ट व्है बेराजी खैंग वास्ते सक्रोध दाभ्यौ,
पांणां जोस बाज्यौ वित्त घेरसी प्रमाण ॥७॥

---

४. आहंसी – अंशधारी, साहसी, सामर्थ्यशाली । सेस री – लक्ष्मण का । ओपै – शोभित हुए । कोपै – कोप करे । बिणास – विनाश, संहार कर । अजादा – मर्यादा । मही – पृथ्वी । जकौ – वह, जो । साखी – साक्षी । सूरचंद–सूर्य-चंद्र । खिती – पृथ्वी ।

५. धांधळां – धांधल के वंश का । सरूप – स्वरूप । धारै – धारण करता है । आसती – शूरता, आस्तिकता की । सगती – शक्ति । थारै – तेरे, तुम्हारे । ओपमां – उपमा, शोभा । बछेरी – घोड़ी । क्रांमती – करामात वाली । सांमळां– श्यामल । कंठीर – सिंह ।

६. देवळाबाई – देवलबाई चारणी, जिसे चारण समाज शक्ति का अवतार मानते हैं । काळमी – घोड़ी का नाम । कठैक – कहां पर, किस जगह पर । नकौ – कोई नहीं । पाल रा – पाबूजी के । सवाल – प्रश्न । ऊचार – उच्चारण कर । अछेरी – अच्छी । अंगजी – अजयी ।

७. खोड़लो – कुटिल, दुष्ट । खितीस – पृथ्वी पति, राजा । धरा जायेलौ – जायल भूभाग, जायल ठिकाना का । खोटो – दुष्ट । बूडावाळौ – पाबूजी के बडे भाई बूड़ा का । भाहेलौ – मित्र । सीतळा वाळौ – शीतला माता का । बहांण – सवारी, गदर्भ । बेराजी – नाराज । खैंग – घोड़े, घोड़ी । दाझ्यौ – जल भुन गया । पांणां – भुजाओं, शक्ति । वित्त – गोधनादि । घेरसी – हरण कर ले जायगा ।

रुखाळी धेन रै काळी लैण री विचार राखौ,
सांचा वैण भाखौ वीरा निभाज्यौ संसार।
पड़तां मोय में कांम करां लियें आखतां पूगौ,
वाई आऊं तीजी ताळी हिया में विचार ॥८॥

लेजावौ कमंधां-केत खयंगां खोल कै लीधी,
नौछावरां कीधी वारै लेवतां नरेस।
पागड़े देवतां पांव सेल भुजा पीठ पाबू,
हंस उदैगिरी ऊंचो आवियौ हमेस ॥९॥

लेवती ठेकांण वाजी सेस घू पयाळ लांबी,
वैनतेय खसै वेग वणै न विचार।
कांमती सपूती लीधां कोळूमंड कीत काज,
ओपै करां परांपरी बुध री आचार ॥१०॥

सांडियां डायजे दैण वैण जो उचारया सही,
कही जत्ती वातां अवै करां सोभा काज।
आंथूण लंक सूं आंण बाई नूं सौंपद्या अच्छी,
महावीर गयो कच्छी धरा में समाज ॥११॥

---

८. रुखाळी – रक्षक के कार्य का भाव। धेन रै – गायों के। काळी – कालमी घोड़ी। लैण री – लेने का। वैण – वचन। भाखौ – कहो। वीरा – भाई का संबोधन। निभाज्यौ – निभाना। मोयमें – मेरे में। आखतां – उतावले, तत्परता से, कहते ही। पूगौ – पहुँचें। वाई – बहिन अथवा पुत्री का सम्बोधन। ताळी – ताली। हिया में – मन में।

९. कमंधां केत – राठौड़ों के ध्वजपति, राठौड़ नरेश। खयंगां – घोड़ों में से; घोड़ी। नौछावरां – न्योछावर। वारै – बाहर। सेल – भाला। हंस – सूर्य। उदैगिरी– उदयगिरि, उदयाचल। आवियौ – आया।

१०. ठेकांण – घोड़ी के कूदते चलने को ठेका देना कहते हैं। वाजी – घोड़ी। सेस घू– शेषनाग के सिर। पयाळ – पाताल। वैनतेय – गरुड़ पक्षी। खसै – सटपटा जाना। कोळूमंड – कोलूमंड, पाबूजी के ठिकाने का मुख्यावास। कीत – कीर्ति। परांपरी – परम्परागत।

११ सांडियां – ऊंटनियाँ, मादा ऊँट। डायजे – दहेज में। दैण – देने का। वैण – वचन। उचारया – उच्चारण किए। जत्ती – जितनी। आंथूण – पश्चिम दिशा की। लंक – लंका, सिंध में स्थान विशेष। आंण – लाकर। वाई नूं – बाई को, पाबजी की भतीजी के लिए प्रयुक्त हुआ है। कच्छी – कच्छ प्रदेश।

उडंडां ऊपड़ी बागां टोळां नूं घेरिया इसा,
किसा देस साहिजादा धाड़ा में करूर।
बोलै जो फेरादी कूक सांभळे जवन्ना बांगां,
जाडा थंडां लागा पीठ सांकड़े जरूर ॥१२॥

भेळका करंता आ वात दोहूं कांनी देख भारी,
सजै ना करारी सोभा भाईपै सुधार।
गया बेहूं फौजां राजी-बाजी व्है विचार गाढ़ा,
दिया डेरा सोढ़ां बागां अगंजी दातार ॥१३॥

पधारे कंवार सोढ़ी आसती सकत्ती पूरी,
सहल आये करेबा विचार लीधी सार।
अनादि प्रेम री जोड़ी ठेठ सूं बणाई आ तो,
व्रथा अवर झूठी वातां बणावै विचार ॥१४॥

प्रभाते संवार होय सांडियां ठिकांणै पूगी,
पायो सोढ़ां घरै सारी वात रौ प्रमांण।
सांभळी प्रभत्ती कानां टीका रौ समाज साज्यौ,
ओपै कोळूमंड पाबू अगंजी दीवांण ॥१५॥

---

१२. उडंडां – घोड़ों को। ऊपड़ी – उठी। बागां – लगामें। टोळा नूं – ऊँटों के समूहों को। घेरिया – घेरे में लेकर हांका। धाड़ा – डकैती का कार्य। फेरादी – फरियादी। कूक – पुकार। सांभळे – सुनी, । जवन्ना – यवनों ने। बांगां – सुनकर, पुकारें। जाडा थंडां – सघन समूह। लागा पीठ – पीछे लगे। सांकड़े – निकट में, संकट में।

१३. भेळका – भिडन्त, मेल-मिलाप। दोहूं कांनी – दोनों पक्षों की ओर। भाइपै–भाई-बंधुत्वपन। गाढ़ा – गहरा, पक्का। दिया डेरा – विश्राम के लिए ठहर गए, पड़ाव डाला। सोढ़ां बागां – उमरकोट के सोढ़ा राजपूत शासक के बाग में। अगंजी–अजयी। दातार – दानी।

१४. कंवार – राजकुमारी। आसती – आस्तिकता में। सकत्ती – शक्ति। पूरी – परिपूर्ण। सहल – सैर सपाटे के लिए। अनादी – अनादिकालीन। ठेठ सूं – प्रारंभ से ही, आदिकाल से। व्रथा – व्यर्थ।

१५. प्रभाते संवार – शीघ्र प्रभातकाल में। सांडियां – ऊँटनियाँ। ठिकांणै – जिस स्थान पर भेजनी थी वहाँ, स्थान। पूगी – पहुँच गई। पायो – प्राप्त क्रिया, मिला। सांभळी – सुनी। प्रभत्ती – प्रभुता की। टीका रौ – वाग्दान की रस्म का। साज्यौ – सजाया, सिद्ध किया। ओपै – सुशोभित होता है। दीवांण – राजा।

लिगन्ना नारेळ लेर देर सावौ नकीं लीधो,
सजाये ठीकाणां वेहूं व्याव का सामान ।
हुंगामां होकवा राग रंग रा हमेस हुवै,
अठी जानवाळी सोभा वणावे आजान ॥१६॥

होय कै निकासी वनौं वंधवां समेत हल्यौ,
ऊझल्यौ सामुद्र सेनां हलीतौ उदार ।
सांमेळै सोढ़ाण आये घटा रौ सारूप साजी,
जोसैल नचाये वाजी दौड़ाये जोधार ॥१७॥

अलंगां ऊमरांकोट तोरणां काळमी आई,
नांमी वंस वधाई आरती नरां नाथ ।
बिप्रां गंठ-जोडी बांघ वेदका समीप वैठे,
वंनी वंनीं मेहंदी हाथ मिळायौ विख्यात ॥१८॥

गांणा गीत साखी वेद ऊचारै गैणाग गाजै,
राजै रूप आंगणै इन्द्र सो सची रूप ।
सौळाही कळा सूं सोम ऊगियौ प्रकास सारे,
वळोवळी ऊचारै न आयौ इसौ भूप ॥१९॥

---

१६. लिगन्ना – विवाह की एक रस्म, लग्न । नारेळ – नारियल । लेर – लेकर । देर – देकर । सावौ – विवाह का दिन । लीधो – लिया । व्याव – व्याह, विवाह । हुंगामां – उत्सवों । होकवा राग रंग – नाच-गान के आयोजन । अठी – इधर । जान वाळी – बारात की ।

१७. निकासी – विवाहार्थ दूल्हा के अपने घर से विदा होते समय की रस्म, राजी खुशी । बनौं – बनड़ा, दूल्हा । हल्यौ – चला । ऊझल्यौ – छलका, उमड़ा । सांमेळै – बारात के दुल्हिन के गाँव की सीमा पर पहुँचने पर की जाने वाली एक रस्म, वर पक्ष तथा कन्यापक्ष का प्रथम सम्मिलन । सोढ़ाण – उमरकोट के सोढ़ा क्षत्रिय । घटा री – मेघ घटा का, सेना का । जोसैल – जोशीले । बाजी – घोड़े । जोधार – योद्धा ।

१८. अलंगां – ऊँची उडान लेती । तोरणां – विवाह में तोरण द्वार पर । विप्रां – ब्राह्मणों ने । गंठ-जोड़ी – गठ-जोड़ा, ग्रंथि-बंधन । वेदका – विवाह वेदी के । बनौं वंनी – वर वधू । हाथ मिळायौ – हथलेवा मिलाया ।

१९ गांणा गीत – गीत-गायन । साखी – साक्षी । गैणाग – आकाश । राजै – शोभित होते हैं । आंगणै – आंगन में । सौळाही कळा सूं – सोलह कलाओं सहित । ऊगियौ – उदय हुआ । वळोवळी – बारम्बार । न आयौ – नहीं आया ।

खेधे लाग राव खीची चारणां वित्त नूं खंच्यौ,
संच्यौ मनां चायौ इसौ आयौ यूं औसांण ।
पूकारो देवळा अवै आपरा पखेत पाबू,
पांणां जोस हूं तो आथ ले जाऊं अमांण ॥२०॥

आखती सांवळी रूप देवळा ऊंताळ आई,
चाही काळी हींस ईसी सुणांई अचीत ।
पाठ-वेद साखी पाल फेरां में भणंकौ पायौ,
नांखे गांठ-जोड़ आयौ पीठ पै नचीत ॥२१॥

बळीवळी बीरहाक नौपतां नंगारां बागी,
सेना पीठ लागी जोस धारियां सक्रोध ।
उबंबरां आसमांण भुजाटां सेल री अण्यां,
वेखौ कंस वंस माथै तड़िता विरोध ॥२२॥

खयंगां बाग पै हाथ जीमणै बाणास खागां,
रागां सिंधु लागां थकां वावड़्या राठौड़ ।
आगा मती पांवंडा विचारो घड़ी मीच आळी,
महा चक्र काळी क्रोध खूटसी मरोड़ ॥२३॥

---

२०. खेधे – युद्ध, विरोध । राव खीची – चौहानों की खीची शाखा का राव जिन्दराव । वित्त – गोधन । खंच्यौ – खींचा, अपहरण किया । संच्यौ – संचय किया हुआ, पूर्व विचारित । चायौ – चाहा । औसांण – अवसर । देवळा – देवलदेवी चारणी । पखेत – पक्षधारी । पांणां – बलपूर्वक । हूंतो – मैं तो, से । आथ – द्रव्य, गोधन । अमांण – अभी, तुम्हें अपमानित कर ।

२१. आखती – अधीरता से, त्वरा से कहती हुई । सांवळी – चील का रूप धारण कर । ऊंताळ – तेजी से, शीघ्रता से । काळी – कालिमी घोड़ी । हींस – हिनहिनाहट । पाल – पाबूजी ने । फेरां में – भांवरों में । भणंको – भनका, धीमी-सी आवाज । नांखे – डाल कर, छोड़ कर । पीठ पै – घोड़ी की पीठ पर ।

२२. बळीवळी – बारम्बार । बीरहाक – वीरनाद, बावन वीरों की आवाज । नौपतां – नौबत वाद्य । बागी – बजी, हुई । उबंबरां – उमरावों की, सामर्थ्यशालियों की । भुजाटां – भुजाएँ । अण्यां – नोंकें । वेखौ – देखो । तड़िता – विद्युत ।

२३. खयंगां – घोड़ों की । बाग – रासों, लगामों । जीमणै – दाहिने । बाणास – तलवार । खागां – तलवारें । रागां सिंधु – सिंधू राग जो युद्ध-रागिनी कही जाती है । थकां – सहित । वावड्या – पास जा पहुँचे । आघा – आगे, दूर । पांवंडा – कदम । मीच आळी – मृत्यु की । काळी – कालिका देवी । खूटसी – छूटेगी, समाप्त होगी ।

वरम्मा खंणकां तेगां संणकां कवाणां वागा,
खळां क्रोध लागा वीरभद्र सा विख्यात ।
ऊघड़ै कपाळी अयनेत तौ महेसवाळी,
हंसै वीर ताळी काळी भरे पत्र हाथ ।।२४।।
दड़ोदड़ी तूट माथा कमंधां पांवंडा देवै,
रिमां सीस खाथा सार वजावै आरांण ।
हैकंपे कायरां प्राण छूटगा वीरांण हांसै,
भैचक्के भूलोक रत्थां थंभायी सु भांण ।।२५।।
बीजूजळा दळां वीच ढावड़े ऊछटी वागां,
सत्रां सीस खागां अंगां घड़च्चा सकोप ।
ऊछळै कळेजा टूक कवाणां पांव में आंतां,
लाखां वातां स्रिस्ट री मजादा व्हैतां लोप ।।२६।।
अड़ोथड़ी आग वूठां धकावै वीरांण आघा,
महावीर क्रोध चाळै लागा तो महीप ।
किरीठी कराळो रीस जैद्रथी मिटावा कोप्यौ,
सत्रवां भुजाटां करी भीम ज्यूं सहीप ।।२७।।

---

२४. वरम्मा – कवचों की कड़ियों के । खंणकां – खनन की ध्वनि । तेगां–तलवारें । संणकां – बाणों के चलने के शब्द । कवाणां – कमानों, धनुषों । वागा – बजे, हुए । खळां – शत्रुओं । ऊघड़ै – खुले । कमाळी – कपाली, शिव । त्रय नेत – तृतीय नेत्र । बीरताळी – बावन वीरों की ताली । काळी – कालिका देवी, रण-चंडी । पत्र – पात्र खप्पर ।

२५. दड़ोदड़ी – ध्वनि विशेष करते हुए । तूट – टूट कर । माथा – मस्तक । कमंधां– राठौड़ों । पांवंडा – कदम, डग । रिमां – वैरियों के । खाथा – शीघ्रता से । सार – तलवार । बजावै – चलाते हैं । आरांण – युद्ध में । हैकंपे – हाहाकार की ध्वनि । वीरांण – वीरों के । भैचक्कै – भय चकित । थंभायी – रोका । सुभांण – सूर्य ने ।

२६. बीजूजळा – विद्युत, तलवार । दळां – सैन्य समूह । ढावड़े – (?) । ऊछटी – उछली । वागां – घोड़ों की लगामें । सत्रां – शत्रुओं । खागां – तलवारें । घड़च्चा – खण्ड, टुकड़े । कळेजा – कलेजे । टूक – टुकड़े । कवाणां – धनुषों । आंतां – आंतें, अंत्रावली । स्रिस्ट री – संसार की, सृष्टि की । लोप – लुप्त ।

२७. अड़ोथड़ी – एक के ऊपर एक, अनापशनाप । वूठां – बरसने पर भी । धकावै – आगे की ओर ही बढ़ते हैं । वीरांण – वीर । आघा – आगे । क्रोध चाळै – क्रोध में विग्रह, क्रोध के वशीभूत कार्य में । किरीठी – अर्जुन । रीस – क्रोध । जैद्रथी – जयद्रथ को । कोप्यौ – कुपित हुआ । भुजाटां – भुजबल से । सहीप – वस्तुतः वैसी ही, सही ।

मचायौ सोण री कीच द्रोण सी दिखायौ मांनूं,
तेगां सूं रचायौ ख्याल अनोखौ तमास ।
छकै छाक लोहां पूर आरबां विमाणां छायौ,
हैकम्पे भूलोक आयौ मुनिद्रां सहास ॥२८॥

खोपरां खणंक्के बांण बिछूटै अनेकां खळां,
संणक्के अंग में सार बहंतां सधीर ।
तड़च्छे द्रोयणां टूक घड़च्छे भुजाटां तेगां,
कड़क्के खीचियां माथै रड़क्के कंठीर ॥२९॥

आठ सै खळां नै हेक ढावड़ै विरोळया आचां,
दरोळया देयंतां दैवां मथायौ खीरोध ।
अचायौ दिखायौ तौर सारंगां खगेस आयौ,
सिखायौ पिनाकी बीरभद्र सो विरोध ॥३०॥

लीधो टाळी गायां छोड़ खीचरांण पुळे लागा,
हार भागा पड़ेगा दिखाया इसा हाथ ।
नचाया वीरांण छौना भराया पत्र तौ नांमी,
वांमी-बंध पाबू फतै बजाई विख्यात ॥३१॥

---

२८. श्रोण रौ । लोहू का । कीच – कीचड़, कर्दम । द्रोण सौ – द्रोणाचार्य के समान । तेगां सूं – कृपाणों से । रचायौ – किया, रचा । ख्याल – खेल, युद्ध क्रीड़ा का । तमास – तमाशा । छकै छाक – आघातों से आपूर्ण, घावों से छके हुए । आरबां – तोपों । छायौ – ढंक गया । हैकम्पे – कोहराम, हाहाकार पूर्ण कम्पन । सहास – हंसना ।

२९. खोपरां – खोपड़ियां । खणंक्के बांण – बाणों की ध्वनि । बिछूटै – खण्डित होते हैं । खळां – शत्रुओं के । संणक्के – ध्वनि विशेष । सार – लोहा, तलवार । बहंतां – चलते, प्रहार होते । तड़च्छे – तड़फते हैं । द्रोयणां – वैरियों के । घड़च्छे – टुकड़े । भुजाटां – भुजाएं । तेगां – कृपाणों के । कड़क्के – कड़ड़ की ध्वनि । रड़क्के – चुभते हैं ।

३०. हेक – एक । ढावड़ै – किशोरवय वाले ने । विरोळया – मथ दिए । आचां – भुजाओं से । दरोळया – मंथन किया । देयंता – दैत्यों ने । मथायौ – विलोड़ा । खीरोध – क्षीर सागर । सारंगां – विष्णु । खगेस – गरुड़ । पिनाकी–शिव ।

३१. टाळो – किनारा काटा । पुळे गया – भाग गए । छौना – बालक, पुत्र । पत्र – खप्पर । वांमी बंध – बांए हाथ से पगड़ी बांधने वाला, पाबजी । फतै – विजय ।

आढ़ंगी केकांण फेर सुरभी अेखठी आंणी,
जांणी मही सूर चंद्र रिसी तो जुगाद ।
देवळा संभाळो बाई आपरी गायां नै देखो,
ऊचारो संसारी वात निभाई अनाद ॥३२॥

जोवतां धेन कै कांनी न दीठौ केरड़ो जांणी,
आंणी इसी कांई रूप गोर री उदार ।
सुणी इसी वांणी बाग पलटांणी धवे सुजी,
वाई आ तो जांणी नथी न कीधो विचार ॥३३॥

सोर में पडंतां आग झाळ सी कराळी सही,
कपाळी जटेस वाळी खुल्ली करे कोप ।
ताळी नको बागी फेर खीचियां नावड़े तीखा,
आविया विमांणां वैठ अंबरां स ओप ॥३४॥

ससत्रां भीड़तां टूक कृपाणां सीस पै साजै,
झड़ै डाळ द्रुमां अंगां जुडंता जोधार ।
नट्टी ज्यूं कुलट्टां घोड़ी काळमी उछट्टी नैड़ी,
भालाळे तोकियौ सेल हिया में विचार ॥३५॥

---

३२. आढ़ंगी – अनोखी रीति से, भयंकर रूप से । केकांण – घोड़े । सुरभी – गायें । अेखठी – एकत्रित । आंणी – लाये । मही – पृथ्वीलोक । अनाद – अनादि ।

३३. जोवतां – देखने पर । कांनी – तरफ । न दीठौ – नहीं दीखा । केरडो–वछड़ा, वत्स । गोर री – गायों को रात्रि में बाँध कर रखने का स्थान या अहाता । वाग – घोड़े की लगाम । पलटांणी – वापिस फेरी । आ तो – यह तो । जांणी नथी – जान नहीं पाया था । कीधो – किया ।

३४. सोर – बारूद में । झाळ सी – ज्वाला के सदृश । कराळी – कराल, भयंकर । कपाळी जटेसवाळी – जटाधारी शिव की । खुल्ली – खुलने पर । नको – नहीं । बागी – वजी । फेर – फिर । नावड़े – पीछा कर पास जा पहुँचे । तीखा – तेजस्वी, तीक्ष्ण । विमांणां – विमानों में । अंबरां – देवता ।

३५. ससत्रां – शस्त्रों को । भीड़तां – कसते, टकराते । टूक – टुकड़े । कृपांणां – कृपाणों, तलवारें । साजै – प्रहार करते हैं, उठाये हुए । झड़ै – गिरते हैं । डाळ द्रुमां – वृक्षों की शाखाएँ । जुड़ंतां – भिड़ते समय । कुलट्टां – कुलांचें । उछट्टी– उछली । नैड़ी – निकट । भालाळे – भाला शस्त्रधारी । तोकियौ – उठाया, निशाना सांधा । सेल – भाला को । हिया में – हृदय में, मस्तिष्क में ।

बोलियौ विचारो जिंदो खीचियां भूप जो बंकौ
संकौ मांण हेटो प्राण सु भाळो सैंसार ।
पाबू कै दी वाळे पाप पेमदे बीच में पेखौ,
जीवदान देखौ ध्रम दूजौ ना जूभार ॥३६॥

ऊबरै वचन्ना हीण टाळो देर हुवौ आघौ,
साघौ सारो मेलगो संग्राम हेके साथ ।
सोढ़ी काज लपेटो भालाळे सताबी सूंप्यौ,
विचारी सुरंद्रा लोक बणी आ विख्यात ॥३७॥

पूगियौ सांढ़ियो आंण सोढ़ांण प्रमाण पायौ,
सोढ़ी नै सुणायौ वैण मोळियो सनेस ।
सताबी सिनांन झळां मंगळा प्रळोक सागौ,
मनां में उछाह लागौ पती रौ हमेस ॥३८॥

चम्मरां ढुळ'तां चौजां अम्मरां विमाणां चढ़ै,
वढ़ै क्रीत प्रथी सारी करंतां वाखांण ।
इंद्र रा आवास सुरां लोक में आणंद आयौ,
पायौ देव अंसी सारां देवां में प्रमांण ॥३९॥

---

३६. जिंदो – जायल का खीची शासक जिन्दराव । बंको – बांकुरा । संको – शंका । हेटो – निम्न स्तरीय । भाळो – देखो । पेम दे – पाबूजी के बड़े भाई बूड़ाजी की पुत्री । पेखौ – देखो । ध्रम – धर्म । दूजौ – दूसरा, अन्य ।

३७ ऊबरै – बचें । हीण – ओछे, हीनता के । टाळो देर – किनारा काट कर । आघौ – अलग । साघौ – साथी, साथ के सैनिक । मेलगो – युद्ध में मरवा कर गया । लपेटो – साफा, पगड़ी, दुपट्टा वस्त्र । सताबी – शीघ्रता से । सूंप्यौ – सौंपा । सुरंद्रां – देव समाज ने ।

३८. सांढ़ियो – ऊँट सवार । सोढांण – सोढ़ा शाखा के क्षत्रियों ने जो पाबूजी के ससुराल के थे । सोढ़ी – पाबूजी की रानी । वैण – वचन । मोळियो – साफा, पाघ । सनेस – सन्देश । सिनांन – स्नान । झळां मंगळा – अग्नि की लपटों में । प्रळोक– परलोक । सागो – साथ, सहगमन । उछाह – उत्साह, उत्सव । लागौ–हुआ, लगा ।

३९. चम्मरां – चंवर । ढुळ'तां – झलते हुए । चौजां – आनन्द में । अम्मरां – देवताओं के । विमाणां चढ़े – विमानों में सवारी कर । क्रीत – कीर्ति । सारी– समस्त । आवास – निवास, लोक में । सुरां लोक – देवलोक । आणंद–आनन्द । पायौ – प्राप्त किया । सारां – सब में ।

भाटी बारा पड़ै अौर पंमार ईग्यारा वढ़ै,
सात दूण हेक झड़ै चारणां सवीर।
अड़ैता घानंक तीस स्यांमी'र दमामी अड़ै,
वीसी सात सांमळा खड़ेगा महावीर ॥४०॥

आहुड़ै आरांण वीच गहलोत उमंदा अठी,
वाखांण धांधळां दूण पैंतीस विचार।
पावू साथ तेरा-वीसी प्रलोक समाज पायौ,
सूर चंद मही जितै कीरत्ती संसार ॥४१॥

कळू में प्रभत्ती व्याध प्रेत सूं उबारै केतां,
तेरासै तेईस जीता भूलोक राठौड़।
ग्रंथां गुणां गीतां साख येळा में कीरती गावै,
रेणवां रुखाळौ पावू अगंजी राठौड़ ॥४२॥

जोड़ हाथ रात दीह 'बादरौ' आप नूं जपै,
नरे सुरां नाथ क्रपा ताहरी चैनांण।
कळू रोग मेटै प्रथी आसती कीरती करै,
नासै रोग पीड़ा नाथ त्रैलोकी अैनांण ॥४३॥

—बादरदान दघवाड़िया री कह्यौ

---

४०. भाटी – यादवों की भाटी शाखा के क्षत्रिय। पड़ै – रण में धराशायी हुए। पंमार– पंवार राजपूत। वढ़ै – कट मरें। सात दूण हेक – तेरह। झड़ै – शस्त्रों से कट कर गिर पड़े। अड़ैता – हठीले। घानंक – घानके योद्धा, नायक जाति के वीर। स्यांमी'र – स्वामी और। दमामी – नक्कारची, ढ़ोली जाति के। अड़ै– सामना किया। सांमळा – पावूजी के योद्धा विशेष।

४१. आहुड़ै – जोश में भर कर लड़े। आरांण – युद्ध। गहलोत – सूर्यवंशियों की गहलोत शाखा के क्षत्रिय। अठी – इस पक्ष में, यहां। धांधळां – धांधलोत राठौड़। दूण – द्विगुने। तेरा वीसी – दो सौ साठ। पायौ – प्राप्त किया।

४२. कळू में – कलियुग में। केतां – कतिपय को। तेरासै तेईस – संवत् १३२३ विक्रमी। साख – साक्षी, प्रमाण। येळा – इला, पृथ्वी। रेणवां – चारणों का। रुखाळौ – रक्षक। अगंजी – अजयी।

४३. रात दीह – रात्रि-दिवस। जपै – स्मरण करता है। ताहरी – तेरी। चैनांण– चिन्ह। आसती – आस्तिक, शक्ति। नासै – नाश करता है। अैनांण – निशान, चिन्ह।

२२. गीत हरपाल गोगावे राठौड़ रौ

काळो निस प्राण खिसै नित कायर, दळ आवतां घणै दरवेस ।
धणी भला आपिया धूहड़, नीठव हथै आपरा नेस ॥१॥
असुर तणी आग्राज आगळी, रज राखवा थयौ रखपाल ।
खींपां तणां पुराणां खोलड़, (थारै) हिये न उतरिया हरपाल ॥२॥
सायर तणै सरस स्राई दळ, मरबा छळां मांडियौ मेढ़ ।
मांझी मेर न गौ मेरवड़े, बिढवा रहियौ कांटां बेढ़ ॥३॥
अवळीमांण अड़प आपांणी, कवळ वाराह संग्राम करे ।
सुगां साई अनै सेरड़ौ, मूंघा दीधा भले मरे ॥४॥

—दादू आसिया रौ कह्यौ

---

२२. गीतसार—इस गीत में प्रसिद्ध कवि दूदा आशिया ने शेरगढ़ के शासक हरपाल राठौड़ के युद्ध में वीरगति प्राप्त करने का वर्णन किया है। कवि का कथन है कि शाही सेना के आगमन पर प्रत्येक काल रात्रि में कायरों के प्राण निकलते रहते हैं। पर यवनों के आक्रमण करने पर वीर हरपाल ने अपनी कांटों की बाड़ से निर्मित झोपड़ी की रक्षार्थ प्राण न्योछावर कर दिए। और सहजता से उस पर शत्रुओं का अधिकार नहीं होने दिया।

---

१. काळी निस – काल रात्रि, अन्धेरी रात। खिसै – हटे, निकलते हैं। दळ – सेना, समूह। आवतां – आने पर। घणां – घने, बहुत। दरवेस – मुसलमान। धणी–स्वामी। आपिया – अपनाया, अर्पित किया। धूहड़ – राठौड़ों की एक शाखा का नाम। नीठव – कठिनता से। नेस – घर।

२. असुर तणी – असुर की, शत्रु की। आग्राज – ललकार मय गर्जना। आगळी – आगे, सामने। रज – राजपूती, धरती। थयौ – हुआ। रखपाळ – रक्षक। खींपां तणा – खींप नामक जंगली पौधे से निर्मित। पुराणां – पुराने, जीर्ण-शीर्ण। खोलड़ – झोंपड़े।

३. स्राई दळ – शाही सेना। मरबा – मरने के लिए। छळां – युद्ध। मांडियौ – लड़ा, किया। मांझी – प्रमुख। न गौ – नहीं गया। मेरवड़े – पहाड़ों की शरण में। बिढ़वा – लड़ने, मरने। कांटां – झाड़ों के ढीरों से बनी। वेढ़ – बाड़, सीमा, युद्ध।

४. अवळीमांण – अधिकारों को भोगने वाला। अड़प – हठ, साहस। आपांणी – आप बली, अपनी। कवळ वाराह – वाराह सूअर। सूंगा साई – ग्रामों के नाम। अनै–और अन्य। सेरड़ो – शेरगढ़ स्थान। मूंघा – महर्घ, कठिनता से। दीधा–दिए।

२३. गीत मदनसिंघ नै सूरसिंघ गौड़ रौ

आखरि भार भाखरां आवै, घरि मोटै औ विरद घरि।
राजां राव बागां रणतूरां, सूरा मदनां तणै सिरि ॥१॥

साहिजादा जिण दिन सांफळिया, आफळिया तिण दिन आंगाहि।
गौड़ां धणी तणां अम्ब गुड़िया, गौड़ां बिहुं तणै गजगाहि ॥२॥

दहुवै दळां वाजिया दमांमा, सूर समांमा बे सुभट।
रामां रा माथै सरिस रण, परसा रा माथै प्रगट ॥३॥

भाखरहरा ऊजळे भारथि, मदनौ सूर वकारि मूआ।
सिवराजा हर हरवळ पतिसाही, हरवळां हरवळ हूआ ॥४॥

---

२३. गीतसार–उपरांकित गीत के नायक गौड़ों की भाखरोत शाखा के योद्धा मदनसिंह और सूरसिंह हैं। गीतकार ने गीत में शाहजादा औरंगजेब, मुराद और शाहजादा दाराशिकोह के बीच धौलपुर के रणक्षेत्र में लड़े गए युद्ध में गीतनायकों ने राजा शिवराम गौड़ के साथ शाहाजादा दाराशिकोह के पक्ष में रहकर वीरगति प्राप्त कीं, उसका वर्णन किया है।

---

१. आखिर – अन्ततः। भार – वजन, दायित्व। भाखरां – भाखरोत शाखा वालों पर, पर्वतों पर। घरि मोटै – बड़ा घराना। विरद – विरुद। घरि – घर का। बागां – बजने पर। रणतूरां – रणतूर्य, तूर्य नामक वाद्य। सूरा मदनां – शूरसिंह और मदनसिंह। तणै – के। सिरि – शीश पर।

२. सांफळिया – युद्ध रत हुए। आफळिया – युद्ध में भिड़ गए, टक्करें ली। तिण – उस। आंगाहि – मंथन करने, सावधान होकर। धणी – स्वामी। अम्ब – नगाड़े। गुड़िया – बजे, ध्वनित हुए। बिहुं तणै – दोनों के। गजगाहि – युद्ध, गजग्राह।

३. वाजिया – बजे। समांमा – समान प्रतिष्ठा वाले। बे सुभट – दोनों योद्धा। रामां रा – रामसिंह के पुत्र। माथै – सिर पर। सरिस – समान। परसा रा – परशुराम के पुत्र। प्रगट – प्रकट, जाहिर।

४. भाखरहरा – भाखरोत शाखा के गौड़ क्षत्रिय, भाखरसिंह के पौत्र। ऊजळे – उज्ज्वल, निष्कलंक। भारथि – युद्ध। वकारि – शत्रुओं को ललकार कर। मूआ – मारे गए। सिवराजा हर – राजा शिवराम गौड़ सरवाड़ के स्वामी के पौत्र। हरवळ – सेना की अनी, सेना की अग्रिम पंक्ति। पतिसाही – शाही सेना।

२४. गीत राव राजा फतैसिंघ नरूका कछवाहा उणियारा रो

ग्रावै दाव कळहण दुनियान सोह ऊचरै, बडी घर राव रूकां विभाड़ी।
उधारी राड़ि रजपूत ग्रांबेरि धरि, पहाड़ी कामां ले भोग पाड़ी ॥१॥

फतै महाराज जैसिंघ री फता रै, दुजड़ियां मारि फेरै दुहाई।
बडे मन मोट मेवां-धरा चोट वळि, लाज रै कोटि ढूंढ़ाड़ि लाई ॥२॥

दूसरां मान छळि लाडखां दूसरै, सार रै जोर दोइ धरा सांधी।
बाहांतरि लेय ग्रांबेरि गळ-बंधाणी, बाहांतरि गळे मेवात बांधी ॥३॥

---

२४. गीतसार–यह गीत उनियारा के स्वामी रावराजा फतहसिंह नरूका से सम्बन्धित है। गीतकार ने गीत में महाराजा सवाई जयसिंह के पक्ष में रहकर रावराजा फतहसिंह ने पहाड़ी, कामां और मेवात को विजय कर जयपुर के आधीन किया उस का वर्णन किया है। वह कहता है कि रावराजा फतहसिंह उधारे युद्धों को स्वतः स्वीकार कर विजय प्राप्त कर लेता है।

---

१. ग्रावै – ग्राने पर, ग्राते ही। दाव – ग्रवसर, घात। कळहण – युद्ध। सोह – सब, सभी। ऊचरै – कहते है। रूकां – तलवारों से लड़ाई। ग्रांमेरि – कछवाहों की पुरानी राजधानी ग्रामेर। पहाड़ी कांमा – ग्रामेर राज्य के दो कस्बों के नाम, जो ग्रब भरतपुर में हैं। भोग पाड़ी – करद बनाए, ग्राधीन किए।

२. फतै – फतह, विजय। फता रै – रावराजा फतहसिंह नरूका के। दुजड़ियां – तलवारें। फेरै – फिरवाता है, दिलवाकर। दुहाई – मुनादी, घोषणा। मन मोट – उदार हृदय, उच्च मन वाला। मेवां-धरा – मेवात प्रांत, यह ग्रब ग्रलवर जिले में है। लाज रै कोटि – लज्जा का दुर्ग, लज्जा का समूह। ढूंढ़ाड़ – जयपुर राज्य का प्राचीन नाम। लाई – ग्रधिकार में ले ग्राये।

३. मान – राजा मानसिंह प्रथम। छळि – युद्ध, लिए। लाडखां दूसरै – द्वितीय लाडखांन, रावराजा फतहसिंह को दूसरा लाडखांन कहा है। सार रै – तलवार के, शस्त्र के। दोइ धरा – कांमा पहाड़ी और मेवात दोनों प्रान्त। सांधी – ग्रामेर के शामिल किए, मिलाए, जोड़े। बाहांतरि – बाहुबल से। लेय – लेकर। गळ – गले। बांधी – बंधन में ली, ग्रधिकार में कीं।

२५. गीत राजा रतनसिंघ महेसदासोत राठौड़ री

दांतूसळ वजर धजर जमदाढ़ां, वाढ़ां ऊगाढ़ां विहर।
असपति नजर भलौ आफळियौ, कुंजर नै नाहर कंवर ॥१॥

पावां रहण वदी पतसाहां, सिर दावां घावां सहण।
दारण रूप वाजिया दारण, बारण नै वारण वहण ॥२॥

दमंगळ मंगळ उडिया चहुंदिस, जूटौ जिम ठाकुर जंगळ।
खारी वार गयंद सु खहतौ, भारी भुज खेली भगळ ॥३॥

मधकर तणौ घणै बळ मिळियौ, जिम दमंगळ न किया जतन।
असपति तखत सार ऊधमियौ, रमियौ हाथां सूं रतन ॥४॥

—लिखमीदास गाडण री कह्यौ

---

२५. गीतसार—उपर्युक्त गीत रतलाम के राजा रतनसिंह राठौड़ का है। गीतकार लक्ष्मीदास गाडण ने शाही दरबार में मस्त हाथी के बिगड़ कर बेकाबू हो जाने पर रतनसिंह द्वारा उसे काबू में करने का वर्णन किया है। यह घटना शाहजहां के शासन में आगरा में घटी थी। रतलाम के इतिहास में इसका उल्लेख हुआ है।

---

१. दांतूसळ – दन्तशूल, हाथी के दांत। वजर – वज्र तुल्य। धजर – तलवार। जमदाढ़ां – यमदंष्ट्रां। वाढ़ां – प्रहार। ऊगाढ़ां – दृढ़, बहादुर। असपति – बादशाह। आफळियौ – लड़ा। कुंजर – हाथी। नै – और। नाहर कंवर – सिंह सदृश कुमार रतनसिंह।

२. पावां – सेवामें। वदी – कहा। घावां – आक्रमण, युद्ध। सहण – सहने वाला। दारण – भयानक, भंयकर, विकट। वारण – हाथी। वहण – चलाने वाला, हांकने वाला।

३. दमंगळ – युद्ध, अग्नि कण। मंगळ – अग्नि। जूटौ – भिड़ा। ठाकुर जंगळ – वनराज, सिंह। खारी वार – विपत्ति काल में। गयंद सूं – गजेन्द्र से, हाथी से। खहतौ – भिड़ता, संघर्ष करता। भगळ – कुश्ती, टक्कर, भगदड़।

४. मधकर तणौ – महेशदास का पुत्र रतनसिंह। घणै – बहुत, घने। बळ – शक्ति। मिळियौ – भिड़ा। दमंगळ – युद्ध। सार – तलवार। ऊधमियौ – लड़ाई की, उत्पात मचाया। रमियौ – खेला, क्रीड़ा की। रतन – राजकुमार रतनसिंह।

२७. गीत विठलदास चांपावत रौ धरमत री वेढ़ रौ

लसियौ सुत गजण पाल सुत लड़ियौ, भारथि भड़ां घड़ां करि भूक ।
रूक सरिस वहतां गौ राजा, रावत रह्यौ बाहतौ रूक ॥१॥

जसवंत धरा खड़ै गौ जांणै, भिड़तौ मेल्हे आप भड़ ।
दावौ दुजड़ साह दळ डोहै, दावा सिरि तूटै दुजड़ ॥२॥

लाखां हूंत वाजियौ लोहां, झाझा वधै बीजळां झाळि ।
जोधै भार मूंकियौ ज्यारां, चांपै भार आवियौ चालि ॥३॥

चांपां - धणी मांडिया चावै, वीठल 'खळां सरिस खग वाहि ।
अड़ियौ जसै मेल्हियौ ऊभौ, पड़ियै रणि पायौ पतिसाहि ॥४॥

---

२७. गीतसार–ऊपर लिखा हुआ गीत ठाकुर विट्ठलदास गोपालदासोत चांपावत का है। विट्ठलदास उज्जैन में लड़ा था। गीतकार ने लिखा है कि महाराजा गजसिंह का पुत्र महाराजा जसवंतसिंह तो युद्ध भूमि का त्याग कर अपने देश को चला गया और उनका सामन्त वीर विट्ठलदास लड़ता हुआ धराशायी हुआ।

---

१. लसियौ – रण छोड़ कर गया, भाग गया। सुत गजण – गजसिंह तनय, महाराजा जसवंतसिंह। पाल सुत – गोपालदास का पुत्र, ठाकुर विट्ठलदास। भारथि – युद्ध में। भड़ां – योद्धाओं की। घड़ां – सेनाओं को। भूक – नाश कर। रूक – तलवार। बहतां – प्रहार होते। रह्यौ – रहा, डटा रहा। बाहतौ – प्रहार करता। रूक – तलवार के।

२. जसवंत – महाराजा जसवंतसिंह जोधपुर। खड़ै गौ – प्रस्थान कर गया। भड़ – सुभट, योद्धा। दुजड़ – तलवार। डोहै – मंथन करे। दावा – अधिकार। तूटै – टूटते हैं। दुजड़ – तलवारों में।

३. वाजियौ – लड़ा, युद्ध किया। लोहां – हथियारों। झाझा – अधिक, बहुत। वधै – बढ़कर। बीजळां झाळि। तलवार धारा की अग्नि में। जोधै – राठौड़ों की जोधा शाखा का महाराजा जसवंतसिंह। मूंकियौ – छोड़ा। ज्यारां – जब। चांपै – चांपावत शाखा के विट्ठलदास पर।

४. चांपां - धणी – चांपावतों का स्वामी, विट्ठलदास। खळां – वैरियों से। खग-वाहि – तलवार को चला कर। अड़ियौ – सम्मुख डटा रहा। जसै – महाराजा जसवंतसिंह ने। मेल्हियौ ऊभौ – खड़ा छोड़ा, युद्ध होते हुए मैदान को त्याग कर चला गया। पड़ियै – युद्ध में कट मरने पर। पायौ – प्राप्त किया। पतिसाही – बादशाहत का अधिकार, राजसिंहासन।

२८. गीत सुभराम गौड़ रौ दिखण री वेढ़ रौ

झळहळ छकड़ाळ पाखरां रिमझिम, अळवळता असवार उभा ।
दहुं दळि वीचि वाजिया दमामां, सांमै तौ ऊपरै सुभा ॥१॥
तोपां ताड़ मुराड़ा ताउध, आवध वरिखां परै उरै ।
तणि वळिराव आजरा तौ सिरि, घाव वहा नीसांण घुरै ॥२॥
झींक झळाळ झकोळै झाझा, झाड़ि गौड़ तरवारां झार ।
जूझाऊ वाजतां जूझ रा, जूझियौ वाजि दिखण जूझार ॥३॥
दिल्ली जैत सुवोल सहंसदस, राजा मुहरि मरण रिम राह ।
सुभ दातार जूझार सुपातां, दान च्यारि वकसिया दुवाह ॥४॥

---

२८. गीतसार—उपर्युक्त गीत गौड़ शाखा के योद्धा शुभराम के युद्ध में वीरगति प्राप्त करने का सूचक है । गीत में शुभराम के मेवाड़ की सेना में रह कर दक्षिण के युद्ध में लड़ने का वर्णन है । कवि कहता है कि हे शुभराम ! कवचों की दमक एवं अश्वों के पाखरों की ध्वनि तथा उभय-पक्षीय सेनाओं के मध्य निनादित नगाड़े आज तेरे ही सिर पर बज रहे हैं ।

---

१. झळहळ – चमकते, शोभित होते । छकड़ाळ – कवच । पाखरां – घोड़ों की रक्षा झूलें । अळवळता – चंचल, रण-रसिक । असवार – अश्वारोही । उभा – खड़े, स्थिर खड़े हैं । दळि – सेनाओं । वाजिया – बजते हैं । दमामां – युद्ध के ढोल । सांमै – सम्मुख । तौ – तेरे । सुभा – हे शुभराम ।

२. ताड़ – बौछार, प्रहारों की मार । मुराड़ा – अग्नि । ताउध – त्वरा से, प्रज्ज्वलित । आवध – आयुध, हथियार । वरिखां – वर्षा । परै – उधर । तणि – का, तनय । वळिराव – वलिराम । आज रा – आज के । तौ – तेरे । नीसांण – वाद्य, नगारे आदि । घुरै – बजते हैं, घोष करते हैं ।

३. झींक – शस्त्रों का प्रहाराधिक्य । झळाळ – तेजस्वी । झकोळै – आघात, हिलाकर । झाझा – अधिक, बहुत । झाड़ि – गिरा, चलाकर, पछाड़कर । झार – प्रहार । जूझाऊ – युद्ध में जूझ मरने के भाव के । वाजतां – बजते समय । जूझरा – युद्ध के । जूझियौ – भयानक रूप से लड़ा । वाजि – लड़कर । दिखण – दक्षिण प्रदेश में । जूझार – धड़ से सिर कट पड़ने के बाद शत्रु पक्ष से लड़ने वाला योद्धा जूझार कहलाता है ।

४. जैत – जीत, विजय । सहंसदास – मेवाड़ राज्य में दस हजार ग्राम थे जिससे वहाँ के शासक दस सहस्र गाँवों के अधिपति कहलाते थे । मुहरि – मुंह आगे । रिमराह – युद्ध, शत्रु । सुपातां – सुकवियों । दुवाह – आज्ञा ।

२६. गीत सुभराम गौड़ बलिरामौत रौ

थटे थटियौ बलो गोपाळ मांडे थंडां, धमळपुर विहारी मुकंद धारां ।
अबरकै सुभै विरदां सुर उसुरे, सिरै कियौ मरण बाजि सारां ॥१॥

पछिम दिस भिड़ाणां बाप बेटा पछिम, भिड़े पूरब दिसा बिन्है भाई ।
हेकलो बला रौ दिखण चढ़ियौ हठी, कठै बांटी नहीं कुळ कमाई ॥२॥

साहिजादां अनै रायजादां संगठ, बाधियौ वळे दिखणाद वाळौ ।
ऊजळो सुभौ अजमेर रौ आभरण, कामि आयौ बडे काजि काळौ ॥३॥

---

२६. गीतसार—गीतकार ने गीतनायक शुभराम गौड़ और उसके वीरगति प्राप्त पूर्व पुरुषों का इस गीत में वर्णन किया है । कवि ने लिखा है—ठठा स्थान पर बलिराम व गोपालदास और धौलपुर में बिहारीदास तथा मुकन्ददास ने युद्ध में शौर्य-प्रदर्शन कर खड्ग-धारों में स्नान किया था । अबकी बार अपने पूर्वजों की ही भांति शुभराम ने भी उन्हीं के पथ का अनुसरण करते हुए वीरगति प्राप्त की ।

---

१. थटे – ठठा स्थान । थटियौ – डटा रहा, काम आया । बलो – बलिराम । गोपाल – गोपालदास गौड़ । मांडे – मांडव, मांडू स्थान । थंडां – सेना, समूह । धमळपुर – धौलपुर । विहारी – विहारीदास । मुकंद – मुकुंददास गौड़ । धारां– खड्गधाराओं में । अबरकै – अब की बार, इस बार । सुभै – गीतनायक शुभराम । उसुरे – असुर, मुसलमान । सिरै कियौ – श्रेष्ठ किया, बढ़कर किया । बाजि – चलाकर । सारां – तलवारें ।

२. भिड़ाणां – भिड़े, मुकाबिला किया । बिन्है भाई – दोनों भाई, बिहारीदास और मुकुन्ददास ने । हेकलो – अकेला, एकाकी । बला रौ – बलिराम का पुत्र । दिखण – दक्षिण प्रान्त । कठै – कहीं भी, कहाँ । कुळ – वंश ।

३. अनै – और, अन्य । रायजादां – राजकुमारों । संगठ – साथ, संगठन । वळे – फिर, पुनः । दिखणाद वाळौ – दक्षिण दिशा के प्रान्त वाला । ऊजळो – उज्ज्वल, निष्कलंक । आभरण – आभूषण । कामि आयौ – वीरगति को प्राप्त हुआ । काजि – कार्य के लिए । काळौ – वीर ।

३०. गीत ठाकर सिवनाथसिंघ कूंपावत रौ

समदर पूछियौ कहां उछरंग सरता, दैत घणघोर चंग बहै दूणी।
काल दिन हुंती रंग स्वेत मोती कळी, लाल रंग थयौ किम आज लूणी ॥१॥

अरज सुण करण मौ नाह अवछाह री, दिनां केई हुंती वय तरुण दीधी।
समर जुड़ गनीमां घड़चिया धरणसिर, कूंपहर कसूंमल वरण कीधी ॥२॥

वखत सुत आउवै झाट खग बजाई, काट घणदळां रजवाट केवै।
मुरधरा ढाल मम विरंग रंग मिटायौ, सुरंग रंग कियौ रिड़माल सेवै ॥३॥

---

३०. गीतसार—उपर्युक्त गीत ठाकुर शिवनाथसिंह कूंपावत राठौड़ पर रचित है। शिवनाथसिंह ने आऊवा स्थान पर अंग्रेजों की सेना पर आक्रमण किया था। गीतकार ने समुद्र और नदी के वार्तालाप के रूप में गीतनायक के युद्ध पराक्रम का वर्णन किया है। समुद्र ने लूनी नदी के वेग और पानी में लाल रंग का मिश्रण देख कर पूछा – हे लूनी! कल तक तेरा जल मोती के समान सर्वथा श्वेत बह रहा था और आज यह लाल कैसे बन गया? लूनी ने उत्तर में कहा—वख्तसिंह-तनय शिवनाथसिंह ने आऊवा स्थान पर अंग्रेजों का नाश कर मेरे अशुभ सफेद रंग को मिटाकर उसे मांगलिक लाल बना दिया है।

---

१. उछरंग – प्रसन्नता, उत्सव। सरता – सरिता, नदी। घणघोर – घनघोर, भयानक। चंग – तेजवती। बहै – बहती है। दूणी – द्विगुनी। हुंती – थी। स्वेत – सफेद। मोती कळी – मुक्ता चूर्ण सदृश, मोती-सी चमकती। थयौ – हुआ। किम – कैसे। लूणी – मारवाड़ की एक मात्र बड़ी नदी लूनी।

२. अरज सुण – प्रार्थना सुन। मौ नाह – मेरे स्वामी। अवछाह री – उत्साह की, उमंग की, उत्सव के कारण की। दिनां केई – कतिपय दिनों की, वृद्ध। वय – आयु। समर जुड़ – युद्ध लड़कर। गनीमां – शत्रुओं को। घड़चिया – मार डाले। धरण – पृथ्वी। कूंपहर – राव कूंपा के वंशज ने। कसूंमल – विशेष प्रकार का लाल रंग। वरण – वर्ण, रंग।

३. वखत सुत – वख्तसिंह-तनय, शिवनाथसिंह। आऊवै – आऊवा स्थान। झाट – प्रहार। खग बजाई – तलवार चलाकर। काट – संहार। घण दळां – घनी सेना। रजवाट – राजपूती, क्षत्रियत्व। केवै – बदले, विरोध। ढाल – रक्षक। सुरंग रंग – लाल रंग। रिड़माल – जोधपुर के शासक राव रणमल के वंशज रिड़माल या रिड़मला कहलाते हैं। सेवै – शिवनाथसिंह ने।

विभाड़े गोळ फिरंगाण रा द्रहबटां, गैघड़ा बिरोळण जोम गाढ़ै ।
श्रोण में खाग झकबोळ नवसांहसो, चोळ गरकाब रंग दधां चाढ़ै ॥४॥

३१. ठाकर सांवतसिंघ उदावत नींमाज रौ

भारत अरिहीण करां भूतेसर, हारां नहीं कर लै हर होड ।
आच कियौ उमापति आगै, कर में कर दीधौ कर कोड ॥१॥

कमधज मांग मांग सिव कहियौ, समपौं हुय राजी सुख साथ ।
मांग कहण कहवाळ न मिळियौ, हूं देवाळ न लूं दत हाथ ॥२॥

समहर भुजां आदरै संकर, पहरे रुण्डमाळ बिच पोय ।
विच कैलास पूगतां वेळां, जपियो सिव गवरी मुख जोय ॥३॥

---

३१. गीतसार—उपर्युक्त गीत ठाकुर सांवतसिंह उदावत राठौड़ नींबाज के स्वामी का है । ठाकुर सांवतसिंह ने भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में अंग्रेज और उनकी पक्षधर जोधपुर की सेना से आऊवा स्थान पर युद्ध किया था । गीत में गीतनायक और युद्धप्रिय महादेव के संलाप के रूप में उक्त युद्ध का वर्णन किया है । इस युद्ध में सावतसिंह का तलवार के प्रहार से एक हाथ कट गया था ।

---

४. विभाड़े – नाश कर । फिरंगाण रा – अंग्रेजों का । द्रहबटां – ध्वंस कर, तहस-नहस । बिरोळण – मंथन कर, कुचल कर । गाढ़ै – दृढ़ । श्रोण – श्रोणित । झकबोळ – तरबतर । नवसांहसो – राठौड़ वीर । चोळ – लाल । गरकाब – सराबोर । दधां – समुद्रों के । चाढ़ै – चढाया ।

१. अरिहीण – शत्रुओं से विहीन । भूतेसर – भूतेश्वर, शिव । हारां नहीं – पराजित नहीं होंगे । हर – शिव । होड – स्पर्द्धा, विवाद । आच – हाथ । दीधौ – दिया । कर कोड – उल्लास व्यक्त कर, प्यार कर ।

२. कमधज – राठौड़, गीतनायक सांवतसिंह के लिए प्रयुक्त । समपौं – समर्पित करूं, प्रदान करूं । हुय – होकर । राजी – प्रसन्न । मांग कहण – मांग लीजिए । कहवाळ – कहने वाला । न मिळियौ – कोई आज तक मिला ही नहीं । हूं – मैं । देवाळ – देने वाला, दानी । न लूं – नहीं लेऊं । दत – दान ।

३. समहर – युद्ध । आदरै – स्वीकार करके । संकर – शिव । रुण्डमाळ–मुण्डमाला, कटे हुए मस्तकों की माला । पोय – पिरोकर । पूगतां वेळां – पहुँचते समय । जपियो – कथना, कहना, कहा । गवरी – पार्वती को । जोय – निहार कर, देख कर ।

सिरधारी तो जटधार सदा रा, करधारी वणिया अब केम ।
उमा हूंत धुरजटी आखै, जंग भू थई आहुवै जेम ॥४॥

अनिये अर अेजेन्ट आहुवे, घुरवाया रव तोप घमीड़ ।
पती नीमाज आहुवे पूगौ, भारत री खींचावण भीड़ ॥५॥

भूरे बाघ सांवते भूरां, दुरजण मेटण वचन दियौ ।
मुरधरियै सांवत रण मांहि, कर दे ताळी दान कियौ ॥६॥

—बारहठ मोहवत इन्दोकळी रौ कह्यौ

३२. गीत राजा उमेदसिंघ सीसोदिया साहपुरा रौ

बधै हरोळां मचायौ चकावूह चित्रकोट वेध, खंचायौ दिनेस रत्थां लगै आवखेस ।
खागधारां चापड़ै जोम रचायौ उजैण खेत, मेक भारथेस ऊमेद नचायौ महेस ॥१॥

---

३२. गीतसार—उपर्युक्त गीत शाहपुरा के राजा उम्मेदसिंह सीसोदिया के युद्ध में रणकौशल दिखा कर वीरगति प्राप्त करने विषयक है । गीत लेखक कवि करणीदान कविया ने उम्मेदसिंह के उज्जैन के रणक्षेत्र में लड़ने का वर्णन करते हुए लिखा है कि भारतसिंह-तनय उम्मेदसिंह ने चित्तौड़ की रक्षा के लिए माधवराव सिंधिया की सेना के हरावल पर आक्रमण कर ऐसा भयानक युद्ध किया जिसे देखने के लिए सूर्य ने अपना रथ स्थिर कर लिया और महादेव ताली देकर नृत्य करने लगा ।

---

४. जटधारी – जटाधर, जटाओं को धारण किए रहने वाला । कर धारी – हाथ को आभूषणार्थ धारण करने वाला । केम – कैसे । हूंत – से । धुरजटी – शिव । आखै – कहने लगा । भू – पृथ्वी । थई – हुआ । आहुवै – आंऊवा स्थान पर । जेम – जैसे, जिससे ।

५. अनिये – अनाड़सिंह । अर – और । अेजेन्ट – पोलिटिकल अधिकारी । घुरवाया – बजवाए । रव – आवाज । घमीड़ – तोपों की आवाज का भाव । पूगौ – पहुँचा । भारत री – भारतवर्ष की । खींचावण भीड़ – सहायता करने के लिए ।

६. भूरे बाघ – व्याघ्र तुल्य वीर । सांवते – सांवतसिंह । भूरां – अंग्रेजों । दुरजण – दुर्जन, शत्रु । मेटण – नाश करने । मुरधरियै – मरुदेशीय, मारवाड़ के । रण मांहि – युद्ध में । कर दे ताळी – हाथ में हाथ मिलाकर, ताली मिलाकर, स्पर्द्धा कर ।

१. बधै – आगे बढ़कर । हरोळां – सेना का अग्रिम भाग । चकावूह – तमाशा, चक्रव्यूह । चित्रकोट – चित्तौड़ । वेध – युद्ध, विरोध । खंचायौ – खींचवाया, रुकवाया । आवखेस – आयु क्षीण, प्रलयजन्य युद्ध । चापड़ै – रणक्षेत्र, खुलेआम । जोम–गर्व । उजैण खेत – उज्जयिनी के रणक्षेत्र में । मेक – एक । भारथेस – भारतसिंह के ।

गैणाग ऊछाह झूल बारंगां रा बांधे ग्रंथी, महाभाण रत्थां खाग खुराटां मांडीस ।
हंस बीर पेखवा तमासा ताळी दे दे हत्थी, तत्तथेई थेई करै आरूढै तांडीस ॥२॥

थाट पती काज मेदपाट सेना आप थटी, निराजां उछटी भौम भारथेस नंद ।
श्रोणधार उछट्टीज फार जप चाढ़ सट्टी, बेध धूरजटी धाड़ै धाडै नेतबंद ॥३॥

चौतरफ्फां सतारेस चमू बरन्तेस चाली, पत्र पूर काळी हकै पाळी रत्र पीध ।
तये कांन ताळी बज्र संघां जज्र खुलै ताळी, किळक्कै कपाळी रुण्डमाळी मेर कीघ ॥४॥

रूप सीस उदां भूप आहंसी आखियौ राजा, दळां मांहि हठास भाखियो दीन दोय ।
दूठ नराताळा भ्रौक दाखियौ सुबांन दवौ, पिनाकेस राखियौ माळ में सीस पोय ॥५॥

—करणीदान कविया रौ कह्यौ

---

२. गैणाग – आकाश में । झूल – समूह । बारंगां रा – अप्सराओं के । बांधेग्रंथी – वीरों से परिणय करने के लिए आंचलों के पल्लों पर गांठें दिए हुए । खुराटां – पद-चापों, खुरों की । मांडीस – मंडित कीं । हंस – सूर्य । ताळी – ताली । आरूढै – सवार हुए । तांडीस – महादेव, नंदिगण ।

३. थाटपति – राज्याधिकारी । मेदपाट – मेवाड़ । थटी – ठहरी, राजा, सेनापति । निराजां – तलवारें । श्रोणधार – लहू की धारा । उछट्टी – उछली, बह चली । चाढ़ – सहायता । धूरजटी – शिव । नेतबंद – वीरतासूचक चिन्ह धारक ।

४. चौतरफ्फां – चारों ओर । सतारेस – सतारा राज्य के स्वामी की । चमू – सेना । पत्र पूर – चण्डिका पात्र भर कर । हकै – हाक, प्रचण्ड आवाज । रत्र – रक्त । बज्र – वज्रायुध । जज्र – यमराज, महाकाल । ताळी – समाधि । किलक्कै– किलकारी देता है । कपाळी – शिव ।

५. उदां भूप – उदावंत सीसोदियों के स्वामी । आहंसी – साहसी । आखियौ – कहा, बोला । दळां मांहि – सेनाओं में । हठास – हठधारी । भाखियो – भाषण किया, कहा । दीन दोय – हिन्दू और यवन दोनों धर्मों वालों ने । दूठ – वीर । नराताळा – निरन्तर । भ्रौक – धन्य शब्द । सुबान – सूर्य ने । दवौ–आशीर्वाद । प्रशंसात्मक आज्ञा । पिनाकेस – शिव । माळ में – माला में, गले की माला में । पोय – पिरोकर

३३. गीत सहसमल राठौड़ रा भाला रौ

कळह कराळौ अजन-सर सकर वज्र अकाळौ,उड़ण अह पंखाळौ अगनि झळ ओप ।
सेल री उलाळौ तोहाळौ सहसमल, काळ चाळौ किनां जटाधर कोप ॥१॥

पथ खतंग हेड़वौ यंद सत्र पाछटां, अखग परि खेड़वौ मंगलसिग तेम ।
कुंत री रेड़वौ ताहरौ करन रा, जजर रौ छेड़वौ संकर खीजि जेम ॥२॥

धनंजय वांण छंट सक्र सत्रघण धमक, पनंग-व्यहंगी'क आतस पळच तूप ।
दाव छड़ियाळ ताहारौ रयण दूसरा, राव जम आळ सिभ ताव चौ रूप ॥३॥

वेधियण पड़ण झाटण वण धुवण बसेखत, अधप पण अमट सत्रहां उथाळे ।
जाणजे यसा अवसाण रिण जूजवा, भळ कमधज तणै हेक भाले ॥४॥

---

३३. गीतसार—उपर्यंकित गीत वीर सहसमल्ल राठौड़ के भाले के वर्णन का है। कवि ने भाले के प्रहार की अचूकता का धनुर्धर अर्जुन के गांडीव से निसृत बाण, इन्द्र के वज्र प्रहार, उड़ने वाले सर्प तथा अग्नि-शिखा से उपमित करते हुए वर्णन किया है। वह लिखता है कि, हे सहसमल्ल, तेरे भाले का प्रहार यमराज की क्रीड़ा अथवा शंकर का भस्मीभूत कर डालने वाला प्रत्यक्ष प्रहार है ।

---

१. कळह — युद्ध में। कराळौ — कराल, भयानक। अजन-सर — अर्जुन का बाण। सकर — सक्र, इन्द्र। अकाळौ — अकाल। उड़ण अह पंखाळौ — पंख आया हुआ उड़ना सर्प। झळ — ज्वाला। ओप — पाण, उपमा, धार। उलाळौ — झोंकना, चलाने की क्रिया का भाव। तोहाळौ — तेरा। काळचाळौ — यमराज की क्रीड़ा। किनां — अथवा, किंवा। जटाधर — शिव का। कोप — क्रोध।

२. पथ — अर्जुन। खतंग — बाण। हेड़वौ — चलाना। यंद — इन्द्र। पाछटां — पछाट, प्रहार। अखग — तक्षक, सर्प। परि — भांति, मानिन्द। खेड़वौ — चलना, उड़ना, दौड़ना। मंगळसिग — अग्निशिखा, आग की लपट। कुंत — भाला। रेड़वौ — चलाना। ताहरौ — तेरा। जजर — यमराज को। छेड़बौ — छेड़-छाड़। खीजि — नाराजी, रोष।

३. धनंजय — अर्जुन। छंट — चलना। धमक — धमाका, प्रहार-ध्वनि। पनंग-व्यहंगी'क — उड़ने वाला सांप। आतस — अग्नि। तूप — घृत। छड़ियाल — भाला। रयण — रत्नसिंह। राव जम आळ — यमराज का खेल या छेड़ना। सिभ ताव — शंभु का क्रोध। चौ — को।

४. वेधियण — छेदने वाला, पार जाने वाला। झाटण — झटके का भाव। धुवण — जलाने वाला, दाहक। सत्रहां — शत्रुओं। उथाळे — पीछे की ओर पछाड़े, मार डाले। यसा — ऐसा। अवसाण — अवसर। जूजवा — अलग अलग। भल — भले, अच्छे। हेक — एक।

३४. गीत सपंखरौ महाराजा माधोसिंघ कछवाहा रौ

आडा आंमळा असंका फूटै सांमळा गुसैल अंखी,
दीठां भागा कापंखी कुरांण झंखी देस।
कसौ नखी भवे साबांण छूटां जावै पंखी कठै,
श्रेसौ धंखी नरेसां धानंखो माधवेस ॥१॥

अनोखां घायिकां झौकां लायिकां जैसिघवाळा,
सौंक पंखी गायिकां गैतायिकां डांण सूंक।
बरूथां नायिकां दोख दायिकां बायिकां बेधी,
आचां पिनायकां झौक सायिकां आऊक ॥२॥

चमट्टी सिपाई मच्छां बेधांण अंतकां चक्खै,
लक्खै भै आथांण दक्खै बाखाण दिलेस।
बंधी अक्खै भूथांण पंडवा पाण भाण-वंसी,
श्रिसा बाण विध्या रक्खै भाण अंसी श्रेस ॥३॥

---

३४. गीतसार—उपरांकित गीत महाराजा माधवसिंह कछवाहा जयपुर की बाण विद्या की प्रशंसा पर रचित है। गीतकार हुकमीचंद खिड़िया ने गीत-नायक के निशाने की अमोघता की सराहना करते हुए लिखा है कि उनके धनुष से चलाए गए तीर महाकाय श्यामल-गात्र गजराजों और महा क्रोधीले वनराजों के गात्रों को विदीर्ण कर आर-पार निकल जाते हैं। वह कौन ऐसा पशु या पक्षी है, जो माधवसिंह के बाण छूटने पर बच कर कहीं जीवित रह सका हो।

---

१. आडा आंमळा — आडे-टेढ़े। असंका — असंख्य। फूटै — पार निकले। सामळां — श्यामल गात्र, हाथियों के। गुसैल — क्रोधीले। अंखी — आंखों वाले। दीठां — देखने पर। कापंखी — क्रोधित। कुरांण — कुरान, मुसलमानों की धर्म-पुस्तक। झंखी — पढ़ने वाले, झांकने वाले। कसौ — कौन, ऐसा। नखी — नाखूनों वाला, सिंहादि पशु। पंखी — पक्षी।

२. घायिकां — नाश करने वाले। झौकां — धन्य धन्य। लायिकां — योग्यता वाले। सौंक पंखी — पक्षियों के पंखों की आवाज, बाण का शब्द। गैतायिका — तेज स्वभाव के गजराज। डांण — मद। सूंक — सूख जाते हैं। बरूथां — सेनाओं। नायिकां — नायक, सेनापति। आचां — हाथों। सायिकां — बाणों। आऊक — पूर्ण, अग्नि।

३. चमट्टी — चुटकी। मच्छां वेधांण — मत्स्यवेधी, अर्जुन। अंतकां चक्खै — महाकाल नेत्री। भूथांण — भाथा। पांण — हाथ, बल। विध्या — विद्या। भांण-वंसी — सूर्यवंशी। अंसी — अंशधारी।

छूटै जठै श्री वाहां परां जा फूटै दड़ा छेक,
केही फौजां सनाहां समाजां जै कारीक ।
कथां अलौकीक राव राजा पातसाहां कही,
तीरंदाजां दहूं राहां ह्वै रही तारीफ ।।४।।
—कवि हुकमीचंद खिड़िया रौ कह्यौ

३५. गीत महाराजा मानसिंघ राठौड़ रौ

बादळ दळ वाज अवाज त्रंबागळ, घरहर तौपां घोर घण ।
गज मसतांन ग्यान घण गाजै, त्यूं मघवान गुमांन तण ।।१।।
दंती घटा छटा खग दांमणि, सेलां पटां सिळाव सर ।
कवि जस रटा थटा गुण केकी, हरिदन छटा अजीतहर ।।२।।
दत कवि पळै मिळै चित दुनिग्रां, वेधी जळै जवास विध ।
खेधी खेह वळै जळ खागां, सोभा मिळै अखाड़-सिध ।।३।।

---

३५. गीतसार—ऊपर लिखित गीत जोधपुर के महाराजा मानसिंह राठौड़ का है । गीतकार ने गीत में महाराजा मानसिंह को देवराजा इन्द्र, सेना को मेघ-घटा और नगाड़ादि वाद्यों को घन-गर्जन के साथ उपमित कर वर्णन किया है । वह कहता है कि सेना रूपी मेघ-घटा से नगाड़े रूपी मेघनाद कराता हुआ मानसिंह रूपी देवराज शोभित होता है ।

---

४. जठै — जहां । श्री वाहां — श्रीजी के हाथ से छोडे गए, श्री-भुजाओं से । परां जा — पार जाकर, उस ओर निकल कर । छेक — छेद कर । सनाहां — कवचों । जै कारीक — विजयप्रदाता । तीरंदाजां — निशानेबाजों । दहूं राहां — दोनों धर्मों वालों में, हिन्दू और यवनों में ।

१. दळ — सेना । त्रंबागळ — ताम्बा के पेंदे के नगाड़े । घरहर — गर्जन करता । मसतांन — मस्त । मघवान — इन्द्र । गुमान तण — गुमानसिंह का पुत्र महाराजा मानसिंह ।

२. दंती घटा — हाथियों रूपी घटा । छटा — शोभा । खग-दांमणि — तलवार रूपी बिजली । सेलां पटां — भाले और पट्टा शस्त्र । सिळाव — चमक । सर — बाण । जस रटां — यश-गायक । थटा — समूह । केकी — मयूर । अजीतहर — महाराजा अजितसिंह का वंशधर ।

३. दत — दान । वेधी — विद्रोही । जळै — जलते हैं । जवास विध — जवास पौधे की भांति । खेधी — विरोधी, वैर रखने वाले । खेह — भस्मीभूत, मिट्टी । जळ खागां — तलवार रूपी जल से । आखाड़-सिध — अखाड़े का सिद्ध, महान् योद्धा ।

काळी घटा छटां घण कड़कै, राळी झड़क्कै झाळ रुख ।
वित बरसाळ छहूं रित बरसै, मांन दांन उजवाळ मुख ॥४॥

३६. गीत सावझड़ो बदनोर रा धणी जैतसिंघ रो

झुके नाग रा सीस त्रांबाळ तासा झड़ै, पाटवी राग रा विखम हाका पड़ै ।
ओहि लागै गजब भुजा आसां अड़ै, जैत मारू कठी कड़ा सिलहां जड़ै ॥१॥

थरक छक हरक झुक व्रंदारक थाट रा, झमक चमक सरस अनळ विख झाट रा ।
धमक अकबक बणै खल कहक घाट रा, खीझवाळी झटक कैणि सिर खाट रा ॥२॥

तड़ सजड़ भड़ड़ कड़ हड़वड़ तखां, धूसरड़ गड़ड़ वजि ध्राह धड़हड़ धखां ।
चड़ अनड़ सिध अनै चड़ड़ ऊघड़ि चखां, उरड़ झड़ कठी दूजा अखा ॥३॥

---

३६. गीतसार—उपर्युक्त गीत ठाकुर जैतसिंह मेड़तिया राठोड़ के युद्धाभियान पर रचित है । गीतकार ने जैतसिंह की सैनिक चढ़ाई का वर्णन करते हुए लिखा है कि इधर तो नगाड़ों का तुमुल घोष तथा सैंधव राग की भयानक स्वर-ध्वनि हुई और उधर शेषनाग के मस्तक झुकने लगे। आज जैतसिंह सन्नाह सन्नद्ध होकर किस पर आक्रमण करने को तत्पर हुआ है ।

---

४. कड़कै – गर्जन करे, कड़ड़ की ध्वनि करे। राळी – गिरती हुई। झड़कै–झटका । झाळ रुख – विद्युत की तरह । वित – धन, वित्त । बरसाळ – वर्षाकाल । रित– ऋतु । मांन – मानसिंह ।

१. नाग रा – शेषनाग के । त्रांबाळ – नगाड़े । तासा – वाद्य विशेष । पाटवी राग – सैंधव रागिनी । विखम – विषम । ओहि – यही । आसां – आकाश के । अड़ै– जा लगी, स्पर्श करें । जैत मारू – जैत्रसिंह राठोड़ । कठी – किधर । कड़ा सिलहां – कवचों की कड़ियाँ ।

२. थरक – थरकते । छक – मस्त, छके हुए । हरक – हर्ष । व्रंदारक – देवता । थाट – समूह । अनळ – अग्नि । विख – विष । झाट – प्रहार । अकबक – घबराहट, बकबक । कहक – ध्वनि विशेष । खीझ वाळी – नाराजी की । केणि– किसके । खाट रा – मध्यम कद वाले, उपार्जन करने वाले ।

३. तड़ – विद्युत । सजड़ – तलवार । भड़ड़ – योद्धाओं । हड़वड़ – हड़बड़ाहट । धूसरड़ – धूंसा वाद्य । गड़ड़ – ध्वनि विशेष । धखां – सामने वालों के, इच्छा वाले । अनड़ – अनम्र, किसी का बन्धन न सहने वाले । ऊघड़ि – खुले । दुजड़ – तलवार । चखां – नेत्र । उरड़ – उत्साहपूर्वक, आगे बढ़ कर । दूजा अखा – अभिनव अक्षयसिंह ।

सधर नर निडर कर धजर असमर समंद, वजर नर उरर अरि थरक कायर विमंद ।
धज फरर अंतर पर खरर समहर धमंद, कसर भर रीस किण सीस छत्रधर कमंद ॥४॥

ग्रीध हळवळ संमळ गळळ पळडळ गरां, त्रिसळ सळ वलौवळ कळळ हूंकळ तुरां ।
कळ सवळ हुवै भवळ सांवळ करां, इळपति क्रोध झळ किसँ खळ ऊपरां ॥५॥

तरर मुख खड़भड़े सहर तरसींग रा, धड़हड़ै धमंक धोखा पड़ै धींगरा ।
ऊकड़े झाक आवाण अरडींग रा, सीस किण आज री रीस जैंसिघ रा ॥६॥

पूर कीधां सिलै सूर पखरायतां, चामंडा भवानी हुवै चित चायतां ।
नौबतां घुरै उमंगा घरै नायतां, आज किण सीस कमर कसै आपायतां ॥७॥

झूल रथ साथ उरवसी री झागड़ै, निज हरख लगाई डकाडक नागड़ै ।
थरर धर अकडका धरर अणथागड़ै, पकड़ि भाला दियै कठी पग पागड़ै ॥८॥

---

४. सधर – धैर्यशाली । धजर – तलवार । असमर समंद – युद्ध रूपी समुद्र । अरि – वैरी । थरक – कांप कर । विमंद – मदहीन, गर्वरहित । धज–ध्वजा । फरर – फरहरा कर । खरर – गिरने की ध्वनि । कसर – वैर, हानि । छत्रधर–छत्र धारण करने वाला, राजा । कमंद – राठौड़ ।

५. ग्रीध – गृद्ध । संमळ – चील पक्षी । गळळ – निगलने का भाव । पळडळ – मांस-पिण्ड । त्रिसळ सळ – ललाट पर की सिकन । वळौवळ – बारम्बार, अनवरत । कळळ – युद्ध का कोलाहल । हूंकळ – घोड़ों की आवाजें । तुरां – घोड़ों । सावळ – भाले, बर्छे । इळपति – पृथ्वी का स्वामी । झळ – ज्वाला ।

६. तरर – कांतिहीन, क्रोध । खड़भड़े – चल-विचल होते हैं । तरसींग रा – जबरदस्त वीर का । धड़हड़ै – धड़कन, ध्वनि विशेष । धींग रा – प्रचंड वीर के । ऊकड़े – निकले । झाक – चमक । अरडींग रा – बलवान का, योद्धा का । रीस – कोप । जैंसिघ रा – जयसिंह के पुत्र, जैत्रसिंह ।

७. सिलै – कवचादि युद्ध-सज्जा । सूर – वीर । पखरायतां – पाखरधारी । चायतां– इच्छित । घुरै – बजे, नाद करे । कमर कसै – आक्रमण की तैयारी की, तैयार हुवे । आपायतां – शक्तिशालियों, अपने बल पर विश्वास रखने वालों ।

८. झूल – समूह । उरवसी री – अप्सरा का नाम है । झागड़ै – लड़ते हैं । डकाडक– डक डक का शब्द, डमरू वाद्य की ध्वनि । नागड़ै – नग्न गात्र, शिव ने । थरर – कंपित होकर । अणथागड़ै – अपरिमित, अपार, अथाह । पग पागड़ै – घोड़े के पागड़े में पैर रख कर, अश्वारूढ़ होकर ।

इस्ट दुरगा पढ़ै पाठ चहुं ओर रौ, साकुरां मेळसी जिसौ सिर जोर रौ।
सजि चढौ चढौ हुय नकीवां सोर रो, निजर आवै असौ नाथ बदनौर रौ ॥९॥

रिण झणणणण नादखुरसाण खागां रड़क, बाजि खणणणण कड़ियाळ बंधां बड़क।
घरपती जठी रै तठी मानै घड़क, कठी रै मारवां राव वाळी कड़क ॥१०॥

नेस पड़ि त्रास मेवास वंकानगर, डारणां न लागै पांव पाछा डगर।
आज रौ आंकड़ौ घाट दीसै अगर, बांकड़ौ बाहुड़े नहीं बाधां बिगर ॥११॥

—महादान मेहड़ू रौ कह्यो

३७. गीत सिंघ फलंग जैपुर नगर रा बरणन रौ

घाट धुरा गुर ससि लघु धर, वायक अेक मेल मिळैवर।
सिंघ-फलंग जिसौ विध सुंदर, सोलह सोळह सोळ चिहुं सर ॥१॥

पीठ प्रिथी सिरि सुन्दर जैपुर, रंग बजार हजार बराबरि।
सोभत चौपड़ बंध सरोसरि, गोख अटा महलां घड़ कंगरि ॥२॥

---

३७. गीतसार—उपर्युक्त गीत में राजस्थान की राजधानी जयपुर की बसावट, व्यापार, आवास-भवन और वहाँ के निवासियों के रहन-सहन, उद्योग-धंधे, कला-कौशल तथा नगर-सौन्दर्य का वर्णन है। प्रारंभ के द्वाले में सिंघ-फलंग (सिंह-चाल) गीत के लक्षण दिए गए हैं।

---

९. साकुरां – घोड़ों को। मेळसी – मिलाएगा, भिड़ाकर टक्कर लेगा। सिर जोर – बलवान। नकीवां – नकीबों। सोर – शब्द, आवाज, शोरगुल। असौ – ऐसा। नाथ – स्वामी। बदनौर रौ – बदनोर ठिकाने का।

१०. रिण – रण, युद्ध। झणणणण – ध्वनि विशेष। खुरसाण – मुसलमान, खुरासान देश के निवासी। खागां – तलवारें। बाजि – बज कर। कड़ियाळ – कवचों के। बंधां – बन्धन। बड़क – टूटने की क्रिया का भाव। कठी रै – किस ओर। मारवां राव – राठौड़ों के स्वामी। कड़क – नाराजी, क्रोध।

११. नेस – घर, देश। मेवास – लुटेरों के विकट स्थानों पर बने आवास-स्थल। डारणां – वीरों के। डगर – पगडंडी। आंकड़ौ – चिन्ह, लक्षण। घाट – सूरत, आकृति। बांकड़ौ – बांकुरा वीर। बाहुड़ै – लौटेगा, मुड़ेगा। बांधां-बिगर – बिना बंधन में लिए, गिरफ्तार किये बिना।

१. घाट – बनावट, रचनाक्रम। धुरा – प्रारंभ में। वायक – वचन। चिहुंसर – चारों चरणों में।

२. प्रिथी सिरि – पृथ्वी पर। सोभत – शोभित। चौपड़ – चौपथ, चौराहा। बंध – बंधन, बनावट। सरोसरि – एक समान। गोख – गौखे, झरोखे। अटा – अट्टालिकाएं। घड़ कंगरि – कंगूरावलि, कंगूर-समूह।

दीपत नाक जिसौ पुर सुंदर, ईखत चाक तिसौ मन यंदर।
संचत माल बजार समंदर, मोहन मूरति मिंदर मिंदर ॥३॥

झालर घंट जठै झणकारत, राव हजार गिरा रणकारत।
ध्यान गिनांन प्रभु गुण धारत, स्यांम सदा नृप कांम सुधारत ॥४॥

अेक अनेक उपासत अंमर, सेवत केक विवेक गणेसर।
नाम रटै निहकांम कितै नर, हेक हराहर हेक हरीहर ॥५॥

पाठ प्रबंध किताक प्रकासत, वेद पुरांण विचार विलासत।
पंडत द्वीत अद्वीत प्रकासत, भासत देव जिसा दुज भासत ॥६॥

होम जजे हवि कवि हुतासण, सेवत स्याम कितै दर भासण।
पिंड कितां हद जोग प्रकासण, पूरक कुंभ करै चक आसण ॥७॥

साधन काव्य कला सुर साधत, वाद विवाद करै मत वांधत।
देह अनेह किता तप दाघत, विद्ध हरि गुण वाघत वाघत ॥८॥

विप्र किता खट सासत्र वंचक, रेस विवाद रहे नह रंचक।
पिंड विचार करै नित पंचक, सार कळा गुण संचक संचक ॥९॥

---

३. दीपत – शोभा पाता है। नाक – स्वर्ग। जिसौ – जैसा। ईखत – दिखता है। चाक – सज्जित, चक्र। तिसौ – तैसा। मिंदर – देवालय।

४. झालर घंट – झालर तथा घंटे। जठै – जहां पर। झणकारत – झनन की ध्वनि करते हैं। राव – रव, शब्द। गिरा – वाणी। रणकारत – ध्वनिविशेष, रणंकार ध्वनि। गिनांन – ज्ञान। स्यांम – स्वामी, भगवान। नृप – राजा। कांम – कार्य। सुधारत – सफल करते हैं।

५. उपासत – उपासना करते हैं। अमर – देवता की। सेवत – सेवा करते हैं। केक – कई। निहकांम – निष्काम भाव से। कितै – कितने ही। हेक – एक। हराहर – शिवा शिव, शाक्त-उपासना। हरी हर – विष्णु एवं शिव।

६. किताक – कतिपय, कोई कोई। द्वीत – द्वैत भाव। अद्वीत – अद्वैत। दुज – द्विज। भासत – तेजोमय देख पड़ते हैं।

७. होम – यज्ञ, हवन। हवि – हवन की सामग्री। हुतासण – अग्नि। कुंभ – योग की क्रिया विशेष। चक्र – आसण – चक्रासण।

८. सुर साधत – स्वर साधना करते हैं। अनेह – विरक्त। दाधत – दग्ध करते हैं।

९. खट सासत्र – षट् शास्त्र, हिन्दुओं के न्याय, वैशेषिक, सांख्य, मीमांसा, उत्तर मीमांसा और योग ये छः शास्त्र कहलाते हैं। वंचक – पढ़ने वाले, अध्येता। रेस – अमर्षता। रंचक – तनिक-सा। पिंड – शरीर काया।

भेद विद्या चवदह रस भाखत, दीपत सब कळा गुण दाखत ।
च्यारि पदारथ के मुर चाखत, यूं खट भाख सदा दुज आखत ॥१०॥
तीरथ रूप जिसा जग तारण, संग जिकां मुरलोक सुधारण ।
ब्रंम हरी मुख ब्रंम विचारण, सो वरणाश्रम कारिज सारण ॥११॥

३८. गीत ठाकर केसरीसिंघ उदावत रास धणी रौ

मांझी आवतां आवळा झूल दिल्ली रा जोधाण माथै,
दुरद्दाळां पीठ झंडा उड़ेता दकूल ।
आथड़ै कांकड़ां झेल खूंदाळमां भीच अेहो,
सांकळां भीड़ियौ बिजै केहर सादूळ ॥१॥
दिली साहां भंजणौ गंजणौ दिली लाग दावे,
टाळै न कौं जीव लागां बादोबाद टेक ।
केकां घड़ां विधूसै कबांणां चिलें ग्रहे केकां,
आसंगे अनेकां अेहो भूरौ बाघ हेक ॥२॥

---

३८. गीतसार—उपर्युक्त गीत मारवाड़ के उदावत राठौड़ों के ठिकाने रास के ठाकुर केसरीसिंह का है। गीतकार कृपाराम खिड़िया ने जोधपुर के शासक महाराजा विजयसिंह द्वारा छद्मता से केसरीसिंह को मरवा डालने पर उपालंभ देते हुए लिखा है कि केसरीसिंह ऐसा स्वामि हितैषी वीर था जिसे मारवाड़ पर शाही अथवा मरहठों के आक्रमण करने पर उनके विरुद्ध मारवाड़ की रक्षार्थ युद्ध में मरने का अवसर देना चाहिए न कि छलाघात से मरवाना ।

---

१०. विद्या चवदह – काव्य, संगीत, स्थापत्य, नृत्य आदि चौदह विद्याएँ । च्यारि पदारथ – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष । खट भाख – षट् भाषाएँ । दुज – द्विज । आखत – उच्चारण करते हैं, पढ़ते हैं ।

११. मुरलोक – तीनों लोक । ब्रंम – ब्रह्म । विचारण – विचारने वाले । वरणाश्रम – हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था, वर्णाश्रम । कारिज – कार्य । सारत – सिद्ध करते हैं ।

१. मांझी – मुखिया । आवळा झूल – युद्ध सज्जा से सज्जित । जोधाण – जोधपुर । दुरद्दाळां – हाथियों की । दकूल – वस्त्र । आथड़ै – युद्ध करे लड़े । कांकड़ां – सीमा पर । खूंदाळमां – मुसलमानों से । भीच – योद्धा । सांकळां – जंजीरें । भीड़ियौ – जकड़ दिया । बिजै – महाराजा विजयसिंह । सादूळ – सिंह ।

२. भंजणौ – काटने वाला । गंजणौ – नाश करने वाला । दावे – विवाद । टाळै – टालता । नकौ – किसी को नहीं । केकां – कई । घड़ां – सेनाएँ । विधूसै – विनष्ट की । कबांणां – कमानों, धनुषों । चिलें – धनुष की डोरी । ग्रहे – पकड़े । आसंगे – वश में किये । हेक – एक ।

खवां ठौर सुरत्ताणां दाखणो उघाड़े खांडे,
ऊदाणी अटक्कां बोल आखणो अवीह।
चाह हेक सामध्रमो हठाळौ बिलंद चीत,
साहंसीक जोधाणै वखत वाळौ सींह ॥३॥

झुके झूल वारंगां थरक्के गजां पीठ झंडा,
केहरी हुचक्के जठै ऊवक्के ओघार।
सांमध्रमो केम चूकै जेण आंटै चूकै सूरौ;
जगांणी न रूकै भूरौ विरूधो जोधार ॥४॥

मेड़ते अथागा जूथ मारे खेत मारहठां,
बिलागां ऊमरां भुजां अखाड़े वीरांण।
आपो राण अहंकार राह रूप जेण आगां,
भाण साखी उग्रहे वीजा नूं जेम भांण ॥५॥

केई वारां मंजे धारां जीतौ गजां भारां केई,
सावळां दूसारां केवी वारां सिध।
केई वारां तोखारां हरौळां ओरै फतै किधी,
केई फौजां मार दीधी सिघळी कमंध ॥६॥

---

३. खवां ठौर – भुज ठोक कर, चुनौती देकर। दाखणो – ललकारने वाला। उघाड़े खांडे – नंगी तलवार। ऊदाणी – उदावत। अटक्कां – बाधा देने वाले, टेढ़े। अवीह – निडरतापूर्ण। सामध्रमो – स्वामि-धर्म पालन की। हठाळौ – हठीला। बिलंद – उदार, ऊंचा। साहंसीक – साहसी। बखत वाळौ – महाराजा बखतसिंह का।

४. झूल – समूह। वारंगां – अप्सराओं के। थरक्के – कांपे, तरंगित हो। हुचक्के – झपट कर आक्रमण करे। जठै – जहां। ऊवक्के – जोश करे। केम – कैसे, किस प्रकार। चूकै – भूले, गलती करे। जेण – जिसके। आंटै – लिए। जगांणी – जगरामसिंह का पुत्र। विरूधो – रोका हुआ, रुष्ट किया हुआ।

५. अथागा – अपार, अथाह। जूथ – यूथ, सेना। खेत – रणक्षेत्र में। बिलागा – लगे। ऊमरां – उमराव। अखाड़े – युद्ध का मैदान। आपो राण – जयअप्पा सिंधिया। राहरूप – राहू के रूप में, राहू की भांति। जेण – जिसके। आगां – आगे, सामने। भांण – सूर्य। साखी – साक्षी में। उग्रहे – बचाया, उबारा। वीजा नूं – महाराजा विजयसिंह को। जेम – जैसे, ज्यों।

६. मंजे – मांजी, मज्जित की। वारां – तलवारें। भारा – समूह। सावळां – भालों। दूसारां – द्विधारे, आर-पार छेद, बर्छे। केवी – वैरी, कई। तोखारां – घोड़ों। हरौळां – हरावल। ओरै – झोंके। फतै – फतह, विजय। किधी – की। दीधी – दी। सिघळी – सिंह, श्रेष्ठ। कमंध – राठौड़ ने।

बारूबार अनम्मी कंध नेत - बांधां,
सांमध्रमी भीच जम्मी रुखाळौ सधीर।
भोखणौं छौ गैघडां चखंडां सीस जाडै भंडे,
केसरी न रोकणौं छौ बाघळो कंठीर ॥७॥

सोर भाळां न लागा न बागा धार सूंडाहळां,
घौक जांगी कांवळां न बागा वीर घोर।
जोरावार चूकै भूरौ केहरी चामंड जेहो,
जोरावार होणहार हुतौ केहो जोर ॥८॥
—किरपाराम कविया रौ कह्यौ

३६. गीत कमां अखावत पड़ियार रौ उजीण रा जुद्ध रौ

गमागम आतस गड़ड़ साह दोय गाजिया, टळण रिण तूर लै केहीक टाळौ।
कमौ दे रीठ काळौ सत्रां कोपियौ, कमां माथै पड़ै रीठ काळौ ॥१॥

---

३६. गीतसार—उपर्युक्त गीत पड़िहार शाखा के कर्मसेन अखावत के उज्जैन के युद्ध में मारे जाने का सूचक है। गीतकार ने लिखा है कि जब दोनों शाहजादों (मुराद और औरंगजेब) ने तोपों के गोलों की अग्नि वर्षा करते हुए विपक्षी सेना पर आक्रमण किया तब कितने ही योद्धाओं ने रण भूमि का त्याग कर घर की राह ली, किन्तु कर्मसेन ने कुपित होकर अरि सेना पर भयानक प्रहार करने प्रारंभ किये और चार घड़ी अनवरत उनका नाश कर अन्त में रणभूमि में काम आया।

---

७. हुकम्मी — आज्ञा प्राप्त होने पर। अनम्मी — बंधन में नहीं आने वाले। नेत-बांधां — वीरता के चिन्ह-धारियों को बंधन में लिए। सांमध्रमी — स्वामि-धर्मी। भीच — योद्धा, वीर। जम्मी — भूमि, राज्य का। रुखाळौ — रक्षक। भोखणौं — झोंकना, ठेलना। गैघड़ां — गज सेनाओं। चखंडां — छः खण्डों। जाडै — सघन, बहुत से। बाघळो — श्रेष्ठ, सिंह। कंठीर — सिंह।

८. सोर भाळां — बारूद-ज्वालाएँ। बागा — बजी, चली। धार — तलवारें। सूंडाहळां — गज-शुण्डों के। घौक जांगी — नगाड़ों के घोर शब्द। कांवळां — रोषपूर्ण, कोप धारण कर। बागां — लड़े। केहरी — केशरीसिंह। चामंड जेहो — सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के सामन्त चामुण्डराय जैसे वीर को। जोरावार — प्रबल। होणहार — होनहार, भवितव्यता।

१. गमागम — चारों ओर। आतस — आतश, अग्नि, तोपें। गड़ड़ — गड़गड़ाहट की ध्वनि। साह — शाहजादे। गाजिया — गर्जने लगे, गर्जन किया। टळण — हटने के लिए, अलग निकल जाने के लिए। रिण — रणस्थल से। तूर — घोड़े। केहीक — कितने ही। टाळौ — अलग निकलने की क्रिया का भाव, किनारा काटने का भाव। कमौ — गीतनायक कर्मसेन। रीठ — भयानक प्रहार। काळौ — दुर्धर्ष वीर। सत्रां — शत्रुओं। माथै — ऊपर।

वळीवळि ऊछळै सोर साहां विढ़ण, वील जांगी विचै असत बूडे।
उडाड़े लोह अेकां सिरे अखा री, अखा रा ऊपरां लोह ऊडे ॥२॥

ऊछळै अरावां खूंदवाळा अगगि, त्रम्बाळां सांभळै सगगि खटतीस।
सार ची सार पढ़िहार सात्रवां, सत्र दियै मार पढ़ीहार चै सीस ॥३॥

कमै वळियै समां जोध गिळिया कितां, लोह ऊजैण असमांन लड़ियौ।
दूठ खड़ियौ नहीं धणी छळ दिसि, पीहर चहूं साहणी नीठ पड़ियौ ॥४॥

४०. गीत ठाकर लालसिंघ दूलावत राठौड़ बड़ली रौ

आंटीला ऊठ सतारा वाळा, तो ऊपर वागा त्रम्वाळा।
नाह वाघ जागो नींद्राळा, कहर्ज कटक आवियो काळा ॥१॥

---

४०. गीतसार—उपर्युक्त गीत अजमेर मेरवाड़ा के बड़ली ठिकाने के ठाकुर लालसिंह राठौड़ पर कहा हुआ है। लालसिंह ने अजमेर के मरहठा राज्यपाल से बड़ली पर युद्ध कर वीरगति प्राप्त की थी। गीत में लालसिंह को सोते से उठाकर आगत विपक्षी सेना का संहार करने के लिए आह्वानित करने का वर्णन है। वह महादाजी सिंधिया की सेना से जूझ कर खेत रहा था।

---

२. वळीवळि – अनवरत, बार बार। ऊछळै – उछलता है। सोर – बारूद। विढ़ण– लड़ने। जांगी – नगारा, नगारची। असत – कायर। बूडे – डूबे। उडाड़े – उड़ाना, सत्वरता से प्रहार करे। लोह – शस्त्रों के। अखा री – अक्षयराज का पुत्र।

३. अरावां – तोपों। खूंद वाळा – बादशाह वाले, शाहजादे। अगगि – आगे, अगाड़ी। त्रम्बाळां – नगाड़े। सांभळे – सुने। सगगि – ध्वनि विशेष। खटतीस – छत्तीस। सार – लोहा, शस्त्र। ची – की। सत्र – शत्रु को। मार – चोट। चै – के।

४. कमै – कर्मसेन। वळियै – लौटने तक। समां – समय, समान। जोध – वीर। गिळिया – निगले, मार डाले। कितां – कितनों ही को। ऊजैण – उज्जयिनी स्थान। दूठ – वीर। खड़ियौ नहीं – युद्ध भूमि छोड़ कर गया नहीं। धणी – स्वामी। छळ – युद्ध, लिए। चहूं – चारों। साहणी – अस्तबल का पदाधिकारी। नीठ – बड़ी कठिनता से। पड़ियौ – धराशायी हुआ, मारा गया।

१. आंटीला – मान-मर्यादा पर अटल रहने वाला, गर्वीला,। सतारा वाळा – पूना सतारा के स्वामी। वागा – बजने लगे। त्रम्बाळा – नगारे। नाह – स्वामी। नींद्राळा – निद्रालु। कटक – फौज। आवियो – आ गया है। काळा – हे वीर।

लाखां बातां कर हठ लागो, आयो खड़ सोबायत आगो ।
बापू तणो नगारो बागो, जागो सा कमधजिया जागो ॥२॥

मद प्याला पींवण घण मोला, झिलम साज अंतरां पड़ झोला ।
ढालां खड़खड़ी सुण ढोला, बांका भड़ ऊठो बडबोला ॥३॥

छिन छिन वाट हेरतां छाया, होय कळळ घोड़ा हींसाया ।
अणचींत्या बैरी खड़ आया, ऊठो पीव पांहुणां आया ॥४॥

चखरा बैण सुणे चड़ड़ायो, अंग असळाक मोड़तो आयो ।
दूलावत इसड़ो दरसायो, जांणक सूतो सिंघ जगायो ॥५॥

कमरां कस आयो रण काळो, बांधण माथै मौड़ बिलालो ।
भुजडंड पकड़ ऊठियो भालो, लेबा भचक रूठियो लालो ॥६॥

---

२. हठ लागो – हठ लगा, अपनी बात पर दृढ़ रहा । खड़ – प्रयाण कर । सोबायत – सूवेदार । आगो – आगे, सामने । बागो – बजा । कमधजिया – हे राठौड़ ।

३. घण मोला – बहुमूल्य वाले । झिलम – टोप के नीचे धारण करने का युद्ध-कवच । खड़खड़ी – खड़खड़ की ध्वनि की, आपस में टकराने से होने वाली ध्वनि का भाव । ढोला – पति, स्वामी । बांका भड़ – बांकुरा योद्धा । बडबोला – गर्वयुक्त वचन बोलने वाला, बढ़-चढ़ कर बात करने वाला ।

४. छिन छिन – क्षण क्षण । वाट – मार्ग । हेरतां – खोजते । कळळ – कोलाहल । हींसाया – अश्वों की हिनहिनाने की ध्वनि । अणचींत्या – अचानक, बिना पूर्व विचारे । खड़ आया – चलकर आ पहुँचे हैं । पाहुणां – अतिथि, पाहुनें ।

५. चख रा – विस्मित करने वाले । बैण – वचन । चड़ड़ायो – क्रोध में आया, जोश में आया । असळाक – आलस्य । मोड़तो – अंग को मरोड़ कर आलस्य छोड़ने की क्रिया । दूलावत – दूलहसिंह का पुत्र । इसड़ो – ऐसा, इस रूप में । दरसायो – दृष्टिगोचर हुआ । जांणक – मानो । सूतो – नींद में सोया हुआ । सिंघ – सिंह ।

६. कमरां कस – कमर बांध कर, कटिबद्ध होकर । रण काळो – युद्ध वीर । बांधण – बांधने को । माथै – सिर पर । मौड़ – शिरमौड़, मुकुट । बिलालो – शौकीन, रण-रसिक । भुजडंड – भुजादण्डों में । लेबा – लेने के लिए । भचक – टक्कर, भिड़न्त । रूठियो – रोषान्वित हुआ । लालो – ठाकुर लालसिंह ।

घटा घोर अंबक घरहरिया, फीलां पर झंडा फरहरिया ।
फौजां तणा हबोळा फिरिया, श्रोळा जिम गोळा श्रोसरिया ॥७॥

अधपत हाथ दिखाड़ै श्राछा, त्रिजड़ा कलम किया भड़ श्राछा ।
सत्रवां साव चखाड़ै सांछा, पांचू हला भांजिया पाछा ॥८॥

प्रथी तणा सुणज्यो रजपूतो, जुध रै रथ धोरी होय जूतो ।
श्रासम चोथो परव श्रछूतो, सर सैजां भीसम जिम सूतो ॥९॥

जूनी थह मिळतां हद जूटौ, खूनी सिघ सांकळां खूटो ।
टूटयां सीस पछै गढ़ टूटौ, छूट्यां प्राण पछै हद छूटो ॥१०॥

—वरजूबाई री कह्यौ

---

७. घटा घोर – घनघोर घटा । अंबक – नगारे । घरहरिया – गर्जन करने लगे । फीलां – हाथियों । फरहरिया – फहराने लगे । तणा – का । हबोळा – हिलोर, लहर-समूह । श्रोळा – उपल, श्रोले । श्रोसरिया – बरसने लगे ।

८. अधपत – अधिपति, राजा । हाथ दिखाड़ै – शत्रुओं को हाथों की करामात बताने लगा । त्रिजड़ो – तलवारों, कटारियों । कलम – काटना, छाँटना । श्राछा – काट कर टुकड़े कर दिए, संहार कर दिया । सत्रवां – शत्रुओं को । साव – स्वाद । चखाड़ै – चखा कर । सांछा – सच्चा । हला – हमले, आक्रमण । भांजिया – भंजित किए । पाछा – पीछे भगा कर ।

९. प्रथ्वी तणा – पृथ्वी के । रजपूतो – क्षत्रियो । धोरी – भार उठाने वाले, मुखिया । जूतो – जोतने की क्रिया । परब – पर्व । अछूतो – बिना स्पर्श किया हुआ, पवित्र, अपूर्व । सर सैजां – शर-शय्या । भीसम – भीष्म पितामह । सूतो – सोया ।

१०. जूनी – पुरानी । थह – गढ़, कन्दरा । मिळतां – शत्रुओं द्वारा अधिकार करते समय । हद – बेहद, असीम । जूटौ – भिड़ा । खूनी – घायल । सांकळां – लोह श्रृंखला से । खूटो – खुला, मुक्त हुआ । टूटयां – टूटने पर, कटकर गिर पड़ने पर । गढ़ टूटौ – गढ़ पर वैरियों का कब्जा हुआ । छूटया – छूटने पर, निकल जाने पर । पछै – फिर ।

४१. गीत राव जगन्नाथ जसवंतौत आमझरा रौ

सहरीयार उतराध पूरब खुरम सांफळे, बाजिया धाय दुव राय बाजा ।
विढ़े मुरधरा तणा सींग वाधारियां, राव जगनाथ गजबंध राजा ॥१॥

हिंदवा तुरकां दळां आगळ हुवै, लियौ जस-जैत बानैत लोधे ।
करे गजगाह पतसाह दहवट किया, जोधपुर चाढ़ियौ नीर जोधे ॥२॥

कमधजां बेहूं भाराथ सबळा किया, सबळ साका किया सूर साखी ।
अभंग ऊदाहरै जिसी खेली अचड़, रांमहर तिसी अखियात राखी ॥३॥

भिड़े भालां मुंहे लाख दळ भांजिया, थांभिया लाख दळ हुवा दळ थंभ ।
जुड़े गजगाह पतसाह वहि जीविया, सूरावत जसावत जीवतासंभ ॥४॥

—किसना दुरसावत रौ कह्यौ

---

४१. गीतसार—उपर्युक्त गीत में आमझरा के शासक राव जगन्नाथसिंह राठौड़, जोधपुर के महाराजा गजसिंह और विद्रोही शाहजादे खुर्रम के बीच हुए युद्ध का वर्णन है । गीत में उल्लेख है कि शहरयार और खुर्रम के युद्ध में दोनों राठौड़ राजाओं ने घायल होकर 'जीवितसंभ' की ख्याति प्राप्त की ।

---

१. सहरीयार – शाहजादा शहरयार । उतराध – उत्तर-दिशा, दिल्ली साम्राज्य के उत्तरी भूभागों का राज्यपाल । खुरम – शाहजादा खुर्रम । सांफळे – युद्ध । दुव राय – दो राजा । विढ़े – लड़े । मुरधरा तणा – मारवाड़ के । सींग – शृंग, बड़प्पन । वाधारिया – बढ़ाये मन्सब आदि की वृद्धि पाये हुए । गजबंध राजा – महाराजा गजसिंह राठौड़ जोधपुर ।

२. दळां – सेनाओं के । आगळ – आगे, अग्रिम । जस – यश । जैत – विजय का । बानैत – वीरत्व का चिन्ह विशेष । लोधे – लुब्ध होकर । गजगाह – गजग्राह, युद्ध । दहवट – विनाश, संहार । नीर – कान्ति ।

३. कमधजां – राठौड़ों । बेहूं – दोनों ने । भाराथ – युद्ध । साका – युद्ध, पुरुषों के केशरिया वस्त्र धारण कर मरने की प्रतिज्ञा के साथ युद्धस्थल में प्रवेश करने तथा स्त्रियों के अग्नि में भस्म हो जाने को साका कहते हैं । सूर साखी – सूर्य की साक्षी में । अभंग – वीर, निडर । ऊदाहरै – उदयसिंह के पौत्र ने । अचड़ – शक्ति का खेल, अनोखी बात । रांमहर – रामसिंह के पौत्र ने । अखियात – प्रसिद्धि, अद्भुत वार्ता ।

४. भिड़े – भिड़कर, मुकाबिला कर । भालां मुंहे – भालों की नोकों के प्रहारों में । भांजिया – संहारे । थांभिया – रोके । दळथंभ – सेना के लिए स्तम्भ तुल्य । सूरावत – राजा शूरसिंह का पुत्र गजसिंह । जसावत – राजा जसवंतसिंह-तनय जगन्नाथसिंह । जीवतासंभ – युद्ध में घायल होकर जीवित बच जाने वाले को जीवित-संभ कहते हैं ।

४२. गीत राणी किसनावती कछवाही री

दव दाधी अेक अेक दुख दाधी, किसनावती कहै सुर कोड़ि ।
गंधारी न जुड़ी थारी गति, जुड़ी न कूंता थारी जोड़ि ॥१॥

सूरत धन जैसिंघ सारघू, भली भली त्रिहुं भुवण भणी ।
मा कैरवां तणी न कियौ मत, तौ जेहीं पांडवां तणी ॥२॥

अ्रत प्रब माइ बिन्है तौ मिळिया, कहिजे ज्यां वाखांण किसा ।
दुरजोधन जिसड़ा दूसासण, जुजिठिळ अरिजण भीम जिसा ॥३॥

केहर सूर लियां कछवाही, मुगति तणै पंथ चाली मात ।
जळी नहीं सूनी कूंतां ज्यूं, रूनी जनम गंधारी रात ॥४॥

—गोरधन बोगसा रौ कह्यौ

---

४२. गीतसार—उपरांकित गीत रानी कछवाही किसनावती राजमाता आमझेरा की युद्ध-वीरता पर कथित है । गीत में किसनावती के रण में वीरगति प्राप्त कर स्वर्ग में जाने पर देवताओं द्वारा उसकी प्रशंसा करने का वर्णन किया गया है । कवि कहता है कि देवताओं ने स्वर्ग में पहुँचने पर किसनावती की सराहना करते हुए कहा कि कुंती तो मरने पर आग में जली और गांधारी पुत्रों के वियोग में जीवित रह धुक धुक कर जलती रही । उन दोनों को ही तेरी तरह युद्धाग्नि में प्रवेश करने का साहस नहीं हुआ ।

---

१. दव दाधी – अग्नि में जली । दुख दाधी – दु.ख में जलती । सुर कोड़ि – तेंतीस कोटि देवसमाज । जुड़ी – लड़ी । थारी गति – तेरी तरह ।

२. सूरत – शूरत्व, वीरता, ढंग । धन – धन्य है । सारघू – पुत्री । त्रिहुं भवण – तीनों लोक । भणी – कही । कैरवां – कौरवों । तणी – की । मत–विचार । तौ जहीं – तेरे ज्यों ।

३. अ्रत प्रब – मृत्यु पर्व । माइ बिन्है – दोनों माताओं ने । मिळिया – मिलने पर । वाखांण – बखान, वर्णन । दुरजोधन – दुर्योधन । जिसड़ा – जैसे । जुजिठिळ– युधिष्ठिर । अरिजण – अर्जुन । जिसा – जैसे ।

४. केहर सूर – केशरीसिंह और सुजानसिंह । मुगति – मुक्ति । तणै – के । मात – माता । जळी – दग्ध हुई । सूनी – अकेली । रूनी – रोने की क्रिया का भाव, रुदन । जनम – जन्म भर ।

४३. गीत राव केसरीसिंघ राठौड़ आमझरा रौ

उठो केहरी सिवराज आयौ, सबळ मेळै साथ।
जगावत अवसांण जोतौ, हमैं वा वरि हाथ ॥१॥

हलकार भीरू बडा हिन्दू, ताहरा तुड़तांण।
समसेर झाले करौ सेहरा, सांभळे सुरतांण ॥२॥

दूसरा जसवंत भांज दिखणी, भुजां थां भरभार।
कुळ रीत दाखव जोध काळा, ऊजळा असवार ॥३॥

कर कळह साको कमंध केहर, दाख खत्री दाव।
जुध करै गजबंध कला जेहो, रथे बैठो राव ॥४॥

—बारहठ जसा रौ कह्यौ

---

४३. गीतसार—उपर्युक्त गीत मालवा के आमझरा राज्य के शासक राव केशरीसिंह राठौड़ का है। केशरीसिंह ने राजा शिवा सीसोदिया के आक्रमण करने पर उसका सामना करते हुए वीरगति प्राप्त की थी। गीत में कवि ने केशरीसिंह को युद्धार्थ जगाते हुए लिखा है—हे केशरीसिंह! राजा शिवा अपनी पराक्रमी सेना एकत्रित कर चढ़ आया है। तुम जिस अवसर को सदा खोजते रहते थे, वह अवसर आज मिल गया है। अतः उठो, और शत्रुओं का मुकाबिला करो।

---

१. केहरी – गीतनायक राव केशरीसिंह राठौड़। सिवराज – राजा शिवा सीसोदिया। सबळ – बलवान्। मेळै – एकत्रित कर। साथ – संग, सेना। जगावत – राव जगन्नाथसिंह के पुत्र, केशरीसिंह। अवसांण – अवसर। जोतौ – खोजता था। हमैं – अब। वा वरि – वह वेला।

२. हलकार – उत्साहजन्य ललकार, बुलाना। भीरू – कायरों को, अपने पक्ष वालों को। ताहरा – तेरा। तुड़तांण – सेना, मूंछों पर बल दे कर। समसेर – शमशेर, कृपाण। झाले – लिए, पकड़ कर, उठा कर। सांभळे – सुनें। सुरतांण – सुल्तान, बादशाह।

३. दूसरा जसवंत – द्वितीय जसवंतसिंह, केशरीसिंह के लिए प्रयुक्त हुआ है। भांज – नाश कर। दिखणी – दक्षिण की सेना को, मरहठों को। भुजां – भुजाओं। थां – तेरे, तुम्हारे। भरभार – दायित्व, समस्त जिम्मेवारी। कुळ रीत – वंश की रीति। जोध काळा – महावीर। ऊजळा – उज्ज्वल।

४. कळह – युद्ध। साको – युद्ध विशेष। कमंध – राठौड़। दाख – कह। खत्री-दाव – वीरत्व, क्षत्रियत्व, युद्ध। गजबंध – गजसिंह, गजराज को बांधने वाला। कला – कल्याणसिंह। जेहो – जैसा। रथे बैठो – विमान में बैठा, स्वर्ग-लोक गया।

४४. गीत राणी किसनावती कछवाही रौ

कळहे दोय बेटा गोरो काळो, है थट पाड़े वजर हियो ।
चावंड देवणी रण चाचर, कछवाही अवतार कियो ॥१॥

केहर अनै न सूजाण हचकिया कळ, सीले लूण दिली रै साह ।
दहूं हाथां करै महादेवी, बीसां हाथां जिसी हथवाह ॥२॥

खेतरपाळ पूत बिउ खेले, पूजा चढ़ै पड़े अणपार ।
कर जात्रा सिवा दळ कहियो, कळा नमो तो जैजैकार ॥३॥

साको कर गढ़ दे माथा सौं, जगड़ धणी उजवाळ जग ।
पुत्रां बेहू सहेत पधारे, सबळी लाज वधारे अग ॥४॥

—भैरवदास थेहड़ रो कह्यौ

---

४४. गीतसार—उपरांकित गीत वीरांगना किशनावती (कृष्णावती) कछवाही पर रचित है। किशनावती ने दक्षिण प्रान्त के किसी दुर्ग की रक्षार्थ युद्ध करते हुए देह पात किया था। उसके साथ उसके दोनों पुत्रों और पुत्र-वधुओं ने भी वीरगति प्राप्त की थी। गीत में किशनावती को रणदेवी दुर्गा और उसके दोनों पुत्रों को काला और गोरा भैरव अंकित कर गीत की रचना की गई है।

---

१. कळहे – युद्ध में। दोय – दो। काळो – काला भैरव। है थट – अश्वसेना को। पाड़े – पछाड़े, मारे। वजर – वज्र। हियो – हृदय। चावंड – चामुण्डा, रणदेवी। रण चाचर – युद्ध-क्रीड़ा, रण-नृत्य। कछवाही – कछवाहा कुलोत्पन्न, किशनावती ने।

२. केहर – राव केशरीसिंह। अनै न – अन्य, और न ही। सूजाण – सुजानसिंह, केशरीसिंह का छोटा भाई। हचकिया – भयभीत हुए, युद्ध किया। सीले लूण – नमक का मूल्य चुकाया, स्वामिधर्म को चरितार्थ किया। साह – बादशाह का। दहूं – दोनों। महादेवी – महाचंडी किशनावती। बीसां हाथां – महाकाली की बीस भुजाओं। जिसी – जैसी। हथवाह – प्रहार, मार।

३. खेतरपाळ – क्षेत्रपाल, ग्राम के रक्षक देवता, शिव के गण, भैरव। पूत – पुत्र। बिउ – दोनों। खेले – खेलते हैं, लड़ते हैं। अणपार – अपरिमित। जात्रा – यात्रा। सिवा – शिवा, दुर्गा, पार्वती ने। कळा – करामात, कला। तो – तुम्हारी, तेरे।

४. साको – विजय अथवा मृत्यु के प्रण सहित युद्धारम्भ करना। जगड़ धणी – स्वामी जगन्नाथसिंह को। उजवाळ – उज्ज्वल कर। जग – संसार में। बेहू – दोनों। सहेत – सहित। बधारे – बढ़ा कर। अग – स्वर्ग।

४५. गीत सुजाणसिंघ जगनाथौत राठौड़ रौ

गढ़ पड़ियै भेळ अनड़ गहमहियै, आपण पाधरि पै अधण ।
सूरज कहै संपेखो सूजै, ऊभो रथ राखे अरुण ।।१।।

ओरंग सुछळ बंधव मुंह आगळ, थाटां बिच रिणथंभ थयौ ।
दणियर कहै अचूंभौ देखो, कमधज आकारीठ कियौ ।।२।।

घड़ वेहड़ां मूंहे खगधारां, बगतर नर करतो बिसुध ।
अचरज हुवौ प्रभाकर आखै, जगड़ समोभ्रम तणौ जुध ।।३।।

अरक करे त्रिपतौ जुध ओसर, सहितौ सतियां थांन सुर ।
साथ राव केहरी सूजौ, गौ म्रत जीपै खत्री गुर ।।४।।

---

४५. गीतसार–ऊपर लिखित गीत आमझरा के राव जगन्नाथसिंह के द्वितीय पुत्र सुजानसिंह की रण-मृत्यु से सम्बन्धित है । गीत में सुजानसिंह की वीरता को देखने के लिए रवि-रथ के आकाश में ठहरने का वर्णन करते हुए लिखा है कि गढ़ पर शत्रुओं के अधिकार करने की हलचल होने पर वीर सुजानसिंह ने विपक्षियों पर भयंकर आक्रमण किया । वह रण-दृश्य देखने के लिए सूर्य ने अरुण से कहा—जरा रथ को रोको, देखें सुजानसिंह किस वीरता का प्रदर्शन कर रहा है ।

---

१. भेळ – शत्रुओं द्वारा अधिकार में करने के प्रयत्न पर । अनड़ – वीर, बहादुर । गहमहियै – हलचल हुई । भीड़-भाड़ । आपण – सुपुर्द करने, छीनने । पाधरि – सीधे । संपेखो – देखो । सूजै – सुजानसिंह को । ऊभो – खड़ा, स्थिर । अरुण – सूर्य के सारथी का नाम ।

२. ओरंग – औरंगजेब बादशाह के । सुछळ – युद्ध, लिए । बंधव – भाई के । मुंह आगळ – सम्मुख । थाटां – समूह, सैन्यदल । रिणथंभ – युद्ध में स्तम्भ-स्वरूप । थयौ – हुआ । दणियर – सूर्य, दिनकर । अचूंभौ – अचम्भा, विस्मय । कमधज – राठौड़ । आकारीठ – घमासान युद्ध ।

३. घड़ – सेना । वेहड़ा – द्विघटा, दोनों सेनाओं । खगधारां – खड्ग-धाराओं के । बगतर नर – कवचधारी वीर, कवच और योद्धाओं को । बिसुध – अचेत । प्रभाकर – सूरज । आखै – कहने लगा । जगड़ – जगन्नाथसिंह के । समोभ्रम–पुत्र, समान भ्रांति देने वाला । तणौ – को ।

४. अरक – सूर्य, अर्क । त्रिपतौ – तृप्त, संतुष्ट । जुध – युद्ध । ओसर – अवसर । सहितौ – सहित । थांन सुर – सुर-स्थान, सुर-लोक । सूजौ – सुजानसिंह । गौ – गया । म्रत जीपै – मृत्यु को जीत कर । खत्री-गुर – क्षत्रिय-गुरु, क्षत्रिय-श्रेष्ठ ।

४६. गीत राव केसरीसिंघ आमझरा रौ जुद्ध रौ

मंडियौ भाराथ करण गढ़ माथै, राव जगनाथ तणी कुळ रीत ।
गज चित्रांम तणा माहल गत, चढ़ै न ऊतरियौ वड-चीत ॥१॥

कोट चइनै राव केहरी, मारू नरां नखतरां मील ।
सुज किम रहै भांजतै साजै, पटहथ लिखत तणा पर पील ॥२॥

तूं चाढ़ियौ भलांई चकते, सिंधुर तणा लिखत साभाव ।
कोट पलटियौ राव केहरी, काया पलट किसौ कहाव ॥३॥

भागी भीर सरीर भांजियौ, भीत चित गज माहुत भंग ।
मारुवै राव दियौ सु माथो, दियौ न हाथां करै दुरंग ॥४॥

---

४६. गीतसार–प्रोक्त गीत मध्य भारत के आमझरा राज्य के शासक राव केशरीसिंह राठौड़ पर रचित है। गीत-रचयिता ने केशरीसिंह का वर्णन करते हुए लिखा है कि जिस प्रकार हवेलियों-महलों पर चित्रित गजारूढ़ योद्धा कभी अपनी सवारी से नीचे नहीं उतरता है उसी प्रकार राव केशरीसिंह ने अश्वारूढ़ होकर रण में अपना मस्तक दे दिया किन्तु घोड़े को हांक कर रण भूमि से नहीं हटा। इस प्रकार उस वीर ने राव जगन्नाथसिंह के कुल की परम्परा को युद्ध में वीर गीत प्राप्त कर अक्षुण्ण रक्खी ।

---

१. भाराथ – संग्राम। माथै – ऊपर। तणी – के। कुळ रीत – वंश की रीति। चित्रांम – चित्र। माहल गत – महलों की भांति। उतरियौ – ऊतरा। वड-चीत – उच्चमना।

२. कोट – दुर्ग। चइनै – चिन्ह। केहरी – गीतनायक केशरीसिंह। मारू नरां – मारवाड़ या राठौड़ वीरों ने। नखतरां – नक्षत्रों। सुज – वह। किम – कैसे। भांजतै – नाश करते। पटहथ – योद्धा। लिखत – लिखित, चित्रित। पील–हाथी।

३. चाढ़ियौ – चढ़ाया। भलांई – अच्छा ही। चकते – मुसलमान, बादशाह ने। सिंधुर – हाथी। साभाव – स्वभाव, उसकी तरह। पलटियौ – पलटा, दूसरे के अधिकार में गया। काया पलट – कायाकल्प, बड़ा हेरफेर। कहाव–कथन, जनोक्ति।

४. भीर – सहायक, भीड़, कायर। भांजियौ – नाश किया। भित चित – भित्ति चित्र। माहुत – महावत। मारुवै राव – राठौड़ राजा, मरुधरा नरेश। माथो–मस्तक। दुरंग – दुर्ग, किला।

४७. गीत राव देवीसिंघ सेखावत सीकर रौ

ग्रेळा उधमै ग्रवाक भालां छाक डाक दे दे ग्रांणै,
धाड़ा धाड़ा ग्रापांणै भरोसै भुजा-धींग।
चंद्रहास ऊव्रांणै वीराध-वीर जांणै चौजां,
दिली री कंवारी फौजां मांणै देवीसींग ॥१॥

लोयणां पळाकां नग्गां सावळां भळाका लेती,
सुढंगां ग्रोयणां बाजां पाखरां सानैत।
चीर ग्रंगां पीन ग्रंगां नीसांण मेछ घड़ा चंगी,
विधूसै पिलंगां चा ग्रंगां चंद रौ वानैत ॥२॥

---

४७. गीतसार—उपर्युक्त गीत शेखावाटी के सीकर संस्थान के शासक राव देवीसिंह शेखावत पर रचा गया है। गीतकार ने गीतनायक देवीसिंह को वर और प्रतिपक्षी मुगलसेना को परिणयाकांक्षिणी वधू के रूप में उपमित कर गीत को प्रस्तुत किया है। वह कहता है कि तलवार एवं भाला रूपी नयनों की चमक रूपी कटाक्ष करती वराकांक्षिणी शाही सेना रूपी दूलहिन को देवीसिंह रूपी दूल्हा रणस्थल रूपी शैया पर रमाता है, भोगता है।

---

१. ग्रेळा—इळा, पृथ्वी। उधमै—आमोद-प्रमोद करता है, लड़ाई करता। ग्रवाक-बहादुर, शत्रु। छाक—मस्त होकर, छका कर। डाक दे दे—युद्ध का बाजा बजा कर। ग्रांणै—लाता है। धाड़ा धाड़ा—धन्य धन्य। ग्रापांणै—बल, अपने। भुजां-धींग—भुज-बल को। चन्द्रहास—तलवार। उव्रांणै—म्यान से बाहर, नग्न। चौजां—मौजे, ग्रानन्दादि की रीझें। कंवारी—बिना लड़ी हुई। मांणै—भोगता है।

२. लोयणां—लोचनों, नेत्रों के। पळाका—दीप्ति, चमक, संकेत। नग्गां—नगीनों। सावळां—भाले, बर्छे। भळाका—चमक-दमक। सुढंगां—सुंदर। ग्रोयणां—पांवों, चरणों। बाजां—घोड़ों की, बाजे। पाखरां—लोहे की झूलें, कवच। पीन-पतले। निसांण—निशान, चिह्न। मेछ घड़ा—यवन सेना। चंगी—सुंदर एवं स्वस्थ, श्रेष्ठ। विधूसै—ध्वंस करे। चा—का। चंद रौ—चांदसिंह का, देवीसिंह। वानैत—वीरता का वेश वाला।

सुसस्त्रां छत्तीसां सोळां सिगारां बणाती सोभा,
वैण सिधू गाती वौम अणाती बोधार।
छैल आती पेखांणी उघाड़ै गांजे चाढ़ छाती,
जौम-राती सेनां भांजै सेखांणी जोधार ॥३॥

अंकां भाळां नखां दोज चंद्रबांण ओसराळै,
भरे घेरा पाड़ै बत्थां मचै हाव-भाव।
चोड़ै धाड़ै धजां सारां अलंगा नवौढ़ा चमू,
गजां भारां पिलंगां रमाड़ै गाढ़ै राव ॥४॥

फूटै चीर सावळां नीसांण वार पार फूटै,
माथा सत्रां तूटै जांणै हारां मोती लाल।
छके-पंजे मेछां छळे वामां हुवै अग्रामां छूटै,
संग्रांमां प्रजंकां लूटै बीजौ रायासाल ॥५॥

---

३. सुसस्त्रां – शस्त्रों। छत्तीसां – छत्तीसों प्रकार के हथियारों। सिगारां – शृंगारों से। वैण सिधू – सैंधव राग के बोल। वौम – व्योम, आकाश। अणाती – बुलवाती। बोधार – देवताओं को। छैल – रसिक, शौकीन। पेखांणी – देखी। उघाड़ै – नंगे। गांजे – भाले। चाढ़ छाती – वक्षस्थल पर चढ़ाकर, अंक में भरकर। जौम राती – गर्व में अनुरक्त। भांजै – नष्ट करता है। सेखांणी – शेखावत।

४. नखां – नक्षत्रों। दोज – द्वितीया। बांण – तोप विशेष, बाण। ओसराळै – वर्षा करावे। भरे घेरा – घेरे में ले। पाड़ै – पटके, मारे। बत्थां – भुजा-लिंगन, बाथें। चोड़ै-धाड़ै – दिनदहाड़े, प्रगट रूप में। धजां – तलवारों, भालों। सारां – भालों, शस्त्रों। अलंगां – मस्तानी, आलिंगन की इच्छुक। नवौढ़-चमू – सेना रूपी नवयौवना का। गजां – हाथियों। रमाड़ै – परिरम्भन करें, क्रीड़ा करावें। गाढ़ै राव – महावीर, धैर्यशील।

५. चीर – विदीर्ण कर। सावळां – भालों। नीसांण – चिन्ह, घाव, भाला। वार पार – इधर से उधर। माथा – मस्तक। सत्रां – शत्रुओं के। तूटै – टूट कर गिरते हैं। जांणै – मानो, जैसे। हारां – हार, कंठाभूषण से। छके-पंजे – सब ओर से सतर्क, दांव और शक्ति में सावधान। मेछां – मुसलमानों को। छळे – युद्ध में, छल से अधिकार में ले। वामा – पत्नी। संग्रांमां प्रजंकां – रणभूमि रूपी पलंग पर। बीजौ – द्वितीय। रायासाल – राजा रायसल, देवीसिंह के लिए कथित।

४८. गीत ठाकर महेसदास कूंपावत आसोप रौ

कथन पाट पत बिजौ महेस हूं तां कथै, थाट पत सितारो दिलो थंडिया ।
खाट अवसाण पाटण फतै खेड़तै, मेड़तै सीस घमसांण मंडिया ।।१।।

मुचण पाटण तणी सदा जांणो मती, गरब खाटण तणी आद गुण छै ।
मो जिसा नरां ऊभां पगां मुरधरा, कांकड़ां पांव दै इसौ कुण छै ।।२।।

हसम सिणगार मुजरो कर हालियो, तेज अजरौ करै नजर तेढ़ी ।
कूंपहर अडर सुघड़ भंवर अणी रौ, मिसल मुरधर समर अमर मेढ़ी ।।३।।

---

४८. गीतसार–उपरांकित गीत ठाकुर महेशदास कूंपावत आसोप के स्वामी का है । महाराजा विजयसिंह जोधपुर से आदेश प्राप्त कर ठाकुर महेशदास ने मेड़ता स्थान पर माधवराव सिंधिया की सेना के साथ भयानक युद्ध लड़ा था । गीतकार ने महाराजा विजयसिंह और महेशदास के परस्पर वार्त्तालाप का वर्णन करते हुए महेशदास द्वारा मरहठों पर विजय प्राप्त करने का आश्वासन दिलवाया है ।

---

१. पाटपत – पट्टपति, राजा । बिजौ – महाराजा विजयसिंह जोधपुर । महेस हूंतां – ठाकुर महेशदास राठोड़ से । कथै – कहता है । थाटपत – सेनाध्यक्ष । सितारो– सतारा राज्य के स्वामी । थंडिया – पराजित किये । खाट – प्राप्त कर । अवसाण – अवसर । पाटण – तंवरावाटी की राजधानी पाटन स्थान । खेड़तै – चलते, प्रयाण करते । मेड़तै – मेड़ता स्थान । घमसांण – घमासान युद्ध ।

२. मुचण – मोचन, पराजित । गरब – गर्व । खाटण – अर्जित करने, टक्कर लेने । तणी – को । आद – आदिकाल का । मो जिसा – मुझ सदृश । ऊभां पगां – साबित रहते । कांकड़ां – सीमा पर, हद में । इसौ – ऐसा । कुण छै – कौन है ।

३. हसम सिणगार – सेना का शृंगार, रण-दूल्हा । मुजरो – अभिवादन । हालियो – चला, रवाना हुआ । अजरौ – बहादुर, वीर । तेढ़ी – टेढ़ी, वक्र । कूंपहर – प्रसिद्ध वीर कूंपा का वंशधर । अडर – निर्भीक । सुघड़ – सबल सेना का, सुंदर । भंवर अणी रौ – हरावल की पंक्ति का प्रमुख योद्धा या सेनापति । मिसल–मारवाड़ में आठ प्रमुख जागीरदार थे जिनको आठ मिसलें कहा जाता था । समर – युद्ध का । मेढ़ी – प्रमुख ।

फौज सामिल हुवौ मुदायत फौज रा, प्राण तन जुदायत ठीक पूगौ।
माग सुध तणौ सिदायत मेड़तै, अचड़ कथ उदायत भाण ऊगौ ॥४॥

दूठता सौर ज्यूं तुरंग नर दपटिया, रूठता तौर तिम जजर रूठौ।
बूठता लोह जिम आग वूठी बळै, ऊठता मोर ज्यूं वाग ऊठौ ॥५॥

पूर तोपां तणा चरख धरती पड़्या, बीच धरती पड़्या सुरां बरती।
पाड़ नेजां गजां आप धरती पड़्यौ, धकै आया जिका पड़्या धरती ॥६॥

पळचरां धरती रगत पत्र पोखित किया, कानहर सत्रां सोखित किया कौल।
तोलिया तिकै भुज भार मुरधर तणा, वोलिया जिकै निरवाहिया बौल ॥७॥

---

४. मुदायत – प्रमुख, उत्तरदायित्व वाला। जुदायत – अलग, मरने के लिए। पूगौ – पहुँचा। सिदायत – सीधा, प्रस्थान कर। अचड़ कथ – श्रेष्ठ कार्य की कथा। उदायत – उदयकालीन, प्रभात काल। भाण – भानु, सूरज। ऊगौ – उदय हुआ।

५. दूठता – जलते, आगस्पर्श होते, भयानकता। तुरंग – अश्व। दपटिया – तेज चलाए, दौड़ाकर। रूठता – नाराजी। तौर – अवस्था, तरीके से। तिम – जैसे। जजर – मृत्यु, महाकाल, यमराज, वज्र। बूठता – बरसते, प्रहार होते। लोह – शस्त्र, तलवार। आग वूठी – अग्नि-वर्षा हुई, तोपों के गोलों से अग्नि बरसने लगी। बळै – फिर, पुनः। ऊठता – उड़ान लेते समय के। मोर – मयूर पक्षी की। वाग – घोड़ों की लगामें।

६. चरख – तोप को खेंचने की गाड़ियाँ, लकड़ी के उपकरण जिन पर चढ़ा कर तोपें इधर उधर लेजायी जाती हैं। नेजां – ध्वजाएँ, भाले। गजां – हाथियों। पड़्यौ– कट कर गिर पड़ा। धकै – सम्मुख, सामने आए। जिका – वे, जो।

७. पळचरां – आमिष भक्षी, गृद्धादि पक्षी। रगत – रक्त। पोखित किया – पोषण किया, तृप्त किए। कानहर – कन्हीराम के पौत्र, महेशदास ने। सत्रां – शत्रुओं को। सोखित – शुष्क, दुखित। जिकै – वे, जो। निरवाहिया – पूर्ण किये, निभाये। बौल – वचन।

४६. गीत ठाकर नवलसिंघ सेखावत दांता रा धणी रौ

बळ बळ खळ डरै बाघ वन वन रा, घौर किन्नरां वासी गाढ़ाल।
भारी नवल बिड़द भिन्नभिन्न रा, दिन दिन रा कूरम दाढ़ाळ ॥१॥

हाथळ खळ पटकै केहरी हठमल, रायसाल दूजौ रिमराह।
चोड़ै खेत अखाड़े अणचळ, बांकड़मल ओखळ खगवाह ॥२॥

जोरावर भुरट गढ़ा दे जुरड़क, उरड़क सौं डरपै आकाय।
ठाढ़ो करै ठाहरां ठरड़क, खागां री खरड़क धर खाय ॥३॥

डरपै दस देस डके डूंडारी, मुंहडा री सोबा मुकर।
ढांवण नींव अरचां ढूंढ़ा री, टूंडां री दे दे टकर ॥४॥

---

४६. गीतसार–उपर्युक्त गीत शेखावाटी के दांता ठिकाने के स्वामी नवलसिंह शेखावत पर कथित है। गीत-रचयिता ने गीतनायक को वाराह और उसके प्रतिद्वन्द्वी शत्रुओं को व्याघ्र के रूप में उपमित कर गीत का निर्माण किया है। एकल वाराह के सामने महाबली वनराज सिंह भी भय मानता है।

---

१. बळबळ – चारों तरफ के, पुनः पुनः। खळ – शत्रु। घौर किन्नरां – घोर कंदराओं के। गाढ़ाळ – दृढ़ता वाले, धैर्यशील, दृढ़ वीर। नवल – नवलसिंह। बिड़द – विरुद। कूरम – कूर्म, कछवाहा। दाढ़ाळ – दंष्ट्रावाला, सूअर।

२. हाथळ – पञ्जा। पटकै – गिराता है। केहरी – सिंह। रायसाल – रायसल का वंशधर। रिमराह – युद्ध – पथ, शत्रु अखाड़े – युद्धस्थल। अणचल – अविचल। बांकड़मल – वाराह, बिकट वीर। ओखळ – प्रहार देकर, नाश कर। खगबाह – तलवार चलाकर।

३. जुरड़क – जुरड़े, आक्रमण कर मार्ग कर देता है। उरड़क सौं – टक्कर से, बलपूर्वक अंदर घुसने का भाव। आकाय – शक्ति, साहस। ठाढ़ो – खड़ा, बलवान। ठाहरां – स्थान, गढ़। ठरड़क – गर्व एवं बलपूर्ण ध्वनि, दहाड़। खागां री – तलवारों की। खरड़क – टकराने का भाव, रगड़। धर खाय – भूमि की उपज का भोग करता है, पृथ्वी का लगान लेता है।

४. डरपै – भय मानते हैं। डके – डकर, सूअर की गर्जना। डूंडारी – सूअर, महिषाकृति शूकर की। मुंहडा री – मुख की। ढावण – ढाहने, ध्वस्त करने। अरचां – शत्रुओं। ढूंढ़ारी – कच्ची ईंट और मिट्टी से बने मकान, गढ़। टूंडां री – तुण्डों की। टकर – टक्कर।

डाचिकतौ सबळ लियां दळ डारें भभकारे नौहथ कर भूक।
धीठ कुरीठ सके नह धारै, चारै खेत खड़ौ अणचूक ॥५॥

कटक वीभाड़ हराहर अेकल, छित छेकल नाहरड़े छेक।
अमान तणौ बहौ भांत बमेखळ, टेकल भीम न छोडै टेक ॥६॥

तेज प्रमाण माण अणतोलौ, जुध ढौलौ वाजै जस जैत।
कांकड़ थह बैसि अमरहर कोलौ, नोलौ भूप तपै नखतैत ॥७॥

५०. गीत प्रतापसिंघ सत्रसालोत राठौड़ री

ऊभटतौ तुरी ऊनागो असमरि, समहरि भगत सिवा सिव साज।
रिमहरि रुहिरि मुंड रतनाहर, कुळवट करै इसट वट काज ॥१॥

---

५०. गीतसार–प्रोक्त गीत रतलाम के राजा रत्नसिंह के पौत्र राठौड़ वीर प्रतापसिंह की युद्ध वीरता पर रचित है। प्रतापसिंह ने शत्रुओं पर अपने घोड़े से आक्रमण कर रणभूमि में जूझते हुए प्राण त्याग किया था। गीत में शिव को मुण्ड-दान और दुर्गा को रक्त-पान से तृप्त कर प्रसन्न करने का वर्णन है।

---

५. डाचिकतौ – आक्रमण करता, मुंह की टक्करें देता। सबळ – बलवान। दळ – समूह, सेना। डारें – सूअरों की टोलियों को डार कहा जाता है। भभकारे – ध्वनि विशेष, डराने के लिए की जाने वाली क्रुद्ध आवाज। नौहथ – नव हाथ लम्बा, सिंह। भूक – नाश। धीठ – जबर्दस्त योद्धा, बलवान। कुरीठ – भयानक प्रहार, शत्रु। नह धारै – पर्वाह नहीं करता। चारै – चरता है, खाता है। अणचूक, – अचूक, नियमित निश्छलता से।

६. कटक – सेना। वीभाड़ – नाश कर, प्रहारों से घायल कर। हराहर – हरिसिंह का पौत्र, नवलसिंह। अेकल – समूह में न रहने वाला, अकेला रहने वाला। छित–भूमि। छेकल – विदीर्ण करने वाला, पार कर कब्जा करने वाला। नाहरड़े – सिंह। छेक – छेद कर, चीर फाड़ कर। अमान तणौ – अमानीसिंह-तनय, नवलसिंह। बहौ भांत – बहुविध। बमेखळ – अनोखा (?)। टेकल – टेक रखने वाला। टेक – प्रण, हठ।

७. माण – मान, प्रतिष्ठा। अणतोलौ – अपार, अतोल। जुध ढौलौ – युद्धरसिक, युद्धप्रिय नायक। बाजै – कहलाता है, बजते हैं। जस जैत – यश और विजय, यशरूपी जय। कांकड़ – सीमा, हद। थह – गढ़। बैसि – बैठकर। अमरहर – अमरसिंह का वंशज। कोलौ – वाराह। नखतैत – नक्षत्रधारी।

१. ऊभटतौ – दौड़ाता हुआ, छलांगें भराता हुआ। तुरी – घोड़ा। ऊनागो – नंगी। असमरि – तलवार। समहरि – युद्ध। भगत – भक्ति, पूजा करने, भोजन कराने। सिवा सिव – दुर्गा और शिव को। रिमहरि – शत्रु। रुहिर – रुधिर। मुंड – कटा हुआ सिर। रतनाहर – राजा रतनसिंह राठौड़ रतलाम का पौत्र, प्रतापसिंह। कुळवट करै – कुल-धर्म का पालन करता है। इसट – इस्ट।

दबटे बाज जुतै दुजड़ां हथ, गिरा गिरीस पूजिवा गात ।
केवी रगति कमळ तिण कारण, जुगति पतौ मन क्रम दे जात ।।२।।

काछी सजि किरमाळि करारी, उमा उमापति प्रेम उछाह ।
श्रोणित खळां सीस हणि सारां, सम्रसल तणौ पतौ गौ साह ।।३।।

सिंधव सरळ साभि सीरोही, सकति संभू ची करिवा सेव ।
अरि लोही ओभड़ां उतबंग, देखै हेत कमंध हरदेव ।।४।।

पाण माळ लै भलां पूजिया, भविनारी जाटेसुरि भेस ।
रिध सिध खड़ग अघटतौ समपै, माहेस हरा रीघौ माहेस ।।५।।

—महाराजा राजसिंघ राठौड़ रौ कह्यौ

---

२. दबटै – कूदाता हुआ । बाज – घोड़ा । दुजड़ा हथ – हाथ में तलवार लिए, खड्ग-प्रहार करते हुए । गिरा – पार्वती । गिरीस – शिव । केवी – शत्रु के । रगति – रक्त । कमळ – मस्तक । जुगति – युक्ति । पतौ – प्रतापसिंह ।

३. काछी – घोड़ी । किरमाळि – तलवार से । हणि – हनन कर, काट कर । तणौ – तनय, पुत्र । गौ साह – बादशाह के पास गया, बादशाह तक जा पहुँचा ।

४. सिंधव – घोड़ा । साभि – सज कर, संहार कर । सीरोही – तलवार । सकति–शक्ति, चण्डिका । ची – की । अरि – वैरी । ओभड़ां – तिरछे प्रहार करता, टक्कर मारता । उतबंग – शीश । हेत – स्नेहिल भाव से । कमंध–कर्मध्वज, राठौड़ । हरदेव – महादेव ।

५. पाण माळ लै – हाथ में मुण्डमाला लेकर । भलां – अच्छा, भलीभाँति । भविनारी–दुर्गा । जाटेसुरि – शिव । खड़ग – तलवार । अघटतौ – अद्‌भुत रीति से, अपार । समपै – अर्पित करे । माहेस हरा – राजा महेशदास राठौड़ के वंशधर पर । रीघौ – प्रसन्न हुआ । माहेस – महेश, शिव ।

५१. गीत हरसहाय खत्री जैपुर रौ

घिकै क्रोध हरसाह जहुंवार जंग वटा-धर, दुरद मद पटा-धर जेम दोवैं।
धार खग घटा अघटा पड़ै छटाधर, जटा-धर मुगट-धर खेल जोवैं ॥१॥

जुध खत्री जाट अग्राज जम जमासा, बाज छड़ बांण धम धमासा वीर।
वीछड़ै कड़ा बरम्मा रुधिर विमासा, गंग सिर धर खड़ा तमासा-गीर ॥२॥

जनेवां कराळी जोध जाळी जजत, अरावां उताळी गजत आनेक।
सहत चवसठ अघट नाच काळी सकत, कमाळी कसन ताळी बजत केक ॥३॥

---

५१. गीतसार—उपर्युक्त गीत में कवि हुकमीचन्द खिड़िया ने गीतनायक हरसहाय के मावंडा मंडोली स्थान पर लड़े गए युद्ध का वर्णन किया है। यह युद्ध भरतपुर के राजा जवाहरमल्ल जाट और जयपुर की सेना के बीच लड़ा गया था। हरसहाय जयपुर पक्ष की सेना का सेनानायक था। कवि युद्ध का वर्णन करते हुए कहता है कि हरसहाय और राजा जवाहरमल्ल युद्ध में उन्मत्त गजराज अथवा क्रुद्ध सिंहराज की भांति लड़ने लगे। किन्तु अन्त में जवाहरमल्ल को पराजित होकर रणभूमि से पलायन करना पड़ा।

---

१. घिकै – उफनते, उबलते। हरसाह – हरसहाय खत्री जो जयपुर की सेना का फौजबक्षी था। जहुंवार – भरतपुर का राजा जवाहरमल्ल जाट। जंग वटाधर – युद्ध-मार्ग पर तत्पर। दुरद – द्विरद, हाथी। मद – उन्मत्त। पटाधर – सिंह, योद्धा। दोवैं – कुचले, रौंदे। धार खग – खड्ग धारा। अघटा – अघटित, अद्भुत ढंग से। छटाधर – योद्धा, वीर, मेघ। जटाधर – शिव। मुगटधर – श्रीकृष्ण, विष्णु। जोवैं – देखने लगे।

२. खत्री – हिन्दुओं में क्षत्रियों के अन्तर्गत एक पंजाबी जाति विशेष, हरसहाय के लिए प्रयुक्त। अग्राज – वीरध्वनि, दहाड़। बाज – शस्त्रादि के चलाने की क्रिया। छड़ बांण – भाले और तलवारें, बन्दूकें और तोपें। कड़ा – कड़ियां। बरम्मा – कवचों की। रुधिर – लोहू। विमासा – दो मास, श्रावण-भाद्रपद से। गंग सिर धर – शिव।

३. जनेवां – तलवारें। कराळी – कराल, भयानक। जजत – यमराज। अरावां – तोपें। अताळी – भयंकर, निर्विलम्ब। गजत – गर्जती हैं। सहत – सहित। चवसठ – चौसठ रणदेवियां। अघट – अद्भुत। काळी सहत – कालिका सहित। कमाळी – शिव। कसन – विष्णु। ताळी बजत – ताली बजाते हैं। केक – कितनी ही, कई बार, कतिपय।

फींफरड़ फूट गोळा गजां फरहड़ै, जंगी हौदा गजां खड़हड़ै जौम ।
धड़हड़ै धौम बे मुसाहब लड़ै धर, बिहुं साहब हंसे हड़हड़ै बौम ॥४॥

गयंद वहतौ खत्री जाट जड़ तोड़गौ, चंद्रसिखर जोड़ सामीप चहतौ ।
गरब पण छोड जहुंवार सहतौ गयौ, कथा रिणछोड रिणछोड़ कहतौ ॥५॥

—हुकमीचंद खिड़िया रौ कह्यौ

५२. गीत राव चांदसिंघ सेखावत सीकर रौ

हेळा आगथी सिंध ज्यूं अेके आच हूंत हीलौळिया,
घीस खगां अेकें ज्यूं बौळिया नाग घींग ।
सूरां पत्ती अेके वज्र रौळिया पहाड़ सारां,
सारां खळां ऊतौळिया अेके चांदसींग ॥१॥

---

५२. गीतसार—उपर्युक्त गीत शेखावाटी प्रान्त के सीकर राज्य के स्वामी राव चांदसिंह की वीरता पर रचित है । कवि ने राव चांदसिंह द्वारा शत्रुओं का नाश करने का वर्णन करते हुए लिखा है कि जिस प्रकार अगस्त्य मुनि ने समुद्र, गरुड़ ने सर्पों, और इन्द्र ने पर्वतों के पंख काट कर उन्हें प्रभावहीन कर दिया था उसी प्रकार चांदसिंह ने शत्रुओं का संहार कर सदा के लिए उनका भय मिटा दिया ।

---

४. फींफरड़ – फेफड़े । फरहड़ै – फड़हड़ की ध्वनि । जंगी हौदा – युद्ध में उपयोग आने वाले हौदे, हाथी के हौदे । खड़हड़ै – खड़खड़ की ध्वनि, लड़खड़ा जाते हैं । धड़हड़ै – धड़कने की ध्वनि । धौम – ज्वाला, धूम्र, तोपें । वे मुसाहब – दोनों मुसाहब, हरसहाय और उसका भाई गुरुसहाय । बिहूं साहब – शिव और श्रीकृष्ण, दोनों साहब । बौम – आकाश, व्योम ।

५. गयंद – हाथी । वहतौ – चलता, जाता हुआ । जड़ तोड़गौ – जड़ उखाड़ गया । चंद्रसिखर – शिव । जोड़ – बराबरी । सामीप – नैकटय । चहतौ – चाहता हुआ । गरब पण – गर्वपना, गर्व और प्रण । सहतौ – सहन करता हुआ । रिणछोड़ – श्रीकृष्ण । रिणछोड़ – युद्धभूमि का त्याग कर, भागते हुए ।

१. हेळा – लहर, तरंग । आगथी – अगस्त्य मुनि ने । सिंध – सिंधु, समुद्र । आच– हाथ, अञ्जलि, आचमन से । हीलौळिया – आन्दोलित कर दिया, उद्विग्न । घीस खगां – खगराज, गरुड़ ने । बौळिया – मार डाले थे । नागघींग – प्रबल सर्पों को । सूरांपत्ती – इन्द्र ने । रौळिया – कुचल दिए थे, काट डाले थे । खळां – वैरियों को । ऊतौळिया – शस्त्र उठाकर नष्ट कर दिए ।

वारघीस गात जौम गाळिया त्रिकूट वासी,
राजचीळ जाळिया तारखी तेज रूंस ।
कोपंखी कुलेसां इन्द्र ढाळिया पहाड़ काळा,
वीर सिवा वाळे सत्रां राळिया विधूंस ॥२॥

तेज ताप मुनीपूर पाड़िया पाथोध तास,
नागेस झाड़िया ज्यूं खगेस वंधे नेत ।
पव्वै पंख विड़ोजे झाड़िया वज्र वौम वाट,
खळां थाट दूजे दळै विभाड़िया खेत ॥३॥

तोयधी मुनिंद्र पांण वचै व्याळ वैनतेय,
दूठ अद्र वचै घांण जुग्रांण दधीच ।
वरूथां सत्रां चा बाधा चंद रायासाल बीजे,
वीर खागां खाधा जेन लाधा भौम बीच ॥४॥

—हुकमीचन्द खिड़िया रौ कह्यौ

---

२. वारघीस – समुद्र । गात – गात्र । जौम – गर्व । गाळिया – खर्वित कर दिया था, नष्ट कर दिए । त्रिकूट वासी – त्रिकुटाचल निवासी ने, अगस्त्य मुनि ने । राजचीळ – गरुड़ । जाळिया – भस्म कर दिये, मार डाले । तारखी – सर्प । तेज रूंस – पराक्रम और क्रोध वालों को । कोपंखी – क्रुद्ध । कुलेसां – वज्र से । ढाळिया – गिरा कर स्थिर कर दिए । सिवा वाळे – राव शिवसिंह के पुत्र चांदसिंह ने । राळिया विधूंस – विनष्ट कर दिये ।

३. तेज ताप – तप-ज्वाला से । मुनीपूर – पूर्णमुनि, अगस्त्य ने । पाथोध – समुद्र । तास – त्रास, उसी प्रकार । नागेस – सर्पराज । खगेस – गरुड़ ने । वंधे नेत–विजय-चिन्हधारी । पव्वै पंख – पहाड़ों के पंख । विड़ोजे – इन्द्र ने । वौम वाट – आकाश मार्ग में । खळां थाट – शत्रु सेना । दूजे दळै – द्वितीय दलेलसिंह ने । विभाड़िया – नष्ट कर दिए । खेत – रणक्षेत्र में ।

४. तोयधी – तोयनिधी, समुद्र । मुनिंद्र – मुनियों के इन्द्र, अगस्त्य । पांण – हाथ, अञ्जलि । व्याळ – व्याल, सर्प । वैनतेय – गरुड़ । दूठ – दुष्ट । अद्र–पहाड़ । घांण – घमासान, समूह, नाश । जुग्रांण दधीचि – दधिची ऋषि की हड्डियों से, वज्र से । वरूथां सत्रां – शत्रुओं की सेनाएँ । बाधा – घेरे में लिए हुए, संकट में पड़ने पर । चंद – चांदसिंह । रायासाल – चांदसिंह के पूर्वज राजा रायसल दरबारी । खागां – तलवारों से । खाधा – मार डाले । जे – वे । न – नहीं । लाधा – मिले, जीवित रहे । भौम बीच – भूलोक में ।

५३. गीत राव देबीसिंघ सेखावत सीकर रौ

ताळी खुट्टकै विहंगां मागां बाज लाग वज्र ताळी,
पनंगां फुट्टकै कपोळा गजव्बां पड़ेच।
बरम्मा तुट्टकै बंध छुट्टकै कोमंडां बांण,
भुट्टकै सेखाणी देवौ कुरांणी भड़ेच ॥१॥

वीर हाक डाक चंडी डंमरू कराळ बागा,
रोखंगी कराळ बागा नेजां झाळ रूप।
बागा खाळ स्रोणी गजां ग्रीधां चा पंखाळ बागा,
रूकां नराताळ बागा प्रळै काळ रूप ॥२॥

---

५३. गीतसार—उपरांकित गीत सीकर के राव देवीसिंह शेखावत के खाटू स्थान के युद्ध से संबंधित है। देवीसिंह ने शाही सेनानायक मुरतज्जाअली को करारी पराजय दी थी। गीत रचयिता ने गीत में युद्ध की भयानकता को व्यक्त करते हुए कहा है कि अश्वसेना के पद-टापों की ध्वनि से समाधिस्थ शिव की समाधि खुल गई। प्रहारों से हाथियों के मस्तक खण्डित होकर भूमि पर पड़ने लगे। तीरों की मार से योद्धाओं के कवचों की कड़ियाँ टूटने लगीं। इस प्रकार यवनों से शेखावत देवीसिंह ने घनघोर युद्ध किया।

---

१. ताळी – समाधि। खुट्टकै – खुल गई। विहंगां मागां – पक्षी-मार्ग, आकाश-पथ। पनंगां – हाथियों के। फुट्टकै – फूट कर। कपोळां – भ्रशुण्डों। पड़ेच–पड़कर। बरम्मा – कवचों। तुटक्कै – टूटकर। बंध – बंधन, जोड़, संधि। छुट्टकै – छूटकर। कोमंडा – कोदण्डों, धनुषों के। भुट्टकै – भिड़ने, टक्कर लेने से। सेखाणी – शेखावत। देवौ – राव देवीसिंह। कुरांणी – मुसलमान। भड़ेच – मुरतज्जाअली भड़ेच।

२. डाक – ढाक-वाद्य विशेष। कराळ बागा – भयंकर नाद करने लगे। रोखंगी – रोषीले। नेजां – भालों से। झाळ रूप – अग्निस्वरूप, विद्युत के समान। खाळ – नाले। श्रोणी – रुधिर के। ग्रीधां चा – गृद्धों के। पंखाळ – पंख। बागा – ध्वनित हुए। रूकां – तलवारों। नराताळ – अत्यधिक, भयानक। प्रळैकाळ रूप – प्रलयकालीन के समान।

मत्ता जूझ लत्थो बत्थां धारा धोम गोम मच्चे,
धीर बाज खच्चे वोम नच्चे रुद्र धाड़ ।
घाय सल्लां हौदां व्है छडाळां हूंत वीर घूमे,
रायसल्लां रौदां व्है हमल्ला हल्ला राड़ ।।३।।
चंड हाक वांणी व्है सीसांणी वाल्हा खांणी चल्ले,
धमंता ऊझल्ले गोळा गज्जाणी धड़ाक ।
महासूरा ग्रणी-पांणी ऊवाणी बाणासां मेळे,
लोह घांणी धड़ा बीच सेखांणी लड़ाक ।।४।।
तम्मे रम्मे मत्थे तेग तावां पव्वै वज्र तुट्टै,
कोण घावां बम्मे वौम भम्मे काळ क्रोध ।
चंदवाळो डांणे लागो नेजां धम्मे मेछां चंमू,
ज्वाळ खंडी रम्मे जांणे इन्द्र वाळो जोध ।।५।।

---

३. मत्ता जूझ – उन्मत्त वीरों, युद्ध-मस्त । लत्थोबत्थां – भुजालिंगन, बाहुयुद्ध, बाथम-बाथ । धोम – धूम्र । गोम – आकाश । धीर बाज – सूर्य के अश्व की । वोम– आसमान में । नच्चे – नाचने लगे । रुद्र धाड़ – शिव-दहाड़ करते हुए । घाय सल्लां – घावों से क्षत-विक्षत, कवचों के टूटने पर घायल हुए । हौदां – हाथियों के हौदे । छडाळां – भालों । हूंत – से । रायसल्लां – शेखावतों की रायसलोत उपशाखा वाले । रौदां – मुसलमानों के । हमल्ला हल्लां – आक्रमण और धावे, आक्रमणकालीन शोरगुल । राड़ – युद्ध ।

४. चंड – चण्डिका, प्रचंड, भयानक । हाक वांणी – घोर आवाज । सीसांणी – तोपें । वाल्हा खांणी – प्रियजनों तक का भक्ष्य कर लेने वाली । धमंता – धमाका, धम की ध्वनि करते । ऊझल्ले – ऊपर की ओर उछलते हैं । गज्जाणी – गजों की । धड़ाक– सेना पर । ग्रणी-पांणी – सम आयु और सम बल वाले, भुज और शस्त्रों की समता वाले । ऊवाणी – नंगी । वाणासा – तलवारें । मेळे – मिलाते हैं, परस्पर टकराते हैं । लोह वांणी – शस्त्रों का भयानक युद्ध । धड़ा – सेना । लड़ाक–योद्धा ।

५. तम्मे रम्मे – हाथियों के । मत्थे – मस्तकों, शुण्ड-दण्डों । तेग तावां – वज्रायुध, तत्परता से तलवार चलाने वाले, तलवार के आतप से । पव्वै – पर्वत । कोण घावां – घावों का रक्त । बम्मे – प्रवाह, तेज गति से बहता है । वौम – व्योम, आकाश । भम्मे काळ – मृत्यु घूमती है । चंदवाळो – चान्दसिंह का पुत्र देवीसिंह । डांणे लागो – मद आया, उन्मत्त हुआ । नेजा धम्मे – भालों के प्रहार करता है । मेछां चमूं – मुसलमानों की सेना पर । ज्वाळ – ज्वाला । खण्डी – खाण्डव वन में । जांणे – मानो । इन्द्र वाळो जोध – इन्द्र का पुत्र, अर्जुन ।

रीझ रीझ हूरां बरां वारंगां रम्माड़े रंगां,
जोगणी अखाड़े जंगां जम्माड़े स जूथ ।
तेग आड़े लागौ चौड़ै-धाड़ै खळां झाड़ै तूंही,
बीभाड़े विघूसै पाड़ै पट्ठाणां बरूथ ॥६॥

झळाबोळ घड़ी आठ झड़ी खांडाहळां झाट ।
आकास हूं पड़ी जांणे बीजळा असाढ ।
लोहां खासावाड़े बाढ़ तुरंत्तां दिल्ली नूं लेगौ,
चौड़ै-धाड़ै मुरतज्जा अली नूं धक्के चाढ़ ॥७॥

—हुकमीचंद खिड़िया रौ कह्यौ

५४. गीत महाराव राजा रामसिंघ हाडा बूंदी रौ आखेट रौ

नाहरी इम कहै सुणीजै नाहर, तज बधिया गिरबास उताळ ।
अण ठामां नित करै ऊथाळा, भाला नित रंगै भूपाळ ॥१॥

---

५४. गीतसार—उपरांकित गीत बूंदी नरेश रामसिंह हाडा का है । इसमें रामसिंह के आतंक का कवि ने सिंह और सिंहनी के वार्त्तालाप के माध्यम से वर्णन किया है । वह सिंहनी के मुख से सिंह को कहने के व्याज से कहता है कि हे पतिदेव, गिरि-कन्दराओं का यह आवास छोड़ कर अन्यत्र चले चलो । यहाँ महारावराजा रामसिंह प्रतिदिन पर्वतों को सेना से घेर कर शिकार खेलता है । अतः जीवन को संकट में डालना उचित नहीं ।

---

६. बरां – वरों को । वारंगां – अप्सराएँ । जोगणी – योगिनी, रणदेवी । जम्माड़े–एकत्रित करें, भोजन करावें । स जूथ – समूहबद्ध । तेग आड़े – तलवार का हठ, तलवार के तिरछे वारों से । चौड़ै-धाड़ै – खुलेआम । खळां – वैरियों को । झाड़ै – गिराता है, चलाता है । बीभाड़े – विनाश करे । विघूसै – विध्वंस करे । पाड़ै–गिरावे, पछाड़े । बरूथ – सेना ।

७. झळाबोळ – अग्निमय, भयानक । खांडाहळां – तलवारों की । झाट – प्रचण्ड प्रहार । बीजळा – विद्युत । असाढ़ – आषाढ़ मास में । खासावाड़े – युद्ध में राजा के समीप रहने वाली अंगरक्षक सेना । बाढ़ – काट कर । तुरंत्तां – जल्दी से । नूं – को, ने । धक्के चाढ़ – सामने चढ़ाकर, सामने से प्रतिपक्षी को उलटे पांव धकेलना ।

१. नाहरी – सिंहनी । इम – यों, इस प्रकार । नाहर – हे सिंह । गिरबास–गिरि-कन्दराओं में निवास करना । उताळ – तेजी से, जल्दी से । अण ठामां – इन स्थानों पर । नित – नित्य । ऊथाळा – नाश । भाला – भाला शस्त्र । रंगै – रंगता है । भूपाळ – राजा, भूमिपाल ।

दिन ऊगै भाखरां नित गिरदावै, केहर सूं नित नाहरी कहै।
छळते जोम छड़ाळां छेड़ै, राजा केड़ै लगो रहै ॥२॥

वाघ हूंत भाखै इम वाघणी, अजका हुवा तजो गिर अेण।
भालां अवस चकासै भूपत, रात दीह न गिणै रामेण ॥३॥

सींघ हूंत प्रभणै सिंघणी, भूप चपेटै सांझ प्रभात।
ऊठै रंजक जमे आखेटां, रहै अजक लागो दिन रात ॥४॥

५५. गीत महाराव राजा रामसिंघ हाड़ा बूंदी रौ

रोड़ै बंबीलां अरावां सोर धमावे जागियौ रोस,
　　　　सेस घू नमावे केड़ै लागियौ संजाट।
भूप ऊछाहरां साजे महुंडां तरिंदां भेड़ै,
　　　　रांमेड़ गरिंदां छेड़ै नाहरां रंजाट ॥१॥

---

५४. गीतसार—प्रोक्त गीत बूंदी के महाराव राजा रामसिंह हाडा की सिंहों की आखेट पर कथित है। गीतकार का कथन है कि रामसिंह जब गिरि-कन्दराओं के वासी सिंहों की शिकार के लिए गजाश्वों को सजाकर प्रयाण करता है तो पृथ्वी का भार उठायें रखने वाले शेषनाग का मस्तक लचक उठता है।

---

२. ऊगै – उदय होने पर। भाखरां – पर्वतों। गिरदावै – चारों ओर से घेर कर मारना, घेरे में लेना। केहर सूं – शेर से। छळते – छलकते। छड़ाळां – भालों से। केड़ै – पीछे। लागो रहै – लगा रहता है।

३. वाघ हूंत – सिंह से। भाखै – कहती है। इम – यों, इस प्रकार। अजका – बेचैन, सतर्क। गिर अेण – इस पर्वत को, पर्वत का निवास, इसी समय। अवस – अवश्य। चकासै – झगड़ा करे, निशाना मारे। रात दीह – रात्रि और दिन। रामेण – गीतनायक रामसिंह।

४. सींघ – सिंह। प्रभणै – कहती है। चपेटै – घेरा डाले, चोट मारे। सांझ – संध्या। रंजक – राजा, बारूद। अजक – व्याकुलता।

१. रोड़ै – बजवाता है। बंबीलां – नगाड़े। अरावां – तोपें। सोर धमावे – बारूद की ध्वनि, हल्ले तथा धमाके। सेस घू – शेषनाग का मस्तक। नमावे – झुका लेता है, झुका देता है। केड़ै लागियौ – पीछे पड़ने पर। संजाट – सज्जित होकर। ऊछाहरां – उत्साह, उमंग। महुंडां – मेढ़ों की। तरिंदां – तरह। भेड़ै – भिड़ें, टक्कर करें। रांमेड़ – महाराव राजा रामसिंह, वन में। गरिंदां – पर्वतों। नाहरां – सिंहों। रंजाट – रंजन, आमोद-प्रमाद।

मेदनी हैमरां खुरां धूजावै चळायमान,
ऊछजावै लोयणां भळायमान आग।
मेघनाद गजावै यूं सजावै बंदूकां मार,
बाघला मयंदां हाडौ खिजावै ब्रजाग ॥२॥

कूंभाथळां लागै नरां हैमरां ढोहता कोप,
हाथळां हाथियां घड़ा डोहता हटैत।
हाक बागां फौज नूं रोहतां लथोबथ्थां होय,
पाड़ै असा दूजौ सतौ नौहथ्था पटैत ॥३॥

घोर तासां आरब्बां नगारां हाकां घोक लागै,
डाकां चहूं ओक लागै बैरियां डंडाड़।
सथी नाथ सोहड़ां सीमांड़ां तो सू सोक लागै,
प्रथीनाथ भोक लागै नाहरां पछाड़ ॥४॥

---

२. हैमरां खुरां – घोड़ों के सुमों या पद-चापों। धूजावै – कम्पाता है। ऊछजावै – ऊपर उठाने। लोयणां – नेत्रों। भळायमान – ज्वलित। मेघनाद – घन-गर्जन। बाघळा – भूखा, क्रुद्ध। मयंदां – सिंहों को। खिजावै – क्रुद्ध करता है, रुष्ट करता है। ब्रजाग – वज्राग्नि।

३. कूंभाथळां – गजों के कुंभ। हैमरां – घोड़ों। ढोहता – गिराते। हटैत–हठीले, हटने वाले। हाक बागां – हल्ला होने पर। रोहतां – रोकते। लथोबथ्थां – बाथमबाथ। पाड़ै – गिरावे। असा – ऐसा। सतौ – शत्रुशाल। नौहथ्था – नव हाथ लम्बे कद के। पटैत – सिंह, योद्धा।

४. घोर – घनघोर। तासां – तासा नामक वाद्य। आरब्बां – अरबी बाजे। हाकां – जोर की आवाजें, हाके। घोक – झड़ी, अनवरत घोष। डाकां – डंडे, ढाक वाद्य। ओक – जगह। डंडाड़ – दण्डित करने वाले। सोहड़ा – सुभटों। सीमांडां – सीमावर्त्ती। भोक – वाह-वाह, प्रहार। नाहरां – शेरों को। पछाड़ – मार, पछाड़ें।

५६. गीत रावत केसरीसिंघ सलूंबर रा धणी रो

सोधै साहिबां सरारा करै करारा जुवाब स्वाल,
उथाळा जोसैल चाळा धरारा आखांण।
भंजे सामराथां खळां बानैत बिरद्दां भारां,
बिलायतां घणा थारां केहरी बाखांण ॥१॥
वहै राह भाळे सूधा निसारा आजरी वेळां,
धूकळां आजरी छटा भूवळां धारीक।
बानां वंध जोरावार साजरी बदेतां बोलै,
तणा पदमेस भूरा राज री तारीफ ॥२॥
उकंधां नमाय कंधा संधा रा बिरद्दां आदू,
तौरा जोमरद्दां वाळां वखेरे तरांह।
भवानेस हरा राड़ांजीत रांण बारां भाळी,
समंदरां वारपारां तुहाळी सराह ॥३॥

---

५६. गीतसार—ऊपर कथित गीत रावत केशरीसिंह चूंडावत सलूम्बर पर रचित है। गीतकार ने गीत में रावत केशरीसिंह के प्रभाव को दर्शाते हुए लिखा है कि वह यूरोपवासियों (अंग्रेजों) से करारे जबाव-सवाल करता है और युद्ध-वेला में दुश्मनों का नाश कर डालता है। उसके साहस और निर्भीकता की विदेशों तक में प्रशंसा होती है।

---

१. सोधै — ढूंढ़ता है। साहिबां — अंग्रेज अधिकारियों को। करारा — कठोर। जुवाब-स्वाल — प्रश्नोत्तर। उथाळा — उथलने का भाव, बात को न मानकर आज्ञा भंग करना। जोसैल — जोशीला। चाळा — युद्धकारी कार्य, छेड़छाड़। धरारा — पृथ्वी का। आखांण — आख्यान, कथन। भंजे — संहार करे। सामराथ — समर्थों, युद्धों में। बानैत — वीरतासूचक चिन्ह विशेष। बिरद्दां भारा — अनेक विरुदों का समूह। बिलायतां - यूरोपीय देशों। थारां — तुम्हारे। केहरी — केशरीसिंह। बाखांण — बखान, चर्चाएं।

२. वहै — चलते हैं। वेळां — समय। धूकळां — लड़ाइयों। छटा — शोभा। भूवळां — भूरि बल। बानां वंध — वीरतासूचक बानाधारी। तणा — पुत्र। पदमेस — पदमसिंह।

३. उकंधां — उन्नत स्कंध, बलवानों को। नमाय — झुकवा कर। आदू — आदिकालीन, परम्परा प्रचलित। तौरा — रोबदाब। जोमरद्दां — जवांमर्दी का। वखेरे — बिखेर देता है। भवानेसहरा — भवानीसिंह का पौत्र। राड़ांजीत — युद्ध में विजय प्राप्त कर। समंदरां — समुद्र पार के, यूरोपीय देशों के। वारपारां — उस ओर के। तुहाळी — तुम्हारी।

आथ देणां कीत काजां जांणियौ जिहांन आजां,
दाटै अरिद्रा भारी समाजां दीसोद ।
थाट पती राजां रीत मेवाड़ धरा रा थंभ,
साजां पुळिंदरां भलौ अगंजी सीसोद ॥४॥
—गोरादान आसिया रौ कह्यौ

५७. गीत प्रिथीसिंघ हाडा रौ जुध रौ

बौळी चसम्मा मजीठ रौळी नखंगी धूप रे वागां,
पैनां तीर गौळी सांग लागा आरपार ।
हौळी फागां जेम खागां उनंगी पीथळे हाडे,
हिलौळी फिरंगी सेना पैंतीस हजार ॥१॥
धेठी लाज आगेठी पलटी ज्यूं ऊजळी धारा,
जेठी भार पड़ेतै कणैठी काथे जौम ।
हेठी चखां न धारे प्रथमी जीत गोरां हूंता,
भीम ज्यूं करैबा भेटी खाधी बीर भौम ॥२॥

---

५७. गीतसार—उपरोक्त गीत चौहानों की हाडा शाखा के वीर पृथ्वीसिंह का है। गीतकार ने लिखा है कि गीतनायक पृथ्वीसिंह ने अंग्रेजों पर कुपित होकर होलिकोत्सव के दण्डक रास की भांति तलवारों का फाग खेला। उस वीर ने तोपों के गोले और बाणों के घमासान युद्ध में अंग्रेजों की पैंतीस हजार संख्यक वाली विशाल सेना को विचलित कर दिया। वह प्रसिद्ध वीर भीमसेन पाण्डव के समान अंग्रेजों से टक्करें लेने लगा।

---

४. आथ देणां – द्रव्य दान करने वाला, दानी। कीत काजां – कीर्त्ति के लिए। जिहांन – संसार। दाटै – रोके। अरिद्रा – वैरियों को। थाट पती–सेनानायक। धरा रा – पृथ्वी का। पुळिंदरां – इन्द्र-सा। थंभ – स्तंभ। अगंजी – अजयी। सीसोद – सीसोदिया वंशीय रावत केशरीसिंह।

१. बौळी – लाल। चसम्मा – चक्षु, नेत्र। मजीठ रौळी – मजिष्ठ के समान गहरी लाल रंग में रंगी हुई। धूप रे – तलवार के। वागां – चलने पर। सांग – एक शस्त्र विशेष। आरपार – इधर से उधर, छेद कर पार। हौळी फागां – होलिकोत्व की फाग। जेम – ज्यों। खागां – तलवारें। उनंगी – नग्न। पीथळे – पृथ्वीसिंह। हिलौळी – आन्दोलित की, हिला दी। फिरंगी – अंग्रेजों की।

२. धेठी – धृष्ट, वीर। आगेठी – अग्रिम, अग्नि। जेठी – जेष्ठ पर। भारपड़ेतै – वजन आ पड़ने पर। कणैठी – कनिष्ठ ने। काथे – क्रोध, शीघ्र। हेठी – नीची। चखां – नेत्रों। गोरां हूंता – अंग्रेजों से। करैबा – करने। भेटी – टक्कर, सिर को सिर से भिड़ाने को भेटी मारना कहते हैं। खाधी – खाई, ली।

चंडी हाक बागतां घूमंडी भैंरू डाक चोडै,
नार-तंडी तमासे लागतां गैण माग।
मंडी तोपां नागणी जागतां आयो रोस माथे,
नबीपरां पीथळो उडंडी काळो नाग ॥३॥

बाना बंधां रोकतो सोकतो गोळां सरांवाळी,
काळी श्रवा ओकतो संभाळी श्रोण काज।
ऊठे धू तोकतो गैण माधाणी झोकतो ऊंडा,
आयो सूधो कोकतो कठी नै झालो आज ॥४॥

रास ताळी खेलतां जोगणी महाकाळी रुद्र,
लोही खाळी ऊबकै पंखाळी भखै लोध।
आळी तोपां वाळी वागां ऊजाळी संभरी आयो,
जांणै लंका प्रजाळी अंजणी वाळो जोध ॥५॥

---

३. चंडी – चण्डिका। हाक – ऊँची आवाज। बागतां – होते। भैंरू – भैरव। डाक – ढाक वाद्य, शिव ने। नार-तंडी – अप्सराओं के। गैणमाग – आकाश-पथ। नबीपरां – अंग्रेजों। पीथळो – पृथ्वीसिंह। उडंडी – उड़ने वाला, घोड़े। काळो नाग – काला सर्प।

४. सरांवाळी – बाणों की बौछारें। काळी श्रवा – कालिका को श्रवामंत्र से आहुति देता। ओकतो – शस्त्र, प्रहार करता, क्रूर दृष्टि डालता। श्रोण – रुधिर। धू – मस्तक। तोकतो – उठाता, तोलता। गैण – आकाश। माधाणी – महाराव माधोसिंह कोटा का वंशज। झोकतो – ठेलता, झोंकता। कोकतो – ललकारता बुलवाता। कठी नै – किधर है। झालो – राजराणा जालिमसिंह झाला, झालावाड़ वालों का पूर्वज।

५. रास ताळी – ताली नृत्य। लोही खाळी – लोहू के नाले। ऊबकै – उमड़ती। पंखाळी – पंखों वाली, गृद्धादि पक्षी। भखै – भक्षण करती है। लोध – लुब्ध भाव से। आळी – पंक्ति। वागां – चलते हुए। संभरी – चहुवान, सांभर स्थान पर राजधानी रहने के कारण चहुवान संभरी कहलाते हैं। जांणै – मानो। प्रजाळी – जलाई, जलाने वाला। अंजणी वाळो – अंजनी का, हनुमान। जोध – पुत्र, योद्धा।

खेळा नंचै नारदां गणेस भेळा रचै खेल,
मेळां मचै अच्छरां भवेस गूंथै माळ।
भाण खंचै बागां जठै चेला पाटैत रै भीड़,
तेण वेळां पूठी रखौ हंचै निराताळ ॥६॥

ओण भू में खळाकै कसूंबा मांट फूटा सा-क,
उठै सूरां गैंदता विलम्मे केक आण।
घणां घावां बीच घूमै कलाळी हाट ज्यूं गीरा,
अेह रोसवाई उभै रचायौ आराण ॥७॥

रंमे सूरां संगाती हालरा गीत जोगरांणी,
पळां माती ग्रीधणी सांमळां पड़ै पीच।
जठै सांग हाडा तणी हाथियां स वारा जेम,
बहीं जाती पालकी नवेसां साथी बीच ॥८॥

खळां आयौ बागो करंतो वरंगा खागां,
कटै चंगा फरंगा ऊबरे भागां केम।
ऊठे हाडा धूप रे नरंगा लोहा तूटा ओघ,
जोत लंगा माथै सीस गंगा जळां जेम ॥९॥

---

६. नंचै – नाच करते हैं। भेळा – एक साथ, शामिल। मेळां – मेला, सम्मेलन। अच्छरां – अप्सराओं के। भवेस – शिव। गूंथै – गूंथता है। भाण – भानु, सूर्य। बागां – घोड़े की लगामें। पलड़ा – चेले, शिष्य। पूठी रखौ – पृष्ठ-रक्षक। हंचै – मारे, युद्ध करता है। निराताळा – भयंकर रूप से।

७. खळाकै – प्रवाहित, तेजी से बहना। कसूंबा – लाल रंग। मांट – मटके, घड़े। गैंदता–कुचलते, मारते, गजदन्त। विलम्मे – झूमने लगे, जुट गए। कलाळी हाट – मदिरा-विक्रेता की दूकान, कलाल की दूकान। गीरा – अंग्रेज सैनिक। रचायौ – लड़ा, रचा। आराण – युद्ध।

८. संगाती – साथी। हालरा गीत – बालकों को रमाने का एक गीत विशेष, लोरी। जोगरांणी – योगमाया, महादुर्गा। पळां माती – मांसादि खाकर मस्त हुई। ग्रीधणी– गृद्धनी। सांमळां – चीलें। सांग – नामक शस्त्र। हाडा तणी – हाडा शाखा के वीर पृथ्वीसिंह की।

९. खळां – दुश्मनों को। वरंगा – टुकड़े, खण्ड खण्ड। खागां – तलवारों से। चंगा– अच्छे अच्छे, बड़े बड़े। फरंगा – अंग्रेज। भागां – भाग जाने पर, भाग्यवश। धूप रे – तलवार के। नरंगा-लोहां – लाल लोहू जैसे शस्त्रों की चोटों से। तूटा – टूटे। जोत लंगा – ज्योतिर्लिंग, शिव। माथै – ऊपर। गंगाजळां – गंगाजल।

घांणी तोपां भुजांणी दाखियौ कासबाणी धाड़,
फरंगां कीं मजौ चाखियौ सेलां फूट।
मिळंतै पारका भीम ठांणी हिंदवांणी मौड़,
खरंदे साधाणी जंगां जांणी च्यार कूंट ॥१०॥

गोरां धू करेगौ मेघाडंमरां पंड रै घाव,
पटाराणी गूमरां हरेगौ पैलै पार।
चम्मरां ढुळंतां हाडौ गल्लां ऊवरेगौ चंगौ,
साजोत संभरां खेती तरेगौ संसार ॥११॥
—जसा आढ़ा रौ कह्यौ

५८. गीत महाराव राजा रामसिंघ हाडा रौ

झाड़ै गिरंदां अझाड़ां हाका पाटवी राग रा झल्ले,
वांकां लोग ठल्ले डाका खाग रा बजेण।
जोसरा थाहरां डाचा उबाड़ै करग्गां जोर,
रोस रा नाहरां पाड़ै सिकारां रामेण ॥१॥

५८. गीतसार—कवि ने ऊपर के गीत में बूंदी नरेश महाराव राजा रामसिंह की आखेट का वर्णन किया है। वह कहता है कि महाराव रामसिंह सघन गिरि वनों में हाके की ध्वनि द्वारा भयानक सिंहों को अपनी कंदराओं से उठवा कर आखेट करता है।

१०. घांणी – घमासान, चने, जौ और मोठ आदि को भाड़ में भुनने के बाद उस अनाज को घांणी कहते हैं। भुंजांणी – भुजबली, भुताई। दाखियौ – बोला, कहा। कासवाणी – सूर्य ने। धाड़ – धन्य धन्य का शब्द। चाखियौ – चखा। सेलां – भालों के। पारका – समुद्र परे के, अंग्रेज। च्यार कूंट – चारों दिशाओं में।

११. धू – सिर। मेघाडंमरां – मेघाडंबर, हाथी का हौदा। पटाराणी – महारानी विक्टोरिया। गूमरां – गर्व को। पैलै पार – उस पार। चम्मरां – चंवर। ढुळंतां – झलते। गल्लां – यश कथाएँ। ऊवरेगौ – सुरक्षित छोड़ कर गया। चंगौ – अच्छी। साजोत – ज्योति। संभरां – चहुवानों। तरेगौ – तैर कर गया, पार उतर गया।

१. झाड़ै – झाड़-झंखाड़, गिराता। गिरंदां – पर्वतों। हाका – शिकार के जानवर को शोरगुल कर उठाने वालों को हाका देने वाले कहते हैं। पाटवी राग – प्रधान रागिनी, सिंधू रागिनी। झल्ले – होते, गूंजाते। वांकां – वक्रिम, विकट। ठल्ले– धकेलता। डाका – डंडे, नगारे की ध्वनि। खाग रा – तलवारों के। बजेण – बजते। थाहरां – कंदराओं। डाचा – मुह, मुख। उबाड़ै – खोले, नाश करे। करग्गां – हाथों के। नाहरां – सिंहों को। पाड़ै – मार गिराता है। रामेण – महाराव रामसिंह।

हाथियां कपोलां केक झूमै लूथबत्थां होय,
केक आय लूमै दौळां साथियां हकार ।
वंसा नीर चाढ़े भूप अबीहां जनेबा बाहे,
संभरी बाघळा सीहां विभाड़ै सिकार ।।२।।

गजां गूद गटैता रटैता मेघवाळी गाज,
कूदै ऊछजेटा आसमांण नूं ठेकात ।
आप फौज रोहतां अटैतां खाग मंडै आच,
नौहथा पटैतां खंडै खाग चहूंवाण नाथ ।।३।।

करग्गां बरख्खै फूल कुरंग नाठिया काज,
संभू सोम राज बीहूं हरख्खै साहंस ।
हाडा ची धाक हूं रहबौ गिरंदां अराधै नहीं,
बाधा नहीं मेदनी नाहरां वाळां वंस ।।४।।

---

२. कपोलां – भ्रशुण्डों, मस्तकों । केक – कई एक । झूमै – झूमते हैं । लूथबत्थां – बाथ डाल कर, लथोबत्थ हुए । लूमै – झुकते-लटकते हैं । दौळां – चौतरफ । हकार – ललकार । वंसा नीर चाढ़े – वंश को कीर्त्तिमान करे । अबीहां – निर्भीकता से । जनेबां – तलवारें । बाहे – चला कर, प्रहार कर । संभरी – चहुवान नरेश । विभाड़ै – नाश करता है ।

३. गजां गूद – हाथियों का मांस । गटैता – खाने वाले । रटैता – रटने वाले, आवाज करने वाले, गर्जना करने वाले । मेघवाळी – मेघ घटा की-सी । गाज – गर्जना । ऊछजेटा – उछल कर, छलांग लगा कर, खड़े हुए केशों वाले । आसमांण नूं – आकाश को । ठेकात – छलांगें भरते । रोहतां – रुद्ध करते, रौंदते । अटैतां – वैरियों । आच – हाथ । पटैतां – सिंह, पट्टाधारी । खंडै – मारता है, खण्डित करता है ।

४. करग्गां – हाथों से । कुरंग – हरिन । नाठिया काज – भाग जाने के कारण । संभू – शिव । सोम – चन्द्रमा । बीहूं – दोनों । हाडा ची – हाडा की । अराधै – स्वीकार नहीं करते, विचारते नहीं । बाधा नहीं – साहस जैसा कुछ बच नहीं रहा ।

५९. गीत महाराव राजा रामसिंघ हाडा रो सिकार रो

वागै नकीबां अताळी हाक हरोळां जलेब वधै,
उरोळां उछाह मंडै करोळां अथाह।
कोह हाका खेड़ै लोग रेड़ै वंब जोस कापै,
सारदूळां रोस माथै छेड़ै रामसाह ॥१॥

हकाले अझाड़ां चौतरफ्फां नरां फौज हल्लै,
भल्लै जठै वोल दे दकालै कै भाराथ।
अजौ दूजौ गाढ़ेराव गयंदां वकालै असां,
प्रळै काळा मयंदां हकालै प्रथीनाथ ॥२॥

मन्ने आप हालणां धरंता पांव मट्ठा वाळा,
सिपाहां साळणा रट्टा घट्टा वाळा सीर।
कीधां छत्र सट्टावाळा चगावै आपांण काचां,
काळ की-सी छटावाळा जगावै कंठीर ॥३॥

---

५९. गीतसार—प्रोक्त गीत बूंदी के महाराव राजा रामसिंह हाडा से सम्बन्धित है। कवि ने महाराव राजा की शिकार का वर्णन करते हुए लिखा है कि नकीबों की आवाज पर जब हरावल सेना आगे बढ़ती है। और तब करोलों के मन उत्साह से खिल उठते हैं। घोड़ों, हाथियों, पदातियों और व्याघ्रों की शब्द ध्वनि के साथ रामसिंह सिंहों को आखेट के लिए उठाता है।

---

१. नकीबां — राजाओं के सन्मुख विरुद शब्दों का उच्चारण करने वाले, चोबदार। अताळी— जोशीली, भयानक। हाक — आवाज। हरोळां — हरावल, सेना की आगे की पंक्ति। जलेब वधै — हाजरी या अगवानी में बढ़ते हैं। उरोळां — हृदय में। उछाह — उत्साह। करोळां — करावुल, शिकारी जानवरों को खोजने वाला दल। अथाह — अपार। कोह — पर्वत, कोलाहल। खेड़ै — हांकते हैं। रेड़ै — बजाकर। वंब — नगारे, ढोल आदि वाद्य। कापै — शीघ्रता से, क्रोधित होकर। सारदूळां — शार्दूलों, सिंहों। रामसाह — रामसिंह।

२. हल्लै — चलती है। जठै — जहां पर। दकालै — ललकारे। भाराथ — युद्धार्थ। अजौ — अजितसिंह। दूजौ – दूसरा। गाढ़ेराव — महान् वीर। गयंदां — हाथियों। वकालै — उत्साहजन्य ललकार। प्रळैकाळा — प्रलयकारी। मयंदां — सिंहों को।

३. मन्ने आप — अपनी इच्छा से, स्वेच्छाचारी। हालणां — चलने वाले। मट्ठा — धीरे से। सालणां — चुभने वाले। रट्टा — रटक, टक्कर। घट्टा वाळा — घटा वाले। सट्टा वाळा — केशावलि, सिर की गर्दन के बालों को सट्टा कहते हैं। चगावै — चिढ़ाए हुए। काळ की-सी — मृत्यु के समान, यम तुल्य। छटा वाळा — शोभा वाले, बिजली वाले। कंठीर — सिंह।

सिकारां रंजाक भू साहां रा साल दूजै सतै,
उभेही राहां रा कीधौ जाहरां आपांण ।
घासाहरां थाहरां में काळ रा धकासै धांचै,
चोड़ंधाड़ै नाहरां चकासै चाहूआंण ॥४॥
—सूरजमल मीसण रौ कह्यौ

६०. गीत कंवर दौलतसिंघ हाडा रौ सिकार रौ

घूमै हाथळां सिळाव नखां बीज ज्यूं वूठती घटा,
लोयणां ऊठती ज्वाळा जांणै लागी लाय ।
तेज हाकारवै हूंतां दौला रायजादा तूंहीं,
बाकारवै बाघ इसा बरूथां बलाय ॥१॥

डाक काळ रूपी डाच उबेड़ै कटार डड्ढां,
भीमनाद भेड़ै रेड़ै गयंदां गंभीर ।
आहेड़ै तेड़ै पेड़ै वीर देवीसिंघ वाळा,
केड़ै लाग तूंहीं छेड़ै डांखियौ कंठीर ॥२॥

---

६०. गीतसार—उल्लिखित गीत कुमार दौलतसिंह हाडा की सिंह-आखेट से सम्बन्धित है । गीतकार का कथन है कि दौलतसिंह घन-घटा में कौंधती विद्युत सदृश चमकते पंजों के नाखूनों तथा अग्नि-ज्वाला से प्रज्ज्वलित नेत्रों वाले महा क्रोधीले सिंहों को हाके में घेर कर शिकार करता है ।

---

४. रंजाक – रंजन करने वाला, विनोदी । साल – शल्य । दूजै सतै – द्वितीय शत्रुशाल । उभेही – दोनों ही । आपांण – बल । घासाहरां – सेनाओं । थाहरां-कन्दराओं । धांचै – मारता है, बहादुर, जो दमित न किये जा सके । चकासै – निशाना बनाये, मारे, युद्ध करे ।

१. हाथळां – पञ्जों के बल पर । सिळाव – चमक, विद्युत-दीप्ति । नखां – नाखूनों । बीज – विद्युत । लाय – प्रचण्ड अग्नि । बाकारवै – ललकारता है । बाघ – व्याघ्र, सिंह । इसा – ऐसे । बरूथां – सेनाओं । बळाय – विपत्ति ।

२. डाक काळ – मृत्यु के दण्ड, काल की झपट । डाच – बटके, मुंह । उबेड़ै-खुले । कटार डड्ढां – कटार के समान दंष्ट्राओं वाले । भेड़ै – भिड़ावे, टक्कर दिरावे । रेड़ै – धकेले । गयंदां – हाथियों । आहेड़े – शिकार के लिए । तेड़ै – बुलावे । केड़ै लाग – पीछे लग कर । छेड़ै – छेड़छाड़ करता है । डांखियौ – भूखे । कंठीर – सिंह ।

माठा पांव देतौ आयौ बावरैल डाळामथौ,
जांणै भू समाध लेतौ जगायौ जोगंद ।
दुवारै जमायो प्यालो जवांनी जोसैल दीला,
मांटीपणै वातळायो रोसैल मयंद ॥३॥

जमी सोर उडयो वाण वज्र तारौ तूटौ जांणै,
छूटौ जांणै धम्यौ गोळो तोप सूं अछंट ।
ताय इसी ऊडै तारै गोळी लागी थापा तोड़,
पछै घू विछोड़ वागी वणासां पछंट ॥४॥

कंवरां स्त्रंगार दीला साज ओछाहरा कीधां,
आखेटां ठाहरां लीधां जोधारां औनाड़ ।
तेज पूंज दूजा सत्ता थाहरां गिरंदां तोका,
प्रथम्मी जाहरां भोका नाहरां पछाड़ ॥५॥

---

३. माठा पांव – धीरे चरण, मस्त चाल से। बावरैल – बर्बर, बब्बर शेर। डाळामथौ – सिंह। भू समाध – भूमि में समाधि। लेतौ – लेते समय। जोगंद – योगीराज को। दुवारै – दो बार पलट कर निकाली हुई तेज शराब को दुवारा कहा जाता है। वह बड़ी नशीली होती है। जमायौ – पीया हुआ, एक किस्म की मदिरा। जोसैल – जोशीला। मांटी-पणै – मर्दानगी। रोसैल – रोषीला, क्रोधीला। मयंद – सिंह को।

४. जमी – जमाकर रक्खा हुआ। सोर – बारूद। उडयो – उड़ा, धधक कर छूटा। वाण – तोप, तीर। तारौ – नक्षत्र, सितारा। तूटौ – टूटा। धम्यौ – धमाके से, धमधमा कर। अछंट – अलग, अकस्मात्। ताय – ताप, आग, भांति। थापा तोड़ – भुजामूल से वक्षस्थल तक के अंग भाग का नाश करती। घू – मस्तक। विछोड़ – तोड़ती, अलग करती। वागी – बजी, चली। वणासां – कृपाणें। पछंट – पछांट खाती हुई, उछाल लेती हुई।

५. कंवरां स्त्रंगार – कुमार शिरोमणि। ओछाहरा – उत्सव का, उत्साह का। आखेटां – शिकारों का। ठाहरां – स्थान, कंदरा, चुने हुए। जोधारां – योद्धाओं। औनाड़ – वधन को न स्वीकारने वाले, अनम्र। दूजा सत्ता – द्वितीय शत्रुशाल। थाहरां – सिंह की गुफाएँ। गिरंदां – गिरिमाला, पर्वतों। तोका – संभालता, प्रहार देता। जाहरां – जाहिर, प्रकट। भोका – धन्य धन्य, शाबाशी का शब्द। नाहरां – सिंहों को। पछाड़ – पछाड़ने वाले, मारने वाले।

६१. गीत अखा हींगोळ बाहड़मेरा रौ

तैं ध्रवियौ घणां भड़ां वळि ताकै, रिणवट कूंपा रूप रखा ।
वरळक करै फरै वीरारसि, अहि जिम थांरौ कूंत अखा ॥१॥

हाथि हुवौ संग्राम तणी हर, थियै कळह तौ प्रकट थियौ ।
लागूवां झड़पां दियंतां लागै, कमधज साबळ पनंग कियौ ॥२॥

तीखे किये वळे ओडै तण, असिमर हथ वहतां अनड़ ।
अरियण डसण हुवै दळ आगळि, भालो भुयंग सरोस भड़ ॥३॥

पूंगी झाट तिता रिण पोढ़ै, अणी चढै ताइ मरै अरि ।
जुधि हींगोळ तणा प्रगड़ी जगि, वळकि छडाळौ नागवरि ॥४॥

—नांदण बारहठ रौ कह्यौ

---

६१. गीतसार—इस गीत में कवि ने अक्षयराज बाडमेरा राठौड़ के भाले को सर्प के साथ उपमित कर लिखा है कि अक्षयराज,युद्ध में शत्रुओं पर जब आक्रमण करता है तब उसका भाला सर्प के समान त्वरित गति से चलता है। और उसके सर्प रूपी भाले की चोट में आजाने पर शत्रु-पक्षी योद्धा को मृत्यु की गोद में ही जाना पड़ता है ।

---

१. तैं – तुमने । ध्रवियौ – संहार किये । घणां – बहुतेरे, बहुल । भड़ां – वीरों । ताकै– निशाना बांध कर । रिणवट – रणमार्ग । वरळक – झपटें मारे, तरल गति से चले । फरै – फिरता है । वीरारसि – वीररस । अहि – सर्प । जिम–जैसे । थांरौ – तेरा, तुम्हारा । कूंत – भाला । अखा – अक्षयराज ।

२. हाथि – हाथ में । थियै – होने पर । कळह – युद्ध । थियौ – हुआ । लागूवां – वैरियों । झड़पां – झड़पें, मुठभेड़ें । दियंतां – देते समय । कमधज – कर्मध्वज, राठौड़ । साबळ – बर्छा, भाला । पनंग – सर्प ।

३. तीखे – तेज, पैने । वळे – तदुपरान्त, फिर । ओडै तण – ढाल । असिमर – तलवार । हथ – हाथ । वहतां – प्रहार करते । अनड़ – वीर, पराक्रमी, दुर्ग । अरियण – शत्रुओं को । डसण – डसने के लिए, घाव करने के लिए । आगळि – अगाड़ी, आगे । भुयंग – भुजंग, सांप । सरोस – सक्रोध । भड़ – सुभट, वीर ।

४. पूंगी – लगी, सर्प को मोहित करने का वाद्य, पूंगी वाद्य । झाट – प्रहार । तिता – जितने तो । रिण पोढ़ै – लड़ाई के मैदान में सो गए । अणी – नोंक पर । ताई– से । अरि – वैरी । हींगोळ तणा – हींगोल तनुज के । प्रगड़ी – प्रातःकाल । छडाळौ – भालों । नागवरि – सर्प, नाग-श्रेष्ठ ।

६२. गीत राजा केसरीसिंघ सेखावत खण्डेला रा धणी री

मरतै जिण दोय हजार मारिया, खागां रत वूहा खळळ।
कूरम सुरग लियां गो केहर, कटकां ची हूंकळ कळळ ॥१॥

साहां तणी धरा सिर साटे, रहतौ खाय लेतौ रटक।
अन्त दिन पैलां अनै आपरा, करि साथै लेगौ कटक ॥२॥

मारणहार तणा दळ मारे, जस अजरामर हूवौ जग।
वहादर तणौ लियां बावीसी, सेखावत पुंहतौ सुरग ॥३॥

अड़ पड़ियौ कांकड़ आपांणै, दूठ नगारे ठौर दियां।
अंबर धर दिस सूं कछवाहौ, लसकर डंबर गयो लियां ॥४॥

मांहे सौं सांम ठांम न मायो, गहमह पूर सपूर गनै।
राजापुरो बसायो राजा, केहर सूरा मंडल कनैं ॥५॥

---

६२. गीतसार—उपर्युक्त गीत खण्डेला के अधिपति राजा केशरीसिंह गिरधरदासोत कछवाहा का है। केशरीसिंह ने हरीपुरा ग्राम के युद्धक्षेत्र में बादशाह औरंगजेब की सेना के साथ लोमहर्षक युद्ध कर वीरगति पाई थी। गीत में उल्लेख है कि राजा केशरीसिंह ने आक्रमित सेना के दो हजार शत्रुओं को रणांगण में धराशायी कर स्वर्ग प्राप्त किया।

---

१. जिण – जिसने। मारिया – नाश किया। खागां – खड्गों से। रत – रक्त, लोहू। वूहा – प्रवाहित हुआ। खळळ – खलखल की ध्वनि करता। कूरम–कूर्म, कछवाहा। सुरग – स्वर्ग। लियां गो – साथ लेकर गया। कटकां ची – सेना की। हूंकळ कळळ – युद्ध का कोलाहल युद्ध में योद्धाओं के घोड़ों की हिनहिनाहट की ध्वनि।

२. साहां तणी – बादशाहों की। सिर साटे – सिर के बदले में। रटक – टक्कर। अन्त दिन – अन्तिम दिन, मृत्यु के समय। पैलां – विपक्षी। अनै – अन्य, और। आपरा – अपने। करि साथै – साथ में, सम्मिलित कर। लेगौ – लेकर गया। कटक – सेना।

३. मारणहार – मारने वाले, आक्रामक। जश – यश। अजरामर – अजर अमर, स्थायी। जग – संसार में। बहादर तणौ – राजा बहादुरसिंह तनय। बावीसी – सभी अंगों वाली सेना। पुंहतौ – पहुँचा।

४. अड़ पड़ियौ – हठपूर्वक मुकाबिला कर खेत रहा। कांकड़ – सीमा पर। आपांणै – अपने राज्य की, अपने बल से। दूठ – वीर, बहादुर। ठौर – अनवरत प्रहार। नगारों की ध्वनि। अंबर – आकाश। धर हूं – भूतल से। लसकर – लश्कर, सेना। डंबर – सज्जित सेना सहित, आडम्बर सहित।

५. सांम – स्वामी। ठांम – स्थान। न मायो – समाहित न हुआ। गहमह–दलबल, समूह। पूर – पूरा। बसायो – आबाद किया। सूरामंडळ – सूर्यमण्डल, सूर्यलोक के। कनैं – पास, निकट।

६३. गीत राजा केसरीसिंघ सेखावत खण्डेला रा धणी रौ

कूरम जग साख खत्रीवट काजा, साजा दळ बोळवै सपूत।
बिच रण रह्यौ बाजतां बाजा, राजा मेल न गौ रजपूत ॥१॥

अइयो अंग आकाय कूरमवट, धूपट खळां बाही खगधार।
कटक कटाय जाय किम केहर, साम्हौ आय मूवौ सरदार ॥२॥

सेखावत रावत बट साजे, सुतन बहादर समर सगाह।
फौजां तणौ मुदौ नह फिरियौ, गिरियौ बीच करै गजगाह ॥३॥

कुरु कूरमां महाभाराथ कियौ, मरणे फेर सुजे जळ मांह।
फौज सहत केहर स्रग फबियौ, दुरजोधन दबियौ दरगाह ॥४॥

---

६३. गीतसार—उपर्यंकित गीत राजा केशरीसिंह शेखावत खण्डेला के शाही सेना से युद्ध कर काम आने विषयक है। गीतकार ने गीत में लिखा है कि राजा केशरीसिंह ने संसार की साक्षी में शत्रु सेना से भयानक युद्ध लड़कर क्षत्रियत्व के मार्ग को प्रशस्त किया। वह वीर युद्ध वादित्रों के घोर शब्दों में अपनी सेना सहित लड़ता हुआ खेत रहा।

---

१. कूरम — कूर्म, कछवाहा। जग साख — जगत की साक्षी में, प्रकट रूप में। खत्रीवट काजा — क्षत्रियत्व के लिए, क्षात्रधर्म हेतु। बोळवै — नाश करता हुआ। विच रण — युद्ध के मध्य। रह्यौ — रहा, मारा गया। बाजतां — बजते। बाजा — वाद्य। मेल न गौ — पीछे छोड़कर नहीं गया। रजपूत — राजपूत, सैनिक।

२. अइयो — अहो, विस्मयबोधक शब्द। अंग आकाय — शरीर बल। कूरमवट — कछवाहापने का मार्ग, कछवाहों का बल। धूपट — पूर्ण रूप से, खुलीकक्षा, खुले आम। खळां — खलों शत्रुओं। बाही — प्रहार कर, चला कर। खगधार — तलवार धारा। कटक — सेना को। कटाय — कटवा कर, लड़ाई में मरवा कर। जाय किम — मैदान छोड़कर अकेला कैसे जाय। साम्हौ — सामने। आय — आकर। मूवौ — मरा, काम आया। सरदार — सेना का स्वामी सेनानायक, राजा।

३. रावत बट — राजापन, राजधर्म, राजपथ। साजे — सिद्ध कर, सज कर। समर — रण, युद्ध। सगाह — सगर्व। मुदौ — मुखिया। फिरियौ — फिरा, पीछे लौटा। गिरियौ — निष्प्राण होकर गिर पड़ा। गजगाह — गजग्राह, युद्ध।

४. कुरु — कुरुक्षेत्र, कौरव। कूरमां — कछवाहों ने। महाभारथ — महाभारत-सा युद्ध। जळ मांह — जलाशय में। सहत — सहित। केहर — केशरीसिंह। स्रग — स्वर्ग। फबियौ — शोभित हुआ। दुरजोधन — दुर्योधन। दबियौ — दुबक गया, छिप गया। दरगाह — स्वर्ग में, दरबार में।

६४. गीत राजा केसरीसिंघ सेखावत खण्डेला रा धणी रौ

किम चाले दळां चालतां केहर, पह धारे रजपूत पण ।
वहादर रौ व्हैतो अंग बोझिल, राजा बोझिल हुवौ रण ॥१॥
खंड खंड विखंड बीजळां खिमतां, हय गय दळां विहंडतां हाथ ।
हय वारां कूदेगा हळका, भारै रौ रहियो भाराथ ॥२॥
दळथंभ हरौ थयौ दूसासण, गहण अरिन्दा सारगह ।
मोटापण वाळौ महाराजा, मोटौ साको कियौ मह ॥३॥
अछरां वरां पळचरां आमंख, सिर संकर सूरां सैंजोत ।
जिम दीरघ व्हैता जमजेठी, दीरघ मरण कियौ दैसोत ॥४॥

---

६४. गीतसार—ऊपर प्रस्तुत गीत खण्डेला के शासक राजा केशरीसिंह शेखावत पर रचा गया है। गीतलेखक ने गीतनायक के रणदाक्ष्ये का वर्णन करते हुए कहा है कि बहादुरसिंह का पुत्र केशरीसिंह भीमकाय पुरुष था। युद्ध की भयानकता के कारण कतिपय हल्के चरण पुरुष रणभूमि का त्याग कर चलते बने। परन्तु केशरीसिंह तो महान् वीर था। फिर भला वह रणभूमि का त्याग कैसे करता। तभी तो उसने योद्धाधर्म का पालन कर युद्ध के मैदान में अमरता प्राप्त की।

---

१. किम चाले – कैसे चले। दळां – सेना के। चालतां – लड़ाई के मैदान से भागते समय। पह – राजा। धारे – धारण किये। रजपूत पण – क्षत्रिय की प्रतिज्ञा, युद्ध के मैदान से न हटना क्षत्रिय का प्रण होता है। बहादर रौ – राजा बहादुरसिंह का पुत्र। अंग बोझिल – विशालकाय, भारी शरीर का। बोझिल – भारी, दृढ़ता से युद्ध में स्थिर रहने वाला। रण – लड़ाई में।

२. विखंड – द्विखण्ड, टुकड़े-टुकड़े। बीजळां – तलवारें। खिमतां – चमकते समय। हय गय – गजाश्व। विहंडता – नाश करते। हळका – हल्के, तुच्छ, कायरमति। भारै रौ – बहादुरसिंह का, वजन वाले का, बडप्पन वाले का। रहियो – अड़ा रहा। भाराथ – युद्ध में।

३. दळथंभ – सेना के लिए स्तम्भ तुल्य का वरसिंह देव राजा। हरौ – पौत्र। दूसासण – दुशासन। गहण – पकड़। अरिन्दा – वैरियों। सारगह – तलवार ग्रहण कर। मोटापण वाळौ – विशाल शरीर वाला। मोटौ साको – बड़ा युद्ध, महाभारत। मह – पृथ्वी पर।

४. अछरां – अप्सराओं। वरां – दूलहे, पति। पळचरां – आमिष-भक्षी। आमंख – आमिष। सूरां सैंजोत – वीरों का ईश्वर की ज्योति में मिलने का अवसर। दीरघ– विशाल। जमजेठी – यमदेव का अग्रज। दैसोत – देशपति, राजा।

९५. गीत राजा केसरीसिंघ सेखावत खण्डेला रौ

जुध केहर कियौ थयौ जगजाहर, चर धापा पळचर अचर।
असुरां तणौ रुधर बह आयौ, सांभरा थायौ लालसर ॥१॥

वूठौ सार मेघ अत वूठौ, जळरत खूटौ जुवौ जुवौ।
स्वेत नीर बहतौ सर सांभर, हमकै भाद्रवि लाल हुवौ ॥२॥

खागां खेत असुर दळ ओखणिया, नीर रूधर बहि चले नद।
सेखाउत कीधो चत्रमासौ, सांभर रौ रातो समंद ॥३॥

सुत बहादरेस अरक कर साखी, जूटौ पीथळ ज्यूंहीं जंग।
सर सूखां धर लाल रहेसी, रहसी मीठे लाल रंग ॥४॥

---

९५. गीतसार-ऊपर कथित गीत शेखावाटी के खण्डेला राज्य के राजा केशरीसिंह शेखावत का है। केशरीसिंह ने सांभर झील के समीपस्थ हरीपुरा स्थान के रणक्षेत्र में अजमेर के शाही राज्यपाल से भयानक संग्राम कर वीरगति प्राप्त की थी। गीतकार ने युद्ध की भयानकता का वर्णन करते हुए लिखा है कि केसरीसिंह ने ऐसा घोर युद्ध किया जिससे मांसभक्षी गृद्धादि पक्षी तृप्त होगए तथा शत्रुओं के रुधिर की नदी बनकर रणस्थल से सांभर झील तक पहुँच गई। फलतः सांभर का श्वेत जल रक्तमिश्रित लाल रंग में परिवर्तित हो गया।

---

१. केहर – राजा केशरीसिंह ने। थयौ – हुआ। जगजाहर – संसार में प्रकट हुआ। चर – चुगा प्राप्त करके, सियार, कुत्ता आदि पशु, जंगम। धापा – तृप्त होगए। पळचर – मांसाहारी। अचर – स्थावर। असुरां तणौ – मुसलमानों का। रुधर – लोहू। बह आयौ – प्रवाहित होकर आ गया। सांभर – सांभर लेक। सर – सरोवर, झील।

२. वूठौ – वरसा। सार – शास्त्र की। मेघ – बादल। अत – अत्यधिक। जळरत – जलरूपी रक्त। खूटौ – समाप्त हुआ। जुवौ जुवौ – जुदा जुदा, अलग-अलग। स्वेत नीर – सफेद जल। बहतौ – बहता था। हमकै – अबकी बार। भाद्रवि – भाद्रपद मास में।

३. खागां – तलवारों। खेत – रणक्षेत्र। असुर दळ – यवन सेना। ओखणिया – कुचल कर नष्ट कर दिए। बहि – बहकर। नद – नदी। चत्रमासौ – चातुर्मास। रातो – रक्तिम, लाल। समंद – समुद्र।

४. बहादरेस – बहादुरसिंह। अरक – अर्क, सूर्य। साखी – साक्षी। जूटौ – युद्ध में भिड़ गया। पीथळ – संभवतः पृथ्वीराज चहुवान। जंग – युद्ध। सर सूखां – झील के सूख जाने पर। धर – भूमि। रहेसी – रहेगी। रहसी – रहेगा। मीठे – नमक में।

६६. गीत सुजाणसिंघ भोजराजौत सेखावत रौ

कहर सूरतन तेज तड़तड़ै बगतर कड़ा, दुजड़ असुरां लड़े सिखर दूजो ।
परम परसाद चौ कळस न दियो पड़ण, सलामत जतै धड़ कळस सूजो ॥१॥

वीर तन छोह छकड़ाळ कस वीछड़ै, रूक सूं भिड़े असपति सारीस ।
सोस देवळ तणौ डिगण न दिये सकस, स्याम तण भुजा ऊपजतै सीस ॥२॥

मरद कसणां जरद तणा तूटे मछर, जवन चा दळां जूटे हुआ जंग ।
खंडेले देवळा मंडप न हुवै विखंड, अखंड सूजा तणौ जतै उतमंग ॥३॥

राम चे हुकम वरियाम जीतो रचे, चाळ पतसाह सूं बांध धमचाळ ।
राम देवळ कमळ हुवौ कूरम रखो, राम कूरम कमळ हुवौ रखवाळ ॥४॥

---

६६. गीतसार–ऊपर भाषित गीत सुजानसिंह शेखावत छापोली के ठाकुर का है। सुजानसिंह से खण्डेला राज्य के मंदिरों की रक्षा करते हुए शाही सेनापति दराबखां से लड़कर वीरगति प्राप्त की थी। गीत में सुजानसिंह के कवचादि धारण कर असिधारा में स्नान करने का वर्णन है। जब तक वह वीर युद्धस्थल में आहत होकर वीरगति को प्राप्त नहीं होगया तब तक शाही सेना मन्दिर का एक पत्थर भी नहीं गिरा सकी।

---

१. कहर – भयावह, विपत्ति, युद्ध। सूरतन – वीरत्व। तड़तड़ै – तड़तड़ की ध्वनि। बगतर कड़ा – कवचों की लोह कड़ियां। दुजड़ – तलवार से। असुरां – मुसलमानों से। सिखर दूजो – दूसरा ही राव शेखा। परम – पवित्र, परमात्मा। परसाद – प्रासाद, मन्दिर। चौ – को। कळस – शिखर का कलश, मन्दिर का झंडा। पड़ण – पड़ने, पटकने। सलामत – साबित, जीवित और मोजूद जतै – जब तक। धड़ कळस – शरीर पर शीश। सूजो – सुजानसिंह गीतनायक।

२. छोह – उत्साह, क्रोध। छकड़ाळ – कवच। कस – बांध कर, पहिन कर। वीछड़ै – अलग हुए, बिछुड़े। रूक सूं – तलवार से। असपति – अश्वपति, बादशाह। सारीस – समता वाले, सरोप। सीस – अण्डा। देवळ तणौ – मन्दिर को। डिगण – डिगने, पड़ने। न दिये – नहीं दिया। सकस – शख्श, वीरपुरुष। स्याम तण – श्यामसिंह के पुत्र सुजानसिंह ने। भुजा ऊपर – बाहुमूल पर, कंधे पर।

३. कसणां – बंधन। जरद तणा – जिरहवख्तर के। तूटे – टूटे, खुले। मछर – मात्सर्य, गर्व। जवन चा – यवनों का। दळां – सेनाओं से। जूटे – भिड़े, लड़े। विखंड – दो भाग, खण्डित। उतमंग – सिर, मस्तक।

४. वरियाम – श्रेष्ठ वीर। चाळ – अञ्चल। धमचाळ – युद्ध। कमळ – अण्डा, मस्तक। कूरम – कूर्म, कछवाहा। रखो – रक्षक। रखवाळ – रक्षा-पाल, रक्षा करने वाला।

६७. गीत सुजाणसिंघ नै भवानीसिंघ सेखावत रौ

केसरियां पहर मौड़ माथै कस, हंसै बहसिया हौडां हौड ।
कीधा भला देहुरा कारण, काकै अनै भात्रीजै कौड ॥१॥

बीरत जगे दमामां बाजे, चंवरी आलम तणी चडे ।
कज देवळ मोटा कछवाहा, लोहां भाण सूजाण लड़े ॥२॥

हर हरराम सु काम मालहर, बाजा कीरत तणा बजाय ।
जामण मरण मेट जग-जेठी, जोत महल बिच पोढै जाय ॥३॥

---

६७. गीतसार—उपरोक्त गीत शेखावत क्षत्रियों की रायसलोत शाखा के वीर सुजानसिंह और भवानीसिंह पर कहा हुआ है । इन वीरों ने खण्डेला राज्य के मोहनदेवजी के मंदिर की रक्षा हेतु शाही सेना से घमासान युद्ध कर वीरगति प्राप्त की थी । गीत में लिखा है कि काका और भतीजा (सुजानसिंह और भवानीसिंह) ने मंदिर की रक्षा के लिए केशरियाँ वस्त्र पहिन तथा विवाह का मुकुट धारण कर विवादपूर्वक शाही सेना से लड़ते हुए भगवत् ज्योति में अन्तर्लीन हो गए ।

---

१. केसरियाँ – केशर के रंग में रंगे हुए कपड़े, ऐसे कपड़े विवाह के अवसर पर दुलहा अथवा विजय या मृत्यु की प्रतिज्ञा के साथ युद्ध में प्रविष्ट होने वाला योद्धा पहिनता है । पहर – पहिन कर । मौड़ – मुकुट, सेहरा । माथै कस – शीश पर बाँध कर, दुलहे बन कर । बहसिया – जोश पूर्वक बढ़े, विहसते हुए चले । हौडां हौड – परस्पर प्रतिस्पर्द्धा धारण कर । कीधा – किया । देहुरा – देवालय, मंदिर । अनै – और । भात्रीजै – भतीजे, भाई के पुत्र ने । कौड – उत्साह, अभिलाषा, भक्ति, दुलार ।

२. दमामां – नगाड़े । बाजे – बजे, ध्वनित हुए । आलम – संसार, बादशाह । तणी– की । कज – लिए, कार्य । देवळ – मन्दिर, के । लोहां – अस्त्रों-शस्त्रों । भाण – भवानीसिंह । सूजाण – सुजानसिंह ।

३. हर हरराम – हरिराम का पौत्र, भवानीसिंह । मालहर – टोडरमल्ल का पौत्र, सुजानसिंह । बाजा कीरत तणा – कीर्त्ति के वाद्य, यश प्राप्त कर । बजाय – बजवा कर । जामण मरण – जन्म और मृत्यु, आवागमन । मेट – मिटा कर । जगजेठी – सूर्य की । जोत महल – ज्योति रूपी महल में । पौढ़ै – सोये ।

६८. गीत मदनसिंघ सीसोदिया री तरवार री

छट्टा इन्द्र की खिवंत घट्टा खुली जट्टाधार चक्खां,
विकट्टा स झाळ थट्टा पारथेस वांण।
थट्टा मारतण्ड सी मरीची अरु मुण्ड थट्टा,
जसी खाग झट्टा यूं मदन्न हथ्थां जांण ॥१॥

दमंकीस चन्नदासी झमकीस ज्वाला द्रगी,
धनंजै टमंकी कै किरीट जुधां तीर।
तमंकी उडांण रवी-जीत खळां सीस तक्की,
बीजळा सीसोद भुजां घमंकीस वीर ॥२॥

करे खेल तड़ित्ता महेस अंख जोय किधौं,
धोम रत्ता मत्ता गुड़ाकेस ईस धींग।
भाण बसू तपन्ता असग्गा रुण्ड श्रोण भक्खै,
सार झल्ली करां बीया हेम रै सींग ॥३॥

---

६८. गीतसार—उपरोक्त गीत सीसोदिया शाखा के योद्धा मदनसिंह की तलवार की सराहना पर कहा गया है। गीतकार ने गीतनायक की तलवार को मेघ घटा में कौंधती विद्युत, कोपान्वित शिव के तृतीय नेत्र, युद्धरत महावीर अर्जुन के बाण और सूर्य की किरण के साथ उपमित कर वर्णन किया है।

---

१. छट्टा – शोभा, बिजली। खिवंत घट्टा – घटा में चमकती। जट्टाधार – शिव के। चक्खां – चक्षु, तृतीय नेत्र। विकट्टा – विकट। स झाळ – सकोप, ज्वलित थट्टा – शोभा, सैन्य समूह। पारथेस – अर्जुन के। मारतण्ड सी – सूर्य की-सी। मरीची – किरणें। मुण्डथट्टा – मुण्ड समूह, मुण्डों की शोभा। जसी – जैसी, उसी के अनुरूप। खाग – तलवार। झट्टा – झटके में प्रहार करते। मदन्न – मदनसिंह के। हथ्थां – हाथ में।

२. दमंकीस – दमकती। चन्नदास – प्रकाशमयी। झमंकीस – खुली, प्रकाशित, चमकी। ज्वाळा द्रगी – शिव की नेत्र-ज्वाल। टमंकी – चमकी। किरीट – अर्जुन के। तीर – बाण। तमंकी – तमकने का भाव, क्रोधित। उडांण – छलांग, उड़ने की क्रिया का भाव, गति। रवी-जीत – रवि-ज्योति। खळां – दुश्मनों के। तक्की – प्रहार के लिए तैयार, वार के लिए उठाई हुई। बीजळा – तलवार। घमंकीस – प्रहार ध्वनि, गर्जना की।

३. तड़ित्ता – विद्युत। महेस अंख – महादेव के नेत्र। किधौं – अथवा। रत्ता – अनुरक्त। गुड़ाकेस – अर्जुन। धींग – प्रचण्ड वीर। भाण – सूर्य। बसू – पृथ्वी। असग्गा – शत्रुओं। भक्खै – भक्ष्य बनाती है। सार – तलवार। झल्ली – उठाई हुई, धारण की हुई। करां – हाथ में। बीया – दूसरे। हेमरै सींग – हेमसिंह के पुत्र के।

चंचळा गिरंदां पै मनोज पिनाकेस चक्खां,
बन्नीखण्डां बन्ना पाथ काम किधौं बेघ ।
दिनेस गिरंदां हेम इन्द्र पै तपन्त दवै,
खिवैं खाग मदा री अरिन्दां माथै खेघ ॥४॥

मिट्टे हेम रत्ता बीज आग जट्टी ध्यान मिट्टे,
इन्द्र सूं कराळी हट्टे पाथ बन्ना भ्रेस ।
जोत घट्टे सूर की ज्यूं कंत जाम च्यार जातां,
मिट्टे न बाणास जंगां हरा मोहकमेस ॥५॥

६९. गीत रावराजा लिछमणसिंघ सेखावत सीकर रौ

भड़ां मेळियां थाट भिड़जां कड़ा भीड़ियां, खीड़ियां सिंघ उठै खिजायौ ।
ओधका पड़ै अरियां धरा ऊपरां, ओ लछौ फतैपुर नाथ आयौ ॥१॥

---

६९. गीतसार–उपर्यंकित गीत में सीकर के रावराजा लक्ष्मणसिंह के आतंक का वर्णन है। कवि कहता है कि रावराजा लक्ष्मणसिंह जब अपनी सेना को युद्ध-सज्जा से सज्जित कर शत्रु प्रदेशों पर चढ़ाई करता है तब शत्रु लोग उसके आगमन की सूचना मात्र से ही अपने गढ़-किलों का त्याग कर वन भागों की शरण में भग जाते हैं ।

---

४. चंचळा – चपला, विद्युत । गिरंदां पै – पर्वतों पर । मनोज – कामदेव । पिनाकेस–महादेव । चक्खां – नेत्रों । बन्नीखण्डां – वन खण्डों, खाण्डिव वन । बन्ना–दुलहा, रण-रसिक । पाथ – पार्थ, अर्जुन । बेघ – वेद्य युद्ध, मत्स्यवेद्य । दिनेस – सूर्य । गिरंदां हेम – सुमेरुगिरि । खिवै – चमकती है । मदा री – मदनसिंह की । अरिन्दां – शत्रुओं । माथै – पर, मस्तक । खेघ – विरोध, क्रोध ।

५. मिट्टे – मिट जाती हैं, नष्ट हो जाती है । हेम रत्ता – हेमन्त ऋतु में, सूर्य की प्रचण्डतासूचक लालिमा । बीज – विद्युत । आग जट्टी – शिव के नेत्र की अग्नि । ध्यान – समाधिस्थ होने पर । कराळी – कराल, भयंकरता । जोत घट्टे – ज्योति घट जाती है । सूर की – सूर्य की । बाणास – तलवार । जंगां – युद्धों में । हरा मोहकमेस – मोहकमसिंह के पौत्र, मदनसिंह ।

१. भड़ां – योद्धाओं । मेळियां – मिला कर, एकत्रित कर । थाट – समूह, सेना । भिड़जां – अश्वों । कड़ा भीड़ियां – पाखरों की कड़ियां कसे हुए, कवच धारण कर । खीड़ियां – हांके हुए, तंग किये हुए । खिजायौ – क्रोधित । ओधका पड़ै – चौंकने का भाव, आतंकित होते हैं । अरियां धरा – शत्रु प्रदेशों । लछौ – लक्ष्मणसिंह । फतैपुरनाथ – फतहपुर का स्वामी ।

वाजि धूसा डंकां चकावंध बाजिदां, चढ़े भड़ कजाकां मेळ चाळौ ।
प्रगट पिसणां धरा दीह धाका पड़ै, आवियौ सिंघ नर देव वाळौ ॥२॥

चमक भालां भड़ां दमंग झड़तां चखां, प्रवाड़ा खाग वळ फतै पावै ।
अचीतौ राव सेखो खळां ऊपरां, इसै अध्रियामणे रूप आवै ॥३॥

पाधरा धाव वंकी धरा पजावा, रत सगति धपावा समर रसिया ।
त्राण बाणास री आगै तजि, बास खळ घणा वनवास वसिया ॥४॥

७०. गीत रावत संभूसिंघ गोगावत दूणी रौ

जमी सहावा नागेन्द्र लोक उपावां विरंच जांणै,
धूरजटी तावां ऊंच भावां मेर धींग ।
आवा लोम रिखी राम तम्मी ज्यू दधीच हाड ऊंच,
सामवेद वेदांगां वीरावी संभू सींग ॥१॥

---

७०. गीतसार–प्रोक्त गीत रावत शंभूसिंह गोगावत कछवाहा दूणी के सरदार पर रचित है । गीत में शम्भूसिंह को शेषनाग, ब्रह्मा, शिव, सुमेरुगिरि, लोमश ऋषि, परशुराम, दधीचि और वेदों में सामवेद के समान उच्चतम विशेषताओं के धनी के रूप में चित्रित किया गया है ।

---

२. धूसा – वाद्य का नाम है । डंकां – दण्डकों से । चकावंध – चक्राकार, चक्रव्यूह, सेना । बाजिदां – घोड़े । भड़ – वीर । कजाकां – लुटेरों, हमलावरों । चाळौ – छेड़छाड़, विग्रह । पिसणां धरा – शत्रु देश । दीह – धोले दिन । धाका पड़ै – भय लगता है । आवियौ – आ गया है । देव वाळौ – राव देवीसिंह का पुत्र ।

३. दमंग – अग्निकण, स्फुलिंग । झड़तां – गिरते । चखां – नेत्रों से । प्रवाड़ा – प्रशंसनीय कार्य । खाग बळ – खड्ग की शक्ति से । फतै पावै – विजय प्राप्त करते हैं । अचीतौ – सहसा, अचिंत, निडर । राव सेखो – राव शेखा का वंशधर, गीत-नायक लक्ष्मणसिंह । खळां ऊपरां – वैरियों पर । अध्रियामणे – भयावह, आतंकपूर्ण ।

४. पाधरा – सीधे । धाव – धावे, हमले । वंकी – विकट । पजावा – तंग करने, भयभीत करने । रत – रक्त । सगति – शक्ति, रणदेवी । धपावा – तृप्त करने । समर रसिया – युद्धप्रेमी, योद्धा, रण दुलहा । त्राण – रक्षा, बचाव । बाणास – तलवार । बास – निवास । घणा – बहुत अधिक । वसिया – जा बसे, निवासी बन गए ।

१. जमी सहावा – भूमि का धारक । नागेन्द्र – शेषनाथ । उपावां – उत्पादकों । विरंच – विरंचि, ब्रह्मा । धूरजटी – शिव । तावां – क्रोध में । मेर – सुमेरु-गिरि । लोम रिखी – लोमश ऋषि । राम तम्मी – तमोगुण में परशुराम । दधीच – दधीचि ऋषि । वेदांगां – वेदांगों, वेदों में । वीरावी – वीर पुरुषों में ।

भांण तेजगीरां तीरां विध्या मेधा जै भाखा,
जांण मछन्द्राणी जोग मत्ती रौ बोधाण जो भार ।
जम्मीरा जोखीरां वीरां वीरभद्र जेम,
जोयजो हम्मीरां श्रेम खेम रौ जौधार ।।२।।

पंडवेस सांच मगां फुरम्माण सोहे प्रथी,
धीठ जंगां सुरम्माण द्रोणंगां धूजांण ।
उरम्मांण पै सिधां दुजोण पूर मांण श्रसी,
सोहे कुरम्माण वंसी दूसरौ सूजांण ।।३।।

व्याळ धाता रुद्र पब्बै रिखी राम दात वेद,
रवी पाथ नाथ इन्द्र प्रमाथ श्ररौड़ ।
राड़ धीरां वेळ खीरां मांणगीरां राजै,
महावीरां छाजै यूं हमीरां वेंस मौड़ ।।४।।

—हुकमीचंद खिड़िया रौ कह्यौ

---

२. भांण – भानु, सूर्य । तेजगीरां – तेजस्वियों में । तीरां विध्या – धनुर्विद्या वालों में । मेधा – बुद्धिमानों में । मछंद्राणी – मत्स्येन्द्रनाथ । जोगमत्ती रौ – योगविद्या को, योग बुद्धि को । बोधाण – बोध, ज्ञान । जम्मीरा – भूमि का । जोखीरां – हानि पहुँचाने वालों । जोयजो – देखा जाना चाहिए । हम्मीरां – हम्मीर सिहोत कछवाहों में । श्रेम – इस प्रकार । खेम रौ – क्षेमसिंह का । जोधार – वीर, पुत्र ।

३. पंडवेस – पाण्डव-ईश, युधिष्ठिर । सांच मगां – सत्यमार्गानुयायियों में । फुरम्माण – फरमान, श्रादेश । धीठ – वीर । सुरम्माण – इन्द्र । द्रोणंगां – द्रोणगिरि, पर्वतों । धूजांण – कम्पित करने वाला, संहारकर्ता । उरम्मांण – उर्मियों वालों में, तरंगी । सिधां – समुद्रों में, सिंधु सागर । दुजोण – दुर्योधन । पूर-मांण – पूर्ण मानी, हठी । कुरम्माण – कूर्म, कछवाहों में ।

४. व्याल – शेषनाग । धाता – विधाता, ब्रह्मा । पब्बै – सुमेरु पर्वत । दात – दानी, दधीचि । रवी – रवि, सूर्य । पाथ – श्रर्जुन । नाथ – मत्स्येन्द्रनाथ । प्रमाथ – वीरभद्र । राड़ धीरां – युद्ध में युधिष्ठिर-सा । वेल खीरां – समुद्रों में ।

७१. गीत चतुरा रामावत राठौड़ री

चौरंग खग असुर विहंडिया चतुरै, करी न असी दुजै अचड़ कंहीं।
वासग सेत लाल रंग वणियौ, नागणि तन ओळखै नहीं ॥१॥

रवदां खग वाहतो रामावुत, रेणा पुड़ भदियौ रतंग।
भुजंग सुपेद लाल रंग भदियौ, भूली तिण आंटै भुयंग ॥२॥

वाणासां सानिति वंगाळां, पोहौ वरंगे मेड़ता पति।
अहिपुरि रतन चौळ ओपमियौ, अहतने ओदक अनि रहि अति ॥३॥

सत्र साभत व्यलागौ सारै, तळ छळि घण लाल अताग।
पांव प्यळोय धसि अगि वसियौ, नागणि नै डरि कहै हंस नाग ॥४॥

---

७१. गीतसार—उपरोक्त गीत मेड़तिया शाखा के योद्धा चतुरसिंह राठौड़ का है। गीतकार ने चतुरसिंह द्वारा मुसलमानों की सेना के साथ युद्ध लड़ कर वीरगति प्राप्त करने का इसमें वर्णन किया है। वह कहता है कि चतुरसिंह ने मुसलमानों की सेना का नाश कर ऐसा उच्चकोटि का कार्य किया जो आज तक इस संसार में अन्य कोई न कर सका। उसने ऐसा घमासान युद्ध किया कि रक्ताधिक्य से शेषनाग का श्वेत वर्ण रक्ताभ होगया। फलतः शेष की पत्नी भ्रान्तिवश अपने पति को पहिचान न सकी।

---

१. चौरंग – चतुरंगिणी, सेना। खग – खड्ग। असुर – मुसलमान। विहंडिया – नाश किया, टुकड़े टुकड़े कर दिये। करी – की। अचड़ – श्रेष्ठता का कार्य। वासग – वासुकि नाग। सेत – श्वेत। नागणि – सर्पनी, नागपत्नी। ओळखै – पहिचानती।

२. रवदां – शत्रुओं पर। वाहतो – संघात करता। रामावुत – रामसिंह का पुत्र या वंशधर। रेणा पुड़ा – पाताल लोक, पृथ्वीतल। रतंग – रक्तिम। भुजंग – सर्प। सुपेद – सफेद। तिण – उस। आंटै – बदले, कारण से। भुयंग – सर्प को।

३. वाणासां – तलवारों। वंगाळां – मुसलमानों। पोहौ – राजा, योद्धा। वरंगे – टुकड़े। अहिपुरि – नागलोक। चौळ – लाल रंग। ओपमियौ – शोभित हुआ। अहतने – नाग के शरीर को। ओदक – चौंक कर, झिझक कर।

४. सत्र – शत्रु। साभत – मारते हुए। व्यलागौ – लगा, जुटा। सारै – तलवारों से। तळ – पाताल लोक। घण – अधिक। अताग – अथाह, असीम। प्यळोय – समेट कर। अगि – स्वर्ग। वसियौ – वास किया। हंस – हँस कर।

७२. गीत मोहकमसिंघ राठौड़ रा जुद्ध रौ

तुरंगां पाखरां सिलहां साखतां, राजन्द अेहा बोल रहावै ।
मोहकमियौ मेवासां माथै, ऊग विहांणै चोकस आवै ॥१॥

अळवळतां काथा असवारां, है चढियौ दोयणां घर हेरै ।
धजर सेलां दियण धमोड़ा, फजर ऊगां दौळां फेरै ॥२॥

वैरियां काज पलांणै वाजिद, कांधो धर अेहो मोहोकमौ ।
वित घेरे मेरां बतळावै, संग्रहे रवि ऊगां समौं ॥३॥

ऊछरतां चोपां चै ऊपरि, है परभाते सोहड़ां हुंका ।
बामी-बंध कमंध बजाड़ै, डूंगरड़ां बिच ढोलां डंका ॥४॥

---

७२. गीतसार—उपरोक्त गीत मोहकमसिंह नामक राठौड़ वीर पर कथित है । इसमें अजमेर मेरवाड़ा के दस्यु कर्मजीवी मेरों पर आक्रमण कर उनके पशु धन का अपहरण करने का उल्लेख है । कवि का कथन है कि वीर मोहकमसिंह प्रति दिन अपनी अश्व सेना को सन्नाह सज्जित कर लुटेरे मेवों पर आक्रमण करता है और उनके पशु धन को छीन कर बल-हीन बना देता है ।

---

१. तुरंगां – घोड़ों । पाखरां – कवचों, लोहे की झूलें । सिलहां – सन्नाहों । साखतां– जीनपोश । राजन्द – राजेन्द्र, राजा । अेहा – ऐसे । मेवासां – लुटेरों के स्थानों। माथै – ऊपर । ऊग विहांणै – दिन उगते ही, प्रतिदिन प्रातःकाल में । चोकस – सावधान होकर, निश्चित ही ।

२. अळवळतां – अलबेला, शौकीन । काथा – जल्दबाज, चंचल । है चढ़ियौ – घुड़सवारी किए । दोयणां – दुश्मनों । हेरै – खोजता है, ढूंढ़ता हुआ । धजर – घोड़े, योद्धा, तलवार । सेलां – बलमों के । दियण – देने के लिए । धमोड़ा – चोटें, मार । फजर – प्रातःकाल । दौळां – चारों ओर ।

३. काज – लिए, हेतु । पलांणै – जीन आदि कस कर । बाजिद – अश्वों को । कांधो धर – स्कंध धर, वीर । वित – पशुधन । घेरे – हांक कर ले जाता है, अपहरण कर । मेरां – एक जाति विशेष । समौं – समय ।

४. ऊछरतां – चरने के लिए घर से जंगल के लिए रवाना होते समय । चोपां–चौपायों । चै – के । परभाते – प्रभातकाल में । सोहड़ां – योद्धाओं । हुंका – हाके, प्रस्थान कर, घेर कर । बामी-बंध – बाएँ हाथ की ओर से पगड़ी बाँधने वाला । कमंध – राठौड़ । बजाड़ै – बजाता है । डूंगरड़ां – गिरिमालाओं में, पहाड़ी बस्तियों में । डंका – डंके, डंडे ।

पर चाडां फेरै पासरणां, है मुझै सावळ झाले दीहाड़ैं।
अरि नेसां जोधावत अेहो, पोहो मुळकंतां धाहां पाड़ै ॥५॥

है वुकठीआं कांकण हथौ, केवा काढ़ण काज कड़छै।
भाक समूं भळकंतां भालां, धण लै अरियां खाग घड़छै ॥६॥

सांक न मांनै वाहैर सदो, कबि पोखण कटकां दे कोका।
अरि माथा वोहौ माल ले आवै, झोकायत झौका रे झोका ॥७॥

७३. गीत बीजा राठौड़ रौ

मिळिया सह कोय आदरे मनसब, चूका सामध्रम आचार।
जवनां हूंत अभनवौ जैसो, बीजौ न मिळियौ जूह विडार ॥१॥

---

७३. गीतसार–उपरोक्त गीत राठौड़ वीर विजयसिंह सबलसिंह के पुत्र पर रचित है। गीत में उसके द्वारा मुसलमान बादशाह का मन्सब स्वीकार न करने तथा शाही सेना के विरुद्ध लड़ते रहने का वर्णन है। कवि कहता है कि राव रणमल्ल और जोधा के अन्य वंशजों ने तो स्वामि-धर्म का त्याग कर शाही सेवा स्वीकार करली, किन्तु विजयसिंह ने ऐसा नहीं किया।

---

५. पर चाडां – दूसरों की सहायता के लिए। पासरणां – प्रसरण। सावळ – भाला। दीहाड़ै – प्रतिदिन। अरि नेसां – शत्रुओं के ग्रामों। जोधावत – जोधा का वंशधर। पोहो – प्रातः। मुळकंतां – मुस्कराते, दिन निकलते। धाहां–पुकार, करुण आवाज।

६. वुकड़ीआं – निकाले। केवा काढ़ण – वदला लेने। कड़छै – कटिबद्ध होता है, सनद्ध होता है। भाक समूं – पौ फटते, प्रभात समय में। भळकेतां – चमकते। भालां – सेलों। धण लै – मवेशी धन घेर कर। अरियां – शत्रुओं को। घड़छै– काटता है, मारता है, झपटता है।

७. सांक – शंका, भय। वाहैर – अनुधावक दल। पोखण – पोषित करने। कटकां – सेनाओं को। कोका – निमंत्रण, बुलावा। अरि माथा – वैरियों के सिर। वोहौ– बहुत-सा। माल – द्रव्य। झोकायत – बहादुर। झोको – शाबाशी, धन्यवाद।

१. मिळिया – जा मिले, शामिल हो गए। सह कोय – सब कोई। आदरे – स्वीकार कर लिए। चूका – च्युत हुए, चूक गए। सामध्रम – स्वामिधर्म। जवनां हूंत – यवनों से। अभनवौ – अभिनव। जैसौ – जयसिंह। बीजौ – विजयसिंह। जूह विडार – सेना को छिन्न-भिन्न कर।

जाय जाय रिणमालां जोधां, पटा लिया नम लागा पांय।
सिर नामियौ नह सबळावत, जोधाणै उसरां नह जाय ।।२।।

घर बाहरु चीत ध्रू-धारण, सीख सरदार सूरिमां सींम।
तुरकां तणा करै धड़ तंडळ, तुरका नूं न करै तसलीम ।।३।।

काल्हे घर बळसी नव कोटी, किलम अठै रहसी कै काळ।
मिळिया अनम लियां मंडळीकां, बातां ऊबरसी बिजपाळ ।।४।।

७४. गीत हठीसिंघ जोगावत राठौड़ रौ जुद्ध रौ

हूरां कह तुरक अछर कह हिंदू, बरण काजि दोय वरग बढ़ै।
हठीसिंघ ऊपरि लागौ हठ, चौकस होय न रथां चढ़ै ।।१।।

---

७४. गीतसार–ऊपर लिखा हुआ गीत जोगा के वंशज राठौड़ वीर हठीसिंह का है। हठीसिंह ने यवन-सेना से लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की थी। गीत में हठीसिंह का वरण करने के लिए अप्सराओं और हूरों के पारस्परिक झगड़े का वर्णन हुआ है। अन्त में जब शिव ने अपनी माला में गुम्फित उसके शिर को दिखा कर हूरों के सामने उसके हिन्दू होने का प्रमाण दिया तब हूरों का संशय दूर हुआ।

---

२. रिणमालां – राव रणमल्ल के वंशधर। जोधां – राव जोधा की संतति वाले। पटा-जागीर के पट्टे, सनदें। नम – नम्र बन कर, झुक कर। पांय – पैरों। नांमियौ – नमाया। सबळावत – सबलसिंहोत। जोधाणै – जोधपुर। उसरां–असुरों के पास, यवनों की सेवा में।

३. बाहरु – रक्षक। ध्रू-धारण – ध्रुव धारणा। सीख – शिक्षा, शिखर। सींम – सीमा, हद। तुरकां तणा – तुर्कों के। धड़ – शरीर। तंडळ – टुकड़े टुकड़े। नूं-ने। तसलीम – सलाम, अभिवादन।

४. काल्हे – कल, शीघ्र ही। बळसी – लौट आएगी। नव कोटी – मारवाड़ की। किलम – मुसलमान। अठै – यहां पर। रहसी – रहेंगे। कै काळ – कितने समय। अनम – अनम्र। ऊबरसी – शेष रहेगी। बिजपाळ – विजयसिंह की।

१. हूरां – यवन अप्सराएँ। तुरक – तुर्क। अछर – अप्सराएँ। बरण काजि – वरने के लिए। बरग – वर्ग, वर्ण। चौकस – भली भांति निर्णय। रथां – अप्सराओं के रथ, विमान।

लोंठी थकी कोसि नह लेस्यौ, दाखै हूरां अछर दिसी।
माथै सिखा न कानां मोती, कहो कमळ विण खवर किसी ॥२॥

हीया फूट हठ न करौ हूरां, नर हिंदू छै तुरक नहीं।
वांमी कस केसरियै वागे, सूर सुहड़ राठोड़ सही ॥३॥

कमळ यतै आंणियौ कमाळी, पावंडां साठि पचास परां।
हूरां मिळै सोच करि हारी, वारे अपछर लूण उरां ॥४॥

जुध वारंगनां वरै जोगावत, वेधि घड़ा यंद्रपुर वसियौ।
महं चौंडां सलखां रिणमालां, कमधज कुटंब ऊजळौ कियौ ॥५॥

---

२. लोंठी – बलवान, बड़ी। थकी – होने से। कोसि – छीन। लेस्यौ – ले सकती, लेंगी। दाखै – कहती हैं। दिसी – तरफ। माथै – सिर पर। सिखा – शिखा, चोटी। कमळ – सिर। विण – बिना।

३. हीया फूट – निर्बुद्धि। वांमी कस – बांए भाग के कसने, बांयी ओर से पगड़ी आदि बांधने के कारण राठोड़ 'वामी बंध' कहलाते हैं। वागे – वागा वस्त्र। सुहड़ – वीर। सही – निश्चित् रूप से।

४. यतै – इतने में। कमाळी – शिव। आंणियौ – ले आया। पावंडां – कदमों। परां – दूर से। हारी – पराजित हुई। वारे – न्यौछावर करे। लूण–नमक। उरां – इस ओर।

५. वारंगनां – अप्सराएं, वीरांगनाएं। वरै – वरण कर। वेधि – युद्ध, पार कर। घड़ा – सेना। यंद्रपुर – इन्द्रपुरी, इन्द्रलोक। चौंडां – राव चूंडा। सलखां – सलखा के वंशजों। रिणमालां – राव रणमल्ल की संतान वालों। कुटंब – परिवार। ऊजळौ – उज्ज्वल, पवित्र।

७५. गीत करण महेचा राठौड़ री

महासूर दिली विचां बाहियौ महेचा, हाकळे भड़ां आतम सकति हूंत ।
कंवर मोहकम तणै हिये जड़ियौ करण, काळिजो फूटि बूकां परै कूंत ॥१॥

जटा पंख खीजिया जेम उडणौ जिकौ, अणी हंस चुवंत रुधर आलो ।
इंदउत तणै उर बिजावत उगायौ, भळकियौ पापड़ा पार भालो ॥२॥

सळाका बीज मंगळा झळा सारिखौ, कहर जोगणिपुरां पड़ै कूटो ।
बूकड़ा मंजर हंस काळिजा वेहरतौ, फोड़ि कूंवर पंजर सेल फूटो ॥३॥

दोयण महाराज री भांजि दिली दळां, बधे जसवास जुग च्यार बांटो ।
कूंत मांटीपणौ घणौ तीखौ करण, काम रां रावतां तणौ कांटो ॥४॥

---

७५. गीतसार–उपरोक्त गीत कर्णसिंह महेचा राठौड़ का है। कर्णसिंह ने दिल्ली में मोहकमसिंह नामक किसी योद्धा को अपने भाले से मार कर ख्याति अर्जित की थी। गीत में वर्णन है कि कर्णसिंह ने अपनी आत्म-शक्ति के बल पर दिल्ली में अनेक वीरों की उपस्थिति में कुमार मोहकमसिंह पर भाले का प्रहार किया। उस वीर ने इतनी ताकत से वार किया कि मोहकमसिंह के कलेजे और वृक्क को विदीर्ण करता पार निकल गया।

---

१. महासूर – महान् वीर। दिली विचां – दिल्ली में। बाहियौ – प्रहार किया, चलाया। महेचा – राठौड़ों की एक शाखा जिनके मारवाड़ में बाडमेर, जसोल और सिणदरी आदि बड़े ठिकाने थे। हाकळे – ललकार कर। भड़ां – योद्धाओं की। आतम सकति हूंत – आत्मबल से। तणै – के। हिये – हृदय में। जड़ियौ – जड़ा, चुभाया। काळिजो – कलेजा। बूकां परै – वृक्क के उस पार। कूंत–भाला।

२. जटापंख – सर्प, गरुड़। खीजिया – कुपित। उडणौ – उड़ने वाला। जिकौ – जो, वह। अणी – नोंक। हंस – प्राण, कलेजा। चुवत – टपकते। रुधर – रुधिर। आलो – गीला, भीगा हुआ। इंदउत तणै – इन्द्रसिंह के पुत्र के। उर – हृदय। बिजावत – विजयसिंह के पुत्र ने। भळकियौ – चमका। पापड़ा पार – पीठ भाग को छेद कर उस ओर।

३. सळाका बीज – बिजली की चमक। मंगळा झळा – अग्नि की ज्वाला। सारिखौ – समान। कहर – विपत्ति, युद्ध। जोगणिपुरां – योगिनीपुर, दिल्ली। कूटो – मारकाट कर ढेर कर देना। बूकड़ा – वृक्क। हंस – प्राण। वेहरतौ – चीरता हुआ, छेदन करता। पंजर – शरीर का ढांचा।

४. दोयण – शत्रु। भांजि – मार कर। जसवास – कीर्त्ति। जुग च्यार – चारों युग। मांटीपणौ – मर्दानगी। घणौ – बहुत अधिक। तीखौ – पैना, तीक्ष्ण। वढ़कर। तणौ – का। कांटो – कण्टक, दृढ़, हद।

७६. गीत राव जैतसिंघ सेखावत कासली रा धणी रौ

वडौ वाळियौ वैर वैरां तणौ वाहरू, जगत हाव रियो फतै दिस जोय।
जीवतौ नूरदी वाहर जावतौ, कासली ओळमों आवतौ कोय ॥१॥

जगा रा आगि बरजागि घनौ जैतसी, खाग ताहरै खैर छै खंड खुरसाण।
मगज रा कोटि मेछांण मूढ़ै मरै, ऊबरै राजि री पीठि हिंदवाण ॥२॥

जगतसिंघ केसरीसिंघ वाळण जतू, धड़चणां नूरदी धाड़फाड़।
कासली वीरधर बिण राखै कवण, धरम माळा तणौ कथन ढूंढाड़ ॥३॥

कोई जीवौ मरौ अमरनामां किया, रोडाळां डूलिया दोय राह।
अबदुला खांन चौ उवर ऊकाळियौ, सोच साचां तणौ जाळियौ साह ॥४॥

---

७६. गीतसार—उपरोक्त गीत राव जैतसिंह शेखावत कासली के स्वामी का है। इसमें कवि ने राजा केशरीसिंह खण्डेला और राव जगतसिंह कासली के वैर में अब्दुल्ला खांन से युद्ध कर उसे परास्त करने का वर्णन किया है। जैतसिंह ने अब्दुल्ला खांन के सेनानायक नुरुद्दीन को ललकार कर युद्ध में मारा था। गीत में लिखा है कि नुरुद्दीन युद्ध से बच कर जीवित निकल जाता तो जैतसिंह को निश्चित रूप से उपालम्भ मिलता। किन्तु, उस वीर ने उसे मार कर अपने दोनों सरक्तीय वंशजों का वैर शोधन कर प्रशंसा प्राप्त की।

---

१. वाळियौ – लौटाया, लिया। वाहरू – रक्षक, वापस लौटाने वाला। जगत – संसार। हाव रियो – स्तम्भित हो रहा, विस्मित रह गया। फतै – विजय। जोय – देख कर। जीवतौ – जीवित। कासली – सीकर राज्य की प्राचीन राजधानी, एक कस्बे का नाम। ओळमों – उलाहना। कोय – कोई।

२. जगा रा – जगतसिंह के। आगि बरजागि – वज्राग्नि। घनौ – शावास। खाग – तलवार। ताहरै – तेरे, तुम्हारे। खैर – कुशल। खुरसांण – मुसलमान, बादशाह। मगज रा कोटि – मग्जवाले, बुद्धि का गर्व रखने वाले। मेछांण – म्लेच्छ, मुसलमान,। मूढ़ै – मुँह आगे। ऊबरै – बचते हैं, जीवित रह पाते हैं। राजि री – आप श्री की। पीठि – पीठ, पीछे ओट में रह कर। हिंदवांण – हिन्दू समाज, हिन्दुओं के राज्य।

३. वाळण – प्रतिशोध लेने। धड़चणां – मारना, संहार करना। धाड़फाड़ – अपने बल पर, अपार बल के सहारे। विण – विना। कवण – कौन। धरम माळा तणौ – धर्म रूपी माला का। ढूंढाड़ – जयपुर राज्य का प्राचीन नाम।

४. अमरनामां – अमर नाम। रोड़ाळा – बाधक बनने वाले। डूलिया – असहाय होकर भटकना, दोलित। दोय राहा – हिन्दू और यवन दोनों धर्मों वाले। चौ – को। उवर – उर, हृदय। ऊकाळियौ – दग्ध किया, उबालना। जाळियौ – जलाया।

जमी असमान रिव चंद रहसी जितै, बांचसी सुजस नव दूण बरगां ।
जोय थांरां भुजां नूरदी जारणा, कासली वारणां लियै करगां ॥५॥

७७ गीत सहसमल राठौड़ री वेढ़ रौ

महासूर सुरति निळै ऊपटै सहसमल, मारकां तौ जिसां मिळै जुध मेच ।
जडळकां कटै बिचि गळै ठहरै जकै, परी वरमाळ जिम हिंडुळै पेच ॥१॥

खार खाधो थकौ जूटै दळां खाळवां, सार झट झाट तूटै स गोभा ।
तई बेहरार आंटा हीये धार तन, सुरत्रिया हार अणपार सोभा ॥२॥

रिमहरां थाट बाकारतौ रोंस रां, तेग ओंहाट मिळि मौसरां तीख ।
असिमरां तूटि उझटि सिरां औसरां, साळुळै चौसरां रंभ सारीख ॥३॥

---

७७. गीतसार—उपरोक्त गीत राठौड़ वीर सहसमल की रणक्रीड़ा पर रचित है। कवि ने लिखा है कि सहसमल के ललाट पर वीरता और उदारता टपकती है। उसने युद्ध में कोपान्वित होकर शत्रुओं पर आक्रमण किया। तलवार के वार से कटे हुए पेच उसके गले में वरमाला की भांति झूल रहे थे। यह देख कर वराकांक्षिणी अप्सराएँ विस्मित नेत्रों से उसे निहारती हुई अपने लोक को लौट गईं। गले में लटकते पेचों से उन्हें सहसमल के वरे जाने का भ्रम हो गया।

---

५. जमी – जमीन, पृथ्वीलोक। रिवचंद – सूर्य और चंद्र। रहसी जितै – जब तक रहेंगे। बांचसी – पढ़ेंगे। सुजस – सुयश। नव दूण – अठारह। बरगां – वर्ग, वर्ण। जोय – अवलोक कर। थांरां – आपके, तुम्हारे। जारणा – हजम करना, मार देना। वारणां – बलैया लेना। करगां – हाथों से।

१. महासूर – महान् वीर। सुरति – सूरत, शक्ल। निळै – ललाट। ऊपटै-उभरे, उमड़ता है। मारकां – मारने वालों, वीरों। तौ जिसां – तुम जैसा। मेच – में, म्लेच्छ। जडळकां – तलवारों से। बिचि गळै – गले पर। ठहरै – ठहरे हुए। जकै – वे, जो। परी – अप्सरा। हिंडुळै – हिलोरित, झूलते हुए। पेच–आंटे, पेच।

२. खार खाधो थकौ – रोष में क्षुब्ध हुआ। जूटै – भिड़ता है। दळां खाळवां – शत्रु-सेना से। सार झट – तलवार। झाट – झटके से, प्रहार विशेष। तई – आतताई, तब। बेहरार – चीरती, वेधती। आंटा – पेच। धार तन – तन पर धारण किए, शरीर को तलवार से। सुरत्रिया – अप्सरा। हार – कण्ठाभूषण। अणपार – अपार।

३. रिमहरां – शत्रुओं। थाट – समूह, सेना। बाकारतौ – ललकारता हुआ, चुनौती देता हुआ। रोस रा – रोष के। तेग – तलवार। ओंहाट – भ्रकुटी। मौसरां–मूंछें। तीख – तीक्ष्ण, बल खाई हुई। असिमरां – तलवारें। तूटि – टूट कर। उझटि सिरां – शिखा या सिर में उलझ कर, नोक लिपट कर। साळुळै – चलती हुई, हिलती हुई। चौसरां – माला। रंभ – अप्सरा। सारीख – सदृश।

करण तण देखि वरमाळ घाती कमंध, करै छाती कंठण धरै कांटै ।
रुक मुरड़ै खळां घड़ा रस लूधती, अछर मुरड़ै गई देख आंटै ।।४।।

७८. गीत हुंसावलो महाराव हनुमंतसिंघ सेखावत रौ

विध रा जांण गाथ रा वीकम, पारिख बांण हाथ रा पाथ ।
जुध रा भीम खळां रा गंजण, 'नाथ' रा बुध गणनाथ ।।१।।

क्रन रा भोज सुक्रित रा क्यावर, वित व्रवण अछत रा वीर ।
दत रा करण रजत रा दाता, खित रा रूप प्रक्रत रा खीर ।।२।।

गुण रा जांण ग्यान रा गोरख, तप रा भांण माण रा त्याग ।
वित रा पांण 'हणूं' रा वरसै, सत रा ढांण घणौं सौभाग ।।३।।

---

७८. गीतसार—उपरोक्त गीत मनोहरपुर शाहपुरा के शासक महाराव हनुमन्तसिंह शेखावत पर रचित है। गीत रचयिता ने गीतनायक के दान तथा पराक्रम का वर्णन करते हुए लिखा है कि श्रीनाथसिंह का पुत्र महाराव हनुमन्तसिंह कीर्त्ति-गाथाओं में विक्रमादित्य, धनुर्धरों में अर्जुन, युद्धवीरों में भीम और बुद्धिमानों में गणेश के समतुल्य माना जाता है।

---

४. करण तण – कर्णसिंह तनय। घाती – डाली हुई। छाती – वक्षस्थल। कंठण– कंठा, गले का हार। रुक – तलवार। मुरड़ै – मरोड़ती, लौटती। रस लूधती – रसलुब्ध। अछर – अप्सरा। मुरड़ै गई – लौट गई। आंटै – लपेटे, पेच।

१. विध रा – विधि का, विधाता का। जांण – ज्ञान रखने वाला। गाथ – गाथा, कीर्त्ति-कथा। वीकम – राजा विक्रमादित्य। पारिख – परख, परीक्षा। पाथ–अर्जुन। खळां रा – शत्रुओं का। गंजण – संहारक। नाथ रा – श्रीनाथसिंह का पुत्र। बुध – बुद्धि में। गणनाथ – गणपति, गणेश।

२. भोज – प्रसिद्ध राजा भोज पंवार। सुक्रित – सुकार्य। क्यावर – एहसान करने वाला, यशस्वी। वित – वित्त, धन। व्रवण – देने वाला। अछत – इच्छा, अभाव। दत रा – दान का। करण – दानी कर्ण। रजत – स्वर्ण, चांदी। खित – क्षिति, पृथ्वीलोक। प्रक्रत – प्रकृति, स्वभाव। खीर – समुद्र, गंभीर।

३. जांण – जानने वाला। गोरख – गोरक्षनाथ। भांण – भानु, सूर्य। माण – सम्मान, मान। पांण – हाथ, बल। हणूं – हनुमन्तसिंह। वरसै – वर्षा करते हैं। सत रा – सत्यता का। ढांण – समूह, गढ़, चाल। घणौं – अत्यधिक।

लोयण लाज लाज रा लंगर, भारी साज राज रा भाव।
सत रा ओटभ रज रा सारण, रज रा कोट तपो महाराव ॥४॥

—आईदान पाल्हावत रौ कह्यौ

७६. गीत कुंभा खीची री

खुचंती खुरी रुधिर खीची री, घणा असुर हंचे घण घाय।
कूंभड़ां री कुटकै क्रम देती, गऊ-त्रिया ली गोरी राय ॥१॥

ऊभै कुंभ न लीनै असुरां, लागुवां पड़ियां पछै लयी।
गढ़ गागरौणि गउ-त्री ग्रहतां, गांगू का ऊपरै गयी ॥२॥

गारि रुधिर मांची गंग रा, कुंभड़ा कुळणि थयी कुळ भांण।
अणभंग तूंझ तणा घड़ ऊपरि, चंद धेन चालि चहुवांण ॥३॥

खोपर लगैं खुचंती खीची, आप रुहिर पर रुहिर अयार।
गांगांणी पै खुरां परगटतां, कुटकां थयां चली कुळ सार ॥४॥

---

७६. गीतसार—उपरोक्त गीत के नायक कुंभा खीची ने गोधन तथा स्त्री समाज की रक्षा करते हुए प्राण त्याग किया था। गीतकार ने गोरक्षा की ओर संकेत करते हुए गीत में वर्णन किया है कि कुंभा ने अनेक यवन योद्धाओं को युद्ध में मार कर वीरगति प्राप्त की। उसकी मृत्यु के बाद उसके रक्त-रंजित शरीर के टुकड़ों पर अपने पैर धरती हुई गायें वैरियों के हाथ पड़ीं। वह जब तक जीवित रहा यवनों को गो-हरण का साहस नहीं हुआ।

---

४. लोयण – लोचन, नेत्र। लाज रा लंगर – लज्जा का लंगर। ओटभ – आश्रयस्थल। सारण – सिद्ध करने वाला। कोट – दुर्ग, समूह। तपो – तपते रहो, राज्य करते रहो।

१. खुचंती – चुभाती, धंसाती। खुरी – खुर। रुधिर – लोहू। असुर – यवन। हंचे – मारे। कूंभड़ां – कुंभा। कुटकै – टुकड़े, पिण्ड खंड। क्रम देती—चलती। गऊ – गायें। त्रिया – स्त्रियां। गोरी राय – गोरी वंशीय यवनों के मालिक ने।

२. ऊभै – सलामत खड़े रहते। लागुवां – पीछा करने वाले, वैरियों। पछै – फिर, पीछे। गागरौणि – गागरौन स्थान। गउ – गाय। त्री – त्रिया – गउ-त्री – गाय। ग्रहतां – पकड़ते, घेरते। गांगू का – गांगा के पुत्र।

३. गारि – गाल, कीचड़। गंग रा – गांगा के पुत्र। कुळ-भांण – कुल-रवि। अणभंग – बहादुर, जिसका क्रम न टूटे। घड़ – शरीर। धेन – धेनु, गायें। चालि – चली, गमन किया।

४. खोपर – मस्तक, कपाल, कुहनी। अयार – दुश्मन। गांगांणी – गांगा के पुत्र। पै – पर, पैर। कुटकां – टुकड़े टुकड़े। थया – हुए। कुळसार – कुल-धर्म।

८०. गीत ठाकर मुकंदसिंघ सेखावत घींगपुर रा धणी रौ

थटा काळ सी डंकाळ सी तोपां यो सावात धक्की,
मैंगळां है खुरां जम्मी मचक्की प्रमांण ।
वीर छंडां लीधा साथ चंडका किलक्की वक्की,
आंमेरनाथ री सेना यों हक्की आराण ॥१॥

उड़ी कै पंखाळ ग्रीध गूदवाळी आसागीर,
कोहौकार महाकाळी कराळी स काम ।
रंजी आसमाण ढंकी चंद यो छपाळी रहै,
टूट ताळी मुनिन्द्रा व्है अताळी तमाम ॥२॥

पंगी जठै तठै तो विदेसां देसां फतै पाई,
जकां बादसाही में कहाई जीत जीत ।
फेरूं किणी न वुलाई तो न पाई जेण आगे फतै,
रायजादे मुकन्ने वुलाई अेण रीत ॥३॥

---

८०. गीतसार—उपर्युक्त गीत घींगपुर के ठाकुर मुकुन्दसिंह शेखावत का है। मुकुन्दसिंह ने जयपुर द्वारा घींगपुर पर आक्रमण करने पर वीरतापूर्वक सामना कर घमासान युद्ध किया था। गीत में कहा गया है कि यमराज के दण्ड तुल्य अमोघ प्रभावकारी तोपों की गर्जना तथा गजाश्वों के प्रयाण से भूलोक दोलायमान हो उठा। चण्डिका बावन भैरवों सहित रणस्थल में आ उतरी। इस प्रकार जयपुर की विशाल सेना ने प्रस्थान कर घींगपुर पर घेरा डाला।

---

१. घटा काळ सी – श्याम घटा, यमराज की सेना-सी। डंकाळ सी – दण्ड शस्त्र सदृश। सावात – बारूद, सुरंग। धक्की – धधकने का भाव। मैंगळां – हाथियों। है खुरां – घोड़ों की पद टापों। मचक्की – दोलित हुई। वीर छंडां – वीर वैतालों का समूह, वीर चण्डिकाओं का। किलक्की वक्की – किलकने बोलने लगी। हक्की– रवाना हुई। आराण – युद्ध।

२. पंखाळ – पक्षी, पंखों वाली। ग्रीध – गृद्ध। गूद वाळी – सिर का भेजा, मांस विशेष। आसागीर – आशान्वित। कोहौकार – कोलाहल की ध्वनि। कराळी – कराल, भयानक। रंजी – धूलि राशि। ढंकी – आच्छादित। छपाळी – छिपा हुआ-सा। टूट ताळी – समाधि भंग होकर। मुनिन्द्रां – योगियों, मुनीश्वरों। अताळी – जागृत।

३. पंगी – कीर्त्ति। जठै तठै – जहां तहां। जकां – जिन्होंने। फेरूं – फिर। किणी – किसी ने। रायजादे – राजकुमार। मुकन्ने – मुकुन्दसिंह ने। अेण रीत – इस रीति से, इस प्रकार।

निहाव सबद्दां चंडां सौक नीर कूप नद्दां,
मद्दां छाकां दुरद्दां छक्की फरकै समार्थ।
कै भड़ां सधीरां जंग छकावै जरद्दां कीधां,
हदौहद्दां मरद्दां करद्दां झले हाथ ॥४॥

लेण कंत अच्छरां गैणाग माग आबा लागी,
पूरां सूरां बीरां सूं जमाबा लागी प्रीत।
ललक्का उछट्टे भैरूं चंडका रमाबा लागी,
गाबा लागी जोगणी बीरांण मंत्र गीत ॥५॥

जूटियौ ज्यूं राम जोध चाडाणी त्रकूट ज्वाळा,
धकै वज्र गिरां परां बाढ़ाणी सधीठ।
खूटिया माडांणी जांणै सांकळां मयंद खूनी,
ऊठिया लाडाणी प्रळैकाळ री अंगीठ ॥६॥

---

४. निहाव – घोष, तोप। सौक – बाण आदि के चलने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि, पंख ध्वनि, शोषने। कूप – कुए। नद्दां – नदियों, सरोवरों का। मद्दां छाकां – मद में प्रमत्त हुए। दुरद्दां – द्विरदों, हाथियों। छक्की – छाकी हुई। फरकै – फहराती, त्वरा से। समाथ – समर्थ। कै – कतिपय। भड़ां – वीरों। सधीरां – धैर्यशीलों। जंग – युद्ध। जरद्दां कीधां – कवचादि धारण किये। हदौहद्दां – हठ ठान कर, वाद मांड कर, अपार। करद्दां – तलवारे। झले हाथ – हाथों में ग्रहण किये।

५. लेण कंत अच्छरां – योद्धाओं का वरण कर ले जाने के लिए। गैणाग माग आबा लागी – आकाश पथ से आने लगी। पूरां सूरां बीरां सूं – पूरे शूरवीरों से। जमाबा लागी प्रीत – प्रीति करने लगी। ललक्के उछट्टे – झुकते तथा उछलने लगे, प्रबल चाह। रमाबा लागी – खिलाने या रमाने लगी। गाबा लागी – गाने लगी। बीरांण मंत्र गीत – वीरताबोधक गीत रूपी मंत्र, वैताल और योगिनी मंत्र गान करने लगी।

६. जूटियौ – जुड़ा, भिड़ गया। राम जोध – हनुमान। चाडाणी – उत्तेजित भाव से। त्रकूट – लंका को। गिरां परां – पर्वतों के पंख। बाढ़ाणी – काटने वाला। सधीठ – सक्रुद्ध दृष्टि, महान्वीर। खूटिया – खुले। माडांणी – जवरन। सांकळां – जंजीरों से। मयंद – सिंह। लाडाणी – लाडखानी शाखा के शेखावत। प्रळैकाळ री – प्रलयकाल की। अंगीठ – अग्नि।

ले भड़ां रटाकां पूर अरिंदा ताड़व्वा लागा,
महाबीर खीज में पाड़व्वा लागा मूंठ ।
वीर वेसताबा जहां दूधारा झाड़व्वा लागा,
रोजगारा खाती ज्यूं फाड़व्वा लागा रूंठ ।।७।।

जेण वेळां उडै वे नाचरा वाळा ख्याल जोवै,
राचरा आचांणी यो जाचरा वाळा रूक ।
उचक्कै उठावै फाचरा वाळा घाट योंही,
टूटै पड़ै गयंदां चाचरां वाळा टूक ।।८।।

लोथबथ्था भिड़े सूर पीठांण राचबा लागो,
वेखे ख्याल हंस भी खाचबा लागो वाज ।
वैणतार झणंका दे मुनिन्द्र नाचबा लागो,
कपाळी जाचबा लागो मुण्डमाळी काज ।।९।।

---

७. भड़ां – योद्धा । रटाकां – टक्करें, मुठभेड़ें । अरिन्दा – वैरियों को । ताड़व्वा लागा – यातना देने लगे, हांकने लगे । खीज – नाराजी । पाड़व्वा – उखाड़ने, गिराने । मूंठ – तलवारें । वेसताबा – अधैर्यशाली । दूधारा – द्विधारे, खड्ग, भाले । झाड़व्वा लागा – चोटें करने लगे, गिराने लगे । रोजगारां – दैनिक मजदूरी पर कार्य करने वाले । खाती – बढ़ई । फाड़व्वा लागा – फाड़ने लगे । रूंठ – लकड़े, लट्ठे ।

८. जेण वेळां – उस समय । वे – दोनों । नाच रा – नृत्य करने वाले, काला और गोरा भैरव । राच रा – अनुरक्त । आचांणी – आचार व्यवहार वाले, हाथों वाले । जाच रा – याचक वाले (?)। रूक – तलवार । उचक्कै – यकायक उछल कर, छलांग भर कर । फाचरा – फाचरे । घाट – तरह, भाँति । गयंदां – हाथियों के । चाचरां वाळा – मस्तकों के । टूक – टुकड़े, खण्ड ।

९. लोथबथ्था – बाहुयुद्ध, मल्ल की भाँति भिड़ कर । पीठांण – युद्ध । राचबा लागो– अनुरक्त होने लगे । वेखे – देख कर । हंस – सूर्य । खाचबा – खींचने । वाज– अपने अश्व को । वैणतार – वीणा वाद्य के तार । झणंका दे – झणकार की ध्वनि । मुनिन्द्र – नारद । नाचबा लागो – नृत्य करने लगा । कपाळी – शिव । जाचबा लागो – याचना करने लगा । मुण्डमाळी काज – मुण्डों की माला पिरोने के लिए ।

बनां जोगणी बजावै पत्र ताळ जेण वेळां,
नाचै मीच रीझ में सचा दे प्राण नेग ।
आवी बनां बोलै बोल अच्छरा रिझावै ऊभी,
तो भी लोभी जंग रा न जावै बावै तेग ।।१०।।

छाके पत्र जोगणी अखूटे रत्र फेर छाका,
नरां काचा फाट बाका मूंह सूखा नीर ।
हारे बीर नाच केई होहोकार करै हाकां,
वेढ़ बांका लाडाणी न थाका बांका बीर ।।११।।

करै कौंण बांतां अे अडंडां डंड डंडै कौंण,
मंडै कौंण काळ सूं सुधारी माथै मीच ।
वांतां अे ऊबारे इसौ लाडाणी घराणां वीच,
दूसरौ न दीसै जम्मी आसमांण बीच ।।१२।।

—सुखदान कविया री कह्यौ

---

१०. बनां – दुलहा । जोगणी – योगिनी । बजावै – बजाती हैं । पत्र ताळ – पात्र को हथेली के ठरके से । मीच – मृत्यु । रीझ – प्रसन्नता से दान देने को रीझ कहा जाता है । प्राण नेग – प्राण रूपी नेग, वृत्ति वाले सेवकों को सेवा के उपलक्ष में दिये जाने वाले द्रव्य को नेग कहा जाता है । अच्छरा – अप्सरा । रिझावै – मोहित करती हैं । ऊभी – खड़ी हुई । जंग रा – युद्ध के । न जावै – नहीं जाते हैं । बावै तेग – तलवारों के प्रहार करते हैं ।

११. छाकि – तृप्त हुई, पूर्ण भरा । अखूटे – अखूट, असमाप्त । रत्र – रक्त । फेर – पुनः । नरां काचा – किम्पुरुषों के । फाटा बाका – भय से मुंह खुले हुए । सूखा नीर – पानी सूख कर, कान्तिविहीन । हाकां – हल्ले । वेढ़ – युद्ध । बांका – विकट वीर । न थाका – थके नहीं ।

१२. करै कौंण बांतां – ऐसी अद्वितीय वातें अन्य कौन कर सकता है । अडंडां – अदण्डितों को । डंडै कौंण – दण्डित कौन करने का साहस करें । मंडै – रचे, करे । काळ सूं – मृत्यु से । माथै – मस्तक, पर । मीच – मौत । ऊबारे – प्रसिद्ध करे । इसौ – ऐसा । घराणां – घराने, कुल । दीसै – दीखता है । जम्मी असमांण बीच – भूलोक और आकाश लोक के मध्य ।

८१. गीत पंचाइण सांगाउत चहुवांण रौ

हितवां स वींटियां अळग न होवै, छाए साख ऊपरि छर छात ।
मणिधर तेथि जेथि मळयातर, पांचौ जेथि तेथि कवि पात ॥१॥

अळगा लोभ न प्रामें अेतौ, लुबधा प्रीत न छाडै लील ।
सुकवि तेथि जेथि सांगाउत, चंदण जेथि तेथि मिणि चील ॥२॥

वास श्रीया विळसंत न विरचैं, सुरतर सुपह विन्है सारीक ।
सोरमतरि अहि वंस सुखी सहि, मांगण सुखी कन्हीं मछरीक ॥३॥

—नांदण वारहट रौ कह्यौ

---

८१. गीतसार–उपरांकित गीत पंचायन सांगावत चहुवान वीर की उदारता से सम्बन्धित है । गीतकार ने इसमें पंचायन को मलयतरु और याचकों को सर्प अंकित कर गीत का सर्जन किया है । वह कहता है कि जैसे सर्प चंदन के पेड़ को नहीं छोड़ते उसी प्रकार याचक गण पंचायन से तनिक भी विलग होना स्वीकार नहीं करते ।

---

१. हितवां – कवियों, हितचिन्तकों, चारणों । वींटियौ – घिरा हुआ, लिपटा हुआ । अळग – दूर, विलग । साख – शाखा । छर – भुजा । छात – छत्र । मणिधर– सर्प । तेथि – तत्र, तहाँ, वहाँ । जेथि – जहाँ । मळयातर – मलयतरु, चन्दन वृक्ष । पांचौ – पंचायन । कविपात – कवि पात्र ।

२. अळगा – अलग, दूर । प्रामें – पाते । अेतौ – इतना, यह तो । लुबधा–लुब्धता, लोभान्वित । प्रीत – प्रीति । सांगाउत – संग्रामसिंह का पुत्र या वंशधर, पंचायन । चील – सर्प ।

३. श्रीया – लक्ष्मी । विळसंत – विलास करते, दान करते । विरचैं – रचना । सुरतर – देववृक्ष, कल्पवृक्ष । विन्है – दोनों । सारीख – सदृश, एक समान । सोरमतरि – सुगंधी वाला वृक्ष, चंदन वृक्ष । अहिवंस – सर्प । मांगण – याचक, कवि । कन्हीं – निकट । मछरीक – चहुवान पंचायन के ।

८२. गीत परबत मदाउत रांदा रौ

पोमाए किसूं बहै सत्र पाछे, भार नमी मचियै भाराथि।
पवौ घणै मिळि नीठ पाड़ियौ, हेकै कहे न चढ़ियौ हाथि ॥१॥

अेकोकौ मुंहडे जो आवत, प्रतरै कळहणि तणी परि।
रहचति कटक सिगळ डोइ रांदो, वात कहत कुंण वैरहरि ॥२॥

पड़ी विहड़ ऊपरी प्रवाड़ै, सत्रहर अंजस बहै सहि।
मुंहियड़ जिणि पाड़ियौ मदाउत, मुंहियौ बोलौ न कोइ महि ॥३॥

—नांदण बारहठ रौ कह्यौ

---

८२. गीतसार-प्रोक्त गीत पर्वतसिंह मदा के पुत्र से सम्बन्धित है। कवि नांदण बारहठ ने इस गीत में गीतनायक पर शत्रुओं के दल का आक्रमण होने पर अेकाकी उनका संहार कर डालने का वर्णन किया है। वह कहता है कि पर्वतसिंह के सम्मुख जो शत्रु चढ़ गए वे अपने वैर की चर्चा करने के लिए रणस्थल से वापिस लौट कर न जा सके।

---

१. पोमाए – प्रोत्साहित किये, गर्व में छके हुए। बहै – जावें, प्रारंभ होने पर। भाराथि – युद्ध। पवौ – पर्वतसिंह। घणै – बहुत से। मिळि – सम्मिलित होकर। नीठ – कठिनता से। पाड़ियौ – गिराया। हेकै – एकाकी। हाथि – हाथ के प्रहार के सामने।

२. अेकोकौ – एकाकी, अकेले। मुंहडे – सम्मुख। प्रतरै – पर्वतसिंह के। कळहणि– लड़ाई। तणी – की। रहचति – ध्वंश करके, नाश करके। कटक – सेना। सिगळ – समस्त। डोइ – मथ कर, कुचल कर। रांदो – रांदा शाखा का योद्धा पर्वतसिंह। कुंण – कौन। वैरहरि – शत्रुता की।

३. विहड़ – विकट (?)। प्रवाड़ै – प्रशस्ति, पर्वत के। सत्रहर – शत्रुता का भाव रखने वाले। अंजस – अभिमान कर, गर्वपूर्वक। बहै – चले। मुंहियड़ – मुंह आगे, सामने। पाड़ियौ – पटका, गिराया। मदाउत – मदा का पुत्र, पर्वतसिंह। मुंहियौ – मुख से। महि – पृथ्वी पर।

८३. गीत कमल महाराव हणूतसिंघ सेखावत रौ

मद मसत हळवळ, हालि मैंगळ, विमळ स्यामळ घटा वद्दळ,
जांणि रद वग पंत उज्जळ, व्याळ माळ विसाळ।
हींस हैंमर कळळ हूंकळ, दुकळ सुकळां सोर दमंगळ,
वोज पळकत सेल वळवळ, प्रबळ दळ भूपाळ ॥१॥

घटा नौबत घौर घरहर, पटा मदझर पसर जळ पर,
दुरद घुघर घरा दादुर, सघण वणि घमसांण।
भेर प्रक करनाळ भरहर, सरग घर जैनगर सुंदर,
भेद इंद नरिंद सरभर, पाट पती परमांण ॥२॥

फरिक नेजां धजां फरहर, इंद धरवट छटा ऊपर,
गंजि अरिहर रूप गिरवर, बीच किरवर वाढ़।
घर स्रवण बरसाळ घरधर, सुकवि मोर दादुर जस सुर,
झुकै द्रव झड़ दान झरहर, सदा नूप आसाढ़ ॥३॥

---

८३. गीतसार—उपर्युक्त गीत मनोहरपुर शाहपुरा के शासक महाराव हनवन्तसिह शेखावत का है। कवि ने इसमें महाराव की सेना को मेघ-घटा के साथ उपमित कर सांग रूपक का सर्जन किया है। कवि ने गजसेना को श्याम घटा, उनके दन्तों को वक पंक्ति, भालों की चमक को विजली की चमक और गज घंटों की ध्वनि को दादुर ध्वनि अंकित किया है।

---

१. हळवळ – हलचल। हालि – चलकर। मैंगळ – हाथी। स्यामळ – श्याम-वर्णीय। घटा वद्दळ – मेघ-घटा। जांणि – मानो। वग पंत – वक पंक्ति। व्याळ – हाथी। हींस हैंमर – घोड़ों की हिनहिनाहट। कळळ हूंकळ – युद्ध में वाद्यों, गजाश्वों आदि का कोलाहल। दुकळ – वस्त्र। सुकळां – श्वेत। सोर – बारूद। दमंगळ – युद्ध। वीज – विद्युत। पळकत – चमकने की क्रिया का भाव। वळवळ – चौतरफ, बारबार।

२. घटा – मेघ घटा। घोर घरहर – भयंकर गर्जना। मदझर – हाथी। पसर – फैलकर। दुरद – द्विरद, हाथी। घुघर – घुंघरू। दादुर – मेंढ़क। भेर – वाद्य विशेष। करनाळ – वाद्य का नाम। भरहर – ध्वनि कर। सरग घर – स्वर्ग घरा। जैनगर – सवाई जयपुर। इंद – इन्द्र। नरिंद – नरेन्द्र, राजा। सरभर – एक समान।

३. फरिक – लहरा कर। नेजां – निशान। फरहर – फहरा कर। धरवट – पृथ्वी-लोक। गंजि – पराजित कर, नाश कर। अरिहर – शत्रुता रखने वालों को। किरवर – तलवार। वाढ़ – काट कर, मार कर। स्रवण – दान देने। जससुर – यश के स्वर, कीर्ति-गान। झरहर – झड़ी, बौछार।

अेक सुरपति हसत अणदत, भिसत हलका अवत मदमत,
बणत घण दुति अस्त बरसत, दांन नृप अवदात।
अव खित रित खंड बरसत, रीभ्क घरपति अवत खटरित,
पाट पति जगतेस घर पति, सुजस दीपां सात ॥४॥

८४. गीत ठाकर सवाईसिंघ चांपावत पोकरण रौ

कह्यौ विजै महाराज सुण सवाई दे करण, मैं कही बात छै याद मांही।
पड़दळी गढ़ मांहे गढ़ केई मावे परा, नरिन्द वा कटारी छै क नांही ॥१॥

पूछियौ नाथ जद सांच कहियौ परो, कटारी जिकण सूं प्रथी कांपी।
सौंप वा कटारी देवसा सबळ नूं, सबळ वा कटारी मनैं सांपी ॥२॥

---

८४. गीतसार—इस गीत में पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह चांपावत और जोधपुर के महाराजा विजयसिंह के बीच सामन्तों की शक्ति विषय के वार्त्तालाप का वर्णन है। सवाईसिंह के पितामह देवीसिंह ने महाराजा को सगर्व कहा था कि जोधपुर का राज्य तो मेरी कटारी के म्यान में रहता है। इस पर महाराजा ने देवीसिंह और उनके पुत्र सबलसिंह को छलाघात से मरवा डाला था। सवाईसिंह तब बारह वर्ष का अल्पायु था। महाराजा के यह पूछने पर कि वह कटारी का म्यान कहाँ है जिसमें मारवाड़ समाहित बताई गई थी। तब सवाईसिंह ने जो वीरोचित उत्तर दिया था उसी का इस गीत में वर्णन है।

---

४. सुरपति – इन्द्र। हसत – हाथी। अणदत – जो नहीं दिया जावे। भिसत – स्वर्ग। हलका – एक सौ हाथियों के समूह को एक हलका कहा जाता था। अवत – दान करता है। मदमत – मदमस्त, हाथी। दुति – द्युति। अस्त – अगस्त्य तारा के। अवदात – श्रेष्ठ, उज्ज्वल। खित – पृथ्वी। रित – ऋतु। रीभ्क – आनन्द, मौज में दिया जाने वाला दान, बख्शीशें। खट रित – षट् ऋतु में। जगतेस – महाराव जगतसिंह। सुजस – सुयश। दीपां सात – सप्तद्वीपों में।

१. विजै महाराज – महाराजा विजयसिंह जोधपुर ने। सवाई – ठाकुर सवाईसिंह पोकरण। दे करण – कान देकर, ध्यानपूर्वक। पड़दळी – म्यान, कोश। मावे – समाहित हुवे। छै क नांही – है या नहीं।

२. पूछियौ – पूछा गया। नाथ – स्वामी। जद – जब तो। जिकण सूं – जिससे। प्रथी कांपी – पृथ्वी कंपित हुई, संसार भयभीत हुआ। सौंप – सुपुर्द कर। देव सा– ठाकुर देवीसिंह पोकरण, ठाकुर सवाईसिंह के पितामह। सबळ नूं – ठाकुर सबलसिंह को, सवाईसिंह के पिता। मनैं – मुझे। सांपी – सौंपी, दी।

मूझ री कमर में रहै वा सदामंद, निमख मेलू नहीं घणी नेहा।
पड़दली मांय गढ़ केई मावै परा, जोधपुर अनै जाळौर जेहा ॥३॥

सांच कहियां थकां स्याम रीसावस्यौ, कहे वा बात सांची कहायौ।
पड़दलो मांय जे न हुतो जोधपुर, आपरै कहौ किण रीत आयौ ॥४॥

कटारी जगत में प्रगट चांपौ कहै, नाथ वा पड़दली नहीं नांनी।
सवाई बात री भरौतो दीध सह, महीपत विजै सो सांच मांनी ॥५॥

८५ गीत ठाकुर हणूंतसिंघ सेखावत बिसाऊ रा धणी रौ

तोपां अवाज गाजतौ वजाड़तौ सूंड भाट तेगां,
भुरज्जां पाड़तौ भालां दांतूसळां भाव।
त्रकूट पहाड़ी माथै भाकिया छंछाळ तेम.
राड़िगारे हणूंत हांकिया गाढ़ेराव ॥१॥

---

८५. गीतसार—उपरोक्त गीत शेखावाटी के बिसाऊ संस्थान के अधिपति ठाकुर हनुमन्तसिंह शेखावत पर रचित है। गीतकार का कथन है कि हनुमन्तसिंह रूपी गजराज तोपों का नाद करता हुआ अपनी तलवार रूपी शुण्डदण्ड तथा भाला रूपी दन्तशल्यों से शत्रुओं के गढ़ों को ध्वस्त करता चलता है। इस प्रकार विंध्यवासी मस्त गजराज की भांति वह वीर हनुमन्तसिंह रूपी वाराहराज अपनी सेना सहित अरिदेशों को रौंदता विचरण करता हैं।

---

३. मूझ री – मेरी। सदामंद – सदा से। निमख – निमिष। मेलू नहीं – अलग नहीं रखता हूं। घणौ – अत्यधिक। नेहा – स्नेह। मांय – में, भीतर। केई – कतिपय। मावै परा – समाहित हो जाते हैं। अनै – अन्य, और, दूसरा। जेहा – जैसे।

४. सांच – सत्य। कहियां थकां – कहने से तो। स्याम – स्वामी, आप। रीसावस्यौ – रुष्ट हो जाओगे। कहेवा – कहने के लिए। जेन हुतौ – जो नहीं होता तो। आप रै – आपके। कहौ – कहिये। किण रीत – किस रीति से। आयौ – आया, अधिकार में आया।

५. चांपौ – चांपा का वंशज सवाईसिंह। नांनी – नान्ही, छोटी। भरौतो – साक्षी, पूर्त्ति। दीध सह – सब ने दी। महीपत – महाराजा। विजै – महाराजा विजयसिंह ने। सांच मांनी – सत्य मान कर स्वीकार की।

१. तोपां अवाज गाजतौ – तोपों का गर्जन रूपी घोष करता। वजाड़तौ – बजाता, प्रहार देता। सूंड भाट – अशुण्ड के प्रहार। तेगां – तलवारें। भुरज्जां – किलों को। पाड़तौ – ढहाता, ध्वस्त करता। दांतूसळां – दन्तशूलों से। त्रकूट पहाड़ी – विंध्यगिरि। छाकिया – छके हुए, प्रमत्त। छंछाळ – हाथी। तेम–ज्यों। राड़िगारे– युद्ध-प्रवृत्ति वाला। हांकिया – हांके, रवाना किये। गाढ़राव–महान् योद्धा, बड़ा राजा।

चमू भड़ां भेळिया जैपुरी बिंद वीर चाळे,
चोड़ै तीठ देहरी न भाळे बांध चाक ।
करी डांणां लागा ज्यूं बोळवा जाटा नीर काळे,
बेढ़ाक केहरी वाळे चलाया बैंडाक ॥२॥

रूकां झाट संपे तमासे आपताप रीधो,
ओण पीधो सात्रवां अरोह चंडी सींह ।
क्रोध रूपी मद्दाळां ज्यूं चोड़ैधाड़ै लीधो किलो,
दूसरे सादूळ हलो कीधो घोळे दीह ॥३॥

मैमन्ते हसती आट पाटां लगे सेखां मुदी,
छार मेळे कोट जाटां अवास छुडाय ।
खाग झाटां पोगरां तरां ज्यूं जड़ामूळ खोय,
आठ दोय बाटां दीधी चापड़ै उडाय ॥४॥

---

२. चमू – सेना । भड़ां – योद्धाओं । भेळिया – आक्रमण किया । जैपुरी बिंद – जयपुर की सेना का दुलहा । वीर चाळे – युद्ध, छेड़छाड़ । चोड़ै – खुले रूप में । तीठ – मोह, इच्छा, दया । भाळे – देखता । बांध चाक – निशाना साध कर, निशाना ताक कर । करी – हाथी । डांणां – मस्ती । बोळवा – डुबोने, नष्ट करने । नीर काळे – रुधिर में । बेढ़ाक – योद्धा । केहरी वाळे – केशरीसिंह का पुत्र हनुमन्तसिंह । बैंडाक – घोड़े, अश्व-सेना ।

३. रूक झाट – खड्ग-प्रहार । संपेख – देखकर । आपताप – सूर्य । रीधो – प्रसन्न हुआ । ओण – लोहू । सात्रवां – शत्रुओं का । अरोह – सवारी किए हुए, चढ़ी हुई । चंडी – रणदेवी, चण्डिका । सींह – शेर की । मद्दाळां – गजराज । चोड़ैधाड़ै – खुले मैदान में, प्रकट रूप में । लीधो किलो – किला जीत लिया । सादूळ – शार्दूल सह ने । हलो – हमल्ला । घोळे दीह – दिनदहाड़े ।

४. मैमन्ते हसती – मदमस्त हस्ति । आट पाटां – प्रबल प्रवाह । सेखां मुदी – शेखावतों का मुखिया । छार – खाक में, मिट्टी में । मेळे – मिलाकर । कोट – दुर्ग । अवास – आवास । खाग झाटां – तलवारों की मार से । पोगरां – हाथी की शुण्ड । तरां – तरुग्र ! पेड़ों । जड़ामूळ – जड़मूल सहित । खोय – नाश कर । आठ दोय – दस बाटां – मार्गों, दिशाओं । चापड़ै – युद्ध में, मैदान में ।

८६. गीत महाराव श्रीनाथसिंघ सेखावत मनोहरपुर साहपुरा रौ

दौळां वैंडाकां रावतां जूथ भाराथ अटक्कां दूठ,
भुजा-डंडां गैणाग उतोल पाथ भीम।
वाहरू धरत्ती नाथ तेजि साहे महावीर,
सारी श्रेक साथ लेण छोड़ेति सींम ॥१॥

तेवड़ै भाराथ भाण ऊगां झड़े आग तोड़ां,
घोड़ां भड़ां मेळिया अम्बाटां पड़ै घाव।
तेग झाटां लड़ेतौ जूझ सारां ऊघड़े ताय,
रसा यसा आरखां बाहुड़े गाढ़ेराव ॥२॥

---

८६. गीतसार—ऊपरलिखित गीत मनोहरपुर शाहपुरा के महाराव श्रीनाथसिंह शेखावत के युद्धाभियान का सूचक है। कवि कहता है कि महाराव श्रीनाथसिंह नित्य प्रभातकाल में अश्वारूढ़ योद्धाओं की सेना सजाकर अपने राज्य की रक्षार्थ प्रयाण करता है। ऐसे पराक्रमी शासक ही पराधिकृत भूमि पर पुनः अपना शासन स्थापित कर सकते हैं।

---

१. दौळां — चौतरफ। वैंडाकां — घोड़ों, गजों। रावतां जूथ — रावत पद वाले योद्धाओं का समाज। भाराथ — युद्ध। अटक्कां — प्रतिरोधक। दूठ — वीर। भुजा डंडां — भुजदण्डों। गैणाग — आकाश। उतोल — ऊपर उठाये हुए, तोलते हुए। पाथ भीम — अर्जुन और भीम जैसे शक्तिशाली। वाहरू — रक्षक, पराधिकृत भूमि एवं द्रव्य को वापस लाने वाले। तेजि साहे — तुम जैसे, ताजी जाति के घोड़े लिए हुए। सारी — समस्त। लेण — लेने के लिए।

२. तेवड़ै — आरम्भ करते हैं। भाण ऊगां — सूर्य उदय होते समय। झड़े — गिरे। आग तोड़ां — तोड़ादार बन्दूकों की अग्नि। मेळिया — सम्मिलित किए। अम्बाटां— ताम्बे के पेंदे के नगाड़ों की। घाव — जोर से बजने से होने वाली ध्वनि, घोर नाद। तेग झाटां — तलवारों के प्रबल प्रहार। लड़ेतौ — युद्ध करता, योद्धा। जूझ — युद्ध। ऊघड़े — खुले। ताय — ज्योंही, लिए, तुल्य। रसा — धरती। यसा — ऐसे, इस प्रकार के। आरखां — चिन्हों। वाहुड़े — लौटकर आवे, पुनः कब्जे में हुए। गाढ़ेराव — दृढ़ वीर, राजा।

आंबेर अमरसरा सदा भाई दांई आंट,
सारीसौ सवाई करै दिखाई असंभ ।
राजां दळां भांजतो अछूती फतै पाई राव,
खागां पांण मेदनी दबाई जैतखंभ ॥३॥
थारी धाक सांभळे आंबेर थई मूंग थाळी,
वाळी धरा अंसधारी पांणेची वीजैत ।
सेखा रायामाल ज्यूं मनोर वाळी सारी रीत,
नाथ बळाकारी सो ऊजाळी बांधनैत ॥४॥

८७. गीत ठाकर नौलसिंघ सेखावत नवलगढ़ रा धणी रौ

धरा सेस साहे नको पालटे आखिर विधाता, वहें गंग अपूठी तरंग बहो पूर ।
अड़ीसल नवल पाराथियाँ आज रौ, सुपातां नटै तो ऊग थटै सूर ॥१॥

---

८७. गीतसार—उपरांकित गीत नवलगढ़ के स्वामी ठाकुर नवलसिंह शेखावत की वदान्यता का परिचायक है। कवि ने गीत में कहा है यदि नवलसिंह याचनार्थ कवियों के आने पर उन्हें दान देना स्वीकार न करें तो शेषनाग को धरती का बोझ सहन करना, विधाता के अमिट भाग्यलेख, गंगा का हिमालय की तरफ प्रवाह और सूर्य का नियमित उदय होना आदि कार्य बन्द हो जांय ।

---

३. आंबेर – जयपुर राज्य की प्राचीन राजधानी, एक कस्बा । अमरसरा – शेखावतों की प्राचीन राजधानी, अमरसर नामक कस्बा जो महाराव शेखा ने अमरा नामक जाट के नाम पर आबाद कर अपने राज्य की राजधानी बनाया था । भाई दांई – बराबरी की जोड़ी के भाई । आंट – विरोध, वैर । सारीसौ – एक सदृश । असंभ – असंभव, कठिन । राजां दळां – राजावतों की सेना, जयपुर के शासकों की फौज । भांजतो – विनष्ट करता हुआ । अछूती – नवीन, अस्पर्शित । फतै – फतह, विजय । खांगां पांण – तलवार की शक्ति द्वारा, भुजा और कृपाण बल पर । मेदनी – भूमि । दबाई – अधिकृत की । जैतखंभ – विजयस्तम्भ ।

४. थारी – तेरी, तुम्हारी । धाक – रौबदाब, आतंक । सांभळे – सुनकर । थई – हुई । मूंग थाळी – थाली (स्थाली) पात्र में रखे हुए मूंग धान्य की भांति, कम्पायमान । वाळी धरा – पुनः लौटा लाया । अंसधारी – अशावतार । पांणेची – बलवान् । वीजैत – विजेता । सेखा – महाराव शेखा । रायामाल – रायमल, ये दोनों महाराव श्रीनाथसिंह के पूर्व पुरुष थे । मनोर – महाराव मनोहरसिंह, यह फारसी का विद्वान् और बादशाह अकबर तथा जहाँगीर का दरबारी सेनानायक और मन्सबदार था । बळाकारी – बलवान । ऊजाळी – उज्वल की, कीर्त्तिमान् की । बांधनैत – वीरता का प्रतीक चिन्ह धारण करने वाला ।

१. धरा सेस साहे नको – शेषनाग पृथ्वी को उठाये न रखे । पालटे – पलटे, मिटे, प्रभावहीन हो जावे । आखिर – अक्षर । अपूठी – विपरीत दिशा में । तरंग–लहर । बहो पूर – प्रबल वेग से, पूर्ण शक्ति सहित । अड़ीसल – अरिशल्य । पाराथियाँ – प्रार्थियों, याचकों । नटै – इन्कार करे । ऊग थटै–उदय होना बंद करे । सूर–सूर्य ।

वेद पलटे ब्रह्म कूड़ जुजिठळ बकै, जोग संकर जपे अजप्पा जाप ।
माग उतराध री धाव धखपंख मिटै, ईहगां हूंत नौलो नटे आप ॥२॥

सुधा विणि सोम झळ धोम विणि सजै, ढाहि विणि हाथळां मयंद ढूके ।
अधपती नवल सेखाधरा ऊजळो, चक्रवती मांगिया वचन चूके ॥३॥

सार आचार कुळ भार धरियां सुरिन्द, सुतण सादूळ जगि दीह साजै ।
रहोजी अेतला थोक काइम रिधू, रिधू नौला तणी वचन राजै ॥४॥

—नाथा सांदू री कह्यौ

---

२. ब्रह्म – विधाता, ब्रह्मा । कूड़ – असत्य । जुजिठळ – युधिष्ठिर । बकै – बोले । जोग संकर – योगिराज शिव । अजप्पा जाप – तांत्रिकों का एक मंत्र विशेष जिसका उच्चारण नहीं किया जा सकता । माग – पथ । उतराध – उत्तर दिशा । धाव – गमन-शक्ति, गति । धखपंख – गरुड़ पक्षी । ईहगां हूंत – चारण कवियों से । नौलो – नवलसिंह ।

३. सुधा – अमृत । बिणि – बिना । सोम – चन्द्रमा । झळ – अग्नि, आतप । धोम – धूम्र । ढाहि – गिराने । हाथळां – पञ्जों के । मयंद – सिंह । ढूके – पहुँचे । सेखाधरा – शेखावाटी प्रदेश । ऊजळो – उज्वल । चक्रवती – चक्रवर्ती, बड़ा राजा । मांगिया – याचना करने पर ।

४. सार – तलवार । आचार – आचरण, व्यवहार । कुळ भार – वंश की गौरव-रक्षा का दायित्व । धरियां – धारण किए । सुरिन्द – सुरेन्द्र, राजा । सुतण सादूळ– सार्दूलसिंह का पुत्र । दीह – दिवस । अेतला – इतने । थोक – वस्तुएँ, बातें । रिधू – अटल, स्थिर । राजै – शोभित हो ।

८८. गीत राजा रायसल सेखावत खण्डेला रौ

रीसाणो ज्यांह तणै सिरि रासौ, आउध ग्रहि सूजाउत आगाहि।
माणणि मदन न आवै महले, परमळि घसि नारी त्यां पांहि ॥१॥

किरमरि कर ग्रहियां कछवाहौ, विसरि करै ज्यांसूं बकवादि।
चंदण सुवपि चरचि चंदाणण, सेज न पावें पेम सवादि ॥२॥

सूजावत रै बहतै सुजड़ै, जाय मिळिया मचतै रिणि जंग।
श्रीखंड दाइ न आवै सुंदरि, रमिवा पुरिस पिलंग सूं रंग ॥३॥

---

८८. गीतसार—ऊपरलिखित गीत खण्डेला राज्य के शासक राजा रायसल शेखावत कछवाहा का है। इसमें कवि ने राजा रायसल का आतंक दिखाते हुए कहा है, राव सूर्यमल्ल के पुत्र राजा रायसल ने क्रोधित होकर जिन शत्रुओं पर शस्त्र संघात किया उनकी प्रियतमाएँ शृंगार कर फिर जीवन में अपने पतियों के साथ सुख-केलि करने की इच्छा से उनके पलंग पर नहीं आई।

---

१. रीसाणो – रुष्ट हुआ। ज्यांह – जिन। सिरि – पर, सिर पर। रासौ – राजा रायसल। आउध ग्रहि – शस्त्र धारण कर। सूजाउत – सूर्यमल्ल के पुत्र ने। आगाहि – सावधान कर। माणणि – भोग की कामना से, मानवती। मदन – कामदेव। महले – महलों में, स्त्रियाँ। परमळि घसि – सुगंधित पदार्थों का घर्षण कर, चंदन घस कर। त्यां पांहि – उनके पास।

२. किरमरि – तलवार। कर ग्रहियां – हाथ में उठाकर। कछवाहौ – कछवाहा नरेश रायसल। विसरि – विस्मृत होकर, नाराज होकर। बकवादि – बकवाद, व्यर्थ की चर्चा, युद्ध विवाद। सुवपि – सुन्दर शरीर पर। चरचि – चर्चित कर, लेपित कर। चदाणणि – चन्द्रमुखी, सुंदरी। सेज – शैय्या। पेम – प्रेम का। सवादि – स्वाद, रस।

३. सूजावत रै – राव सूर्यमल्ल के पुत्र के। बहतै – प्रहार करते। सुजड़ै – तलवार। मिळिया – मिले, जूझ पड़े। मचतै – होते, चलते। रिणि – रणभूमि में। जंग–युद्ध। श्रीखंड – चंदन। दाइ न आवै – पसन्द नहीं आता है, रुचिकर नहीं लगता है। रमिवा – रमण करने, क्रीड़ा करने। पुरिस – पुरुष की। पिलंग – शैय्या से। रंग – आनन्द भोग।

८६. गीत राजा रायसल सेखावत खण्डेला रा धणी रौ

रिणि भीड़ि मेल्हि गयौ खगि रासौ, घड़ा कंवारी वरिवा घाइ ।
सुजड़ै वीज सिळाव श्रवंतो, मुहमद मीर तणा दळ मांइ ॥१॥

साथी छाडि गयौ सूजा सुत, तिसियौ लोह तरणि रिणताल ।
दामणि चमकि झमकिते दुजड़ै, वणीयौ गूजर घड़ा विचाल ॥२॥

कूरम गौ परिगह मेल्हि कळहिवां, घडा कहर घूमती घांणि ।
ब्रहमंड उरा खीवंतौ बीजळ, अहमदवाद तणै आराणि ॥३॥

... ... ।
रायमल हरौ वडै प्रवि रवदां, जण जण भुजा ए जिसौ हूवौ ।४॥

—खेतसी गाडण रौ कह्यौ

---

८६. गीतसार—ऊपरलिखित गीत राजा रायसल शेखावत खण्डेला के शासक पर रचित है। इसमें रायसल के अहमदाबाद के रणक्षेत्र में अमीर मुहम्मद को परास्त कर विजय प्राप्त करने का वर्णन है। कवि का कहना है कि रायसल ने अपनी युद्धरत सेना में से आगे बढ़कर तलवारों की झड़ी के बीच मुहम्मद अमीर की सेना पर आक्रमण किया।

---

१. रिणि – रण में। भीड़ि – भिड़कर, साथी। मेल्हि गयो – छोड़कर गया। खगि – तलवार। रासौ – राजा रायसल। घड़ा कंवारी – बिना लड़ी सेना। वरिवा – वरण करने। घाई – प्रहार। सुजड़ै – तलवार। वीज – विद्युत। सिळाव – दीप्ति, चमक। श्रवंतो – बहते। दळ मांइ – सेना में।

२. छाडि – छोड़कर। सूजा सुत – राजा सूर्यमल्ल का पुत्र राजा रायसल। तिसियौ – प्यासा, इच्छुक। लोह – शस्त्र। तरणि – तैर कर पार जाने के लिए, नाव। रिणताळ – रणस्थल, रणस्थल रूपी तालाब को। दामणि – दामिनी, बिजली। दुजड़ै – तलवार। गूजर घड़ा – गूर्जर देश की सेना, गुजरात की फौज।

३. कूरम – कछवाहा रायसल। परिगह – सेना। कळहिवां – योद्धाओं, वैरियों। घड़ा – सेना। कहर – क्रोध, विपत्ती। घांणी – युद्ध। खीवंती – चमकती। बीजळ – बिजली, तलवार। आराणि – युद्ध।

४. प्रवि – पर्व। रवदां – मुसलमानों।

९०. गीत राव सिवसिंघ सेखावत सीकर रा धणी रौ

घाटां रूप में सरूप जिकै बाटां सूंबां सीध घालै,
थाटां घणां बीच सोभा बिरच्ची अथाह ।
दला रौ दुबाह जोध नरां नाह सेवौ दाखां,
पाकेटां पमंगां चंगां मांडियौ प्रवाह ॥१॥

जरीतारां जरीबाफां नीलंकां जड़ाव जांमां,
दांमां पार पावै नकौ देतां चित्त दत्ति ।
कहां खोटी बार बिचै मोटी रीभां सेवौ करै,
सासणां सोव्रन्ना कड़ा समापै हसत्ति ॥२॥

---

९०. गीतसार—उपरांकित गीत सीकर राज्य के स्वामी राव शिवसिंह शेखावत की दान-वीरता की प्रशंसा का द्योतक है। कवि ने शिवसिंह की ओर से चारण कवियों को घोड़े, ऊँट, ग्राम और वस्त्राभूषण दिए जाने का वर्णन किया है। कवि ने विश्वविख्यात दानी राजा कर्ण, भोज, विक्रमादित्य, गहाणी जलाल और लाखा फूलांणी के समतुल्य शिवसिंह को वर्णित किया है।

---

१. घाटां – आकृति, शरीर, विकट मार्ग। बाटां – मार्ग। सूंबां – कृपणों को। सीध घालै – सीधे चलाता है। थाटां घणां – घने समूह में। बिरच्ची – रचना की। अथाह – अपार। दला रौ – दलेलसिंह का। दुबाह जोध – दोनों हाथों से शस्त्र प्रहार करने वाला योद्धा। नरां नाह – नृपति। सेवौ – शिवसिंह। दाखां – बखान करें। पाकेटां – ऊँटों। पमंगां – घोड़ों। चंगां – अच्छे। मांडियौ – मंडित किया। प्रवाह – झड़ी, बौछार।

२. जरीबाफां – कलाबतून। जड़ाव – जटित। जामां – पुरुषों के पहिनने के वस्त्र विशेष। दांमां – रुपयों का, धन का। नकौ – कोई नहीं। दत्ति – दान। खोटी बार – विपत्ति काल। रीझां – दान। सासणां – चारणों को उदक के ग्राम। सोव्रन्ना – स्वर्ण के। कड़ां – हाथ में पहिनने के कड़े। समापै – समर्पित करते हैं, देते हैं। हसत्ति – हाथी।

कवेसरां मुखे बाणी कहांणी रहांणी कीत,
सहेनांणी जेणी सांची वाखाणीजे संवार ।
क्रन्न वीक भोज हुवा गाहाणी जलाल काल्हे,
फूलांणी सरीखौ फाबै दलांणी दातार ॥३॥

मारूधरा भाटी सोढ़ा मेवाड़ां ढूंढ़ाडां मांही,
बूंदी कोटे मोटे थान सारेही वखांण ।
चहूंवाणां हालां झालां खीचियां बुन्देला चावौ,
ऊजळो सिवा सूं आज सारो हिंदवांण ॥४॥

सेखां सूजां राइसालां कुंतिला चढ़ावै सोह,
जोणसींहा सीधणां मळेसी बाला जांणि ।
कील्हणां बीजळां भलां मोकळां सकाज,
अेतला उजाळै सिवौ वोपियो आथांणि ॥५॥

—नाथा बारहठ रो कह्यौ

---

३. कवेसरां – कविराजाओं । कहांणी – कही गई । रहांणी – रहती है । कीत – कीर्त्ति । सहेनांणी – निशानी । जेणि – जिनकी । संवार – प्रातःकाल में । क्रन्न – कर्ण । गाहाणी जलाल – जलाल गाहाणी, एक दानी का नाम है । काल्हे– कल दिन । फूलांणी – फूल का पुत्र लाखा जो एक प्रसिद्ध दानी हो चुका है । सरीखौ – सदृश । फाबै – फबता है, शोभा पाता है । दलांणी – दलेलसिंह का पुत्र राव शिवसिंह ।

४. मारूधरा – मारवाड़ देश । भाटी – जैसलमेर के शासक । सोढ़ा – सिंध में के ऊमरकोट के शासक । मेवाड़ां – उदयपुर के सीसोदिया । ढूंढ़ाड़ां – जयपुर के कछवाहा शासक । बूंदी कोटे – हाडा चौहानों के बूंदी और कोटा राज्यों वाले । मोटे थान – बड़े राज्य, बड़े घराने, बड़े स्थान । चावौ – प्रसिद्ध । ऊजळो – उज्ज्वल, कीर्त्तिमान । सारो – समस्त ।

५. सेखां – महाराव शेखा के वंशजों । सूजां – राव सूर्यमल्ल की संतति वालों । राइसालां – रायसलोत शाखा वालों । कुंतिला – राजा कुंतिल की सन्तान वाले । जोणसींहा········मोकळा – इस द्वाले में आमेर के कछवाहे शासक जूनसिंह, उद्धरण, मलयसिंह, बाला, किल्हणदेव, बीजलदेव और मोकलसिंह की संतानों की ओर संकेत किया गया है । अेतला – इतने । उजाळै – उज्ज्वल करे । वोपियो – सुशोभित हुआ । आथांणि – आर्यस्थान में, जगह, दुर्ग ।

९१. गीत राव देवीसिंघ सेखावत सीकर रा धणी रो

हुवै गाज गजराज धजराज ठड़हड़ हुवै, भिड़े कर साज भड़ जिकै भागे।
विकट अरिराज अहिराज री बरोबरि, उड़ै पंख राजखग डकर आगे ॥१॥

सूरमां थाट संग पतंग तप देवसिंघ, गुमर अंग करै जंग घणां गांजे।
दोखियां भुजंग सम दुरंग ढाहे दुरत, जोस नृप विहंग अस निहंग भांजे ॥२॥

भुजां खत्रीवट प्रगट चंद सुत झळहळै, तुराटां चढ़ै गढ़ बिकट तोड़े।
सतर घट सरप सम हुवै चळचळ सकळ, जनेवां गुरड़ री झपट जोड़े ॥३॥

सींह जिम अडर डर अनमि सिवसाह हर, रिमां विखधर जिहि समर गाहे।
तेज खग-ईस री टकर लागी तिकां, रहे नह वार घर विवर मांहे ॥४॥

९१, गीतसार–उपरोक्त गीत शेखावाटी क्षेत्र के सीकर राज्य के स्वामी राव देवीसिंह पर रचित है। इसमें कवि ने गीतनायक को गरुड़ और शत्रुपक्षीय सेनानायक को सर्प कह कर वर्णन किया है। कवि कहता है कि शेषनाग तुल्य प्रचण्ड शत्रु राजाओं की गजाश्व सेनाओं को गरुड़ तुल्य देवीसिंह अपनी तलवार के आघातों से नष्ट कर देता है।

---

१. गाज – गर्जन। धजराज – अश्वराज। ठड़हड़ – घोड़े की नासिकी ध्वनि विशेष। भिड़े – मुकाबिले चढ़े। साज – सजकर। जिकै – वे, जो। भागे – भाग गए। अरिराज – शत्रुराजा। अहिराज री – शेषनाग की। उड़ै – उड़ गए, नष्ट हो गए। पंख – पक्षों, पंखों को। खगराज – गरुड़। डकर – जोशीली आवाज। आगे–सामने।

२. सूरमां थाट – वीरों का समूह। पतंग – सूर्य के। गुमर – गर्व। जंग – युद्ध। घणां – अधिक। गांजे – नाश किया। दोखियां – वैरियों। भुजंग सम – सर्प तुल्य। दुरंग – दुर्ग। ढाहे – गिराता है। दुरत – दुर्दमनीय, दुरंत। जोस – जोश, उत्साह। नृप विहंग – पक्षीराज गरुड़। अस – ऐसे। निहंग – निशंक. आकाश। भांजे – विनष्ट करे।

३. खत्रीवट – क्षत्रिय पथ। चंद सुत – राव चांदसिंह-तनय। झळहळै – चमकता है, शोभित होता है। तुराटां चढ़ै – घोड़ों की सवारी कर। तोड़े – नष्ट करता है। सतर – शत्रु। घट – सेना, शरीर। सरप – सर्प। चळचळ – चंचल, विचलित, जनेवां – तलवारों से।

४. सींह जिम – सिंह की तरह। अडर डर – निडर हृदय, अभीत। अनमि – अनम्र, न झुकने वाला। सिवसाह हर – राव शिवसिंह का पौत्र देवीसिंह। रिमां विखधर– शत्रु रूपी विषधर। जिही – ज्योंही। समर – युद्ध में। गाहे – रौंदता है। खग-ईस री – गरुड़ की। टकर – आघात, टक्कर। तिकां – जिनके। रहे नह– जीवित न रह सके। वार घर – पाताल लोक, बाहर पृथ्वी पर। विवर – बिल।

६२. गीत राजा सिवा सीसोदिया दिखणी रौ

हणमत सिवौ बरौवरि हूआ, पौरिस बळ दाखवै प्रमांण।
अेक गयौ गढ़ लंक उचीडे, दिली अेक गमणै डांण ॥१॥

दाणवां तणा फाटिगा डाचा, वाचा नह ऊपड़ै विचार।
अणभंग सिवौ खाग ऊपाड़ै, हालियौ लंक लगावण हार ॥२॥

रावण साह तणा दळ रोळै, जोध हिलोळै जुवाजूओ।
हालियौ सिवौ झांपा भरि हणमत, हेक डंगाल वंगाळ हूओ ॥३॥

ठौड़ ठौड़ गजवंध ठेलतौ, बळवंत गौ काम रै वरै।
ओ सिवराज हणूं जिम ऊभौ, कोटां सिर आग्राज करै ॥४॥

—जोगीदास चारण री कह्यौ

---

६२. गीतसार—उपरांकित गीत राजा छत्रपति शिवा सीसोदिया (मरहठा) पर रचित है। गीतकार ने इसमें शिवा सीसोदिया की दिल्ली कारावास से बच निकलने की घटना को हनुमान के लंका में रावण द्वारा वंदी बनाए जाने पर मुक्त हो जाने के साथ तुलना करते हुए वर्णन किया है। कवि कहता है कि बल और पौरुष में हनुमान और शिवा एक सरीखे हुए हैं। वह लंका के गढ़ को भस्म करने को गया था और यह दिल्ली की शाही सल्तनत को नष्ट करने के लिए गया।

---

१. हणमत – हनुमान। सिवौ – राजा शिवा। वरौवरि – बराबर, एक समान। पौरिस – पौरुष। बळ – बल, शक्ति। दाखवै – कहा जाना चाहिए। उचीडे – उछल कर, छलांग मारकर। दिली – दिल्ली। गमणै – गमन किया, गया। डांण – कदम बढ़ाकर।

२. दाणवां तणा – दानवों का। फाटिगा – फट गए, विस्मय या भय से खुल जाने का भाव। डाचा – मुँह। वाचा – वचन। नह – नहीं। ऊपड़ै – उठे, निकले। अणभंग – जबर्दस्त वीर। खाग – खड्ग। ऊपाड़ै – उठाकर, नाश करता है। हालियौ – चला गया। लंक लगावण हार – लंका को जलाने वाला, राजस्थानी में 'लगाना' जलाने के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

३. रावण साह तणा – रावण रूपी बादशाह का। दळ – सेना। रोळै – नाश कर। जोध – योद्धा। हिलोळै – दोलित कर। जुवाजूओ – अलग अलग। झांपा भरि – छलांग लेकर, कूदता हुआ। डंगाळ – कदम, डग। वंगाळ – वंगाल, मुसलमान।

४. ठौड़ ठौड़ – स्थान स्थान पर। गजवंध – बड़े योद्धा, वे योद्धा जिनकी सवारी एवं सेना में गज रहते थे। ठेलतौ – पीछे हटाता, धकेलता। काम रै वरै – श्रेष्ठ कार्य के लिए। ऊभौ – खड़ा। कोटां सिर – दुर्गों पर। आग्राज करै – गर्जता है।

६३. गीत राणा कुसालसिंघ स्यामसिंघोत रौ

द्रढ़ जिण रै नींव दान पुन दीधी, चेजारा कवि वचन चुणै ।
कीरत कोट कुसाला कीधो, प्रिथमी ऊपर अमर पुणै ।।१।।

भारी छजे गीतड़ां भुरजां, बिहद कवित कांगुरां बणै ।
ताकव कंठ गिरा बज तोपां, तैं रिप सूंमां सीस तणै ।।२।।

स्याम सुतन अभिनवां सवाई, दिन दिन पढ़ियौ हेक ददै ।
गुण सामान मिळै गढ़वां सूं, किलो भिळै नह हलां कदै ।।३।।

तैं दत दे'र कियौ आतीको, करां लेर कुण फेर करै ।
राणा मेर जेम वण रहियौ, सोभा रौ आसेर सिरै ।।४।।

---

६३. गीतसार—उपर्युक्त गीत राणा खुशालसिंह पर कथित है । कवि ने इसमें दान-पुण्य की नींव, गीतों की बुर्जें, कवित्तों के कंगुरे और कवियों के मुख से उच्चरित यश-काव्य को तोपों की ध्वनि बतला कर सांग रूपक का सर्जन किया है । इस प्रकार यश-प्रासाद का निर्माण कर गीतनायक की वदान्यता की श्लाघा की गई है ।

---

१. द्रढ — दृढ़, मजबूत । जिण रै — जिनके । दान पुन — दान और पुन्य की । दीधी—दी । चेजारा — चुनाई का कार्य करने वाला । कवि वचन — कवि वाणी । चुणै—चुनने, चुनते हैं । कीरत कोट — कीर्त्ति का किला । कीधो — किया । प्रिथमी — पृथ्वी । पुणै — कहते हैं, कहना ।

२. भारी — विशाल, अत्यन्त सुन्दर । छजे — छाजे, छज्जे । गीतड़ां — गीतों के । भुरजां — बुर्जे । बिहद — वेहद, असीम । कांगुरां — कंगुरों । ताकव कंठ — कवि-कण्ठों से । गिरा — वाणी । बज — ध्वनित होकर । रिप — वैरी । सूमां — कृपणों ।

३. अभिनवां — अभिनव । हेक — एक । ददै — दान देना । गढ़वां सूं — कवियों से । भिळै — शत्रुओं के अधिकार में जाने का भाव । नह — नहीं । हलां — हमलों से । कदै — कभी भी, कब ।

४. दत — दान, द्रव्य । दे'र — देकर । करां — हाथ में । लेर — लेकर । कुण — कौन । फेर — फिर, पुनः । मेर — पर्वत । जेम — ज्यों । सोभा रौ — कीर्त्ति का । आसेर — किला । सिरै — श्रेष्ठ ।

६४. गीत राव बखतसिंघ चुवांण बेदला रौ

आवा लोमंच दधीच दावा उपावा बिरंच श्रेम,
संभूनाथ सुभावां सहावां जेम सेस।
जंग जीत वाधावां दनेस तेज तावां जेम,
वेदां सांमवेद गावां रावां बखतेस ॥१॥

छाजां मेर शृंग रूप बाजां सपतास छतो,
पाजां सेतबंध वाजां दुंदभी प्रमांण।
साजां सूर राजां जेण सकाजां आजरां सिंघ,
आजां ओप चाढ़ रूपराजां चहुवांण ॥२॥

वळां भीम फळां अंब हळां छळां हरी बंध,
कळां बीज चंद हणू वूडळाघ काम।
द्वारामती थळां गजां सांमळां ऊजळा दंत,
जळां गंग दळां राण सुरत्ताण जाम ॥३॥

---

६४. गीतसार–ऊपरिलिखित गीत बेदला ठिकाने के स्वामी राव बख्तसिंह चहुवान पर कथित है। गीत-लेखक ने इस गीत में लिखा है कि आयु में ऋषि लोमश, दान में ऋषि दधीचि, सर्जन में ब्रह्मा; योगियों में शिव, बोझ सहन करने में शेषनाग, तेजस्वियों में सूर्य और वेदों में सामवेद विशिष्ट है, ज्योंही युद्ध-विजयाभिलाषी राव पदधारी वीरों में बख्तसिंह सर्वोपरि है।

---

१. आवा – आयु में। लोमंच – ऋषि लोमश। दधीच – ऋषि दधीचि। दावा – दान देने का दावा करने वालों में। सेस – शेषनाग। जंग जीतवा – युद्ध जीतने के लिए। धावा – आक्रमण। दनेस – दिनेश, सूर्य। तेज तावां – तेज और आतप में। वेदां – वेदों में। गावां – कहलाता है। रावां – राव उपटंक वालों में।

२. छाजां – छतों, काया जीवों के समूहों में। मेर शृंग – सुमेरुगिरि शिखर। बाजां– अश्वों में। सपतास – सप्ताश्व। छतो – होते हुए। पाजां – पाज, मर्यादा। सेतबंध – सेतुबंध, समुद्र। बाजां – वाद्यों में। दुंदभी – दुंदुभि। साजां – सजावट, सज्जा। सकाजां – कार्य हेतु। आजां – युद्ध, आज के समय में। ओप– उपमा., प्रभा।

३. वळां – बल में। फळां – फलों में। अंब – आम्र, आम। हळां छळां – लहरों में। हरीबंध – सेतुबंध सागर। बीज – द्वितीया। हणू – हनुमान। वुडळाघ – छलांग भरकर पार जाने वालों में। थळां – स्थलों में। समगळां – श्यामल, भद्र जाति का। ऊजळा दंत – उज्ज्वल दंत, ऐरावत हाथी। जळा गंग – जल में गंगाजल। दळां – सेनाओं में। सुरतांण जांम – सुल्तानसिंह का पुत्र।

रिख राज ब्रह्म संभ सेस मोद भाण रेह,
मेर तुरी बंध यंद दुंदव मंयक्क।
पंड नूत रामचंद कप्प थळी जूह पाणे,
तेईसां दीरघ साख चोईसा तिलक्क ॥४॥

८७. गीत ठाकर रतनसिंघ सेखावत कणवाई रा धणी रौ

रावां सांभळे सुरताणां राणां, सुजस हुवौ जग सारै।
कवि पातां मौजां दे कूरम, रतनो नांव ऊबारै ॥१॥

फता तणौ आभूखण फौजां, चौजां राखण चावौ।
लाख दियण दीठौ लाडाणी, दुनी तणै सिर दावौ ॥२॥

---

८५. गीतसार–उपर्युक्त गीत ठाकुर रत्नसिंह शेखावत कणवाई ठिकाने के स्वामी का है। गीतकार उसकी वदान्यता और वीरता का वर्णन करता हुआ कहता है कि राव सुल्तान और राणा पदधारी जिस किसी ने कवियों और याचकों को रत्नसिंह द्वारा दिए गए दान की वार्त्ता सुनी उसने उसकी सराहना की। इस प्रकार अपनी उदारता को प्रकट करता हुआ। रत्नसिंह संसार में अपने नाम को प्रसिद्ध करता है।

---

४. रिख – लोमश ऋषि। राज – राजा इन्द्र। संभ – शंभु, शिव। सेस–शेषनाग। मोद – आमोद, सहजता से प्रसन्न होने वाला। भाण – सूर्य। रेह – रहस्य(?)। मेर – सुमेरु गिरि। तुरी – सूर्य के रथ का घोड़ा। बध – सेतुबंध रामेश्वरम्। दुंदव – दुंदुभि। मंयक्क – चन्द्र। पंड – भीम। कप्प – कपि, हनुमान। थळी – द्वारिकाजी। जूह पाणे – बलव न सेना। दीरघ – बड़ी। साख–चौहान क्षत्रियों की शाखाओं में। तिलक्क – तिलक, सिरमौर, श्रेष्ठ।

१. रावां – रावत पदधारी। सांभळे – सुना, सुनते हैं। सुरताणां – सुल्तानों। सुजस – सुयश। जग सारै – समस्त संसार में। कवि पातां – कवि पात्रों, कवियों और याचकों। मौजां – आनन्द में, रीझ कर। कूरम – कूर्म, कछवाहा वंशोत्पन्न। नांव ऊबारै – अपने नाम को अमर करता है।

२. फता तणौ – फतहसिंह तनय। आभूखण फौजां – सेनाओं का भूषण, सेनाओं में श्रेष्ठ वीर। चौजां – मौज, चतुराई। चावौ – प्रसिद्ध, चाह, इच्छुक। दियण – देने वाला। दीठौ – दृष्टिगोचर हुआ। दुनी तणै – संसार के। दावौ – दावा, हक, उज्रदारी।

घोड़ां भड़ां कियां घासांहर, बैर राख खग बाढ़ै।
अजबाहरी कीरत आपांणी, चंचळ ऊंटां चाढ़ै ॥३॥

इळ असमांन चंद रवि अेतै, कमधां जीतै सुजस कह्यौ।
मालम साह राह दोइ मालम, रतनौ सालम रहियौ ॥४॥

—दीपचंद सांदू रौ कह्यौ

६६. गीत कंवर हणूतसिंघ सेखावत खण्डेला रौ

पड़तां घर वेध दुरंग पालटतां, लोहां बोहौ समर चढ़ लीध।
काळे मरण न कीधौ काळो, काळे मरण ऊजळो कीध ॥१॥

नर आकाय पवन सुत-नांमी, साहि अजड़ मन सैंठो।
साम्हौं आय लोह भड़ सहियौ, पड़दा मांहि न पैठो ॥२॥

---

६६. गीतसार—उपरांकित गीत खण्डेला के राजकुमार हनुमन्तसिंह की रण-वीरता से संबद्ध है। गीतनायक ने कोट के किले को दुश्मनों द्वारा घेरने पर जिस शौर्य्य का प्रदर्शन किया, वह गीत में वर्णन किया गया है। कवि कहता है कि किले पर आक्रमण होने और अपना राज्य छीने जाने के अवसर पर वीर हनुमन्तसिंह ने विशाल सेना का सामना किया। उस दुर्धर्ष वीर ने रण में मृत्यु प्राप्त की, किन्तु अपने कुल की उज्ज्वल कीर्त्ति पर कायरतापूर्ण अपकीर्त्ति का कालुष्य नहीं लगने दिया।

---

३. भड़ां – योद्धाओं। घासांहर – सेना। खग बाढ़ै – खड्ग शक्ति से मारता काटता है। अजबाहरी – अजबसिंह का पौत्र। आपांणी – अपनी। चंचळ – घोड़े।

४. इळ – पृथ्वी। रवि – रवि, सूर्य। कमधां – राठौड़ों को। जीतै – विजय करने पर। राह दोइ – दोनों धर्म पथ वालों को, हिन्दू और मुसलमानों को। सालम – सलामत।

१. वेध – विग्रह, युद्ध। दुरंग – दुर्ग, किला। पालटतां – पलटते, अन्य के अधिकार में जाते। लोहां – शस्त्रों। बोहौ – प्रहार, अत्यधिक। समर चढ़ – युद्ध में प्रवेश कर। काळे – वीर। न कीधौ – नहीं किया। काळो – कलुष्यतापूर्ण, कलंकित। मरण – मृत्यु। ऊजळो – उज्ज्वल।

२. आकाय – बल, साहस। पवन सुत नांमी – पवन पुत्र नाम्ना, हनुमन्त। साहि – उठाकर, ग्रहण कर। अजड़ – तलवार। सैंठो – दृढ़, बलवान। साम्हौं – सम्मुख। आय – आकर। लोह भड़ – शस्त्रों के प्रहारों की बौछारें। सहियौ – सहन की। पड़दा – पर्दा, ओट, किले आदि की शरण में। पैठो – पैठा, प्रविष्ट हुआ, छिप कर बैठा।

सुत इन्द्रेस सरम चौ सागर, महि कज धरम बिचार मूवौ।
कोट तणै आडो भड़ कूरम, हणवंत आडो कोट हूवौ। ३॥

छकियो लोह रसम रिव छूटो, तूटो दुरंग पहल तन तोड़।
जाहर कर अछरां गंठ जोड़ो, खोड़ो गयौ न लागी खोड़॥४॥

६७. गीत सेरसिंघ कुसलसिंघ राठौड़ां रौ भेलौ

धणी दाहणी सिरा रौ सिरै बामे धणी, राड़ि हरवल अणी मिळे चाढ़ि रीस।
सांगि कुसळा तणी कळेजै सेर रै, सेर रौ खाग कुसळा तणी सीस॥१॥

जुवाळ जुवाळामुखी छूट लोयण जटी, ऊपटी बीज बेहुं ओड़ आथे।
हिये बरछी थटी बेग गोपाळहर, मधाहर आछटी तेग माथे॥२॥

---

६७. गीतसार–उपर्युक्त गीत ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया रियां और ठाकुर कुशलसिंह चांपावत आहुवा के आपसी युद्ध से सम्बन्धित है। यह युद्ध मेड़ता के रणक्षेत्र में हुआ था। गीत में लिखा है कि एक पक्ष में दाहिनी बैठक का प्रमुख और दूसरी ओर वाम भाग की बैठक का प्रमुख दोनों वीर क्रोध धारण कर युद्ध मे हरावल की पंक्ति में आ जुटे। और कुशलसिंह का बर्छी शेरसिंह के कलेजे को विदीर्ण करती तथा शेरसिंह की तलवार कुशलसिंह का शिरोच्छेदन करती प्रकट हुई।

---

३. इन्द्रेस – इन्द्रसिंह का। सरम चौ – लज्जा को। महि कज – पृथ्वी के लिए, अपने राज्य के लिए। धरम – धर्म। मूवौ – मरा, वीरगति को प्राप्त हुआ। कोट – खण्डेला राज्य का कोट नामक दुर्ग जो सकराय और लोहार्गल की पर्वतमालाओं पर स्थित है। आडो – सामने। आडो कोट हूवौ – सामने दुर्ग-सा बन गया।

४. छकियो लोह – शस्त्रों के प्रहारों के घावों से पूर्ण। रसम रिव – रवि-रश्मि। तूटो–खण्डित हुआ। तन – शरीर। जाहर – जाहिर, प्रकट। अछरां – अप्सराओं। गंठ जोड़ो – ग्रंथि-बंधन। खोड़ो – लंगड़ा, हनुमन्तसिंह। खोड़ – कलंक।

१. धणी – स्वामी, प्रमुख। दाहणी सिरा रौ – दाहिनी ओर की बैठक का। सिरै बामे – बांयी बैठक का प्रमुख। राड़ि – लड़ाई। हरवळ अणी – सेना की हरावल पंक्ति। मिळे – भिड़े। रीस – रोषान्वित। सांगि – बर्छा, शृंग नामक शस्त्र। कुसळा तणी – कुशलसिंह की। सेर रै – शेरसिंह के। खाग – खड्ग।

२. जुवाळ – अग्नि। जुवाळामुखी – ज्वालामुखी, तोप। लोयण जटी – शिव-लोचन। ऊपटी – उमड़ी, उछली, चली। बीज – विद्युत, तलवार। बेहुं ओड़ – दोनों ओर एक साथ। हिये – हृदय, कलेजे। बरछी – बर्छी। गोपाळहर – गोपालदास का पौत्र कुशलसिंह। मधाहर – माधोदास के पौत्र शेरसिंह। आछटी – प्रहार की, चली। तेग – कृपाण। माथे – सिर पर।

जुडळ बत्तीस छत्रधार रामा जुडळि, खार खद दुमंगळां घोर खेती ।
उरि हुवौ दुसारण पार नीझर ग्रणी, सिरि हुवौ बिहारण धार सेती ।।३।।

चढ़ै बर ग्रछर नग जड़त रथ चमीरां, ग्रवसता ग्रमीरां ग्रछक ग्रपार ।
ग्रै गया सरगि प्याला लियण ग्रमी रा, गुरधरा जमी रा थंभ मारू ।।४।।

९८. गीत कुसळसिंघ चांपावत ग्राहुवा रा धणी रौ

गजां प्राहार हाथळां सिंह छूटौ कुसळ स गाज, कायरां पराजे धील मांहरै फळा ।
ग्रमांमो जोधार खेत उछाह रै सामि ग्रायौ, सूर रांमसिंघ सांमो राहु रै सरूप ।।१।।

---

९८. गीतसार-उपर्युक्त गीत मारवाड़ के आहुवा ठिकाने के ठाकुर कुसलसिंह चांपावत पर रचित है। कुसलसिंह ने जोधपुर और नागौर के पारम्परिक युद्ध में नागौर के पक्ष में भाग लिया था। और मेड़ता के रणक्षेत्र में ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया को मार कर जीत रहा था। गीत में कहा है कि गज-समूह पर जिस प्रकार पञ्जा उठा कर दहाड़ता हुआ सिंह झपटता है त्यों वह कुसलसिंह विपक्षी सेना को ललकारता हुआ आगे बढ़ा। उस समय वह इस प्रकार बढ़ा ज्यों सूर्य को ग्रसने के लिए राहु बढ़ा हो।

---

३. जुडळ – युद्ध, लिए। छत्रधार – राजा। रामा – रामसिंह महाराजा जोधपुर। खार खद – कुपित होकर। दुमंगळां – युद्धों। दुसारण – छिपारा, बर्छा, भाला। पार – उस ओर। नीझर – निर्झर। ग्रणी – नोक। सिरि – सिर। बिहारण – टुकड़े, चीरकर। धार सेती – तलवार की धार से।

४. ग्रछर – अप्सरा के। नग जड़त – रत्नजटित। चमीरां – स्वर्ण के। ग्रवसता – अवस्था। ग्रछक – प्रमत्त। सरगि – स्वर्गधाम। ग्रमी रा – अमृत के। जमी रा – भूमि के। थंभ – स्तंभ। मारू – राठोड़।

१. गजां – हाथियों पर। प्राहार – प्रहार करने। हाथळां – पञ्जों के बल से, पञ्जा उठाकर। छूटौ – झपटा। गाज – दहाड़ कर। पराजे – पराजित करने, दूर से। मांहरै – भांति, उसी प्रकार। ग्रमांमो – अपार बली, अप्रमाण। जोधार – योद्धा, वीर। खेत – रणक्षेत्र। उछाह रै – उत्साह के। सूर रांमसिंघ – सूर्य रूपी महाराजा रामसिंह के। सांमो – सामने। राह रै सरूप – राहु की आकृति धारण किए।

छपा कुहो आभ दीहो अंधकार गैण छायो, जूटतां अघायो जे हरोळां सेन जार।
धरा भाण अभैसिंघ जायो देखि चांपा धणी, धुनि राह दैत जेम धायो तेज धार ॥२॥

राति झाळ चखां चोळ काळी सल्है काळ रूप, रुद्र वीरभद्र काळी करंतो आरोध।
दोड़ियो सांमहो देखे काथा सूं हरामी दूठ, जांणे बिनां माथा सूं बरूचवाळो जोध॥३॥

गजां नेजां तुति तेण तोप सूं अयास गाज, जनेवां सरीत वाज बीती घोर जांम।
हरावाळै राह भाण रामसिंघ ग्रह्यो हूंतो, सेरसिंघ माथा साटै उग्राह्यो संग्राम ॥४॥

—करणीदान कविया रो कह्यो

९९. गीत हीरा मांगलिया रौ जुध रौ

झलि आई फौज साबळां झळहळ, द्रोमझि लूंबिया जंगळ दळ।
हळवळ कळळ चहूंबळ हळवळ, मांगळिया माथै मंडळ ॥१॥

---

९९. गीतसार—उपरोक्त गीत क्षत्रियों की मांगलिया शाखा के योद्धा हरिसिंह की युद्ध-वीरता पर कथित है। हरिसिंह को शत्रुओं ने जंगल में एकाकी पाकर आक्रमण कर दिया। किन्तु वह वीर हतोत्साही नहीं हुआ और उनको मारता हुआ स्वर्गलोक में गया।

---

२. छपा – रात्रि। कुहो – अमावस्या। आभ – बादल। दीहो – दिवस। गैण– आकाश। जूटतां – भिड़ते हुए। अघायो – अतृप्त, पूर्ण। हरोळां – सेना की अग्रिम पंक्ति। जार – पचाने, हजम करने। भाण – सूर्य। अभैसिंघ जायो – महाराजा अभयसिंह का पुत्र, महाराजा रामसिंह। चांपा धणी – चांपावत शाखा के राठौड़ों का स्वामी कुशलसिंह। राह दैत जेम – राहु दैत्य की तरह। धायो–चला, दौड़ा।

राति – लाल। झाळ – क्रोध में। चखां – नेत्र। सल्है – सिलह, कवचादि। काळ रूप – काल स्वरूपी। काळी – कालिका, पार्वती। आरोध – उपासना करता, शस्त्र लिए, रोकता हुआ। काथा सूं – शीघ्रता से। दूठ – दुष्ट, वीर। जांणै – मानो। बिना माथा सूं – बिना सिर के। बरूच वाळो जोध – बिराचपुत्र राहु।

४. नेजां – ध्वजाएँ, भाले। तुति – तूर्य। अयास – आसमान। जनेवां – तलवारों से। हरावाळै – हरिसिंह के पुत्र ने, कुशलसिंह ने। ग्रह्यो हूंतो – ग्रस लिया होता, पकड़ लिया होता। माथा साटै – सिर के बदले में। उग्राह्यो – उद्धार किया, मुक्त किया।

१. साबळां – भाले। झळहळ – चमकते दमकते। द्रोमझि – युद्ध में। लूंबिया – चारों ओर से घेर कर लड़ने लगे। हळवळ – हलचल। कळळ – युद्ध का कोलाहल। चहूंबळ – चारों ओर से। मांगळिया माथै – मांगलिया शाखा के योद्धा हीरसिंह पर।

खग झट बिकट वुडव खरड़क, डहकत डारण वीर डहडक।
गति घण गैहक छायीयैं गयणक, हीरा ऊपरि वीरहक ॥२॥

घमछट पछट खेलतौ घारां, वेढ़ण प्रगट चौ आदि बट।
पालट वुलट करंतौ पिसणां, आणंद का सिर आरहट ॥३॥

सिर उर उतरे फूलधारां सिर, अरवरि वरवरि घणां अरि।
सरि मरि मारै घणां मांगळियै, वैंकुंठ पौंहतौ अछर वरि ॥४॥

१००. गीत राजा फतैसिंघ खीचो रौ दिखण रा जुध रौ

दिखणी घणथाट लूंबिया दौळां, मह गज बौळां आप मतै।
गढ़ नरसिंघ तणा तर गिरवर, फेर किया झकबौळ फतै ॥१॥

---

१००. गीतसार—उपरोक्त गीत नरसिंहगढ़ राज्य के शासक राजा फतहसिंह खीची के युद्ध से सम्बंधित है। गीत नायक ने दक्षिण प्रान्त के मरहठा शासकों की सेना के साथ भयानक युद्ध लड़ा था। गीत में उल्लेख है कि दक्षिणियों की विकट सेना ने नरसिंहगढ़ को चारों ओर से घेर कर आक्रमण कर दिया। किन्तु फतहसिंह ने नरसिंहगढ़ के पहाड़ों और तरुओं को शत्रुओं के रक्त से रक्ताभ कर दिया और दुर्ग पर उनका अधिकार नहीं होने दिया।

---

२. खग झट – खड्ग-प्रहार। वुडव – होने लगी, उड़ने लगी। खरड़क – टकराने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि, रगड़ खाता हुआ प्रहार। डहकत – प्रफुल्लित होकर। डारण – योद्धा, जबरदस्त वीर। डहडक – ध्वनि करते हुए। घण – मेघ। गैहक – सप्रसन्न ध्वनि। छायीयैं – छा गई, फैल गई। गयणक – आकाश में। वीरहक – वीरनाद, वीर वैतालों की ध्वनि।

३. घमछट – घमासान युद्ध। पछट – पछाट मारता। घारां – तलवारों से। वेढ़ण – युद्ध। चौ – की। आदि बट – आदिकालीन पथ। आणंद का सिर – आनंदसिंह के पुत्र पर। आरहट – युद्ध।

४. फूल धारां – तलवारों के प्रहारों से। अरवरि – एक साथ अनेक आदमियों की भीड़। वरवरि – शोर-गुल की ध्वनि, अप्सराओं द्वारा पति रूप में योद्धाओं का वरण। घणां – बहुत से। अरि – शत्रु। पौंहतौ – पहुँचा। अछर बरि – अप्सरा के साथ विवाह करके।

१. दिखणी – दक्षिण प्रांत वाले, मरहठे। घणथाट – विशाल सेना। लूंबिया दौळा – चौतरफ से घेर कर लड़ना शुरू किया। गज बौळां – हाथियों को डुबो देने वाला युद्ध, भयानक लड़ाई। आप मतै – स्वेच्छापूर्वक। तर गिरवर – वृक्ष और पहाड़। झकबौळ – तरबतर, सराबोर। फतै – फतहसिंह ने।

रंग धमरोळ दिखणियां रमतै, भांजै खळ खागां बिभति।
काळै भडां ऊजळा कीधा, गढ़ झिगर तर चौळ गति ॥२॥
नेजाहळां मड़हटां निहसै, घण खागां बहिया रत घाव।
दुरंग गिरंद वाळा बेला द्रुम, रंगिया सुरंग खीचीयां राव ॥३॥
जाये नहीं जकै जुग जातां, रण प्रिसणां वाळै रगति।
गजण तणै रंगिया रंग गाढ़ै, पाहड़ दुरंग बनासपति ॥४॥

१०१. गीत धीरतसिंघ खीची रौ

करी हेट हेटां फतै, लाल रौ कळोधर,
जनम लग अजेबी फतै जांणौ।
अेक आछी बण्या सूर कुण कुहावै,
अेक काची बण्यां काय आंणौ ॥१॥

---

१०१. गीतसार—उपरांकित गीत वीरश्रेष्ठ धीरतसिंह खीची शाखा के चहुवान क्षत्रिय की युद्धवीरता पर कथित है। कवि का कथन है कि वीर धीरतसिंह जीवन में आज तक विजय प्राप्त करता रहा। एक बार यदि किसी ने जीवन में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करली तो उसमें खूबी ही क्या है? किन्तु जो आजीवन विजय-लाभ करता रहे, वही सच्चा वीर कहा जा सकता है।

---

२. धमरोळ – विकट युद्ध। रमतै – खेलते, करते हुए। भांजै – नाश करे। खळ – वैरियों का। खागां – तलवारों से। बिभति – अनेक विधि से। काळै – वीर ने। ऊजळा– उज्ज्वल। गढ़ झिगर तर – दुर्ग, तरु और झाड़ी समूहों को। चौळ गति – लाल रंग, रुधिर से रंग कर।

३. नेजाहळां – भालों से। मड़हटां – मरहठों। निहसै – मारे गए, भाग गए। बहिया – प्रवाहित हुए। रतघाव – घावों से लोहू। दुरंग – दुर्ग। गिरंद वाळा – पहाड़ वाले, नरसिंहगढ़ के। बेला द्रुम – बेलें और पेड़। सुरंग – लाल। खीचीयां राव – खीचियों के राजा ने, खीची चौहानों की एक शाखा का नाम है।

४. जाये नहीं – नाश नहीं होगा। जकै – वह, जो। जुग जातां – युगान्तर के बाद तक भी। प्रिसणां – पिशुनों, वैरियों। रगति – लोहू। गजण तणै – गजसिंह-तनय। रंग गाढ़ै – गहरे रंग में, लाल रंग में। बनासपति – वनस्पति।

१. हेट हेटां – बेहद, अपूर्व। फतै – फतह। लाल रौ कळोधर – लालसिंह की कला को धारण करने वाला, लालसिंह के कुल का उद्धारक। अजेबी – अद्यावधि, अजेय। अेक आछी बण्या – एक अवसर पर अच्छी बात बन जाने से। सूर – शूर, वीर। कुण – कौन। काची – कायरतापूर्ण, कच्ची। बण्या – बनने से, होने से। काय – क्या, क्यों।

पुंमाड़ा अछूता सदा ही पांमिया,
समत सूं अस्या वागा समीरा।
अधीरां धीर पण राजि ही वंधावौ,
राजि में धीर पण वडौ धीरा ॥२॥

साखि खीची श्रवण जुरासंधि तणी सुणी,
दोय पग दर्ड़ा भोम पाछा दीधा।
प्रांण छूटां पछै कस्या ज्यां प्रुसातम,
किसन मिटिया उस्या काम कीधा ॥३॥

विया गिरमेर यो हारवौ जीतवौ,
सारिखां तणौ करतार सारे।
हारिकां तणो तो जीत मारै नहीं,
मारिकां तणो तो हारि मारे ॥४॥

कूदि केकांण सारा गया कनैं सूं,
वांण थांरा वह्या पाण वारू।
चत्रहरी अणी तोही ससत्रां चमक,
धमक घणी थारी विया धारू ॥५॥

---

२. पुंमाड़ा – प्रवाड़ा, प्रशंसा के कार्य। अछूता – नया, अस्पृश्य। पांमिया – प्राप्त किया। अस्या – ऐसा। वागा – बहा, चला। समीर – पवन, वायु। अधीरां – अधैर्यवान। धीर पण – धैर्य। राजि ही – आप श्री ही। धीरा – हे धीरतसिंह।

३. साखि – साक्षी, शाखा। खीची – खीची शाखा के क्षत्रियों की। जुरासंधि – जरासंध। तणी – की। पग – पैर, डग। प्रांण छूटां पछै – प्राण निकल जाने के पश्चात्। प्रुसःतम – पुरुषार्थ। उस्या – वैसा। कीधा – किया।

४. विया गिरमेर – द्वितीय सुमेरसिंह(?)। हारवौ जीतवौ – हारना-जीतना, जय-पराजय। सारिखां – एक सा, एक सदृश। करतार – कर्त्तार, ईश्वर। सारे – सहारे, आश्रित, हाथ में है। हारिकां – हारने वालों। तणी – की। मारिकां – मारने वालों, विजेता योद्धाओं।

५. केकांण – घोड़े। कनैं सूं – पास से। वांण – तीर। थांरा – तेरे, तुम्हारे। वह्या – चले, छूटे। पांण – वल, भुजा। अणी – नोक, सेना। ससत्रां – हथियारों की। धमक – धाक, धमाधम की ध्वनि। घणी – अत्यधिक। विया धारू – द्वितीय धारूसिंह।

१०२. गीत बखतसिंघ करणौत राठौड़ रौ

बणी वार सूरां जितै अधूरां बीचतां,
कार भांगी जिकै सारको काळौ।
सिंघ बखतेस बळ दाखि जैसिंघ सूं,
बाजियौ केहरी सिंघ - वाळौ ॥१॥

धड़छतौ कूरमां गजां देतौ धका,
हेड़तौ रिमां पति समौ हाथै।
करणहरौ तुरी पीलौ बणी करारी,
मेळियौ कंवारी घड़ा माथै ॥२॥

अभैक्रन जोड़ बखतेस राजा अगै,
लाख पैंलां सिरै बाग लेतै।
खेसिया भुज बळां थाट जाडा खळां,
दळां आदेसियौ झाट देतै ॥३॥

---

१०२. गीतसार—उपर्युक्त गीत राठौड़ों की करणोत शाखा के योद्धा ठाकुर वख्तसिंह पर कथित है। वख्तसिंह ने जयपुर की सेना से लड़ाई कर शौर्य्य दिखाया था। प्रसिद्ध कवि वीरभानु रतनू ने गीत में कहा है कि युद्ध की विषम वेला में जब कापुरुष मृत्यु-भय से लड़ने में आनाकानी करने लगे तब उस वीर ने सीमा का उल्लंघन कर महाराजा सवाई जयसिंह की सेना से साहसपूर्वक युद्ध लड़ा।

---

१. बणी वार — विषम समय आ उपस्थित होने पर। अधूरां — कायरों। कार भांगी — मर्यादा का उल्लंघन किया। जिकै — वे। सार को — लोहा को, तत्व का। काळौ — वीर। बळ — शक्ति। दाखि — कथन कर। जैसिंघ सूं — सवाई जयसिंह से। बाजियौ — लड़ा। केहरी सिंघवाळौ — केशरीसिंह का पुत्र।

२. धड़छतौ — मारता काटता। कूरमां — कछवाहों को। गजां — गजों को। देतौ धका—पीछे को धकेलता। हेड़तौ — हाँकता चलाता। रिमां पति — शत्रु सेनाध्यक्ष को। करणहरौ — कर्ण का वंशधर। तुरी पीलौ — पीत रंग के अपने अश्व को। करारी — कठिन। मेळियौ — मिलाया, भिड़ा दिया। कंवारी घड़ा — बिना लड़ी सेना। माथै — पर।

३. अभैक्रन — गीतनायक के पूर्वज अभयकर्ण। जोड़ — बराबरी में। बखतेस राजा — जोधपुर के महाराजा वख्तसिंह। अगै — आगे, पहिले, सामने। पैंलां — विपक्षियों। सिरै— सिर पर। बाग लेतौ—लगाम उठाकर आक्रमण करता। खेसिया—पीछे हटा दिए, दबा दिए। थाट — सेना-समूह। जाडा खळां — बहुत अधिक शत्रुओं। आदेसियौ — अभिवादन किया, आज्ञा की। झाट देतै — वार करते।

झींक पोहरां पड़ै वाढ़ कोरां झड़ै,
दुगम रिण नीमड़ै लड़ै दईवांण।
त्रिजड़ खळ झाड़ि जळ चाडि कमधां तड़ै,
राड़ि पीठ ऊवरै वियो राजांन ॥४॥

— वीरभांण रतनू री कह्यौ

१०३. गीत चांपावत कुसलसिंघ मेड़तिया सेरसिंघ री भेलो

छळै ऊंबरा बिहुंवै कुंत वाण हुं केवांण छौळां,
ठहे तोप दौळां चौळां दळां वे ताठौड़।
धरा थंभ मुरधरा वरा पूर सामध्रमी,
राड़िगारा झलै उभै अनंमी राठौड़ ॥१॥

---

१०३. गीतसार—उपरोक्त गीत में महाराजा रामसिंह जोधपुर और राजाधिराज बख्तसिंह नागौर के बीच जोधपुर राज्य के लिए हुए युद्ध में रामसिंह के दल के प्रमुख ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया और बख्तसिंह के पक्षवालों के मुखिया कुशलसिंह चांपावत की युद्ध-वीरता का वर्णन है। कवि कहता है कि उभयपक्षी दोनों वीर जो मारवाड़ राज्य की रक्षा के लिए स्तम्भ तुल्य हैं। भाला, तलवार, धनुष-बाण और तोपों से सन्नद्ध हो लड़ने को तत्पर हुए और भयानक युद्ध के पश्चात् दोनों ही वीर रणभूमि में मारे गए।

---

४. झींक – शस्त्र-प्रहारों की झड़ी। पोहरां – प्रहरों तक। वाढ़ – तलवारों की पैनी धारें। कोरां – किनारे, अछूते। झड़ै – गिरे। दुगम – दुर्गम, विकट। दईवांण – योद्धा। त्रिजड़ – तलवार, कटार। खळ झाड़ि – शत्रुओं का संहार कर, वैरियों पर आघात कर। जळ चाडि – यशभागी बनाकर। कमधां तड़ै – क्षत्रियों में राठौड़ों की शाखा। राड़ि – युद्ध में। पीठ – पृष्ठ या ओट में। ऊवरै – जीवित बचे। वियो – द्वितीय। राजांन – राजा।

१. छळै – युद्ध, लिए, जोश में उफनते हुए। ऊंबरा – उमराव, बड़े सामन्त। बिहुंवै – दोनों, दोनों ओर। कुंत-भाला, बर्छा। बाण – तीर। केवांण – तलवार। छौळां – बौछार, रण क्रीड़ा। ठहे – ठहरे, रुके, स्थान। दौळां चौळां – चारों ओर। वे – दोनों। ताठौड़ – उस स्थान पर, दृढ़। धरा थंभ – धरा के स्तम्भ, प्रबल वीर। राड़िगारा – युद्धकारी। झलै – शोभा पाते हैं, धारण किये हुए। उभै – दोनों।

ऋहाकां अखावु हुवै बेढ़ाक बाजतां तंबि,
रूके रथां भाण थंभी अमी गैण राह ।
पाथ जेम लूथ बत्थां सधायो रा हरा परां,
सदा रो अधायो राड़ि आयो सेरसाह ॥२॥
भगै कड़ां जरद्दाळां निराताळां लोह भाळां,
चढ़ि रथां बरमाळां खड़ी बरां चाव ।
भड़ै बाढ़ किरम्मरां सेस सिरां पांव जड़ै,
राम नै बखता चाड अड़ै मारू राव ॥३॥
कळाधारी जोधपुरा वासतै सेरसा कहै,
लाजधारी राजा राम तणोजी लखत ।
छत्री कुसळेस कहै खवां परै सीस छतो,
खागधारी बखतेस बैठसी तखत ॥४॥
भाखियो तिकां ही बातां निभायी बेहुंवै भड़ां,
फाड़ेजी अनंड़ां घड़ां गजां घड़ां फेर ।
लोहड़ां बजाय घड़ां कुसळै जोधाण लियो,
सारी धरा राज कीधो पड़ै पछै सेर ॥५॥

---

२. ऋहाकां – नगाड़ों के बजने से होने वाली ध्वनि । बेढ़ाक – युद्धकारी । तंबि–नगाड़े । भाण – भानु, सूर्य । थंभी – स्तम्भ होकर, ठहरा । गैण राह – आकाश पथ । पाथ – पार्थ, अर्जुन । लूथबत्थां – गुत्थम गुत्थ होने का भाव, बाहु युद्ध । सधायो – चला । हरा रा परां – हरनाथसिंह के पुत्र ऊपर, कुशलसिंह पर । सदा रो – सरदारसिंह का पुत्र, शेरसिंह । अधायो – अधीर, अतृप्त । राड़ि – युद्ध । सेरसाह – ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया रियां का ठाकुर ।

३. जरद्दाळां – कवचों के । निराताळां – अविरामगति से, बिना रुके । बरां चाव – योद्धाओं को पति रूप में प्राप्त करने की चाह । भड़ै बाढ़ किरम्मरां – तलवारों की पैनी धाराएँ खंडित होने लगी । सेस सिरां – शेषनाग के सिरों पर, दृढ़ता का सूचक । चाड – सहायता । अड़ै – सामने डटे, हठ चढ़े । मारू राव – मारवाड़ के बड़े सामन्त ।

४. वासतै – वास्ते, लिए । लखत -- लिखित, भाग्य । खवां – कंधों पर । छतो – रहते हुए, होते हुए । बैठसी – विराजेंगे । तखत – तख्त पर, सिंहासन पर ।

५. भाखियो – कही । तिकांही – वे ही । निभायी – पूरी की, निभाई । बेहुंवै भड़ा – दोनों योद्धाओं ने । फाड़ेजी – विदीर्ण की । अनंड़ां घड़ां – बलवान सेनाओं को, निर्बन्ध सेनाओं को । गजां घड़ां – गज सेनाओं । लोहड़ां – लोहा, शस्त्रों को । बजाय – प्रहार देकर । जोधाण लियो – जोधपुर पर अधिकार किया । कीधो – किया । पड़ै पछै सेर – शेरसिंह के रणभूमि में गिर पड़ने के बाद, युद्ध में काम आ जाने के बाद ।

पतीव्रती धारि चौज संकरां ग्रीधरां पोखै,
हंसचरां पोखै भरा पत्रां चंडी हांम।
परी वरे चांपां छात सुरां तणै लोक पूगो,
धणी दूदां तणो पूगो परम्म रै धाम ॥६॥

१०४. गीत सेरसिंघ मेड़तिया रियां रा धणी रो

सिरा तणा उमराव खग दाव भरिया सगह,
जोध सबळा दळां खळां जारू।
तयीं गज भार भर अभा राजा तणा,
मांडिजे तौ भुजां सेर मारू ॥१॥
भड़ां भालां घसण रसम रिव भळहळां,
बळे गज छाकियां घातणा बाथ।
जोधपुर नाथ रा काम पारंभ जकै,
नीमजे तौ भुजां मेड़ता नाथ ॥२॥

---

१०४. गीतसार–उपरोक्त गीत रियां संस्थान के स्वामी ठाकुर शेरसिंह ने महाराजा रामसिंह जोधपुर के पक्ष में नागौर के राजाधिराज बख्तसिंह से लड़कर वीरगति प्राप्त की थी। गीत में शेरसिंह की सराहना करते हुए कहा है कि जोधपुर राज्य के उच्च श्रेणी के विद्रोही सामन्त गर्व धारण कर विपक्षी प्रबल सेना का ध्वंस करने के लिए तत्पर हुए तब अभयसिंह के पुत्र रामसिंह के राज्य की रक्षा का भार ठाकुर शेरसिंह ने ग्रहण किया।

---

६. पतीव्रती – स्वामिधर्म का व्रत। चौज – आनन्द। संकरां – शिव, चण्डिकाएँ। ग्रीधरा – गृद्धों को। पोखै – पोषण कर। भरा पत्रां – पत्र पूरित करवा कर। चंडी – चण्डिका। हांम – इच्छा। परी वरे – अप्सरा से विवाह कर। चांपां छात – चांपावत राठौड़ों का मुखिया। सुरां तणै – देवताओं के। पूगो – पहुंचा, गया। धणी दूदां तणो – दूदावत (मेड़तियों) का स्वामी। परम्म रै – परमेश्वर के। धाम – लोक में, घर में।

१. सिरा तणा – उच्च श्रेणी के, सिरह की पंक्ति के। खगदाव – युद्ध, शस्त्रों से लड़ने के लिए। भरिया – भर कर। सगह – सगर्व। जोध – योद्धा। सबळा – बलवान्। दळां – सैन्य समूह। खळां – शत्रुओं। जारू – पचाने वाले, मारने के लिए। तयीं – तुझ पर। भार भर – वजन और दायित्व। अभा राजा तणा – महाराजा अभयसिंह का। मांडिजे – उठाने या वहन करने को तैयार होने। तौ भुजा – तेरी भुजाओं। सेर मारू – हे शेरसिंह राठौड़।

२. भड़ां – योद्धाओं। भाला घसण – भाले के प्रहारों में पैठने के लिए। रसम रिव भळहळां – रवि रश्मियों के विकीर्ण होते समय। बळे – पुनः। गज छाकियां – मद में उन्मत्त गजों। घातणा बाथ – भुजाओं में पकड़ना, भुजा डालना। नीमजै – पूर्ण हो, निपटे। मेड़तानाथ – मेड़ता के स्वामी।

बाहि नाराज करणां घड़ां बेहड़ा,
बरण त्रबधी घड़ा नेत बांधै।
डाक बंध अजावत समहर डंमर,
कमंध सिरदार रा तोभ कांधै ॥३॥

कहर खग झाटणां वीर दूजा कुसळ,
खाटणां विरद फौजां गजां खंभ।
पाट रा थंभ रणवाट रा थंभ पण,
थाट रा राज रा मिसल रा थंभ ॥४॥

१०५. गीत बादसाह अकबर साह रौ

अकबर आवसी सुणियै आडंबर, पांणी लोप पयांणे।
समंदां बाहिरला साह आलम, संक पड़ी सुरतांणे ॥१॥

---

१०५. गीतसार—उपरांकित गीत मुगल बादशाह जलालुद्दीन अकबर पर उचित है। इसमें अकबर के कंधार वलख बदख्शा आदि पर आक्रमण का वर्णन है। गीत में उल्लेख है—समुद्र पार के देशपतियों ने जब यह सुना है कि बादशाह अकबर अपनी सेना सहित समुद्र को उलांघ कर हमारे देशों पर चढ़ाई करेगा, तो वे भयभीत हो उठे।

---

३. बाहि – चला कर, प्रहार कर। नाराज – तलवार। घड़ां – सेनाओं को। वेहड़ा – द्विघट, दो खण्ड। त्रबधी – तीनों विधियों से, तिरछे प्रहारों से। नेत बांधै – वीरतासूचक चिन्ह धारण किये हुए। डाक बंध – नगार बंध, वह सरदार जिसकी सवारी में नगाड़े निशान रहते थे। अजावत – अभयसिंह। समहर – युद्ध। डंमर – ठाठ, जोश। सिरदार रा – सरदारसिंह के पुत्र। कांधै – कंधे पर।

४. कहर – शत्रु, युद्ध, विपत्ति। खग झाटणां – तलवार के प्रहार करने वाला। दूजा कुसळ – द्वितीय कुशलसिंह। खाटणां – प्राप्त करने वाला। खंभ – स्तम्भ। पाट रा थंभ – सिंहासन की रक्षा के लिए स्तम्भ तुल्य। रजवाट रा – क्षत्रियत्व का। थाट रा – सेना का, वैभव का। राज रा – राज्य का। मिसल रा – मिसलों का, जोधपुर में उमरावों की बैठक को मिसल कहते थे। ये आठ ठिकाने मिसलें कहलाते थे—रियां, रामपुर, खैरवो, आहुओ, आसोप, ।
बगड़ी, कारणाणो, खींवसर, आठों मिसल अनोप ॥

१. अकबर – मुगल बादशाह जलालुद्दीन अकबर। आवसी – चढ़ कर आएगा। आडंबर – युद्धार्थ घोषणा कर, सजधज कर। पांणी लोप – समुद्र को उलांघ कर। पयांणे – प्रयाण, पथ। समंदां – समुद्रों के। बाहिरला – बाहर के प्रदेशों वाले। आलम – संसार। संक पड़ी – सशंकित हो उठे। सुरतांणे – सुल्तान।

अकबर साह आवियो आयो, सांमळ घड़ां सनाहे।
मह उर वावां वसू मूकै, पार तणै पतसाहे ॥२॥

नामां लगै हमाऊ नंदण, खांडा वळ तूं खंडै।
पोह मंडळीक महोदध पैला, माथै छत्र न मंडै ॥३॥

चिगथां नाथ भडां चारहड़ां, असहां जड़ां ऊपाड़ै।
लड़ समंदां मांहे घर लीघो, बाहिरला वीहाड़ै ॥४॥

१०६. गीत पातसाह अकबर साह रौ

आंणी घर घरे पूरबी उत्तरि, सींव पछिम घाती लगि सायर।
लागा दिखिण संभळै लसकरि, इंद्रासण थरहरियो इंदर ॥१॥

मारै पूरब पछिम मालम, सुर विहिया रहे कुंण सालम।
जाय दिखिण लागो तूं जालम, इन्दलोक भागो साह आलम ॥२॥

---

१०६. गीतसार–उपरिलिखित गीत मुगल शाहंशाह जलालुद्दीन अकबर की युद्ध-विजयों का सूचक है। गीत में बादशाह की पूर्व, उत्तर, पश्चिम और दक्षिण दिशाओं के प्रान्तों की विजयों का वर्णन है। कवि बादशाह के आतंक का वर्णन करते हुए कहता है कि बादशाह द्वारा चारों दिशाओं के देश को विजय करने के कारण देवलोक में देवराज पराजय-भय से आकुल हो उठा।

---

२. सांमळ घड़ां – श्याम घटाएँ, गज सेना। सनाहे – सन्नाह सनद्ध कर, कवचादि से सज्जित कर। वसू – वसुधा। मूकै – त्यागते हैं। पार तणै – सागर से उस पार के। पतसाहे – बादशाह।

३. हमाऊ नंदण – बादशाह हुमायू का पुत्र, अकबर। खांडावळ – तलवार की शक्ति से, युद्ध द्वारा। खंडै – खण्डित करता है। पोह – राजा, योद्धा। मंडळीक – शासक, राजा। महोदध पैला – महा समुद्र के उस ओर के देशों वाले। माथै – सिर पर। छत्र – छत्र नामक राज्य-चिन्ह। न मंडै – धारण नहीं करते हैं।

४. चिगथां – मुसलमान। नाथ – स्वामी, बादशाह अकबर। भड़ां – योद्धाओं। असहां – वैरियों। जड़ां ऊपाड़ै – समूल नाश करता है। लड़ – युद्ध कर। मांहे – में, भीतर की। लीधो – ली, अधिकृत की। बीहाड़ै – भय करते हैं, डरते हैं।

१. आंणी – लायी गई। घरे – घर। पूरबी – पूर्व दिशा की। सींव – सीमा। पछिम – पश्चिम। घाती – डाली, स्थापित की, घात-पेंच। लगि – तक। सायर – समुद्र। दिखिण – दक्षिण प्रान्त वाले। संभळै – सुन कर; सम्हल कर। लसकरि – लश्कर, सेना। थरहरियो – दोलित हो उठा, कंपित हुआ। इंदर – इन्द्र का।

२. मारै – मार डाले। सुर – देवता। विहिया – डरने लगे। कुंण – कौन। सालम – सालिम, अपराजित, अखंडित। जालम – जालिम, दुर्धष वीर। भागो – भगा।

बीहो रखै कहै रातम्बर, इन्द्र रेसे श्रे दीनो उत्तर।
नर निरजणे निपातै निसहर, ऊपर सुरां न आवे अकबर ॥३॥

१०७. गीत मानसिंघ सकतावत रौ हाजीपुर री वेढ़ रौ

मेवाड़ थकां पूरबगढ़ माल्है, अईयो सकतहरा उनमांन।
जग परदेस जीवबा जावै, मरबा गयो करारी मांन ॥१॥

मांटी पणो तुहाळो मानां, रहियो घणौं घणां दिन रोस।
कोस हेक मरबा जावै कुंण, कंवळौ गयो हजारां कोस ॥२॥

मानसिंघ धिन धिन मेवाड़ा, अत प्रब भीम तणो अवसांण।
जोळा हुवै घणा नर जीबा, भेळौ हुवो समोभ्रम भांण ॥३॥

पोह बदियो जहंगीर पातसाह, कहियो धिन राणै करण।
ऊगतां सूरज जिम ऊगो, मानसिंघ वाळौ मरण ॥४॥

—दुरसा आढ़ा रौ कह्यौ

---

१०७. गीतसार—उपरोक्त गीत वीर मानसिंह शक्तावत सीसोदिया पर रचित है। मानसिंह राजा भीमसिंह सीसोदिया के रण-निमन्त्रण पर मेवाड़ से प्रस्थान कर हाजीपुर के युद्ध में सम्मिलित हुआ और उसी युद्ध में बादशाह जहाँगीर के पक्ष की सेना से जूझ कर काम आया। गीत में मानसिंह की प्रशंसा करते हुए कहा गया है—संसार में यह तो होता आया है कि लोग जीवन-निर्वाह के लिए विदेश-यात्राएँ करते हैं, किन्तु मानसिंह स्वदेश से प्रयाण कर रण में मृत्यु प्राप्त करने के लिए विदेश यात्रा पर गया।

---

३. बीहो – भय, डर। रातम्बर – मुसलमान। रेसे – दबा दिया, वश में कर लिया। निरजणे – ईश्वर। निपातै – नाश करने। ऊपर सुरां – देवताओं पर। न आवे – नहीं आएगा, आक्रमण नहीं करेगा।

१. मेवाड़ थकां – मेवाड़ में होते हुए। माल्है – गया, मस्त गति से जाना। सकतहरा – महाराना प्रतापसिंह के अनुज शक्तिसिंह का वंशज, गीतनायक मानसिंह। उनमान – अनुमान। जग – संसार। परदेस – विदेश में। जीवबा – जीवित रहने के लिए। मरबा – मरने के लिए।

२. मांटी पणो – मर्दानगी, पौरुषता। तुहाळो – तेरा, तुम्हारा। मानां – मानसिंह। घणौं – बहुत, अधिक। घणा दिन – बहुत दिन। हेक – एक। कुंण – कौन। कंवळौ – वाराह, वीर।

३. धिन धिन – धन्य धन्य। मेवाड़ा – मेवाड़ निवासी। अत प्रब – महान् पर्व। भीम – राजा भीमसिंह सीसोदिया टोडा का शासक। अवसांण – अन्त, अवसर। जोळा – पृथक, अलग। जीबा – जीवित रहने हेतु। भेळौ – शामिल। समोभ्रम – समानता की भ्रान्तिप्रदाता, पुत्र। भांण – भाण की।

४. पोह – राजा। बदियो – कहा। जहंगीर – जहाँगीर ने। राणै करण – महाराना कर्णसिंह मेवाड़ ने। ऊगतां – उदय होते। ऊगो – उदय हुआ।

१०८. गीत राव सिवसिंघ सेखावत सीकर रा धणी रौ

सीसोदियां रांण जेम जगतेसर, धर कछवाह जेसौ वड धींग।
मारूधर अभमल महाराजा, सेखाधर राजा सिवसींग ॥१॥

सुत संगराम रांण वर सामा, सुत विसनेस अधक आसाधि।
अजमल सुत दिल्ली आंटायत, विसवा दोय दलावत वाधि ॥२॥

पांच भड़ां सरिखौ भड़ पह, कहिता कोई मति खीझ करौ।
अमर नांम जसवंत हरा रौ, है त्यूंही कूरम जगाहरौ ॥३॥

उदियापुरा अनै आमेरा वेहूं, जोधपुरा अखवंती जोड़।
सरिखौ धणी छत्रधर सेखावत, महिपत धणी अमरसर मौड़ ॥४॥

---

१०८. गीतसार—उपर्युक्त गीत सीकर के शासक राव शिवसिंह शेखावत पर सर्जित है। राव शिवसिंह महान् वीर और अत्यन्त उदार शासक थे। गीत में कवि ने गीतनायक को उसके समकालीन उदयपुर के महाराणा जगतसिंह, जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह और जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के समतुल्य मान कर वर्णन किया है।

---

१. जेम – जिस प्रकार, ज्यों। जगतेसर – महाराणा जगतसिंह। धर कछवाह – कछवाहों के राज्य, जयपुर। जेसौ – महाराजा सवाई जयसिंह। वड धींग – महान्, वीर। मारूधर – मारवाड़ में। अभमल – अभयसिंह। सेखाधर – शेखावाटी।

२. सुत संगराम – महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय का पुत्र, जगतसिंह। सुत विसनेस – महाराजा विष्णुसिंह तनय, सवाई जयसिंह। अधक – अधिक। अजमल सुत – महाराजा अजितसिंह का पुत्र, अभयसिंह। आंटायत – बदला लेने वाला, शत्रु। विसवा दोय – उससे भी दो विस्वे अधिक। दलावत – दलेलसिंह का पुत्र। वाधि – अधिक, बढ़कर।

३. भड़ां – योद्धाओं। सरिखौ – सदृश। पह – राजा। खीझ – कोप, नाराजी। जसवंत हरा रौ – जसवंतसिंह के पौत्र, अभयसिंह का। कूरम – कूर्म, कछवाहा। जगाहरौ – जगतसिंह का वंशधर, सवाई जयसिंह।

४. अनै – अन्य। वेहूं – दोनों। जोड़ – जोड़, बराबर। धणी – स्वामी। महिपत – राजा। अमरसर – शेखावत कछवाहों की प्राचीन राजधानी अमरसर में थी। अतएव शिवसिंह को अमरसर का राजा कहा गया है। मौड़ – शिरमौर।

१०९. गीत अमरसिंघ सलेदीसिंघोत बहल रा धणी रौ

मुगल सूं कागदां अनड़ अमरो मिल्यो, कुळी नजब सूं अरज कहज्यो ।
माळ जे चाहै तो मुलक छै मोकळो, बहल सूं परीकर दूर बहज्यो ॥१॥

दगा री बात नहीं छै देखल्यो, आवज्यो चाह कर अठां तांई ।
चाह कर आवो तो करां ला चाकरी, नहीं तो अठै छै चूंन नांई ॥२॥

दिली रै बरीबरि अमरसर दूसरी, छत्रपत बांकड़ा कूरमां छात ।
जावस्यो चढ़ परा तो भरम रह जावसी, उरां नै आवस्यो देखस्यो हात ॥३॥

कूच कर चढ्यो तद नजबकुळी खां, बिहद भडां साथ धौंकार बाजो ।
अरज ऊभी बहल करै अमरेस नूं, रजा भाव राखतां रहौ राजी ॥४॥

---

१०९. गीतसार—उपरोक्त गीत हरियाना के बहल ठिकाने के स्वामी अमरसिंह शेखावत द्वारा शाही सेनानायक नजबकुली खांन से लड़ने की चुनौती का द्योतक है। कवि के वर्णनानुसार गीत में अमरसिंह कहता है कि—हे नजबकुली ! यदि तुम्हें द्रव्य की चाह हो तो देश में अन्यत्र बहुतेरे धनवान हैं, उनके पास जाओ । कहीं धन की लालसा में बहल ग्राम की ओर मत आ जाना । यहाँ तुम्हें द्रव्य के नाम पर मृत्यु का सामना ही प्राप्त होगा ।

---

१. अनड़ – बंधन को न सहने वाला, स्वतंत्र प्रकृति । मिल्यो – मिला, भेंट की । कुळी नजब – बादशाही सूबेदार नजबकुली खांन । अरज – अर्ज । माळ – द्रव्य, कर, उपज का लगान । मोकळो – बहुत-सारा । बहल – स्थान का नाम । परीकर – उधर दूर से ही । बहज्यो – चले जाना ।

२. दगा री – छल की, विश्वासघात की । देखल्यो – देख लीजिए । अठां तांई – यहां तक । करांला – करेंगे । चाकरी – सेवा, सत्कार । अठै छै – यहां है । चूंन नांई – बाजरे जवादि अन्न का आटा नहीं है ।

३. बरीबरि – बराबर, समान । अमरसर – शेखावतों की प्राचीन राजधानी का नाम । छत्रपत – राजा । बांकड़ा – बांकुरे । कूरमां – कूर्मों, कछवाहों । छात – छत्र, राजा । परा – दूर । रह जावसी – रह जाएगी । उरां नै – इस ओर को, इधर की ओर । आवस्यो – आओगे तो । देखस्यो – देखोगे ।

४. कूच कर – प्रस्थान कर । तद – तब । धौंकार बाजी – धूं धूं का शब्द-रव हुआ । ऊभी – खड़ी । रजा भाव – राजा की सी भावना, प्रजा-रक्षा की भावना । राजी – प्रसन्न ।

११०. गीत स्यामसिंघ सेखावत बिसाऊ रा धणी रौ

जड़ै आवधां सुवप मजबूत कंथा जिरह, मेळ हद तिलक रजपूत नांमो।
केहरी तुचा अदभूत पाखर कड़ै, सत्रां सिर खड़ै अवधूत स्यांमो ॥१॥

सिंधुवा गजाड़ै असंख वाहर सबद, अड़ै अध्रियामणे रूप आडो।
बयळ ऊगां समै अरिहरां बारणै, मसतकां तणी ले भेंट मोडो ॥२॥

अखाड़ा विकट थापै कळह ऊपटां, हर छटा धोम चख रूप होवै।
तप छटा तेज सूं वंस सत्रवां तणा, खग झटा वेधवा हूंत खोवै ॥३॥

सरस रजवाट तप अघट सूजा सुतन, सार झट रचै तीरथ सकांमो।
करावै भगत अणभांवती केवियां, साख खट तीस रौ महंत स्यांमो ॥४॥

---

११०. गीतसार—उपरांकित गीत शेखावाटी के बिसाऊ संस्थान के स्वामी श्यामसिंह शेखावत पर लिखित है। कवि ने इसमें श्यामसिंह को योगिराज शिव के रूप में वर्णित किया है। कवि का कथन है कि अवधूत तुल्य श्यामसिंह अपने अश्वों पर व्याघ्रचर्म रूपी पाखरें एवं कंथारूपी कवच धारण कर शत्रुओं पर शस्त्रों से आक्रमण करता है।

---

१. जड़ै — कसकर, बांधते हैं। आवधां — शस्त्र। सुवप — अपने शरीर पर। कंथा — योगियों की गूदड़ी। जिरह — कवच। हद — बेहद। रजपूत — क्षत्रियत्व। केहरी तुचा — सिंह-चर्म, बाघाम्बर। पाखर — लोहे की जाली, घोड़ों की झूल। कड़ै — पास में, कड़ियां। सत्रां — वैरियों। खड़ै — प्रस्थान करता है, आक्रमण करता है। स्यांमो — श्यामसिंह।

२. सिंधुवा — सिंधू रागिनी के वाद्य। गजाड़ै — गर्जन करवाता है। सबद — शब्द। अड़ै — सम्मुख आता है, हठ ठानता है। अध्रियामणे रूप — भयानक रूप में। आडो — सामने, बाधा बन कर। बयळ — सूर्य। ऊगां समै — उदित होते समय, प्रातःकाल। अरिहरां — वैरियों के। बारणै — द्वार पर। मसतकां तणी — मस्तकों की। मोडो — मोहजित, योगिराज, अवधूत, मोह को ढाहने वाला।

३. थापै — स्थापित करता है। कळह — युद्ध। ऊपटां — उत्पन्न होने, प्रारंभ होने पर। हर — शिव। छटा — शोभा। चख — नेत्र। तप छटा — तपस्या की छवि। सत्रवां तणा — शत्रुओं का। खग झटा — खड्गाघात। वेधवा — विद्ध करने, मारने, युद्ध।

४. रजवाट — क्षत्रियत्व। अघट — जो कभी न घटे, अपार। सूजा सुतन — सूरजमल-तनय, श्यामसिंह। सार झट — शस्त्रों के प्रहारों से। भगत — गोठ, भोजन। अणभांवती — तृप्त होने पर अच्छी नहीं लगती, अनभाती। केवियां — शत्रुओं को। खट तीस रौ — छत्तीस को। महंत — मुखिया, स्वामी।

१११. गीत डूंगरसिंघ जुंवारसिंघ सेखावत रौ आगरा री वेढ़ रौ

रचे सुरंगा जान रा साज आरंभ आगरा माथै,
सिंधव राग रा सेखै गुवाया सबोल।
खंणकां पींजरां माथै झड़ाका खाग रा खेलै,
ढूंढे किल्ला नाग रा बाजंता नादां ढोल ॥१॥

कंठीर नौहत्था जेम गैणाग गाजता केक,
मांझी देख हणूं ज्यूं भाखता मार मार।
अनेकां धारतां जोस दुहाई आपणी आखै,
जकी टेक कंपणी री उड़ादी जुंवार ॥२॥

---

१११. गीतसार—उपरोक्त गीत स्वतंत्रता संग्राम की परम्परा को प्रज्ज्वलित रखने वाले वीर डूंगरसिंह और जवाहिरसिंह शेखावत के आगरा दुर्ग के कारागृह को तोड़ कर बंदियों को मुक्त करने की घटना से सम्बन्धित है। इसमें कवि ने लिखा है कि दोनों गीत-नायकों ने बारात का स्वरूप बनाकर आगरा दुर्ग पर आक्रमण किया और दुर्ग-शासकों को मार कर अंग्रेज राज्य के प्रभाव को नष्ट कर दिया।

---

१. सुरंगा – सुरंगे, रसपूर्ण, सुन्दर। जान रा साज – बारात की सज्जा। आरंभ – प्रारंभ। आगरा माथै – आगरा नगर पर। सिंघव राग रा – सिंधू रागिनी का। गुवाया – गायन करवाया। सबोल – सुन्दर बोल। खंणकां पींजरां – बन्दियों को रखने के कठपींजरों के टूटने पर होने वाली ध्वनि। झड़ाका – झड़ी, बौछार। खाग रा – तलवार के। नाग रा – आगरा का, आगरा में पहिले अफीम पर्याप्त रूप में बनाया जाता था, इसलिए इसका नाम नागरा भी काव्य में व्यवहृत मिलता है। बाजंता – बजते। नादां – नाद, ध्वनि।

२. कंठीर – सिंह। नौहत्था – नव हाथ लम्बे शरीर के। जेम – ज्यों। गैणाग – आकाश। गाजता – गर्जते। केक – कई एक। मांझी – मुखिया, सेनाध्यक्ष, हणूं – हनुमान। भाखतां – बोलते। जोस – जोश। दुहाई – शपथ। आखै – बोलते हैं। जकी – जो। टेक – प्रण, प्रतिष्ठा। कंपणी री – ईस्ट इण्डिया कम्पनी की। उड़ादी – समाप्त कर दी। जुंवार – वीर जवाहिरसिंह ने।

रेवन्तां ऊपड़ी वागां आविया काळसा रूठा,
तूठा आसमांण गैल सांवठा तराण।
जोरावार घेर लीधौ किला नै बाजतां जांगी,
आड़ीगारा कीधौ घरां घरां में आराण ॥३॥

गाय गाय भणै बंग्गा टोपला नांखिया गौरां,
वांकीपातसाही जंगा वजाड़े बाणास।
ऊगे दीह लांगौ सिंघ आवियौ दलेल वाळौ,
खागां पांण कीधा वंदीखाना नै खलास ॥४॥

सिंघ पदमेस राजग्राह रौ सुजाक सारे,
करै दसूं दिसा में ऊबारे इसौ काम।
मांझी नीहत्था रूप होफरां किला में मारै,
सावड़ी पुकारै बीबी अल्ला नूं सलाम ॥५॥

—संकरदान सामोर रौ कह्यौ

---

३. रेवन्तां – अश्वों की। वागां – लगामें। ऊपड़ी – उठी। काळ सा – महाकाल सदृश। रूठा – रुष्ट, कोपान्वित। तूठा – टूटे। आसमांण गैल – आकाश पथ से। सांवठा – बहुत से, समूहबद्ध। तराण – तारागण, नक्षत्र समूह। घेर लीधौ – चारों ओर से घेरे में ले लिया। बाजतां – बजते हुए, नाद करते। जांगी – नगाड़े। आड़ीगारा – कलहप्रिय, हठीले, योद्धा। घरां घरां में – घर घर में, प्रत्येक घर में। आराण – युद्ध।

४. गाय गाय – तुम्हारी गाय हैं, मारो मत ऐसे दीनता के वचन। भणै – कहने लगे। बंग्गा – बंगाल की ओर से भारत के अन्य भागों में फैलने वाले अंग्रेज, वांग देने वाले टोपला – टोप। नांखिया – पैरों में डाल दिए। गौरां – अंग्रेजों ने। वांकी – विकट। जंगा – युद्धों में। वणास – तलवार। ऊगे दीह – सूर्य उदय होते ही। दलेल वाळौ – दलेलसिंह का पुत्र, जवाहिरसिंह। खागां पांण – तलवार के बल से। खलास – खाली, रिक्त।

५. सिंघ पदमेस – पदमसिंह के पुत्र, डूंगरसिंह ने। राजग्राह – राजकीय कारावास। सारे – सिद्ध किया। ऊबारे – बचाया, उद्धार किया। इसौ काम – ऐसा कार्य। मांझी – मुखिया। नीहत्था – सिंह। होफरां – दहाड़, गर्जना। मारै – करते हैं। साबड़ी – अंग्रेज साहब की पत्नी। बीबी – बेगम। अल्ला नूं – अल्ला ने, ईश्वर को।

११२. गीत डूंगरसिंघ जुंवारसिंघ सेखावत रौ

दावै लागा जमीं घणा हिये दूखियां दोयणां दूठ,
प्रवाड़ा अचूकिया ले भूडंडां पांडीस ।
जुंवारो भोपाळ डूंगो दुहत्थां भूखिया जंगां,
सेखा चाळै ढूकिया विरुत्थां गोरां सीस ॥१॥

नाथिया उनत्थां नत्थां विरुद्दां बठोठ नाथ,
सिंघ टोळा साथियां सबौळा लीधा संग ।
घांसाहरां दीधा घेर बिभाड़े हाथियां घड़ा,
वेध लागा कीधा घू बिलातियां बरंग ॥२॥

---

११२. गीतसार–उपर्युक्त गीत शेखावाटी के बठोठ पाटोदा ठिकानों के ठाकुर डूंगरसिंह और जवाहिरसिंह के अंग्रेज विरोधी युद्धों एवं सैनिक छावनियों को लूटने विषयक हैं। गीत में उनके सहयोगी वीर भोपालसिंह का नामोल्लेख भी हुआ है। गीतकार ने लिखा है कि वीर डूंगरसिंह, जवाहिरसिंह और भोपालसिंह अपनी मातृ-भूमि पर पुनः आधिपत्य स्थापित करने के लिए शस्त्र ग्रहण कर भूखे सिंह की भांति अंग्रेजों की सेना का आहार करने लगे।

---

१. दावै लागा – दांव लगे, हक के लिए लड़ने लगे। जमीं – भूमि के। दोयणां – दुश्मनों। दूठ – दुष्ट, वीर। प्रवाड़ा – प्रशस्ति काव्य, प्रशंसा के कार्य। अचूकिया – अमोघ। भूडंडां – भुजदण्डों। पांडीस – तलवार। जुंवारो – जवाहिरसिंह। भोपाळ – भोपालसिंह। डूंगो – डूंगरसिंह। दुहत्था – दोनों हाथ वाले। भूखिया – भूखे, क्रुद्ध। सेखा – शेखावत। चाळै – युद्ध। ढूकिया – लग गए। विरुत्थां – सेनाओं।

२. नाथिया – बंधन में लिए, पराजित किए। उनत्थां – बंधन न मानने वाले, स्वतंत्रों को। नत्थां – बंधन में। टोळा – समूह। साथियां – सहयोगियों के। लीधां – लिये हुए। घांसाहरां – सेनाओं। घेर – घेरा। बिभाड़े – लड़कर, नाश करे। हाथियां घड़ा – गज-सेना। वेध – युद्ध। घू – मस्तक। बिलातियां – बिलायत वालों के, यूरोप वालों के, अंग्रेजों के। बरंग – टुकड़े, खण्ड।

कंठीर काटकै छूटे सांकळां राटकै किनां,
मेळे चमू थाट कै अरेहां सत्रां मीच।
केवांण झाटकै वाढ़ झाड़िया भूरियां कैंवां,
बिभाड़िया लाठ कै वूरिया धोरां वीच ।।३।।
पीतरा सेवा रा जांगी घुरावै सतारा वार,
धावै खळां खता रा भूडंडां धाड़-धाड़।
अबीह भत्ता रा डंका आवै सदा अठवारां,
कंपनी जड़ावै किलकत्ता रा कींवाड़ ।।४।।
—संकरदान सामोर रौ कह्यौ

११३. गीत बिसनसिंघ राठौड़ रौ अंग्रेजां रा विरोध रौ

लागा सिंधवी राग रा पानां साकुरां भड़ाळां लीधां,
त्रभागा छडाळा आभ छुवंता ता ठौड़।
आहंसी विलाला चक्खां चौळ नूं दिखावै आछी,
रौळ नूं वाजतां ढोलां लूट लो राठौड़ ॥१॥

११३. गीतसार—उपर्युक्त गीत विशनसिंह राठौड़ पर रचित है। विशनसिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत का झंडा खड़ा कर नागौर जिले के रोळ नामक गांव पर आक्रमण कर लूट लिया था। गीत में कहा गया है कि अश्वारोही वीरसिंह को साथ लेकर विशनसिंह ने नगाड़े पर डंका लगाकर रोल ग्राम को लूट लिया।

३. कंठीर – सिंह। काटकै – सत्वरता से आक्रमण करता है। छूटे – खुले, मुक्त हुए। सांकळां – जंजीरों से। राटकै – टक्कर मारे, प्रहार करे। किनां – अथवा। चमू थाट – सैन्य समूह। अरेहां – नहीं दबने वाले। सत्रां – शत्रुओं की। मीच – मृत्यु। केवांण – तलवार। झाटकै – चलाकर, प्रहार करे। बाढ़ – धार। झाड़िया – मार डाले। भूरियां –भूरे वर्ण वाले, अंग्रेज। कैंवां – अथवा। विभाड़िया – नष्ट किए। लाठ कै – कई लार्डों को। वूरिया – जमीन में दबा दिए। धोरां वीच – टीलों में।

४. पीतरा – पौत्र। सेवा रा – राव शिवसिंह के। जांगी – नगाड़े। घुरावै – घोष करवाते हैं। खळां – शत्रुओं के। खता रा – अपराधियों, धोखेबाजों। भूडंडां – भुजदण्डों। धाड़ धाड़ – धन्य धन्य। अबीह – निडर। आठवारां – आठवें दिन, आठों दिशाओं से। किलकत्ता रा – कलकत्ता के। कींवाड़ – कपाट।

१. सिंधवी राग – सिंधू रागिनी, युद्ध की रागिनी। साकुरां – घोड़ों। भड़ाळा – योद्धाओं को। त्रभागा छड़ाळा – तीन धारा वाले भाले। आभ – आकाश। छुवंता – स्पर्श करते। आहंसी – साहसी, अंशधारी। विलाला – रसिक। चक्खां चौळ – लाल नेत्र वालों। रौळ – रोल नाम का ग्राम। बाजतां ढोलां – ढोल बजते हुए, दिन दहाड़े ललकार कर।

साकुरां ऊपड़ी बागां हैकंपे आलमां सारी,
हणूं मार लंक नै दिखाया भारी हाथ।
बेढीगारां रांगड़ा यूं धगारां बातां,
नगारां बागतां गांम लूटिया निघाथ ॥२॥

जड़क्के खागरा बजै ठेलिया कंपनी जंगां,
मारू धरा रा ले लिया सारा माल।
काहुळां रुड़तां जांगी हांकै निराताळा काछो,
प्रळैकाळ वाळी ज्वाळ सवाई गोपाल ॥३॥

खप्रां रुद्र छलै चंडी उछक्का धपासी खळां,
केवाणां खपासी सत्रां छूटो चक्रकाळ।
पटैत बिसन्नोसिंघ छेड़ो छौ जोधाणपती,
करैलो खेड़ेचौ मारूधरा में कुलाळ ॥४॥

११४. गीत ठाकर रूपसिंघ राठौड़ रौ

तवि सावळ कांब गजां धज तोरण, समहर मांणण सेज सुख।
कूरम घड़ा परिणवा कमधज, रूपौ मलपै बींद रुख ॥१॥

---

११४. गीतसार—उपर्युक्त गीत नाहरसिंह के पुत्र ठाकुर रूपसिंह राठौड़ की रण-वीरता पर रचित है। गीतनायक ने कछवाहा क्षत्रियों के साथ युद्ध में वीर गति प्राप्त की थी। कवि ने गीत में युद्ध-क्रियाओं को विवाह की रस्मों के साथ घटित कर वर्णन किया है।

---

२. साकुरां – घोड़ों की। ऊपड़ी – उठी, खींची गई। बागां – लगामें। हैकंपे – हाहाकार सहित कम्पन। आलमां – संसार। सारी – समस्त। हणूं – हनुमान। बेढीगारां – युद्धप्रिय। रांगड़ा – रणघड़, राजपूत वीर। धगारां – जोश की। बागतां – बजते हुए। निघाथ – डंका देकर, चोट देकर।

३. काहुळां – वाद्य विशेष, भयानक रूप में। जांगी – नगाड़े। निराताळा – तेज गति से। काछी – घोड़े। प्रळैकाळ वाळी ज्वाळ – प्रलयकालीन ज्वाला।

४. खप्रां – खप्पर, पात्र। छलै – छलकने लगे। धपासी – तृप्त करेंगे। केवाणां – तलवारों से। खपासी – समाप्त करेंगे। पटैत – पट्टाधारी, युद्ध, सिंह। कुलाळ – कोलाहल, कोहराम मचवा देगा।

१. तवि – कहो। सावळ – बर्छी, भाला। कांब – छड़ी। गजां धज – गजों पर फहराई गई ध्वजाएं, हाथी और घोड़े। समहर – युद्ध। मांणण – भोगने। सेज – शैय्या। घड़ा – सेना। परिणवा – पाणिग्रहण करने। मलपै – मस्त गति से चलता है, लम्बे कदम बढ़ा कर चला। बींद – वर। रुख – तरह।

आखा ज्यूं सर वाण ऊछळै, भिदियौ श्रोण स कूंकूं भाळै।
बीजै अखै छेहड़ा बांधा, त्रिविध घड़ हूंता रणताळ ॥२॥

दुज मुख वेद उचवड़ै नारद, गावै हरखि अपछरां गीत।
चतुरंग फौज ढूंढ़ाहड़ चौंरी, राव राठौड़ दूलह ची रीत ॥३॥

ऋगळ कांचवौ तोड़ि कड़ीकस, घूंघट झिलम उघाड़े धाय।
पाड़ि पंचाहर पिलंग पौढ़ियौ, बनौं अनौखी सेज बिछाय ॥४॥

रेणा रुधिर धपावै पळचर, समपै अछर हंस सीस हर।
सुत नाहर करि समर गयौ अग, वरि त्रिवधौ घड़ वीरवर ॥५॥

—भोजराज कवि रौ कह्यौ

---

२. आखा – अक्षत। सर – शर, सिर। भिदियौ – छिद्रित, छिद्रपूर्ण। कूंकूं – कुंकुम। भाळ – ललाट। बीजै – द्वितीय। अखै – अक्षयराज, रूपसिंह। छेहड़ा – घूंघट, आंचल। बांधा – बांधे हुए। त्रिविध – तीनों रीति से, तीनों प्रकार से। हूंता – से। रणताळ – युद्धस्थल।

३. दुज – द्विज, ब्राह्मण। उचवड़ै – उच्चारण करते हैं। हरखि – हर्ष से। अपछरां – अप्सराएं। चतुरंग – पैदल, अश्वारोही आदि चारों अंगों वाली सेना। ढूंढ़ाहड़ – जयपुर राज्य का प्राचीन नाम, कछवाहे। चौंरी – चंवरी, विवाह वेदी। ची – की। रीत – रीति।

४. ऋगळ – कवच। कांचवौ – कंचुकी। कड़ी – कवच की कड़ी। कस – कसना, बांधने की रस्सी। झिलम – लोहे का जालीदार उपकरण जो टोप के नीचे योद्धा के कंधों तक लटकता रहता है। धाय – वीर, घाव लगा कर। पाड़ि – गिरा कर। पंचाहर – पंचायन का वंशज। बनौं – दूलहा।

५. रेणा – पृथ्वी। धपावै – तृप्त कर। पळचर – मांसभक्षी जानवरों को। समपै – समर्पण कर। अछर – अप्सरा। हंस – प्राण। हर – शिव। अग – स्वर्ग। वरि – वरण कर। घड़ – सेना।

११५. गीत महाराजा भीमसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

दीयैं खंभू ठांणां मचौळा अचाळा झाट सूंडां डंडां,
पै सचाळा देही काळा गिरंदां प्रमांण।
यूं आंवळा-झूळ गजां टौळा प्रथीनाथ वाळा,
मेघमाळा इंदवाळा बादळा मंडाण ॥१॥

रंगा लाल हरी रा धानंखां घटा वाळा खरा,
तिका देहां ऊधरा छटा वाळा ताव।
पिंड सोभ प्रचंडां करीरां छूट पटा वाळा,
बणैं स्याम घटा वाळा सिरी रा बणाव ॥२॥

११५.गीतसार–उपरोक्त गीत महाराजा भीमसिंह जोधपुर के हाथियों के वर्णन का है। गीतकार ने लिखा है कि भीमसिंह की गजशाला में देवराज इन्द्र की मेघमाला सदृश गर्जना करने वाले एवं आकृति वाले हाथी हैं। अपने खंभों पर बंधे हुए वे इस प्रकार झूमते हैं, मानो सचरण पर्वत घूमते हों।

---

१. खंभू ठांणां – हाथियों के बांधने के खंभे एवं स्थान। मचौळा – शरीर के हिलाने की क्रिया, दोलन। अचाळा झाट – भयंकर प्रहार। सूंडांडंडां – शुण्ड दण्डों के। पै – पैरों से। सचाळा – चलने वाले, गतिमान। देही काळा – श्यामल गात्र। गिरंदां – पर्वतों। आंवळा झूळ – शृङ्गार और आभूषणों से सज्जित। टौळा – समूह। इंदवाळा – इन्द्र वाले। मंडाण – मंडित, समान।

२. धानंखां – इन्द्र धनुष की-सी। घटा वाळा – शोभा वाले। खरा – पक्के, साक्षात्। तिका – वे। देहां – शरीरों के। ऊधरा – विशाल, आकाश की। छटा – दामिनी। ताव – तेज, ताप। पिंड – शरीर की। सोभ – शोभा। करीरां – हाथियों। छूट पटा वाळा – मद धार बहाने वाले। स्याम घटा वाळा – श्यामल मेघ घटा वाले। सिरी रा – हाथियों के शिर पर धारण करने का आभूषण विशेष। बणाव – शृङ्गार।

झोक मंत्रां झालियां जोगिंद्रां ज्यूं खंभारा झूलै,
पालिया न रहै जै भंमरां आस-पास।
जिकै ऊभा घुमंवै जलालिया भाखरां जेम,
हालिया सोहरा जांणै सेहरां हुलास ॥३॥

गजां माता डंमरां संमरां जीत डंका गाजै,
राजै जेम चंमरां ढुळंतां सुरां राज।
कारखानां डंमरां छत्तीस वंस सोभा करै,
राज रा आडंमरां भीमेण महाराज ॥४॥

—चैनकरण सांदू रौ कह्यौ

११६. गीत ठाकर सादूलसिंघ सेखावत झूंझणूं रा धणी रौ

रण जोर अलेख लहै जोरावर, भिड़े कायमखां छळि भरै।
सैंहस अेक दस लिया सकरड़ै, कूरम तो न संतोख करै ॥१॥

---

११६. गीतसार—उपरोक्त गीत झुंझुनूं के शासक शार्दूलसिंह शेखावत पर सर्जित है। शार्दूल सिंह ने अपने भाई के वैर में कायमखानियों पर आक्रमण कर उनकी सेना को परास्त की थी। गीत में लिखा है कि शार्दूलसिंह ने अपने भाई की मृत्यु के बदले एक सहस्र कायमखानियों को मार कर व्याज सहित वैर-शोधन किया।

---

३. झोक — वाहवाही के शब्द। झालियां — पकड़े हुए, लिए हुए। जोगिंद्रां — योगेन्द्रों। खंभारा — स्तंभों के बंधे हुए। झूलै — झूमते-घूमते हैं। पालिया — रोकने पर। भंमरां — भ्रमर, चक्कर। जिकै — वे। ऊभा — खड़े-खड़े। घुमंवै — घूमते हैं। जलालिया — किलों के किवाड़ों को रोकने के लिए रोपे जाने वाले पत्थर जैसे अडिग। भाखरां — पर्वतों। हालिया — चलने पर, गति के। सोहरा — सुखद। जांणै — मानो। सेहरा — शिखरों।

४. माता — मोटे-ताजे, मस्त। डंमरां — आडम्बर, ठाट-बाट के। संमरां — युद्धों की। जीत — विजय। डंका — दण्डक। गाजै — गर्जन करने पर। राजै — सुशोभित होते हैं। चंमरां — चंवर। ढुळंतां — झलते समय। सुरां राज — देवराज, इन्द्र। राज रा — आपश्री का। भीमेण — भीमसिंह।

१. अलेख — बिना लिखे हुए, अपार। लहै — लेता है। छळि — युद्ध, लिए। सैंहस — सहस्र। सकरड़ै — एक ही आक्रमण में, एक समय में। कूरम — कछवाहा। तो न — तो भी, तब भी। संतोख — संतोष।

घणौं लाभ कीधो बाघोरै, खानां घरे न गुजरै खैर।
सैंहस गुणी सादूळ सिझायौ, वाढ़ी सैंहत भ्रात रौ वैर ॥२॥

कायम पीता करै कूकवौ, सो जग बाढ़ी लेवै तिसार।
जगड़ तणै सिंघ बजा झरिया, हेकण साटै सत्रू हज़ार ॥३॥

घोड़ां भड़ां लियां घांसाहर, अरिहर सेन विधूंसणहार।
सादूळा करड़ा बौहरां सूं, पड़पै कवण कियां बौपार ॥४॥

११७. गीत राजाधिराज बखतसिंघ नागौररौ

कड़ा जेम सुजड़ां सजे घड़ा त्रिबधी कियां, लियां सुरथांण जोधांण लाजां।
रेसवा त्रिपुर जैसिंघ ऊपर रचै, रूप माहेस बखतेस राजा ॥१॥

---

११७. गीतसार—उपरोक्त गीत नागौर के राजाधिराज बख्तसिंह और जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह के बीच गगवाणा स्थान पर हुए युद्ध का परिचायक है। कवि ने गीत-नायक को शिव और प्रतिनायक को त्रिपुरासुर अंकित कर गीत की सर्जना की है। वह कहता है कि शिव रूपी बख्तसिंह ने भस्मी कड़ा रूपी अपनी तलवार से जयसिंह रूपी त्रिपुरासुर का नाश करने के लिए प्रहार किये।

---

२. बाघोरै – बाघोर स्थान का स्वामी (?)। खानां – कायमखान की संतान वालों के। गुजरै – गुजरती है। खैर – कुशलता। सादूळ – शार्दूलसिंह ने। सिझायौ–वसूल किया। वाढ़ी – अन्न पर बहुरों द्वारा लिया जाने वाला हिस्सा विशेष। बनिये कृषक को एक मन अनाज उधार छह मास के लिए देते हैं और कृषक से सवाया अथवा डेढ़ा छमाही करार पर वसूल कर लेते हैं। लेन-देन की इस क्रिया को बाढ़ी कहा जाता है।

३. तिसार – तीन गुनी। जगड़ तणै – जगरामसिंह का पुत्र, शार्दूलसिंह। झरिया – पचाये, हजम किये। हेकण साटै – एक के बदले में।

४. भड़ां – योद्धाओं। घांसाहर – सेना। अरिहर – शत्रुओं की। विधूंसणहार – विध्वंस करने वाला। सादूळा – शार्दूलसिंह। करड़ा – कठोर, अधिक ब्याज एवं बाढ़ी लेने वाला। बौहरां – बहुरा, नकद एवं अनाज का व्यापार करने वाला बनिया। पड़पै – शक्ति बल से बराबरी में जीते। कवण – कौन। बौपार – व्यापार।

१. कड़ा – भस्मी कड़ा, शिव के हाथ का कंकण। सुजड़ा – तलवार। घड़ा – सेना। त्रिबधी – तीनों तरह से, तीनों विधियों से। सुरथांण – इन्द्रपुरी। जोधांण – जोधपुर की। रेसवा – नाश करने, दमन करने। त्रिपुर – बाणासुर। जैसिंघ – महाराजा सवाई जयसिंह। बखतेस – राजाधिराज बख्तसिंह नागौर।

बगां आराण सुजि सगां वीरवर, ढाहिवा खगां चै पांणि गजढाल।
संघरण असुर अरियण ऊपर सजै, अजोणी सुतण जिम सुतण अजमाल ॥२॥

गाहिवा गजां धज अभंग अणगंज गुमर, समोसर लियां प्रगिनास ऊजो।
मंडै सिर दयंत कछवाह ऊपरि मछरि, डंबरि महिदेव गंगेव दूजो ॥३॥

भूमंडळ असुर खळ कई कीधा भसम, विसम गति आंणि केवाणि वागै।
एकजि त्रिपुर जैसिघ उवारिणे ऊबरै, अकळ माहेस वखतेस आगै ॥४॥

—कीरतदान बारहठ रौ कह्यौ

११८. गीत महाराजा अभैसिंघ राठौड़ रौ अहमदाबादरा झगड़ा रौ

लंगस ऊपटां फौज गजथटां भुजळग लहर, सूरतन ठहर जळ गहर साजा।
प्रथीपत अभौ आयो उलट छत्रपती, रौद सर विलंद पर समंद राजा ॥१॥

---

११८. गीतसार—उपर्युक्त गीत जोधपुर के महाराजा अभयसिंह राठौड़ की अहमदाबाद की लड़ाई से सम्बन्धित है। अभयसिंह ने शाही आज्ञा प्राप्त कर अहमदाबाद के स्वतंत्र बने राज्यपाल सर विलंदखांन पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। गीत में लिखा है कि महाराजा अभयसिंह प्रलयकालीन समुद्र की भाँति उत्साह दोलित अपनी गजाश्व सेना को लेकर सर विलंदखांन को डुबाने के लिए उमड़ कर चला।

---

२. बगां — लड़ने जुटे। आराण — युद्ध। सगां — सम्बन्धी। ढाहिवा — ढहाने, ध्वस्त करने, नष्ट करने। खगां चै — तलवारों के। पांणि — बल, हाथ। गजढाल — हाथियों की सुरक्षा के लिए युद्ध काल में उनके मस्तकों पर लगाई जाने वाली ढाल। संघरण — संहार करने। अरियण — शत्रु। अजोणी सुतण — शिव। सुतण अजमाल — महाराजा अजितसिंह का पुत्र, वख्तसिंह।

३. गाहिवा — संहार करने। धज — तलवार, घोड़े, योद्धा। अभंग — प्रबल वीर। अणगंज — अजित योद्धा। गुमर — गर्व। समोसर — समान बल। प्रगिनास — । ऊजो — साहसधारी। दयंत — दैत्य। मछरि — मात्सर्य। डंवरी — आडंवर, ठाटवाट, समतुल्यता। महिदेव — शिव। गंगेव दूजे — अभिनव राव गांगा, वख्तसिंह।

४. खळ — वैरी। विसम गति — विषम गति, युद्ध। केवाणि — तलवार। वागै — चला कर। ऊबरै — बच रहा। अकळ — समर्थ। आगै — सम्मुख, सामने।

१. लंगस — समूह। ऊपटां — उमड़ा, सीमोल्लंघन कर चला। गज थटां — गज सेना। भुजळग लहर — तलवार रूपी लहर। जळ गहर — अगाध जल। प्रथीपत अभौ — महाराजा अभयसिंह। रौद — मुसलमान, शत्रु। सर विलंद — अहमदाबाद का विद्रोही राज्यपाल नवाब सर विलंदखांन। समंद — समुद्र।

सफर चक्र भमर साबळ धजर वेल सज, पमंग जुध मेळ धर उमंग पसरां ।
अभनमो गजण खळ खहण धण ऊझळे, अजण तण महण रण वहण असुरां ॥२॥
सोर झळ गाज जुध बाज अनहद सबद, कुंजरां पाज मद झरर कांदा ।
आवियो छोळ खग तोल जळनिध अभंग, जळण तळ बोळ घड़ मीरजाद ॥३॥
असुर सर विलंद भागो पड़े आंवळा, खग खहण हीच चत्र पौहर खहिया ।
आठ मो उदध लियो अभो अधपति, रोद हौदां सहित डूब रहिया ॥४॥

११९. गीत ठाकर सिवनाथसिंघ मेड़तिया रौ

महल सरबत भद्र बळ सिरै दरबार मझ, प्रथीपत जगो रिझवार परखै ।
सरब छोडी सिवै सगां रा साथ में, हाथ में लीयो सहतार हरखै ॥१॥

---

११९. गीतसार—उपरोक्त गीत ठाकुर शिवनाथसिंह रघुनाथसिंहोत मेड़तिया राठौड़ पर कथित है । गीत में गीतनायक की संगीत कला की भर्त्सना की गई है । क्योंकि उसने अपने कुल-धर्म युद्ध के स्थान पर संगीत को ग्रहण कर उसके बल पर जागीरादि प्राप्त करने का प्रयत्न किया था ।

---

२. सफर – ढाल । चक्र भमर – जल की चक्राकार घूमती लहर, भ्रमर चक्र । साबळ – भाला । धजर – तलवार, खांडा । वेल – लहर, तरंग । पमंग – अश्व । जुध मेळ – युद्ध में सम्मुख भिड़कर । पसरां – फैली । अभनमो गजण – अभिनव गजसिंह, महाराजा अभयसिंह गजसिंह का प्रपौत्र था, इसलिए उसके लिए अभिनव गजसिंह का प्रयोग किया है । खळ – शत्रु । खहण – युद्ध करने, गिराने के लिए । ऊझळे – उछलना, तटों को तोड़ कर बाहर बहना । अजण तण – महाराजा अजितसिंह-तनय अभयसिंह । महण – महार्णव, महासागर । वहण – बहाने । असुरां – मुसलमानों को ।

३. सोर झळ – तोप, बारूद की ज्वाला । गाज – गर्जना । बाज – वाद्य । अनहद– बेहद, अनाहत । कुंजरां – हाथियों । पात्र – मर्यादा, सीमा । कांदा – स्कंधों से, कीचड़ । छोळ – लहर । जळनिध – समुद्र । बोळ – डुबोने के लिए । घड़ – सेना ।

४. असुर – मुसलमान । भागो – रण छोड़ कर भाग गया । आंवळा – उलटा, पीछे की ओर, गर्वरहित होकर । खग – तलवार । खहण – युद्ध । हीच – प्रहार, युद्ध । चत्र पौहर – चार प्रहर । खहियां – लड़े । उदध – उदधि, समुद्र । अभो – महाराजा अभयसिंह । रोद – मुसलमान, शत्रु । हौदां सहित – गज-हौदे सहित ।

१. महल सरबत – सर्व ऋतु विलास महल । सिरै दरबार – सरह दरबार । मझ – में, बीच । प्रथीपत जगो – महाराज जगतसिंह कछवाहा जयपुर । रिझवार – आनन्द-विनोद । परखै – परीक्षा करे, देखता है । सिवै – गीतनायक शिवनाथ सिंह ने । सगां रा – सगे-संबंधियों के । सहतार – सितार । हरखै – हर्षित होकर ।

अंवपुर नाथ सूं बैठ सनमुख अडर, प्रगट सुरगाम उतपति पिछाणें।
कमंध गुणियण पणो थटण लागो कहर, तार चीणी पटण ताणें ॥२॥

पैरवां दियै रुघनाथ रौ पोत रो, दूसरा आंगळी दियै दांतां।
वजावण तणो अदभूत ढंग बरतियो, तायफा गया दब सुणै तांतां ॥३॥

बरतीया रागणी राग गायां बिनां, तानसैनी इलम लियो ताजो।
कूरमां देस रो पटो पावण कमंध, बजायो तंबूरा घटो बाजो ॥४॥

लोभ दरियाव री कहर फैली लहर, लोप अप किसब पर किसब लीया।
तान कर सुणावै तांन सूजा तणो, कांन मिजलस तणा त्रपत कीधा ॥५॥

---

२. अंवपुर – आमेर, जयपुर राज्य की प्राचीन राजधानी। सनमुख – सम्मुख। सुरगाम – स्वर समूह। उतपति – उत्पत्ति। पिछांणें – पहिचानता है। कमंध – राठोड़। गुणियण पणो – गुनिजनपन, संगीत कला-विज्ञता। थटण लागो – प्रगट करने लगा। कहर – विपत्ति में। चीणी पटण – चीन देश का वाद्य विशेष। तांणें – खींचने।

३. पैरवां – अंगुलियों के अग्रभाग को पैरवां कहते हैं। रुघनाथ गोड़वाटी प्रदेश के शासक रघुनाथसिंह मेड़तिया। वह शाही मनसबदार था। पोत रो – वंशधर, पौत्र। आंगळी – अंगुली। दियै – देते हैं। तणो – को। बरतियो – व्यवहार में लिया, करता। तायफा – नाच-गान की मण्डली। गया दब – दब गए। सुणै – सुनकर। तांतां – तन्तुवाद्य, तारवाद्य, सितार।

४. बरतीया – प्रयोग किया, व्यवहार में लिया। गायां विन – बिना गान गाये ही। तानसेनी – तानसेन वाला, गान विद्या। इलम – इल्म। ताजो – नवीन। कूरमां – कछवाहों के। पटो – जागीर में ग्राम, जागीरी ग्रामों की सनद का पत्र। तंबूरा घटो – तानपूरा की आकृति का। बाजो – वाद्य।

५. लोप – मिटा कर, उल्लंघन कर। अप किसब – अपना धंधा, स्वकर्त्तव्यकर्म। पर – दूसरों का, अपर। लीया – लिया, ग्रहण किया। तांन – टेर। सूजा-तणो – सूरजमल या सुजानसिंह का पुत्र, शिवनाथसिंह। मिजलस तणा – मजलिस का। त्रपत – तृप्त।

१२०. गीत महाराजा अभैसिंघ राठौड़ रौ अहमदाबाद रा झगड़ा रौ

बाजे त्रम्बाळां डंडाळां भ्रीह नवांकोटां चडेवांन,
आडीलीह सूरे बाज नांखीया उपाड़ि।
विलंदा री काळी घड़ा धकै चाढि हिंदू वडो,
राजा अभै धोळे दीह जीती राड़ि ॥१॥

घुरंतां नंगारा घाई घूमाई त्रिबधी घड़ा,
नरां बाग जोध रा ऊठाई धारि-नेम।
पातिसाहि फौजां मारि हींचाई लोहड़ां पूरां,
अजा रै अजानबाह पाई फतै अेम ॥२॥

---

१२०. गीतसार–उपरोक्त गीत जोधपुर के महाराजा अभयसिंह राठौड़ के अहमदाबाद के युद्ध का है। अभयसिंह ने गुजरात के राज्यपाल सर विलंद खांन को पराजित कर गुजरात का मनसब प्राप्त किया था। गीत में लिखा है कि अभयसिंह ने युद्धकारी वाद्य बजवा कर सर विलंदखांन की सेना पर तिरछी पंक्ति से आक्रमण किया और दिन-दहाड़े यवनों की विकट सेना का संहार कर विजय प्राप्त की।

---

१. वाजे – ध्वनित हुए। त्रम्बाळां – नगाड़े। डंडाळां – डंडों की चोट से। भ्रही – नगाड़ों के बजने की ध्वनि। नवांकोटां – मारवाड़ के प्रसिद्ध नवदुर्गों। आडी लीह – टेढ़ी पंक्ति, तिरछे प्रहार। बाज – घोड़े। नांखीया उपाड़ि – उठा कर वेग से झोंके। विलंदा री – नवाब सर विलंदखांन की। काळी घड़ा – प्रचण्ड सेना। धकै चाडि – सामने चढ़ा कर। अभै – अभयसिंह। धोळै दीह – धोले दिन। राड़ि – लड़ाई।

२. घुरंतां – नाद करते हुए। घाई – चोटें। त्रिबधी – तिरछे प्रहार देकर, गज, अश्व और पदाति। घड़ा – सेना। बाग – लगाम। ऊठाई – ऊपर खींची, ऊपर उठाई। हींचाई – घायल की, लड़ाई की। लोहड़ां – अस्त्र-शस्त्रों से। पूर– पूरित, पूर्ण। अजा रै – अजितसिंह के पुत्र ने। अजानबाह – आजानुबाहु। पाई फतै – विजय प्राप्त की।

जैतखंभ गाजीहरै छंछाळां पैंयंद जड़ै,
बहादरां लंकाळां पूतारै बामीबंध।
मीरां खानां निवाबां अजेरां जेर खागां मूंहे,
काढ़ीया विलंदां सेरां अफेरां कमंध ॥३॥

बाजतां जूझाऊ बाजा मीरजां सूं खेत बागा,
अभै राजा चौगुणी चढ़ायी खागां आब।
धणी आगै आखसी जबाब किसूं जोम धारि,
बाब छोड़ पीठ दीयां नीठगौ नवाब ॥४॥

देव आया जाती जितां धाड़ि धाड़ि राजा दीठ,
संघाती उपाडि बागां बागो अजासुत।
राड़ि माता मूगलां सूं भद्रजाती झाड़ि रूकां,
ताती घड़ा छाती चाड़ि लेगयौ तुरंत ॥५॥

---

३. जैतखंभ – विजय का स्तम्भ। गाजीहरै – गजसिंह का वंशधर। छंछाळां – हाथी, घोड़े। लंकाळां – वीरों, नरसिंहों। पूतारै – उत्साहित करे, ललकारे। बामीबंध – बांए पक्ष से पगड़ी बांधने वाले, राठौड़। अजेरां जेर – अजयी को जीतने वाले। खागां मूंहे – खड्गों की धाराओं के मुंह। काढ़ीया – निर्वासित किया, पराजित कर निकाले। अफेरां – नहीं मुड़ने वाले। कमंध – राठौड़।

४. बाजतां – ध्वनि करते। जूझाऊ – युद्धोत्साही। बाजा – वाद्य। मीरजां – अमीरजादों, मिर्जा पद वालों। खेत – रणक्षेत्र। बागा – लड़े। खागां – तलवारों। आब – कांति, चमक। धणी – स्वामी के। आखसी – कहेंगे। जोमधारि – घमण्ड में आकर। बाब – वतन (?)। नीठगौ – कठिनता से, भाग गया।

५. देव – देवता। जाती जितां – जितनी जातियों के। धाड़ि धाड़ि – धन्य धन्य। दीठ – देखकर। संघाती – साथियों सहित। उपाड़ि – उठाकर। बागां – अश्वों की लगामें। बागो – लड़ा। अजासुत – अभयसिंह। राड़ि – युद्ध। माता – बलवान्, उन्मत्त। भद्रजाती – श्रेष्ठ जाति के हाथी। झाड़ि रूकां – कृपाणाघातों से गिराकर। ताती – तेज, प्रचण्ड। घड़ा – सेना। छाती चाड़ि – छाती के सामने चढ़ाकर।

सकत्ती त्रिपत्ति करै हरां दै असुरां सीस,
सूरां वरे अछरां मूगलां हूरां साथि।
खंडा धणी राजा अभो पाराथ ज्यूं धरै खीज,
भांजिया छखंडां करै ऊजळो भाराथि ॥६॥

पातिसाह पूजै भुजां देखै कळां पळां पूर,
बूर खागां उडांणणा सूर महाबाह।
असूरां निबांबां चूर कोधी जैत राजा अभा,
सूरां में अंजसै सूर जसो गाजी साह ॥७॥

—पांचा मोतीसर री कह्यौ

१२१. गीत कचरा जसराजौत सलखावत रौ

केवाणां हूंत पारथी कटकां, लोभि विलागै भाग लीया।
कचरा तणा कमळ चा किरचा, कामाळी हेकठा कीया ॥१॥

---

१२१. गीतसार—उपरोक्त गीत राठोड़ योद्धा कचरा जसराज के पुत्र पर रचित है। कचरा ने मुसलमानों की सेना का सामना कर वीरगति प्राप्त की थी। गीत में लिखा है कि यशलोभी कचरा मुसलमानों की सेना से लड़कर टुकड़े-टुकड़े होकर धराशायी हुआ। महादेव ने बड़े परिश्रम से उसके मस्तक के टुकड़ों को एकत्रित कर अपनी मुण्डमाला के लिए मुण्ड तैयार किया।

---

६. सकत्ती – शक्ति, रणदुर्गा। त्रिपत्ति – तृप्त। हरां – रुद्रों को। असुरां – मुसलमानों के। सूरां – शूरवीरों को। वरे – वरण कर। अछरां – अप्सराएँ। हूरां – मुसलमान वीरों का वरण करने वाली यवन अप्सराएं। पाराथ – अर्जुन। खीज – नाराजी। भांजिया – संहार किये। ऊजळो – उज्ज्वल।

७. पूजै – पूजते हैं, सम्मान करते हैं। कळां – चमत्कार, कला। बूर – अस्थियों का चूर्ण। उडांणणा – उड़ाना। असूरां – मुसलमानों। चूर – चूर्णकर, दमितकर। जैत – विजय। अंजसै – गर्व करते हैं। सूर – महाराजा शूरसिंह। जसो – जसवंतसिंह। गाजीसाह – गजसिंह।

१. केवाणां हूंत – तलवारों से। पारथी – दूर से। कटकां – सेना। विलागै – लगकर। कमळ चा – मस्तक का। किरचा – छोटे-छोटे टुकड़े। कामाळी – शिव। हेकठा – एकत्रित, एक स्थान पर।

अखाहरौ चढ़ियौ अंगारां, जुधि आफळते जणोजण ।
रेख कण का हूंत महारुद्र, रज रज भेळो कियौ रिण ॥२॥

जवनां घड़ा जडग्गि जसावत, रूका चाढ़वीयौ करि रीस ।
उतवंग रज रज हूंत अंगारां, उतारतौ वियकौ ईस ॥३॥

सळखाहरा तणा तिण समहर, थाटां विहुं आचंभ थियौ ।
महादेव संग्रहि महि माथौ, किरि वरि हार सिंगार कियौ ॥४॥

१२२. गीत सांगीत राजा राजसिंघ गौड़ रौ

राजड़ सुजड़ अड़ीयळ खळ, गड़गड़ते निहंगे गवड़ ।
धजवड़ धवड़ झाट झड़ ओझड़, दड़वड़ सत्र साझण द्रबड़ ॥१॥

---

१२२. गीतसार—उपरोक्त गीत राजा राजसिंह गौड़ के युद्ध वर्णन का है। गीत में कवि ने लिखा है कि राजसिंह ने आकाश को ध्वनित करते नगाड़ों के युद्धकारी घोष के साथ तलवार उठाकर बलवान् शत्रुओं पर आक्रमण किया। परिणामस्वरूप रणभूमि में हाथी लुढ़कने लगे, शिव हंसने लगा, गृद्ध पंखों की फड़फड़ ध्वनि करते उड़ने लगे और योद्धाओं की टक्करों से लाशें गिरने लगीं।

---

२. अखाहरौ – अक्षयसिंह का पौत्र या वंशज। आफळते – टक्कर लेते। जणोजण – जन जन से, प्रति योद्धा से। कण का – कण कण, टुकड़े। हूंत – से। रजरज – कण-कण। भेळो – शामिल। रिण – युद्ध में।

३. जवनां घड़ा – यवन सेना। जडग्गि – तलवार। जसावत – जसराज का पुत्र कचरा। रूकां – तलवारों के। रीस – रोष, क्रोध। उतवंग – शीश। उतारतौ– उतारते हुए, उठाए हुए। वियकौ – थका, चकित हुआ। ईस – शिव।

४. सळखाहरा – राव सलखा का वंशज। समहर – युद्ध। थाटां – सेनाओं, दलों में। विहु – दोनों। आचंभ थियौ – आश्चर्य हुआ। संग्रहि – संग्रह कर। माथौ – शीश। किरवरि – कण कण, छोटे छोटे टुकड़े। हार – कण्ठाभूषण। सिंगार – शृङ्गार।

१. राजड़ – राजा राजसिंह। सुजड़ – तलवार, कटार। अड़ियळ खळ – हठ कर लड़ने वाले शत्रु। गड़गड़ते – गर्जना करते। निहगे – योद्धा, आकाश। गवड़– गौड़ क्षत्रिय। धजवड़ – तलवार। धवड़ – दौड़कर, प्रहार देकर। झाट झड़ – प्रवल प्रहार। ओझड़ – भयंकर। दड़बड़ – दौड़ने की ध्वनि। साझण – नाश करने के लिए। द्रबड़ – दौड़ कर।

भिड़ भड़ सुहड़ जोख रण झडफड़, घड़ बगतर उघड़ घड़ड़ ।
झड़ खग सुजड़ झाट झड़ अवझड़, पड़ड़ खंजर बड़ड़ ।।२।।

हड़हड़ हर हसत ग्रसत ग्रींध झड़फड़त, है हड़फड़त गय गुड़तगड़ ।
भड़ भिड़ भिड़त लड़त लुथ लड़लड़, तड़ड़ तड़ तड़फत त्रीजड़ ।।३।।

दड़वड़ पळ दरड़ दरड़ पळ दड़वड़, रुंड रड़वड़ घाइ घड़ तीघड़ ।
घाइ घड़ा त्रिघड़ त्रिघड़ घड़ घाइ घड़, भाइ भाइ अरजण तण भड़ ।।४।।

१२३. गीत जगनाथ कल्याणदासौत राठौड़ रौ

मछर कोट मन मोट राठौड़ सैयदां मूंहां, बाजीयां लोहड़ै हूंत बहलौ ।
बाथ भरतौ खळां आवीको सहस बळ, पाथ जिम जोध जगनाथ पहलौ ।।१।।

---

१२३. गीतसार—उपर्युक्त गीत में कवि ने जगन्नाथ राठौड़ के मंडोर स्थान पर सैयदों तथा पोकरण स्थान पर जैसलमेर के भाटियों के साथ लड़ने का वर्णन किया है। कवि का कथन है कि जगन्नाथ ने मंडोर में सैयदों की सेना पर अन्य साथी योद्धाओं से आगे बढ़कर प्रहार किया। उस समय वह ऐसा आभासित हुआ, मानो महाभारत का योद्धा अर्जुन ही मंडोर में लड़ने लगा हो।

---

२. सुहड़ — सुभट। जोख — प्रसन्नता, रुचि। घड़ — शरीर। बगतर — बख्तर, कवच। उघड़ — खुलकर। फड़ड़ — फटने या सिले हुए धागे टूटने की ध्वनि। झड़खग — तलवार की झड़ी। अवझड़ — भयानक। खंजर — तलवार। बड़ड़ — ध्वनि विशेष।

३. हड़हड़ — हड़हड़ की ध्वनि, अट्टहास। हर — शिव। हसत — हँसते हैं। ग्रसत — खाते हुए। ग्रींध — गद्ध पक्षी। है — हय, घोड़े। गय — हाथी। गुड़त — लुढ़कते हैं। गड़ — धंसते हैं, भाले चुभते हैं। लुथ — लोथे, गुत्थमगुत्थी। तड़ — ध्वनि। त्रीजड़ — तलवार।

४. पळ — मांस। दरड़ दरड़ — वेग से गिरनें पर उत्पन्न ध्वनि। रुंड — मस्तक, मुण्ड। रड़वड़ — लुढ़कते, टक्कर खाते। घाई — चोट। तीघड़ — गज, अश्व और पैदल सेना। अरजण तण — अर्जुनसिंह का पुत्र, राजसिंह।

१. मछर कोट — गर्व का समूह। मनमोट — उदार मना। मूंहां — सामने। बाजीयां — शस्त्रों के प्रहार होते। लोहड़ै — लोहा, हथियार। हूंत — से। बहलौ — सत्वरता से, उतावला। बाथ भरतौ — भुजपाश में बांधता। खळां — शत्रुदल। पाथ — पार्थ, अर्जुन। जोध — योद्धा।

मंडोवर वाजीयौ ज्यार सैयदां मूंहां, धार मुंहि त्यार अघप घरतो।
सोहियौ भीम रौ बंधव आखाड़सिंध, भीम रा बंधव जिम बाथ भरतो ॥२॥

आहुड़े खेड़ पौह भाटियां ऊपरैं, झींक पड़ि ओझड़ां भड़ां झटके।
पांड सुत सारिसा भुजा डंड दीठ पौढ़ि, कलावत तणा अणबीह कटके ॥३॥

विहसितौ पंडवा वार पासे वीहूं, फाबीयौ वीर चौधार फूटे।
जगड़ करि अचड़ अरिजण जिहीं, जीवियौ जोमरद बडे भाराथ जूटे ॥४॥

१२४. गीत ईसरदास वीरमदेवौत राठौड़ रौ

कळिहेवे गढ़ चढ़ं न कूंजर, आखै साह जलाल अकब्बर।
भारथ भीम भुजाळ भयंकर, ऊभौ खंड तणै मुंहि ईसर ॥१॥

---

१२४. गीतसार—उपर्युक्त गीत ईश्वरदास वीरमदेव के पुत्र का है। ईश्वरदास ने बादशाह अकबर के विरुद्ध चित्तौड़ दुर्ग पर जूझकर प्राणोत्सर्ग किया था। गीतकार ने बादशाह के मुख से ईश्वरदास की प्रशंसा करवाते हुए लिखा है—'बादशाह अकबर ने कहा कि दुर्ग की रक्षा के लिए जब तक भीम तुल्य वीर ईश्वरदास सामने डटा हुआ है तब तक शाही गज सेना किले में प्रवेश नहीं कर सकेगी।

---

२. ज्यार – जा कर। धार मुंहि – तलवार की धारा के सम्मुख। अघप – अतृप्त, भूखा। घरतो – रखता हुआ। सोहियौ – शोभित हुआ। आखाड़सिंघ – अनेक युद्धों का विजेता, महान् योद्धा। भीम रौ बंधव – अर्जुन। जिम – ज्यों।

३. आहुड़े – जोश में आकर भिड़े, टक्कर ले। खेड़पौह – खेड़ का पति, राठौड़ योद्धा। राठौड़ों की प्राचीन राजधानी खेड़ स्थान में थी, इसलिए राठौड़ खेड़पौह, खेड़पति एवं खेड़ेचा कहलाते हैं। झींक – प्रहारों के अनवरत प्रहार। ओझड़ां – अपार, भयंकर। भड़ां – योद्धाओं। झटके – प्रहार। पांड सुत – पाण्डव अर्जुन। सारिसा – सदृश। भुजाडंड – भुज दण्ड। पौढ़ी – पोकरण स्थान। कलावत – कल्याणदास का पुत्र। अणबीह – निडर। कटके – सेना।

४. विहसितौ – जोश में भरकर, उत्साहित होकर। पासे वीहूं – दोनों पार्श्व, दोनों पक्षों में। फाबियौ – शोभित हुआ। चौधार – चौधारा भाला। फूटे – शरीर को फोड़ कर पार निकलते। जगड़ – जगन्नाथ। अचड़ – श्रेष्ठ कार्य, सबसे बढ़ा-चढ़ा कार्य। अरिजण – अर्जुन। जोमरद – बलवान्। जूटे – जुतकर, लड़कर।

१. कळिहेवे – युद्ध में। कूंजर – कुंजर, हाथी। आखै – कहता है। भारथ – महाभारत में। भुजाळ – भुजबली। ऊभौ – खड़ा, डटा हुआ। मुंहि – सामने, मुंह आगे। ईसर – ईश्वरदास राठौड़।

पटहथ ऊचंडतौ भुज पांणे, वाहां प्रलंभ भेदियौ बांणे।
ईखे साह नयण आपाणें, जोधाहरौ विकोदर जांणे ॥२॥

अकबर पूतारै आराणें, वीरउत सरस बांण केवांणे।
खोंद गयंद हूंतां खुरसांणे, विथका लसकर तांणि विनांणे ॥३॥

सो सुरतांण अंगोअंग सारां, आवट-कूटौ करौ अयारां।
धूहड़ पंड चहिनौं धारां, पछै चढ़ौ गज दुरंग पगारां ॥४॥

१२५. गीत राजसिंघ बिसनदासौत राठौड़ रौ

किलंब सालुळै भळभळै सार कळ ऊकळै, वळवळै दळै दिखणाद वाये।
बाजुवां चाढ़ि भड़ निवड़ धूणै विजड़, राजड़े मेळियौ दईव राये ॥१॥

---

१२५. गीतसार--उपरोक्त गीत विशनदास के वंशज राजसिंह राठौड़ के दक्षिण में लड़े गए युद्ध से सम्बन्धित है। गीत में वर्णन है कि यवन सेना चारों ओर से राठौड़ सेना को घेर कर युद्धार्थ आगे बढ़ी उस समय युद्ध की भयंकर स्थिति में राजसिंह ने अपने घोड़े को बढ़ा कर मुसलमानों के रक्षित किले पर आक्रमण किया।

---

२. पटहथ – हाथी, योद्धा। ऊचंडतौ – उछालता, ऊपर उठा कर फेंकता। भुज पांणे – भुजबल से। बाहां प्रलंभ – दीर्घ बाहु। भेदियौ – भेदित। ईखे – देखे। आपांणे – अपने। जोधाहरौ – राव जोधा का वंशज। विकोदर – वृकोदर, भीम।

३. पूतारै – ललकारे, उत्साहित करे। आराणें – युद्ध में। वीरउत – वीरमदेव का पुत्र। केवांणे – तलवार, धनुष। खोंद – मुसलमान। गयंद – हाथी। हूंतां – से। खुरसांणे – तलवार, घोड़े। विथका – थक गए, भयभीत। लसकर – सेना। तांणि – खेंच कर।

४. अंगोअंग – अंग प्रति अंग, पूर्ण। सारां – तलवारों, शस्त्रों, समस्त। आवट कूटौ – संहार, विनाश। अयारां – वैरियों का। धूहड़ – धूहड़ का वंशज। पंड – मुसलमान, बादशाह, शरीर। धारां – तलवार की धारें। दुरंग – दुर्ग पर। पगारां – पैरों से।

१. किलंब – मुसलमान। सालुळै – चले। भळभळै सार – लोहा चमकाते, तलवारें चमकाते। कळ ऊकळै – तोपें आग उगलती हैं। वळवळै – चारों ओर से, बारम्बार। दळै – सेना। बाजुवां – भुज, पार्श्व भाग। निवड़ – महान्, बड़ा। धूणै – घुमाकर। विजड़ – तलवार। मेळियौ – टकराया, मिलाया। दईव राये – योद्धा, राजा।

ऊजळां भूबळां छळां उजवाळियो, विसन री दळां दिखणाद वाळा ।
लाख सूं खड़ै खग ऊडीये लोहड़े, चापड़े वाजीयो बांधि चाळां ॥२॥
मारुवा राव छळि भीच वेढीमणों, झाड़ि खळ साबळां हूल झटकां ।
हांकिया टोळ करि चोळ थाहर लिया, किया हीलोळ घमरोळ कटकां ॥३॥
अभिनमै वीर खग झाट दीयंतै अरि, भांजीया भवस खत्रवाट भेटो ।
हूवो रिणथंभ दिखणाद भारथ हुवै, बाप जिम जीवतो-संभ बेटो ॥४॥

१२६. गीत भगवानदास उदावत राठौड़ रो

कीयो रामांयण लंक कुरखेत भारथ कीयो, ओथ कोइ पेखियो भींच ओहो ।
त्रिनयण तरण नारद पूछै त्रिण्हे, कहो भगवंत भगवंत केहो ॥१॥

---

१२६. गीतसार--गीतकार ने ऊपर कथित गीत में भगवादास नामक राठौड़ योद्धा के युद्ध-पराक्रम का वर्णन किया है । गीत में शिव, सूर्य और नारद, भगवान् विष्णु से जिज्ञासा पूर्वक प्रश्न करते हैं- हे भगवन्त ! आप ने रामावतार में राम-रावण और कृष्णावतार में कौरव-पाण्डवों के युद्ध में भाग लिया, किन्तु उन युद्धों में भगवानदास राठौड़ की तरह लड़ने वाले किसी योद्धा को देखा हो, तो हमें बताइये ।

---

२. भूबळां – भूरि बल, भुज बल । छळां – युद्ध । खड़ै – प्रस्थान कर । खग – तलवार । ऊडीये – उड़ते, प्रहार होते । लोहड़े – लोहा, शस्त्र । चापड़े – खुले मैदान में, युद्ध में । वाजीयो – लड़ने लगा । बांधि चाळां – पंक्तिबद्ध होकर, वस्त्र का छोर बांध कर ।

३. मारुवा राव – मारवाड़ के राजा, अभयसिंह (?) । छळि – युद्ध । भीच – योद्धा । वेढीमणो – बलवान, जोरावर । झाड़ि – मार कर, गिरा कर । साबळां – भालों । हूल – भाले का प्रहार विशेष, शस्त्र विशेष । झटकां – प्रहारों । टोळ – समूह । चोळ – लाल, आनंद से । थाहर – दुर्ग । हीलोळ – दोलित, चलायमान, तरंगित । घमरोळ – घमासान युद्ध । कटकां – सेनाओं को ।

४. अभिनमै वीर – अभिनव वीरमदेव । खग झाट – तलवार के झटके । अरि – शत्रु । भांजीया – भंजित किये । भवस – संसार । खत्रवाट – क्षत्रित्व के मार्ग । रिणथंभ – रण में स्तम्भ-सा । भारथ – युद्ध । बाप – पिता । जीवतो संभ – युद्ध में घायल होकर जीवित रहने वाला योद्धा । वेटो – पुत्र ।

१. लंक – लंका में । कुरखेत – कुरुक्षेत्र । भारथ – महाभारत । ओथ – वहाँ । पेखियो – देखा हो । भींच – योद्धा । ओहो – ऐसा, इस तरह का । त्रिनयण – शिव । तरण – सूर्य । त्रिण्हे – तीनों ने । भगवन्त – हे भगवन् । भगवंत – भगवानदास । केहो – कैसा, कौनसा ।

महारुद्र महाग्रह महामुणे, महाजुध कीया थें महादळ मारि।
कहो करणाकरण पूछजै तो कन्हा, ऊथ को ऊदउत तणी उणिहारि ॥२॥
दइत कपि भूबतां पंड कुर देखीया, कहि रुद्र कहि रवि विकळकांमी।
गांगहर आभरण जिसो गजदळ गिळण, साख दै पूछियो आख सांमी ॥३॥
सांकीचर सहसकर बंभीग्रर सांभळो, राव कंमध भांजतै साथ रहियो।
दइत दळ आप दळ नको हर दाखियो, कैरवै पंडवै नको कहीयो ॥४॥

—दुरसा आढ़ा री कह्यौ

१२७. गीत राजा मानसिंघ भगवंतदासोत कछवाहा रौ

गौ साजै नाद अगंजिया गांजे, सांभलियो दीठो संसार।
मांनै हीन्दू तुरक मारिया, मांनो कोई न सकियो मार ॥१॥

---

१२७. गीतसार—उपरोक्त गीत आमेर के कछवाहा राजा मानसिंह भगवंतदासोत पर कथित है। यह गीत कवि ने मानसिंह की मृत्यु पर उसकी वीरता एवं पराक्रम का वर्णन करते हुए लिखा है। गीत में कहा गया है कि मानसिंह ने शाही सल्तनत के प्रति बगावत करने वाले हिन्दू और मुसलमान विद्रोहियों का दमन कर ठिकाने लगा दिये। मानसिंह के सामने रणस्थल में डट कर उससे किसी ने भी विजय नहीं प्राप्त की।

---

२. महाग्रह – सूर्य। महामुणे – महामुनि, नारद। महाजुध – महा भारत। थें – आपने। मारि – मार कर। करणाकरण – करुणाकर। तो कन्हा – आप से। ऊथ – वहाँ। को – कोई। ऊदउत – उदयसिंह तनय, भगवानदास। तणी – की। उणिहारि – समान, तुल्य आकृति।

३. दइत – दैत्य। कपि – बानर, बन्दर। भूबतां – लड़ते। पंड – पाण्डव। कुर – कौरव। विकळकांमी – नारद। गांगहर – गांगा के वंशजों के। आभरण – आभूषण, कुलतिलक। गजदळ – गज-सेना। गिळण – निगलना, संहार करना। साख – साक्षी, प्रमाण। आख – कह। सांमी – हे स्वामी।

४. सांकीचर – शंखियाभक्षक, विषपेयी, शिव। सहसकर – सहस्त्र किरण, सूर्य। बंभीग्रर – नारद। सांभळो – सुनो। कमंध – राठौड़ के। भांजतै – संहार करते समय। नको – कोई नहीं। हर – हरि, विष्णु। दाखियो – कहा। कैरवै पंडवै – कौरवों-पाण्डवों में भी।

१. गौ – गया। अगंजियां – अपराजितों को। गांजे – जीते। सांभळियो – सुना है। दीठो – देखा। मांनै – राजा मानसिंह ने, मानसिंह को। सकियो मार – मार नहीं सका।

भगवन्त सुतन सत्रां दळ भांगा, निरदळिया म्रितलोक नर।
कूरम चै न घाळियौ किण ही, काळ विहीणौ चाळ कर ॥२॥
राजा राव जीपियौ राजा, पतसाही दाबण प्रगट।
अरि गांजियौ नह आंबेरौ, घड़ियौ जिण भांजियौ घट ॥३॥
किरमर वीर पुहम कछवाहौ, मांन गयौ महपतियां मेट।
अरि हंस रह्या पेट आपांणै, पर हंस रहे अखां चै पेट ॥४॥

१२८. गीत वांकीदास करमसियोत राठौड़ रौ

अेला वेध राठौड़ कछवाह वागा अड़ै, भिड़ै सूरा तरैं असत भागै।
वांकड़ै सांकड़ै घणै वणियौ विचै, ओरीयौ वाज महाराज आगै ॥१॥

---

१२८. गीतसार—उपरोक्त गीत राठौड़ों की कर्मसिंहोत शाखा के योद्धा वांकीदास पर कथित है। वांकीदास ने महाराजा सवाई जयसिंह और राजाधिराज वख्तसिंह के मध्य हुए गगवाणा के युद्ध में वख्तसिंह की ओर से भाग लिया था। गीत में लिखा है कि पृथ्वी पर आधिपत्य के प्रश्न को लेकर राठौड़ और कछवाहा लड़ने को तत्पर हुए। जब शूरवीर तो परस्पर लड़ने लगे और कायर मैदान छोड़कर भागने लगे, उस समय युद्ध की विषम वेला में वांकीदास ने वख्तसिंह के पक्ष में अपने घोड़े को आगे बढाया।

---

२. भगवन्त सुतन — भगवन्तदास के पुत्र मानसिंह ने। सत्रां दळ — शत्रुओं की सेना। भांगा — नाश किये। नरदळिया — दमन किये। म्रितलोक — मृत्युलोक, संसार। कूरम चै — कछवाहा के, मानसिंह के। घाळियौ — डाला। किण ही — किसी ने भी। काळ — मृत्यु, यमराज। विहीणौ — विहीन, विना। चाळकर — वस्त्राञ्चल पर हाथ डालकर, छेड़छाड़ कर।

३. जीपियौ — जीत कर गया, विजित कर गया। दाबण — अधिकार में करने। अरि — शत्रु। गांजियौ — नाश किया, नाश कर सके। आंबेरौ — आमेर के राजा मानसिंह। घड़ियौ — निर्माण किया, बनाया। भांजियौ — नष्ट किया। घट — शरीर।

४. किरमर — तलवार। पुहम — पृथ्वी पर। महपतियां — राजाओं। मेट — संहार, नाश करने वाला, प्रमुख। अरि हंस — शत्रुओं के प्राण। आपांणै — अपने, उनके।

१. अेला — पृथ्वी। वेध — युद्ध। वागा — लड़ने लगे। अड़ै — हठ ठान कर। तरैं — तब। असत — असत्य, कायर। वांकड़ै — वांकीदास ने। सांकड़ै — संकीर्ण संकट में। घणै — घने, अत्यधिक। ओरीयौ — धकेला, बढ़ाया। वाज — वाजि, घोड़ा। आगै — अग्रिम।

तड़िछवा खळां खगि अभंगि मोहण तणै, सांमध्रम पणै आचां संमाहे।
अजावत आगळी घांण सत्र उतारण, मेळीयौ तुरी आराण मांहे ॥२॥

सांम चै कांम वधि तांम नवसाहसै, मीढ़ रा हुवंता बिमूह मोड़ो।
गजनहर आगळी झाड़ते सत्रां गज, घातियौ राड़ि ऊपाड़ि घोड़ो ॥३॥

कांम बखतेस चै भांजते कूरमां, प्रथी मां वाह सौभाग पायो।
वाहि विहाड़ि वधि पूरि जळ चाडि वंस, अभिनवौ करमसी कुसळ आयो ॥४॥

—कीरतदान बारहठ रौ कह्यौ

१२६. गीत जैतसिंघ करमसियौत राठौड़ रौ

कठठि थाट नागांण आंबेर चडिया कड़ै, धोम दारू धिकै अराबां धड़हड़ै।
कांम रै बहादर लोहड़ै कोरड़ै, जुड़ण अरियांह असि मेळिया जैतड़ै ॥१॥

---

१२६. गीतसार—उपरोक्त गीत राजाधिराज वख्तसिंह नागौर के सामंत जैत्रसिंह राठौड पर रचित है। गीतनायक ने वख्तसिंह का पक्ष ग्रहण कर गगवाणा के युद्ध क्षेत्र में जयपुर की सेना से युद्ध किया था। गीत में दोनों ओर की सेनाओं में तोपों का युद्ध प्रारंभ होने पर गीतनायक द्वारा अपना घोड़ा आगे बढ़ा कर शस्त्र-प्रहार करने का वर्णन हुआ है।

---

२. तड़िछवा – संहार करने, काटने-मारने के लिए। खळां - वैरियों को। खगि – तलवार से। अभंगि – वीर, दृढ़व्रती। मोहण तणै – मोहनसिंह के पुत्र वांकीदास ने। सांमध्रम – स्वामि-धर्म। आचां – हाथों में। संमाहे – उठाकर, सम्हाल कर। अजावत – अजितसिंह के पुत्र, वख्तसिंह के। आगळी – सम्मुख, पहिले, आगे। घाण – नाश, युद्ध, मंथन। सत्र – शत्रुओं। मेळियौ – मिलाया, शामिल किया। तुरी – अश्व। आराण माहे – युद्धस्थल में।

३. सांम चै – स्वामी के। वधि - वढ़ कर। तांम – तब, उस समय। नवसाहसै – राठौड़ वीर वांकीदास, नव सहस्र ग्रामों वाले, नवीन उत्साह से। मीढ़रा – बराबरी वाले। बिमूह – विमुख, वापिस फिरते। मोड़ो – फिरने की क्रिया का भाव। गजनहर–गजसिंह के पौत्र, वख्तसिंह। झाड़ते – गिराते, मारते। घातियौ – डाला, बढाया। राड़ि – युद्ध में। ऊपाड़ि – उठाकर, तेजी से चला कर।

४. भांजतै – संहार करते। प्रथी मां – पृथ्वीलोक में। वाह – वाहवाही। वाहि – चला कर, बहा कर। विहाड़ि – विनाश कर। जळ चाडि वंस – कुल को यशस्वी बनाकर। अभिनवौ – अभिनव। कुसळ – सकुशल।

१. कठठि – कठठ की ध्वनि करते हुए आगे बढकर। थाट – सेना, समूह। नागांण – नागौर। चड़िया कड़ै – नजदीक हुए, पास चढे, सामने हुए। धोम – धूम्र। दारू – बारूद। धिकै – धधक कर। अराबां – तोपें। धड़हड़ै – धड़धड़ की ध्वनि। लोहड़ै कोरड़ै – तलवार, लोहे के हत्थे का शस्त्र। अरियांह – शत्रुओं से। असि – घोड़े। मेळिया – आपस में सम्मिलित किये। जैतड़ै – जैत्रसिंह ने।

भगवन्त सुतन सत्रां दळ भांगा, निरदळिया म्रितलोक नर।
कूरम चै न घाळियो किण ही, काळ विहोणो चाळ कर ॥२॥
राजा राव जीपियो राजा, पतसाही दावण प्रगट।
अरि गांजियो नह आंबेरो, घड़ियो जिण भांजियो घट ॥३॥
किरमर वीर पुहम कछवाहो, मांन गयो महपतियां मेट।
अरि हंस रह्या पेट आपांणे, पर हंस रहे अरां चै पेट ॥४॥

१२८. गीत वांकीदास करमसियोत राठौड़ रौ

अेला वेघ राठौड़ कछवाह वागा अड़े, भिड़े सूरा तरैं असत भागै।
वांकड़ै सांकड़ै घणैं वणियो विचे, ओरीयो वाज महाराज आगै ॥१॥

---

१२८. गीतसार—उपरोक्त गीत राठोड़ों की कर्मसिहोत शाखा के योद्धा वांकीदास पर कथित है। वांकीदास ने महाराजा सवाई जयसिंह और राजाधिराज बख्तसिंह के मध्य हुए गगवाणा के युद्ध में बख्तसिंह की ओर से भाग लिया था। गीत में लिखा है कि पृथ्वी पर आधिपत्य के प्रश्न को लेकर राठोड़ और कछवाहा लड़ने को तत्पर हुए। जब शूरवीर तो परस्पर लड़ने लगे और कायर मैदान छोड़कर भागने लगे, उस समय युद्ध की विषम वेला में वांकीदास ने बख्तसिंह के पक्ष में अपने घोड़े को आगे बढाया।

---

२. भगवन्त सुतन — भगवन्तदास के पुत्र मानसिंह ने। सत्रां दळ — शत्रुओं की सेना। भांगा — नाश किये। नरदळिया — दमन किये। म्रितलोक — मृत्युलोक, संसार। कूरम चै — कछवाहा के, मानसिंह के। घाळियो — डाला। किण ही — किसी ने भी। काळ — मृत्यु, यमराज। विहोणो — विहीन, विना। चाळकर — वस्त्राञ्चल पर हाथ डालकर, छेड़छाड़ कर।

३. जीपियो — जीत कर गया, विजित कर गया। दावण — अधिकार में करने। अरि — शत्रु। गांजियो — नाश किया, नाश कर सके। आंबेरो — आमेर के राजा मानसिंह। घड़ियो — निर्माण किया, बनाया। भांजियो — नष्ट किया। घट — शरीर।

४. किरमर — तलवार। पुहम — पृथ्वी पर। महपतियां — राजाओं। मेट — संहार, नाश करने वाला, प्रमुख। अरि हंस — शत्रुओं के प्राण। आपांणे — अपने, उनके।

१. अेला — पृथ्वी। वेघ — युद्ध। वागा — लड़ने लगे। अड़ै — हठ ठान कर। तरैं — तब। असत — असत्य, कायर। वांकड़ै — वांकीदास ने। सांकड़ै — संकीर्ण संकट में। घणैं — घने, अत्यधिक। ओरीयो — धकेला, बढ़ाया। वाज — वाजि, घोड़ा। आगै — अग्रिम।

तड़िछवा खळां खगि अभंगि मोहण तणै, सांमध्रम पणै आचां संमाहे।
अजावत आगळी घांण सत्र उतारण, मेळीयौ तुरी आराण मांहे ॥२॥

सांम चै कांम वधि तांम नवसाहसै, मीढ़ रा हुवंता बिमूह मोड़ो।
गजनहर आगळी झाड़ते सत्रां गज, घातियौ राड़ि ऊपाड़ि घोड़ो ॥३॥

कांम बखतेस चै भांजते कूरमां, प्रथी मां वाह सौभाग पायो।
वाहि विहाड़ि वधि पूरि जळ चाडि वंस, अभिनवौ करमसी कुसळ आयो ॥४॥

—कीरतदान बारहठ रौ कह्यौ

१२९. गीत जैतसिंघ करमसियौत राठौड़ रौ

कठठि थाट नागांण आंबेर चडिया कड़ै, धोम दारू धिकै अराबां धड़हड़ै।
कांम रै बहादर लोहड़ै कोरड़ै, जुड़ण अरियांह असि मेळिया जैतड़ै ॥१॥

---

१२९. गीतसार—उपरोक्त गीत राजाधिराज वख्तसिंह नागौर के सामंत जैत्रसिंह राठौड पर रचित है। गीतनायक ने वख्तसिंह का पक्ष ग्रहण कर गगवाणा के युद्ध क्षेत्र में जयपुर की सेना से युद्ध किया था। गीत में दोनों ओर की सेनाओं में तोपों का युद्ध प्रारभ होने पर गीतनायक द्वारा अपना घोड़ा आगे बढ़ा कर शस्त्र-प्रहार करने का वर्णन हुआ है।

---

२. तड़िछवा – संहार करने, काटने-मारने के लिए। खळां – वैरियों को। खगि – तलवार से। अभंगि – वीर, दृढव्रती। मोहण तणै – मोहनसिंह के पुत्र वांकीदास ने। सांमध्रम – स्वामि-धर्म। आचां – हाथों में। संमाहे – उठाकर, सम्हाल कर। अजावत – अजितसिंह के पुत्र, वख्तसिंह के। आगळी – सम्मुख, पहिले, आगे। घाण – नाश, युद्ध, मंथन। सत्र – शत्रुओं। मेळियौ – मिलाया, शामिल किया। तुरी – अश्व। आराण माहे – युद्धस्थल में।

३. साँम चै – स्वामी के। वधि – वढ़ कर। तांम – तब, उस समय। नवसाहसै – राठौड़ वीर वाँकीदास, नव सहस्र ग्रामों वाले, नवीन उत्साह से। मीढ़रा – बराबरी वाले। बिमूह – विमुख, वापिस फिरते। मोड़ो – फिरने की क्रिया का भाव। गजनहर– गजसिंह के पौत्र, वख्तसिंह। झाड़ते – गिराते, मारते। घातियौ – डाला, वढाया। राड़ि – युद्ध में। ऊपाड़ि – उठाकर, तेजी से चला कर।

४. भांजतै – संहार करते। प्रथी मां – पृथ्वीलोक में। वाह – वाहवाही। वाहि – चला कर, बहा कर। विहाड़ि – विनाश कर। जळ चाडि वंस – कुल को यशस्वी बनाकर। अभिनवौ – अभिनव। कुसळ – सकुशल।

१. कठठि – कठठ की ध्वनि करते हुए आगे बढकर। थाट – सेना, समूह। नागांण – नागौर। चड़िया कड़ै – नजदीक हुए, पास चढे, सामने हुए। धोम – धूम्र। दारू – बारूद। धिकै – धधक कर। अराबां – तोपें। धड़हड़ै – धड़धड़ की ध्वनि। लोहड़ै कोरड़ै – तलवार, लोहे के हत्थे का शस्त्र। अरियांह – शत्रुओं से। असि – घोड़े। मेळिया – आपस में सम्मिलित किये। जैतड़ै – जैत्रसिंह ने।

वेढ़ दहुं दळां मचि वांण गोळा वहै, खड़खड़ै कायर सूर बगतरे खहै।
गळ पळ भरैवा ग्रीभणी गहगहै, मेळियौ लखावत वाज सारां मंहे ॥२॥
समर मंडिया कहर ववे छल सांम रै, कमधजां आभरण मामले कांम रै।
दुजड़ वाहतै करमसी दूसरै, मेळियौ हजारी लाख दळ ऊपरै ॥३॥
घमोड़ै सावळां ढाहवै गजढ़लां, विजड़ खावै कीया केवियां वरघळां।
भांजि जैसींघ दळ कुसळ आयौ भलां, गवाड़ी जैत री जैत मारू गलां ॥४॥

—कीरतदान बारहठ री कह्यौ

१३०. गीत सिवदानसिंघ सबळसिंघोत राठौड़ री

महावाह नरनाह वांकां भड़ां मेळीया, लड़ैवा ओभड़ां आभ लागै।
साखां सिरताज वंस लाज ग्रहियां सिवै, ओरीया वाज महाराज आगै ॥१॥

---

१३०. गीतसार—उपर्युक्त गीत शिवदानसिंह राठौड़ योद्धा पर रचित है। गीत में गीतनायक के नागौर के शासक वख्तसिंह के पक्ष में युद्ध में भाग लेने का वर्णन है। कवि ने लिखा है कि जब दोनों पक्षों की ओर से तोपों के गोलों की आवाज से पृथ्वी और आकाश कांपने लगे तथा कायरों के हृदयों में कंपकंपी उत्पन्न होने लगी, उस समय निर्भय वीर शिवदानसिंह ने कछवाहा शत्रुओं की सेना पर आक्रमण किया।

---

२. वेढ़ – युद्ध। वांण – तोपों के, तीर। खड़खड़ै – कंपन, खड़खड़ की ध्वनि। सूर – बहादुर। बगतरे – बख्तर, कवच। खहै – टकराने लगे। गळ पळ – मांस पिण्ड। ग्रीभणी – गृद्धिनी। गहगहै – प्रफुल्लित हुए। लखावत – लक्ष्मीदास के पुत्र ने। सारां मंहे – तलवार की धाराओं में।

३. कहर – विपत्ति में। ववे – आगे बढ़कर। छळ – लिए, युद्ध। सांम रै – स्वामी के। कमधजां – राठौड़ों के। आभरण, आभूषण, शिरोमणि। दुजड़ – तलवार। वाहतै – प्रहार करते। मेळियौ – मिलाया। हजारी – घोड़े का नाम।

४. घमोड़ै – प्रहार देकर। सावळां – भालों के। गजढ़ळां – हाथियों के मस्तकों की रक्षा का उपकरण। विजड़ – तलवार। खावै – छिन्न-भिन्न। केवियां – शत्रुओं के। वरघळा – टुकड़े, खण्ड। गवाड़ी – गान करवा कर। जैत री – विजय की। जैत मारू – जैत्रसिंह राठौड़। गलां – यश-कथा।

१. वांकां भड़ां – बांकुरे योद्धाओं ने। मेळीया – मिलाये, सम्मिलित किये, लड़ने के लिए मिले। लड़ैवा – लड़ने हेतु। ओभड़ा – प्रहार, तिरछी चोटें। आभ लागै – आकाश के जा लगे। साखां – राठोड़ों की तेरह शाखाओं का। सिरताज – शिरमौर। ग्रहियां – ग्रहण किये, धारण किये। सिवै – शिवदानसिंह ने। ओरीया – झोके, धकेले। वाज – अश्व। आगै – अग्रिम, सामने।

घांम पड़ि अराबां गौम पुड़ धड़हड़ै, खड़हड़ै कायरां रह्या गम खाहि।
वड़-वड़े तुरी सबळेस तण वीरवर, भेळियौ कूरमां गजडंमर मांहि ॥२॥
मंडै वखतेस जैसींघ खत्रवाट मगि, दहुंवळ सिळगि नभ विळगि दारू।
हणी खग घांणि रिण ढांणि कीधा निहसि, मेळ असि कीयौ घमसांणि मारू ॥३॥
वाहि विहाड़ि वधि पूर जळ चाडि वंस, थूर अरि जीवतां संभ थायौ।
मंडै हर गजन छळ अभनभौ भारमल, असंक दळ ताड़ि खग भाड़ि आयौ ॥४॥

—कीरतदान बारहठ रौ कह्यौ

१३१. गीत संगरामसिंघ ऊदावत राठौड़ रौ

वागा अम्बाळां जूझाऊ डंकां वंकां जोध लागा वौमि,
पंका बाण गोळां धुवै सूं ढंका पतंग।
सांम चाड वड़ वड़ै अगंजी असंका सूर,
अड़ै सांगो लोहां अंका आंकवा अभंग ॥१॥

---

१३१. गीतसार—ऊपरांकित गीत उदावत सरदार संग्रामसिंह राठौड़ की युद्ध वीरता पर सर्जित है। संग्रामसिंह ने गगवाना के युद्ध में जयपुर की सेना से भिड़कर वीरता प्रकट की थी। गीत में कहा गया है कि युद्धकारी वाद्यों की ध्वनि एवं तोपों के गोले तथा बारूद के धुंऐ के मध्य संग्रामसिंह ने शत्रुओं से मुकाबिला प्रारंभ किया।

---

२. घांम – आतप। अराबां – तोपों की। गौम – आकाश, पृथ्वी। पुड़ – सतह, पृथ्वी तल। धड़हड़ै – धड़धड़ की ध्वनि। गम – धैर्य, ज्ञान। तुरी – घोड़े। तण – तनय, पुत्र। गजडंमर – गज-सेना। मांहि – में।

३. मंडै – रचे, किया। खत्रवाट – क्षत्रियत्व के। मगि – मार्ग, पथ। दहुंवळ – दोनों तरफ। सिळगि – सुलग कर, जल कर। विलगि – जा लगी। दारू – बारूद। हणी – मार कर। खग – तलवार। घांणि – नाश। निहसि – बजकर, नादकर। मेळ असि – तलवारों का मिलन, भिन्ड़त। घमसांणि – घमासान। मारू – राठौड़।

४. वाहि – प्रहार कर। विहाड़ि – संहार कर। पूर – पूर्ण। जळ – कान्ति, जल। चाडि – चढ़ाकर। थूर – नाशकर। जीवंता संभ – युद्ध में घायल होकर जीवित बच जाने वाले योद्धा को 'जीवत संभ' कहा जाता है। थायौ – हुआ। हर गजन – गजसिंह के पौत्र। छळ – युद्ध, लिए। असंक – अपार। ताड़ि – खदेड़ कर, भगाकर। झाड़ि – चला कर, गिरा कर।

१. वागा – ध्वनित हुए। अम्बाळां – नगाड़ों। जूझाऊ – युद्धोत्साही, युद्धकारी। वांका जोध – विकट योद्धा। वौमि – व्योम, आकाश। पंका बाण – तीरों के पंख। पतंग – सूर्य। सांम चाड – स्वामी की सहायतार्थ। अगंजी – अजयी। असंका – निर्भीक। सांगो – संग्रामसिंह। लोहां – शस्त्रों। आंकवा – अंकित करने। अभंग – वीर।

निहटां अबीह जोध नागांण आंवैर नाथ,
सहटां वखतसीघ जैसीघ संग्राम ।
तांम तणै काम सजे सबळेस तणौ,
नागां खागां वाजे सगां सूं करैवा नाम ॥२॥

डहकै जोगणी डाक गहकै आकास ग्रीझ,
ध्रहकै कायरां उरां तकै पंथ धाव ।
लोहड़ां खेलवा झड़ां सत्रां सूं आकास लागो,
राखवा सुवातां वागो उदावतां राव ॥३॥

उछकै सूरमां लोहा कायरां सळक्कै ऊठै,
त्रहकै जूझाऊ डंकां अध्रियावणां तूर ।
मही जुद्ध खाहि गड़ा ढूंढाहड़ा बिना माथा,
सांगड़ा तो-वाळां हाथां हूंता महासूर ॥४॥

सत्र हींचे पारवै जुधि पड़े नीठि राड़ सांगो,
सूर ससि राखे वेवै सांमध्रमे साखि ।
कमाळी समपै सीस पळचरां त्रिपत्तां करै,
रंभ वरै चढे रथां प्रिथी कथा राखि ॥५॥

—कीरतदान बारहठ रो कह्यो

---

२. निहटां – दृढ़, धैर्यशील, न हटने वाला । अबीह – निडर । नागांण – नागौर । सहटां – हठपूर्वक, बड़े, बहादुर । संग्राम – युद्ध । तांम – उस समय । सबळेस तणौ – सबलसिंह का पुत्र । नागां खागां – नंगी तलवारों से । वाजे – भिड़ा । सगां – सम्बन्धियों से । नांम – नाम, कीर्ति ।

३. डहकै – हुंगी, ध्वनि करे । डाक – एक वाद्य जो युद्ध में हर्षित होकर चण्डिका बजाती है । गहकै – हर्ष ध्वनि की । ग्रीझ – गृद्धों ने । ध्रहकै – कंपित हुए । उरां – हृदय । तकै पंथ धाव – भागने के लिए मार्ग ताकने लगे । लोहड़ां – शस्त्रों से । खेलवा – खेलने, लड़ने । झड़ां – प्रहारों, झड़ी । सत्रां सूं – वैरियों से । सुवातां – सुन्दर बातें, कीर्तिवार्ता । वागो – लड़ा, प्रहार करने जुटा । उदावतां राव – राठौड़ों की उदावत शाखा का प्रमुख ।

४. उछकै – उछलकर । लोहा – शस्त्रों । सळक्कै – खिसकने लगे, भागने लगे । त्रहकै – [illegible] हुए । डंकां – वाद्यों के दण्डक । अध्रियावणां – भयानक । तूर – तूर्य वाद्य । गड़ा – [illegible] । ढूंढाहड़ा – जयपुरदेशीय योद्धा । माथा – मस्तक । सांगड़ा – संग्राम सिंह । तोवाळां – तेरे, तुम्हारे । हाथां हूंता – हाथों से ।

५. सत्र – शत्रु । हींचे – मारे । पारवै – पार्श्व में । नीठि – कठिनता से । राड़ – युद्ध से । सांगो – संग्रामसिंह । वेवै – दोनों । सामध्रमे – स्वामिधर्मपने को । साखि – साक्षी । कमाळी – शिव को । समपै – समर्पित कर । पळचरां – मांसाहारी पक्षियों को । त्रिपत्तां करै – तृप्त कर । रंभ वरै – अप्सरा का वरण कर । प्रिथी – पृथ्वीराज ।

१३२. गीत रावत जसवंतसिंघ चूंडावत देवगढ़ रौ

धमस बाजि नाळां गरद चढ़ावै धोम-सा,
अरक बिंब सोम-सा नजर आवे ।
वीर नित चखावे खगां श्रोणित वसा,
जसा जासू रसा केमि जावे ॥१॥

हास रिख बणावे हार उतबंग हरह,
जडळगां धार अबरी बरह जाई ।
रिमां जुध जरह तां हूंत संगराम रा,
खित पुड़ किण तरह उथेलो खाई ॥२॥

खिवै भाला निहंग पूर नद हयखुरां,
खाग धारा विखम वूर खेरै ।
जोध आंटेल रण छैल तोसूं जसा,
फैल कर जमीं किम मोर फेरै ॥३॥

---

१३२. गीतसार—उपरांकित गीत मेवाड़ के देवगढ़ ठिकाने के स्वामी रावत जसवंतसिंह पर रचा हुआ है । गीतनायक जसवंतसिंह ने अपनी जागीर की रक्षा की और उस पर अन्य किसी का अधिकार नहीं होने दिया था । कवि ने इस बात को लक्ष्य कर कहा है कि जसवंतसिंह के जीवित बैठे उसकी भूमि (ठिकाना) दूसरों के अधिकार में कैसे जा सकती है ?

---

१. धमस – धमाका । बाजि – बजकर । नाळां – तोपें । गरद – धूलिराशि । धोम-सा – धूम-सदृश । अरक बिंब – सूर्य बिम्ब । सोम-सा – चन्द्र सदृश । खगां – तलवारों से । श्रोणित – रक्त । जसा – जसवंतसिंह । जासूं – जिससे । रसा – पृथ्वी । केमि – किस प्रकार ।

२. रिख – ऋषि, नारद । उतबंग – उत्मांग, मस्तकों के । हरह – महादेव । जडळगां – तलवारों की । धारा – धाराओं में । अबरी बरह – कुमारी सेनाओं का वरण करता है । रिमां – शत्रुओं को । जरह – हजम करे । संगराम रा – संग्रामसिंह का पुत्र जसवंतसिंह । खितपुड़ – पृथ्वी तल । उथेलो – पलटा, उलटा होने का भाव ।

३. खिवै – चमकें । निहंग – आकाश में । हय खुरां – घोड़ों के सुमों से । विखम – विषम । वूर खेरै – हड्डियों का बुरादा गिरावें । आंटेल – आंटीला, हठीला । रण छैल – रण रसिक । तोसूं – तुम्हारे पास से । फैल कर – विपरीत होकर, उपद्रव कर । मोर – पीठ । फेरै – फिरावें, पलटा खावे ।

मोह अनूप मन मगन करणी महा,
अेळा तरणी मुगध रूप रसवंत ।
रमा वरतार दातार काइम रहो,
अंस करतार भरतार जसवंत ।।४।।

—हुकमीचंद खिड़िया रौ कह्यौ

१३३. गीत सेरसिंघ बीका राठौड़ रौ

गंगा अेकही तरंगां बार ऊधासो न चल्लै गैण,
सेस भार रुधा सो न तजै भौम सीस ।
चाळा मांन दांन दैन नाग धू जिहांन चावौ,
पीठ दै न बीकां-छात विरच्चे पांडीस ।।१।।

सुरसरि नीर सो-न चल्लै उतराध सारू,
नखां जौम धीर सो-न प्रथी फणां नाथ ।
विरद्दां गंभीर सो-न थरक्कै गिरंद बौल,
भीम दूजौ बीर सो न पलट्टै भाराथ ।।२।।

---

१३३. गीतसार—उपर्युक्त गीत राठौड़ों की बीका शाखा के शेरसिंह का है । गीतकार ने लिखा है कि जिस प्रकार देव नदी गंगा आकाश से पृथ्वी पर आने के बाद लौट कर पुनः ऊपर नहीं जाती, शेष नाग भूमि का भार उठा कर फिर नहीं त्यागता, स्थिर सुमेरु चलायमान नहीं होता उसी प्रकार बीका राठौड़ों का स्वामी शेरसिंह युद्ध भूमि में प्रवेश कर विजय प्राप्त किये बिना लौट कर रणस्थल से नहीं आता ।

---

४. अेळा — इळा, पृथ्वी । तरणी — तरुणी । मुगध — मुग्धा । रमा — लक्ष्मी, द्रव्य । वरतार — उपयोग करने वाला, बाँटने वाला, व्रत वाला । करतार — कर्त्तार । भरतार — भर्त्तार, स्वामी ।

१. ऊधासो — उलटी गति से, ऊपर से । गैण — आकाश । सेस — शेषनाग । रुधा — रोके रखने पर, ठहराये रखने, धारण करने पर । भौम — भूमि को । चाळा — आनंद के कार्य, युद्ध । जिहांन — संसार । चावौ — प्रसिद्ध । बीकां-छात — बीका राठौड़ों का स्वामी । विरच्चे — रचे, करे । पांडीस — तलवार ।

२. सुरसरि — गंगा । सो-न — वह नहीं । उतराध सारू — उत्तर दिशा की ओर । नखां — फनों, नाखूनों । धीर — धैर्यशील । प्रथी — भूमि । फणां-नाथ — शेषनाग । थरक्कै — कम्पित होता है । गिरंद — सुमेरु गिरि । भाराथ — युद्ध में ।

कूचळा घंसार नदी जाहरां ऊभल्लै केम,
थाहरां नागिन्द्र केम थंडे बोभ थाट।
कळां मांन पव्वैराट पगां चाली दीसे केम,
खीसे केम सेवा वाळौ जंगां भीत खाट ॥३॥

दूध सी बहंत गंग केही वेर अमीधार,
जमो धार केही वेर बहल्लै जरूर।
ताव वग्गां केही वेर मेर फेर हल्लै तो भी,
सेर जंगां पीठ दै न चल्लै महासूर ॥४॥

१३४. गीत राजाधिराज बखतसिंघ राठौड़ नागौर रौ

लियां लाख फौजां लंगस दूसरौ मालदे, अरिहरां अकारौ लगै अेहो।
करग थारा तणौ सुजड़ बखता कमंध, जजर रा बजर सिव कंकण जेहो ॥१॥

---

१३४. गीतसार—उपरोक्त गीत राजाधिराज वख्तसिंह नागोर की वीरता से सम्बन्धित है। गीत में गीत नायक की कृपाण को शिव के भस्मी कड़े के समान वर्णित करते हुए लिखा है कि हे मालदेव-समतुल्य वीर वख्तसिंह ! जब तूं लक्षाधिक सेना साथ लेकर शत्रुओं की ओर प्रयाण करता है, तो तेरी कृपाण यमराज के आयुध अथवा शिव के भस्मीभूत कर डालने वाले कड़े के समान विनाशकारी जान पड़ती है।

---

३. कूचळा – कुटिल मार्ग, निम्न मार्ग की ओर। घंसार – मार्ग। ऊभल्ले – उछले। केम – कैसे। थाहरां – स्थान, दुर्ग, कंदरा। नागिंद्र – शेषनाग। थंडे – हार माने। बोभ थाट – भार समूह। पव्वैराट – सुमेरुगिरि। पगां चाली – पैरों से चलती। खीसे – खिसके, स्थान से इधर उधर डिगे। सेवा वाळौ – शिवसिंह का पुत्र। जंगां – युद्धों में। भीत खाट – कीर्त्ति अर्जित करने वाला।

४. वहंत – बहती है। अमीधार – अमृतधारा। वेर – वार, समय। वहल्ले – डोलने लगे। ताव वग्गां – ताप या वजन पड़ने पर। मेर – सुमेरु गिरि। सेर – शेरसिंह।

१. लंगस – समूह। दूसरौ मालदे – द्वितीय मालदेव, गीतनायक वख्तसिंह। अरिहरां – शत्रुता रखने वाले। अकारौ – असह्य, भयंकर, कड़ा। अेहो – ऐसा। करग – हाथ। थारा – तेरे, तुम्हारे। तणौ – का। सुजड़ – तलवार। कमंध – राठौड़। जजर रा – यमराज का। वजर – वज्रायुध। जेहो – जैसा।

सावळां ऊमरां लियां संग अजा सुत, रामहरा तणै अंगि बजावै रीठ।
भुजा मांहे हद बिहद जडळग सुभै, दाव वप रुद्र आवध कड़ा दीठ ॥२॥

वीरवर नको बड ताहरी बखतसीं, मारि घड़ दोयणां समर मोड़ै।
हाथ खग बणी नृप ताहरै जसाहर, जम तणी गदा सिव कंकण जोड़ै ॥३॥

कळा गुरज चो अनै कड़ा चो एक करि, अपरा चकर री भेळ वाजा।
विसनहरा तणा दळ साजवा वासतै, राम तौ दीध तरवारि राजा ॥४॥

—भोजराज बारहठ री कह्यौ

१३५. गीत राजाधिराज बखतसिंघ नागौर रौ

अंग जड़िया जरद मरद घड़ ओपम, दारण संग भड़ लियां दुवांह।
बिढ़तौ देखि राह रिम बखतौ, सूतौ निस भड़कै जयसाह ॥१॥

---

१३५. गीतसार—उपरोक्त गीत राजाधिराज वख्तसिंह नागौर पर कथित है। वख्तसिंह ने गगवाणा स्थान पर जयपुर नरेश सवाई जयसिंह से युद्ध लड़ा था। गीत में कवि ने उसी युद्ध के प्रभाव को प्रकट करते हुए लिखा है कि कवचादि युद्ध-सज्जा से सज्जित वीरों की सेना को साथ लिये दुर्धर्ष वीर वख्तसिंह ने जयसिंह से ऐसा भयंकर युद्ध किया कि जयसिंह गहरी निद्रा में सोये हुए भी उस युद्ध का दृश्य देखकर अचानक जग उठता है।

---

२. सावळां – बर्छे, भाले। ऊमरां – अमरावों, बड़े सामन्तों। अजा सुत – महाराजा अजितसिंह का पुत्र। रामहरौ – महाराजा रामसिंह के वंशज, महाराजा सवाई जयसिंह जयपुर। रीठ – शस्त्रों के प्रहार। भुजा मांहे – हाथ में। जडळग – तलवार। सुभै – शोभा पाती है। दाव वप – शरीर पर चोट। आवध – आयुध। दीठ – दृष्टि, दिखाई पड़े।

३. नको – कोई नहीं। ताहरी – तेरी, तुम्हारी। घड़ – सेना। दोयणां – वैरियों की। समर – युद्ध। मोड़ै पीछे धकेले। खग – तलवार। ताहरै – तुम्हारे। जसाहर – यशवंतसिंह के पौत्र, वख्तसिंह। कंकण – कड़ा, वलय।

४. कळा – कला, प्रभाव क्रिया। गुरज – गदा, शस्त्र विशेष। चो – की। अपरा – विष्णु, कृष्ण। चकर री – चक्र की। भेळ – शामिल होने का भाव। वाजा – कहलाए। विसनहरा – सवाई जयसिंह। साजवा – संहार करने। वासतै – लिए। दीध – प्रदान की, दी।

१. जड़िया –जटित, कसे हुए। जरद – कवच। घड़ – सेना। दारण – दारुण, दुर्धर्ष वीर। भड़ – भट, योद्धा। दुवाह – दोनों हाथों से शस्त्र प्रहार करने वाले। विढ़तौ – लड़ते हुए को। रिम – शत्रु। सूतौ – सोये हुए। निस – निशा, निशंक। भड़कै – चौंक उठता है। जयसाह – सवाई जयसिंह।

जुड़ियौ नह इसड़ौ जमवारै, तिसड़ौ ही पड़ियौ खग ताव।
अजन सुजाव दाव जुध ईखै, औद्रकि ऊठै बिसन सुजाव ।।२।।
रज रज किया पिसण रण रूठै, भळ तूठै पळचरां सुभाय।
हर जसवंत दीठां किसनाहर, सुखमां दुख विवरै सदाय ।।३।।
सोचै अति नांखै नीसासा, कहौ कूंभ धवा दीध किन।
कमधज भवि कूरम भैचकियौ, दिल तें अजकौ राति दिन ।।४।।
—भोजराज बारहठ रौ कह्यौ

१३६. गीत राजाधिराज वखतसिंघ रौ गगवाणां री वेढ़ रौ

बाजा बाजतां जूझाऊ डंका वंका जोध लियां वांस,
धारियां असंका कोप उभारियां धूप।
वाजा तीर बाणां धोक नाळियाँ धमंका बाजा,
राजां बीसां सीस राजा आयौ इसै रूप ।।१।।

---

१३६. गीतसार—उपरोक्त गीत राजाधिराज वख्तसिंह नागौर और सवाई जयसिंह महाराजा जयपुर के परस्पर के गगवाणे स्थान पर लड़े गए युद्ध पर सर्जित है। सवाई जयसिंह के पक्ष में राजस्थान के शाहपुरा, कोटा आदि के अन्य बीस राजा थे और वख्तसिंह के पास उस की नागौर की सेना थी। गीत में लिखा है कि वख्तसिंह युद्धकारी वाद्यों को बजवा कर, विकट योद्धाओं की सेनासहित निर्भीकतापूर्वक सक्रुद्ध भाव से विपक्षी बीस राजाओं की सेना पर तलवार प्रहार करता बढ़ा।

---

२. जुड़ियौ – भिड़ा, लड़ा। नह – नहीं। इसड़ौ – ऐसा। जमवारै – उम्र में, जीवन भर में। तिसड़ौ – वैसा ही। खग ताव – खड्ग का ताप। अजन सुजाव – अजितसिंह का पुत्र। दाव – घात, प्रहार की विधि। ईखै – देख कर। औद्रकि – भय से चौंक पड़ता है। बिसन सुजाव – विष्णुसिंह का पुत्र।

३. रज रज – कण कण, टुकड़े टुकड़े। पिसण – पिशुन, शत्रु। रूठै – रुष्ट होकर। तूठै – तुष्ट हुआ। पळचरां – आमिषचारियों, गृद्धादि पक्षियों पर। हर – पौत्र। दीठां – दृष्टिगोचर होने पर। किसनाहर – किशनसिंह के पौत्र, जयसिंह। विवरै – विवरण। सदाय – सदैव, भाँति।

४. नांखै – डालता है। नीसासा – निःश्वास। कमधज – राठौड़। भवि – भय से, भविष्य में, जीवन भर। भैचकियौ – भय-चकित हुआ। अजकौ – बेचैन, चिन्ताकुल।

१. बाजा – वाद्य। बाजतां – बजते हुए। जूझाऊ – युद्धकारी। डंका – दण्डक। वंका – विकट, बाँकुरे। जोध – योद्धा। वांसै – पीछे, साथ लिए। उभारियां – प्रहार के लिए ऊपर उठाए हुए। धूप – तलवार। नाळियां – तोपें। इसै – ऐसे।

छणंके पंखाळां सोंक पड़ै नाळां पैण छूटी,
बाजतां डंडाळां देतौ किरमाळां बाह।
चूरवा दंताळां धज बखतेस बांधि चाळा,
वारे आठ भूपाळां सूं बागौ महाबाह ॥२॥

गाहतौ उरातौ गजां बाहतौ विखातां बाह,
निघातां करंतौ सत्र काथां नरांनाह।
बाकां खागां आभ लागौ राखेवा वसुधा बातां,
सातां तेरा छातां हूंतां दूजौ गाजीसाह ॥३॥

भूचकै अराबां झाळ किरम्माळ ताळ भिदै,
खळक्कै रगत्तां खाळ सालुळै समाथ।
साजवा असहां साथ पाथ ज्यूं अजा रौ सींह,
भूप सोळै चार भूपां सूं मंडै भाराथ ॥४॥

---

२. छणंके – छन छन ध्वनि करते हुए। पंखाळां – बाणों की। सोक – बाणों के चलने से उत्पन्न ध्वनि। नाळां – तोपों के। पैण – गोले, तीर। डंडाळां – नगाड़े। देतौ – देता हुआ। किरमाळां – तलवारों के। बाह – प्रहार। चूरवा – नाश करने। दंताळां – हाथियों। धज – घोड़े, योद्धा। बांधिचाळां – वस्त्राञ्चल बांध कर। बारे आठ – बीस। बागौ – लड़ने लगा। महाबाह – महान् वीर।

३. गाहतौ – कुचलता हुआ, संहार करता। उरातौ – इधर से धकेलता। गजां – हाथियों। बाहतौ – प्रहार करता। विखातां – प्रसिद्धिकारी। बाह – प्रहार करता, भुजा। निघातां – चोटें, आघात। सत्र – शत्रुओं को। काथां – सत्व-रता से। नरांनाह – राजा। खगां – तलवारों से। आभ लागौ – आकाश को स्पर्श करने लगा। वसुधा – पृथ्वी पर, संसार में। बातां – प्रसिद्धि की वार्त्ताएँ। सातां तेरा – बीस। छातां हूंतां – राजाओं से। दूजौ गाजीसाह – द्वितीय गजसिंह, राजाधिराज बख्तसिंह।

४. भूचकै – पृथ्वी चक्कर काटने लगी, भयचकित। अराबां झाळ – तोपों के गोलों की ज्वाला से। ताळ – पाताल लोक। भिदै – छिद्र होने लगा। खळक्कै – बहने की ध्वनि। रगत्तां – लोहू के। खाळ – नाले। सालुळै – चलने लगे। समाथ – मस्तक सहित, ससमर्थ, शेषनाग। साजवा – संहार करने। असहां – वैरियों को। पाथ – पार्थ, अर्जुन। अजा रौ – अजितसिंह का। सोळै चार – बीस। सूं – से। मंडै – रचता है। भाराथ – युद्ध।

कूरम जादम हाडा चहूंवाण गौड़ कैला,
बुंदेला तुंवर खीची जाटवै बंगाळ।
साखां श्रेती बीस राजां हींचाया खपाया सारां,
राजा श्रेकै राठौड़ां चै रचे रिणताळ॥५॥
रुद्र चंडी अपछरां ग्रीभ वीर अनै रिख,
सारां राड़ि चराया पूरै जुजूवां समाज।
घड़च्छै ढूंढाड़ धरा चाढ़े पांणी मुरधरा,
राड़ि जीत जैतवारो आयौ महाराज॥६॥
—भोजराज बारहठ रौ कह्यौ

१३७. गीत ठाकर सेरसिंघ चौहाण संखवास रौ

मह मोटा मीर ग्राह जिण मांहे, डोहै कूंण देखतां डरै।
बिजड़ी चालवतां बाहां बळ, तेरू सेरा जिसा तरै॥१॥

---

१३७. गीतसार—गीतकार ने ऊपर लिखित गीत में शेरसिंह चहवान के युद्ध का वर्णन किया है। गीत में युद्ध का समुद्र में आरोपण करते हुए लिखा है कि जिस में बड़े अमीर रूपी ग्राह है, ऐसे रण-समुद्र का कौन मंथन करने का साहस करे। किन्तु अभय वीर शेरसिंह जैसे योद्धा ही तलवारों के प्रहारों में प्रवेश कर उस पार निकलने का साहस कर सकते हैं।

---

५. कूरम – जयपुर के कछवाहा। जादम – करौली के यादव। हाडा चहूंवाण – कोटा बूंदी के क्षत्रिय शासक। गौड़ – शिवपुर के गौड़। कैला – उदयपुर के, कैलपुरा कहलाने वाले सीसोदिया। जाटवै – भरतपुर के जाट, जाटव शाखा के राजपूत। बंगाळ – मुसलमान। साखां श्रेती – इतनी शाखाओं के। हींचाया – युद्ध करवाया। खपाया – मारना। सारां – तलवारों से, सब को। चै – के। रचे – रच कर, लड़ कर। रिणताळ – युद्धस्थल में।

६. रुद्र – शिव। चंडी – चण्डिका। अपछरां – अप्सराएं। ग्रीभ – गृद्धादि पक्षी। वीर – बावन वीर। अनै – अन्य, और। रिख – नारद, ऋषि। राड़ि – युद्ध में। चराया – भोजन करवाए। पूरै – पूर्ति कर, परोश कर। जुजूवा – अलग अलग। घड़च्छै – टुकड़े कर, काट मार कर। चाढे पांणी – कीर्तिमान कर, आवे चढ़ा कर। मुरधरा – मरुदेश, मारवाड़। राड़ि जीत – युद्ध में विजय प्राप्त कर। जैतवारी – विजयी बनकर।

१. मीर – मुसलमान अमीर। जिण मांहे – जिस में। डोहै – मंथन करे। कूंण – कौन। देखतां – देखने से ही। बिजड़ी – खड्ग, तलवार। चालवतां – प्रहार होते। बाहां बळ – भुज बली। तेरू – तैराक। सेरा – शेरसिंह। जिसा – जैसे। तरै – तैरते हैं।

जळ जळचर जिम असुर प्राजळै, किरमर बड़वा अगन करि ।
ऊंडै सार थाग ले आयौ, पैसे रिण दरियाव परि ॥२॥

माछां जेम जवन मसळंतै, कंवर पराकम कहर कियौ ।
सामंद समर फाड़ियौ सेरा, हाथ बखांणै किनां हियौ ॥३॥

अध्रियांमणै सार जळ ऊंडै, बाहे लोह लहर बड़वाग ।
मगर निबाब मीर मछ मारै, थाहियौ रिण दरियाव अथाग ॥४॥

—सरूपदान सांदू री कह्यौ

१३८. गीत कंवर सेरसिंघ संखवास रौ

रातीवाव दे विजेस चाडां गनीमां भांजियां रोळै,
गांजियां भांवरां मेछ धोळै दीह घेर ।
चाडां भीम अरिंदां विरोळियां रीस री चखां,
सांचोर रा गिरंदां तीसरी वार सेर ॥१॥

---

१३८. गीतसार—यह गीत संखवास के कुमार शेरसिंह चहुवान द्वारा जोधपुर नरेशों के पक्ष में भांवर, सांचोर, हिलोड़ी, नागोर आदि स्थान में शत्रुओं से लड़कर वीरता प्रदर्शित करने विषयक है। गीत में मरहठों और पठानों से महाराजा विजयसिंह और महाराजा भीमसिंह राठौड़ की सहायता करने का उल्लेख हुआ है।

---

२. जळचर – ग्राह आदि। असुर – मुसलमान। प्राजळै – जलते हैं। किरमर – तलवार। बड़वा अगन – वाडवाग्नि। ऊंडै – गहरे। सार – लोह, तलवार। थाग – थाह। पैसे – प्रवेश कर। रिण दरियाव – रण-सागर। परि – भांति।

३. माछां – मत्स्य, मछलियां। जवन – यवन। मसळंतै – मसल कर, कुचल कर। पराकम – पराक्रम। कहर – युद्ध में, भयावह। सामंद – समुद्र। फाड़ियौ – चीर दिया। किनां – अथवा। हियौ – हृदय।

४. अध्रियांमणै – भयंकर, विकट। सार – शस्त्र। बाहे लोह – शस्त्र प्रहार कर। बड़वाग – वाडवानल। मगर – मगरमच्छ, ग्राह। मछ – मत्स्य। थाहियौ – थाह लिया। अथाग – अथाह, अगाध।

१. रातीवाव – नैश आक्रमण। विजेस – महाराजा विजयसिंह की। चाडां – सहायता। गनीमां – वैरियों को। रोळै – युद्ध, रोल स्थान पर। गांजिया – विनष्ट किये। भांवरां – ग्राम का नाम। मेछ – मुसलमान। धोळै दीह – दिनदहाड़े। भीम – महाराजा भीमसिंह की। अरिंदा – शत्रुओं को। विरोळियां – मारे, नष्ट किये। रीस – क्रोध। चखां – चक्षुओं। गिरंदां – पहाड़ों में।

चाढ़िया गनीमां धकै हिलोड़ी ऊगते चंद,
सूर ऊगै वाढ़िया झांवरां मेछ साथ।
छळां भीम तीजी वेर सेर लंकाळ री छटा,
भिड़े खागां धरा भीलमाळ री भाराथ ॥२॥
सैंताळे झोकिया तुरी सतारा रावतां सीस,
पचासे आवतां सीस रोकिया पठांण।
दांन रा कंठीर तेज सोहिया राजांन दूजा,
पांचावने सिंधियां डोहिया खागां पांण ॥३॥
जुधां जीत जूंजुवै जिहांन वंदै चंद जेम,
प्रथीनाथ भीमेण पूजवै भुजां पांण।
रंग सेल खागां अहूं जंगां खळां स्रोण रंगां,
अजे जंगां अधायो ऊससै चाहुवांण ॥४॥

१३९. गीत कंवर धीरतसिंघ चौहाण संखवास रौ

ऊकढिया सार सूर उगन्तै, सिंधू थटिया प्रात समै।
जुध झांवर धीरो खग झाटां, रण गैहरिया जेम रमै ॥१॥

---

१३९. गीतसार–गीतकार ने उपर्युक्त गीत में ठिकाना संखवास के कुमार धीरतसिंह चहुवान द्वारा झांवर ग्राम के रणक्षेत्र में प्रदर्शित शौर्य्य का वर्णन किया है। गीत में लिखा है कि ज्योंही सूर्योदय हुआ कि युद्ध-वाद्य नाद करने लगे। और वाद्य-ध्वनि के साथ ही वीर धीरतसिंह होली पर गेहर खेलने वालों की तरह रण में तलवारों का खेल खेलने लगा।

---

२. धकै – छाती आगे। हिलोड़ी – नागौर पट्टी का एक ग्राम। ऊगते – उदित होते। सूर – सूर्य। वाढ़िया – काट दिए, संहार किया। छळां – युद्ध, लिए। लंकाळ री – सिंह की। छटा – शोभा, गर्दन के केश। खागां – कृपाणों से। भाराथ –युद्ध।

३. सैंताळे – १८४७ में। झोकिया – युद्ध में धकेले। तुरी – घोड़े। सतारा – पूना सतारा वाले मरहठे। रावतां – रावत पद वाले, बड़े सामन्त। पचासे – सं० १८५० में। कंठीर – सिंह। सोहिया – शोभित हुए। राजांन दूजा – दूसरा ही राजसिंह। पांचावने – सं० १८५५ वि० में। डोहिया – मथ दिए, रौंद डाले। खागां पांण – तलवार बल से।

४. जूंजुवै – अलग अलग। जिहांन – संसार। वंदै – वंदना करता है। पूजवै – पूजते हैं। भुजां पांण – बाहुबल। अधायो – अतृप्त। ऊससै – जोश में उफनता है।

१. ऊकढिया – तलवार म्यान से बाहर निकले हुए। सार – तलवार। सूर – सूर्य। उगन्तै – उदित होने के साथ। सिंधू – हाथी, नगाड़े। थटिया – सजे, कटिबद्ध हुए। समै – समय में। झांवर – ग्राम का नाम। धीरो – धीरतसिंह। खग झाटां – तलवार के प्रहारों से। गैहरिया – फाल्गुन मास के नृत्य विशेष में नाचने वाले की तरह। रमै – खेलने लगा।

पिसणां मार धार मद पावै, आतस ऊडै अराबां आग।
खांडा तणी झड़ाझड़ खेलै, फौजां बीच डंडेहड़ फाग ॥२॥
जाडै सार सांधणै जूटो, रुधिर धार पिचकार रमै।
रिण बसंत जीतौ रायजादौ, जग दादा बरजांग जिमै ॥३॥
सुत सिवदास बधी जग सोभा, रिण होळी खेलै मछरीक।
जेठी सेरसिंघ रै जोड़ै, तेगां रिमां बजावण तीक ॥४॥
जुध जवनां पाड़ै गैहर ज़िम, सांचव वार वार खग सेल।
आव प्रवांण जीवतौ आयौ, खेलै कंवर अखेला खेल ॥५॥

—सरूपदान सांदू भदौरा रौ कह्यौ

१४०. गीत ठाकर दूलहसिंघ अजीतसिंघौत रौ

लाग आयौ खेटै हाथळां चांटतौ धूतौ आभ लागौ,
संमरां अघायौ हूंतो थाटतौ सघींग।
चक्खां आग छायौ क्रोध साबूतौ खिजायौ चोड़ै,
सूतौ बाघ बरूथां जगायौ दूलैसींघ ॥१॥

---

१४०. गीतसार—गीतकार ने ऊपर के गीत में गीतनायक दूलहसिह की सिंह आखेट का वर्णन किया है। गीत में शिकार के लिए उठाये जाने पर सिंह की क्रोधाकृति, अपने शत्रु आखेटकों के गजाश्वों पर झपटने तथा शिकारियों द्वारा तलवारों के प्रहारों से उसे मारने का वर्णन किया गया है।

---

२. पिसणां – शत्रुओं को। धार मद – तलवार की धारा रूप मदिरा। आतस – अग्नि। अराबां – तोपों की। खांडा तणी – खड्ग की। झड़ाझड़ – झड़ी, बौछार। डंडेहड़ फाग – फाल्गुन का दण्डक रास।

३. जाडै सार – शस्त्र-प्रहारों की सघनता में। जूटो – भिड़ा। रुधिर – लोहू की। पिचकार – पिचकारी। रायजादो – राजकुमार, धीरतसिंह। दादा – पितामह। बरजांग – बरजांगदेव। जिम – ज्यों।

४. बधी – वृद्धि हुई। सोभा – कीर्त्ति। होळी – होलिकोत्सव पर खेले जाने वाले। मछरीक – चहुवान। जेठी – जेष्ठ, अग्रज। जोड़ै – बराबर। तेगां – तलवारों। रिमां – रिपुओं से। तीक – तीखापन, श्रेष्ठता।

५. पाड़ै – गिराकर। सांचव – चलाकर। आव – आयु। जीवतौ – जीवित। अखेला खेल – बिना खेले खेल, अछूता खेल।

१. खेटै – हमला करने, भागने। हाथळां – हाथ के पञ्जे। चांटतौ – तेजी से चल कर, चाटता हुआ। धूतौ – उन्मत्त। आभ – आकाश। संमरां – साँभर नामक वन्य पशु। अघायो – पूर्ण, तृप्त। हूंतो – से। थाटतौ – शोभा बढ़ाता। सघींग – हृष्टपुष्ट, जबरदस्त। चक्खां – नेत्रों में। आग – अग्नि। साबूतौ – साक्षात्, सप्रतिम। खिजायो – नाराज किया हुआ। बाघ – व्याघ्र। बरूथां – सेनाओं से।

हेरियौ करोळां अद्रां थाहरां भाळ रै हूंता,
भडां जूथ आळ रै फेरियौ ऊगे भांण।
बागां अम्बाळ रै डंका घेरियौ अजीत वाळै,
अेहो सोनेरियौ बंधै चाळ रै आरांण ॥२॥

लालंबरां लोयणां छोहतौ धकै खेध लागौ,
गै-घड़ा डोहतौ लखै चकै घाबरैळ।
चंद्रहासां मंडे चकाबोहतौ अनंमी चूंडे,
बाकारियौ अखाड़ैं नौहथौ बाबरैळ ॥३॥

आया ऊपैहरी छटा देह री चांखियौ आंगां,
जांणै नाग पांखियौ रेहरी लागै भूळ।
दकालै धांकियौ जंगां अतागां केहरी दूजै,
सागा रातांखियौ लेतौ तेहरी सादूळ ॥४॥

---

२. हेरियौ – तलाश किया। करोलां – शिकार के लिए शिकारी जीवों को घेर कर लाने वाले व्यक्ति, वन-रक्षक। अद्रां थाहरां – पार्वत्य गुफाओं से। भाळ रै – टोह से, खोजों से। भड़ां – योद्धाओं। जूथ आळ रै – दलपतियों ने, सेना के योद्धाओं ने। फेरियौ – लौटाया, फेरा। बागां – बजने पर। अम्बाळ रै – नगाड़े के। डंका – डंडा, दण्ड। घेरियौ – घेरे में लिया। अेहो – ऐसा। सोनेरियौ – बर्बर सिंह। बंधै चाळ – वस्त्रांचल बांधकर। आरांण – युद्ध।

३. लालंबरां – आरक्त, लाल। लोयणां – लोचनों, आँखें। छोहतौ – उत्साह सहित। खेध – द्वेष, विग्रह करने। गै घड़ा – गज सेना। डोहतौ – मारता, विलोड़ित करता। चकै – सेना, निशान। घाबरैळ – घबराया हुआ। चन्द्रहासां – तलवारों। चकाबोहतौ – चक्राकार घुमाता हुआ, आक्रमण करता हुआ। बाका-रियौ – ललकारा। अखाड़ै – मैदान में। बाबरैल – बब्बर सिंह को।

४. ऊपैहरी – ऊपर की। छटा – शोभा, बिजली। देह री – शरीर की। चांखियौ – चिन्हित, निशान। नाग पांखियौ – पंख आया सर्प। रेहरी – रेखा-सी। दकालै – ललकारने पर। धांकियौ – टक्कर देने, क्रुद्ध। अतागां – शीघ्रता से। केहरी – केशरी। रातांखियौ – रक्तिम नेत्र। तेहरी – बल, समर्थता।

गजां वखेरतौ वेड़ा कायरां डुलायौ गाढ़,
डड्ढां घाव कटारां भेरतौ काळदूत।
तीखा बोल देरतौ बुलायौ रावतेस तारवै,
सेर थौ उनींदो सांमौ चलायौ साबूत ॥५॥

होम धंकै जटा हूं विछूटौ बीर खेध हूंता,
तोल टंकै कुबाण चळा हूं छूटौ तीर।
तावे सिंध लांघवा जोधतौ लांगौ वेग तूटौ,
कनांक नाक सूं जूटौ क्रोधतौ कंठीर ॥६॥

खेल जोवा वैताल साथ रै गणां नचै खेलां,
आयौ सांमौ होवा तुपां बाथ रै ऊकंध।
प्याले संवात रै तोड़ौ तूप रा ऊपरै पायौ,
मतै भाराथ रै दूलै गुड़ायौ मयंध ॥७॥

---

५. वखेरतौ – बिखेरता, छिन्न-भिन्न करता। वेड़ा – सेना, सैन्य-शिविर। डुलायौ – दोलित किया। गाढ़ – दृढ़ता का भाव। डड्ढां – दाढों, दंष्टाओं के। भेरतौ – काटता मारता, प्रहार देता। काळदूत – यम का दूत। तीखा बोल – चुभने वाले वचन, तीक्ष्ण बोल। देरतौ – देता हुआ, टेर कर। रावतेस – रावत पद धारियों में प्रमुख। तारवै – वीर, जबरदस्त। सांमौ – सामने। चलायौ – चलकर आया। साबूत – सहीसलामत, प्रत्यक्ष।

६. होम धंकै – दक्ष के याग को विध्वंश करने की इच्छा से। जटा हूं – रुद्र की जटा से। विछूटौ – विछूटित। वीर – वीरभद्र गण। खेध – क्रोध, द्वेष, कष्ट। तोल टंकै – अठारह टंक की वजनी। कुबांण – कमान, धनुष। चळा हूं – प्रत्यंचा से। छूटौ – छूटा हुआ, चलाया हुआ। तावे – आज्ञानुवर्ती, लिए। सिंध – सिंधु, सागर। लांघवा – उल्लंघन करने, कूद कर उस पार जाने। लांगौ – लंगड़ा, हनुमान। वेग – शीघ्र, त्वरित, गति। तूटौ – टूटा, कूदा। कनांक नाक – । जूटौ – भिड़ा, लड़ने लगा। क्रोधतौ – क्रोधित। कंठीर – सिंह।

७. जोवा – देखने के लिए। वैताल – वैताल। साथ रै – साथ सहित। गणां – शिव के गणों, भैरव आदि। नचै – नृत्य करने लगे। खेलां – कौतुक, खेल। सांमौ – सामने, मुकाबिले में। होवा – होने के लिए। तुपां – तोपों के। ऊकंध – [illegible]। संवात रै – दारू के, मदिरा के। तूप रा – घृत, तोप के, मतै – विचार, मत से। भाराथ रै – युद्ध के। दूलै – दूलहसिंह गीतनायक। गुड़ायौ – [illegible] किया, गुड़ा दिया, मार डाला। मयंध – मृगेन्द्र, सिंह।

ओसाप रै ऊधरा सांभळै चहुंचक्कां ऊकां,
खळां धरा ओद्रकै ताप रै खुरासांण ।
खत्री अमाप रै छापे पटैत पाछटै खागां,
आयौ आधंतरां लागां आप रै आथांण ।।८।।

१४१. गीत महारावराजा बुधसिंघ हाडा बूंदी रौ

लंगस बरूथां हूंत बुध कांम साहां लड़ै, मारि कैवांणी झाड़ै मैमन्त ।
पंख हथ सरप जिमि सूंडि उडि उडि पड़ै, दुजैरा मवंक सम नीजुड़ै दंत ।।१।।

अनावत न्याय जूटै दळां आंवळां, बीजळां धावै हाथी बीछूटै ।
मदन अरि हार जिम ढहै पोगर मसत, तमैक दमे बाळतिमि रदन तूटै ।।२।।

---

१४१. गीतसार—उपरोक्त गीत बूंदी के शासक महारावराजा बुधसिंह हाडा के युद्ध से सम्बन्धित है। गीत में बुधसिंह ने दिल्ली साम्राज्य पर अधिकार करने के शाहजादों के युद्ध में जो पराक्रम प्रकट कर विजय प्राप्त की थी, उसका वर्णन हुआ है। गीतनायक कृत प्रतिपक्षी गज सेना के संहार का वर्णन करता हुआ गीतकार कहता है कि बुधसिंह ने बादशाह की सफलता प्राप्ति के कार्य के लिए रण में गजों के शुण्ड दण्डों को उड़ने सर्प एवं उनके दन्तों को द्वितीया के चद्रमा की आकृति में छेदन कर ढेर लगा दिये।

---

८. ओसाप रै – शक्ति के, साहस के। ऊधरा – ऊंचा, श्रेष्ठ। चहुचक्कां – चारों दिशाओं में, चारों ओर। ऊकां – शस्त्रों के उठाने। खळां घरा – शत्रु राज्य। ओद्रकै – भयभीत होते हैं, आतंकित। खुरासांण – मुसलमान। खत्री – क्षत्रियत्व के। अमाप – अपरिमित। पटैत – सिंह। पाछटै – पछांट कर, प्रहार देकर। खागां – तलवारों के। आधंतरां – आकाश के। आथांण – स्थान, दुर्ग।

१. लंगस – समूह। बरूथां – सेनाओं के। बुध – महारावराजा बुधसिंह। साहां – बादशाहों के। कैवाणी – तलवार, धनुष। झाड़ै – गिराये। मैमन्त – मदमस्त, हाथी। पंख – पक्ष, बाण। हथ – हाथ, हाथी, मार कर। सूंडि – गजशुण्ड। दुजैरा – द्वितीया के। मवंक – चन्द्र, मयंक। नीजुड़ै – संधिहीन हुए। दंत – दंत्य।

२. अनावत – अनिरुद्धसिंह का पुत्र, बुधसिंह। न्याय जूटै – उचित ही लड़े। दळां आंवळां – युद्धार्थ सज्जित दल। बीजळां – तलवारों के। धावै – चलने से। मदन अरि – महादेव। ढहै – गिरे, पड़े। पोगर – शुण्ड। मसत – मस्तक, मस्त। तमैक – । रदन – दांत।

सार भरि तरंग चहूंवाण तारू समरि, बरंग जरदैत रत समद बूडे ।
घराघर जेमि गज करग लोटै धरा, अरध ससि तरै दैंत गरब ऊडे ।।३।।

अम्मरां रिझवार दंपति समर आसीसै, गूंथै सेलार बणा अणी गंठि ।
पनंगमै हार दोध गिरजापति, दीध चंद्रहार गिरजा तणै कंठि ।।४।।

१४२. गीत राजाधिराज बखतसिंघ नागौर रौ

गोठ तेवड़ै बखतसींघ जैसींघ साथ ने गाढ़ी,
दोढ़ी ठौड़ जाजमां चै नाळियां दराज ।
वांधे चाळां रावताळा अेरसा जबाब बोलै,
आरावां सतावां छावां परूसौ अनाज ।।१।।

---

१४२. गीतसार–गीतकार ने उपरोक्त गीत में नागौर के शासक राजाधिराज बख्तसिंह राठौड़ के गगवाना स्थान के युद्ध का वर्णन किया है । कवि ने युद्ध कार्यों की दावत के कार्यों के साथ समानता करते हुए लिखा है कि बख्तसिंह ने सवाई जयसिंह के सत्कार के लिए दावत का आयोजन किया । जिसमें भालों की नोकों के प्रहार के चावल, तलवारों के आघात सोहिता, कटारियों की चोटें मांस और छुरियों के वारों के रूप में रोटियों की परोसगारी की ।

---

३. सार – लोह, तलवार । तारू – तैराक । समरि – युद्ध । बरंग – टुकड़े । जरदैत – कवच । रत समद – रक्त-समुद्र । बूडे – डूब गए । घराघर – पर्वत । गज करग – हाथियों के शुण्ड-दण्ड । अरध ससि – अर्द्ध शशि, द्वितीया के चंद्र । तरै – तरह । दैंत – दांत । गरब – गिरकर, खर्वित होकर ।

४. अम्मरां – देवताओं । आसीसै – आशीश देते हैं । गूंथै – गूंथते हैं । सेलार – माला, मुण्डों की माला । गंठि – ग्रंथि । पनंगमै – पनंगमय । गिरजापति – शिव । गिरजा – पार्वती । कंठि – कण्ठ ।

१. गोठ – दावत । तेवड़ै – प्रारंभ करे, आयोजित करे । गाढ़ी – दृढ़ता से, प्रेम से, गहरी । दोढी – ड्योढ़ी, मुख्य द्वार । ठोड़ – जगह । नाळियां – तोपें । दराज – बड़ी, दीर्घ । वांधे चाळा – वस्त्रों के छोर बांधकर । रावताळा – रावत पद धारी । अेरसा – ऐसे । आरावां – छोटी तोपें । सतावां – शीघ्रता, फुर्ती से । छावां – छबड़ियां जिनमें रख कर फुलके आदि परोसे जाते हैं । परूसो – परोसो । अनाज – अन्न, भोजन ।

सावळां ऊजळां फळां चावळां सोहिता सारां,
बावरा उवरां छूरां छूटा मांस वाह।
दबट्टां कटारां रोटां सैणां मनुवारां दावै,
बाणासां मुदावै वेधी अजा रौ महावाह ॥२॥

कूरमां कमंधां साथ दीयै छाक अैराकरी,
ऊपरां ऊपरी भाला प्याला ज्यूं उभारि।
साहिया ऊनागां खगां सगां सु बखतसीं,
मारि मारि करै यूं उचारै मनुवारि ॥३॥

आरोगाई दोऊ अणी आवधां पाधरै आई,
जलूसाई वणाई अंतची जुगति।
काई ईसी दी नांही सवाई जैसींघ कहै,
भलांई बखतेस रचाई भगति ॥४॥

---

२. सावळां – भालों के। ऊजळां फळां – उज्ज्वल फल, नोक। सोहिता – बाजरा के दानों के साथ पकाया हुआ मांस। सारां – लोहा, तलवारों। वावरा – प्रयोग में लिए, काम में लिए। उवरां – उरों, हृदयों, कलेजे। छूरां – छुरियों, तलवार की तरह के छोटे शस्त्र। छूटा मांस – छूटक मांस, खुला मांस। दबट्टां – पर्याप्त। कटारां – कटारियों। रोटां – बाजरा के आटे की मोटी रोटियाँ, सोगरे। सैणां – मित्रों की। मनुवारां दावै – मनुहार के लिए। बाणासां – तलवारों के। मुदावै – मुदायत। वेधी – विग्रही, युद्धकारी। अजा रौ – महाराजा अजितसिंह का पुत्र, बख्तसिंह। महावाह – महाबाहु, महान् योद्धा।

३. कूरमां – कछवाहों। कमंधां – राठौड़ों, बीकानेर, किशनगढ़ आदि राठौड़ राजा भी सवाई जयसिंह की सेना में थे। छाक – प्याला, मादकता। अैराक री – तेज मदिरा की। ऊपरां ऊपरी – अनवरत, निरन्तर। उभारि – ऊपर उठाकर। साहिया – धारण किये हुए, ग्रहण किये हुए। ऊनागां खागां – नग्न तलवारों से। सगां सु – सम्बन्धियों, रिश्तेदारों से। उचारै – उच्चारण करते हुए।

४. आरोगाई – भोजन करवाया, आहार करवाया। दोऊ अणी – सेना की हरावल तथा चंदावल पंक्तियों को। आवधां – हथियारों से। पधारै आई – सीधे आक्रमण करके, सीधे आकर। जलूसाई – जुलूस। अंत ची – नाश की, अन्त्येष्टि क्रिया की। काई – किसी ने। इसी – ऐसी। दी नांही – नहीं दी। भलां ई – अच्छी ही, भले ही। भगति – दावत, गोठ।

छती गोठि फरै सगां खगां पांणि छाकोटीया,
धारीयां लोटीया भुजां ऊभारिया धूप ।
चूंप सूं कराई चळू कळू बीच हुई चाई,
रत्त पड़ै वराळां कराळां तणै रूप ॥५॥

जीमाया गगवांणै न जीमीया वळे जिकै,
नाम जंग रखवाया नीघसाया नद्द ।
दनू गाजीसाह हरा तणी भल्ल गल्ल वंची,
वाह वाह रची गोठ आवधां विहद्द ॥६॥

रेणू गोठ मझे तिहीं ज्यूं भाराथ मही रजै,
ऊगरे जे पळचरां ऊचारे आसीस ।
रीगू मंड अखंड नागांणे वखतेस राजा,
विराजो दीवाळी कोड़ि कोड़ीया वरीस ॥७॥

—कीरतदान बारहठ री कह्यो

---

५. छती – पृथ्वी पर, होते हुए । सगां – रिश्तेदार, सजातीय । खगां – तलवारों के। पांणि – हाथ, प्रहार, बल । छाकोटीया – तृप्त किये, छकाये । धारीयां – धारण किये हुए, धाराप्रवाह । लोटीया – जलपात्र, लोटे । ऊभारिया – ऊपर उठाये हुए । धूप – तलवार । चूंप सूं – चतुराई से । चळू – भोजनोपरान्त हाथ मुंह धुलाने का कार्य, कुल्ला । कळू – कलियुग । चाई – प्रसिद्ध । रत्त – रक्त, लहू । वराळां – धाराप्रवाह, प्रबल वेग से । कराळां – भयानक, भयावह । तणै – के ।

६. जीमाया – भोजन करवाया । गगवांणै – अजमेर के समीपस्थ गगवाना ग्राम के [illegible] । वळे – पुनः । जिकै – जो, वे । जंग – युद्ध । नीघसाया – [illegible] । नद्द – नगाड़े । दनू – [illegible] । गाजीसाह हरा – [illegible] । आवधां – शस्त्रों से । विहद्द – बेहद, असीम ।

७. [illegible]

१४३. गीत महाराजा राजसिंघ राठौड़ किसनगढ़ रौ

हका बाज बंबहर सहर होइ दळ हिलोहळ,
सूर रज डंमर अंबर न सूझै।
विधूंसण राजश्री इहग की गती व खड़े,
बखत तिण राजड़ा तूंहीज बूझै ॥१॥
क्रोध वायक पढ़ै करां जमदढ़ कढ़े,
नरां नायक विहूं चढ़ै नाथां।
हैकंपण संगांथां स्यामद्रोहां हूवौ,
बाज लोहां हूवौ लूथबाथां ॥२॥
महा मणधर भुजंग बढ़ै मानांणियां,
डसेगो पेड पत्र डम्मर डाळा।
कराळा चसम ऊनाळा डाळा करण,
काळ चाळा करण नमौ काळा ॥३॥

---

१४३. गीतसार—उपर्युक्त गीत किशनगढ़ के महाराजा राजसिंह राठौड़ के युद्ध में प्राणोत्सर्ग करने का सूचक है। गीतकार ने राजसिंह के प्रभाव का दिग्दर्शन करवाते हुए व्यक्त किया है कि जब राज्य लक्ष्मी का अपहरण करने के लिए शत्रुगण अश्व सेना को आगे बढ़ाने लगे और उसके भय से नगर की शान्ति भंग होकर जन-जीवन अस्तव्यस्त हो गया। अश्व-टापों से आकाश में फैली धूलि राशि से रवि-ज्योति धूमिल पड़ गई। उस समय त्राण पाने के लिए राजसिंह से प्रश्न किया गया- कहो, अब क्या करें।

---

१. हका — हाक, ध्वनि, चलने। बाज — बजने, घोड़े। बंबहर — नगाड़े। दळ — सेना, चंचल पत्र। हिलोहळ — हलचलमय। सूर — सूर्य। रज — धूलि। डंमर — परिपूर्ण, आच्छादित। अंबर — आकाश। सूझै — देख पड़े। विधूंसण — विध्वंस करने। राजश्री — राज्यलक्ष्मी। इहग — सर्प। खड़े — प्रस्थान करने। तिण — उस। बूझै — पूछते हैं।

२. वायक — वचन, शब्द। पढ़ै — पढ़ते हैं, उच्चारण करते हैं। करां — हाथों से। जमदढ़ — कटारें, तलवारें। कढ़े — निकलती हैं। विहूं — दोनों। चढ़ै नाथां — सामने चढ़ते हैं, सम्मुख भिड़ते हैं। हैकंपण — हाहाकार, भयनाद। संगांथां — साथियों में। स्यामद्रोहां — स्वामि-द्रोही। बाज — प्रहार होकर, चलकर। लोहां — अस्त्र-शस्त्रों से। लूथबाथां — गुत्थमगुत्थ।

३. महा — बड़ा। मणधर — मणि धारण करने वाला। भुजंग — सर्प। मानांणियां — मानसिंहोतो। डसेगो — डसने लगा, डंक काटने लगा। डम्मर डाळा — वैभव रूपी शाखाओं को। कराळा — भयंकर। चसम — चश्म, नेत्र। ऊनाळा — ग्रीष्म के, उनके। काळचाळा — मृत्यु के खेल, युद्ध। काळा — वीर।

कोहमातौ तिमर घोर धर नभ कियौ,
भभकियौ सोर तातौ विमर भीर।
करण रण विछूटौ बीर राजड़ किनां,
विख धरण सीस तूटौ अरुण वीर ॥४॥
तूझ धन पराक्रम कियै कमळा तणी,
चमीकर कुसम कमळां तणां चूंट।
सोम डाणां लगौ गीरबाणां संगी,
बीर चढ़ वीमाणां गयौ वैकूंट ॥५॥
—हुकमीचंद खिड़िया री कह्यौ

१४४. गीत ठाकर जोधसिंघ नाथावत चौमू रौ

वागां ऊपड़ी सतारा सेन वाळी चोड़ै खेत बीच,
रूकताळी घड़ी हेक बागी बज्रराह।
नाथाणी जोधार वंस नीधोखे हरौळां नेत,
नेत वेही कीधो बधै हरौळां निबाह ॥१॥

---

१४४. गीतसार—उपरांकित गीत जयपुर के चौमू ठिकाने के स्वामी ठाकुर जोधसिंह नाथावत कछवाहा पर रचित है। जोधसिंह ने महाराजा माधवसिंह की ओर से कांकोड़ के मैदान में मल्हारराव होल्कर को पराजित किया था। गीतकार ने कांकोड़ का उल्लेख करते हुए गीत में लिखा है कि सतारा की सेना के अश्वों की लगामें खेंची जाने के साथ ही वज्र तुल्य तलवारों की प्रहार ध्वनि होने लगी। जोधसिंह ने कछवाहों की सेना का नेतृत्व ग्रहण कर वीरगति प्राप्त की थी।

---

४. कोहमातौ – अत्यधिक धूलि। तिमर – अंधकार। धर – पृथ्वी। नभ – आकाश। भभकियौ – धधक उठा, भभका। सोर – बारूद। तातौ – तप्त, तपा हुआ। विमर – । विछूटौ – छूटा, झपटा। राजड़ – महाराजा राजसिंह। किनां – अथवा। विखधरण – शेषनाग। तूटौ – झपटा, आक्रमण करने का भाव। अरुण वीर – अरुण का बंधु, गरुड़।

५. धन – धन्य। कमळा – राज्यश्री। तणी – की। चमीकर – स्वर्ण। डाणां – जोश, मस्ती। गीरबाणां – देवताओं। संगी – साथ में। वीमाणां – विमानों। वैकूंट – वैकुण्ठ, स्वर्ग लोक में।

१. वागां – लगामें। ऊपड़ी – उठी, खेंची गई। सतारा – पूना सतारा वालों, यहाँ इन्दौर वालों के पूर्वज मल्हार की सेना से अभिप्राय है। चोड़ै खेत – खुले रणक्षेत्र में। रूकताळी – तलवारों के प्रहारों की झड़ी। बागी – बजी, तलवारें चलीं। बज्रराह – वज्रपात की भांति। नाथाणी – कछवाहों की नाथावत शाखा के। जोधार – योद्धा। नीधोखे – निर्भीक भाव से, छलरहित। हरौळां नेत – हरावल सेना का नेतृत्व। बधै – बढ़कर।

चण्डी हाक डाक हूवै हैजम्मा हुचक्के चोड़ै,
कौळ दाढ़ चक्के भूलचक्के कौम कंध ।
जाडौ भार पडंतां आमेर आडौ अद्र जेम,
बीजौ नाथ जूटौ फौजां लाडौ नेतबंध ॥२॥
कोमंडां भणंके चीला सणंके साइकां सोंक,
सनाहां खणंके कड़ी केई जोम सास ।
क्रोध झाळा मत्थे डाक डंडाळां रणंके केई,
बीर काळा मत्थे केई झणंके बाणास ॥३॥
तेंज जंगां तोकै बोम बारंगां विलोके तूंही,
धारंगां सघोखे तूंही अंगां आग धीठ ।
जंगां नाग काळां धू पहाड़ काळा तूंही झोकै,
रोखंगी कराळा तूंही रोकै आकारीठ ॥४॥
गिरंदां कंकोड़ डंडा रोड़ नगारां सूं गाजै,
भाजै भीत भारा सूं के कारिमां भाराथ ।
साहंसी सहस्र सार धारा सूं सिनांन साजै,
नाथ सतारा सूं बाजै नाथावता नाथ ॥५॥

---

२. हाक डाक – हल्ला और ढाक वाद्य की ध्वनि । हैजम्मा – सेना । हुचक्के – भिडन्त करती है, लड़ती है । कौळ दाढ़ – वाराह की दाढ़ जिस पर पृथ्वी ठहरी मानी जाती है । चक्के – डिगने लगे, च्युत होने लगे । भूलचक्के – भूमि लचकती है । कौम कंध – कूर्म के स्कंध । जाडौ भार पडंतां – भारी दबाव पड़ते । आडौ – ओट बनकर, सामने रक्षक बना हुआ । अद्र – गिरि, पर्वत । बीजौ नाथ – द्वितीय नाथा । लाडौ – दुल्हा । नेतबंध – वीरता सूचक चिन्ह विशेष धारी ।

३. कोमंडां – धनुषों के । चीला – प्रत्यंचा । सणंके – ध्वनि विशेष । साइकां – तीरों की । सोंक – चलने पर होने वाली ध्वनि । सनाहां – कवचों की । खणंके – ध्वनि । कड़ी – कवचों की कड़ियाँ, बंध । क्रोध झाळा – क्रोध-ज्वाला । मत्थे – सिर, पर । डाक – वाद्य । डंडाळां – नगाड़ों, दण्डकों । रणंके – ध्वनि विशेष । वीर काळा – प्रचण्ड वीर । झणंके – झंकार ध्वनि । बाणास – तलवार ।

४. तोकै – वार करना, संभालना । बोम – व्योम, आकाश । बारंगां – अप्सराएं । धारंगां – तलवारें । सघोखे – सघोष । आग – अग्नि । धीठ – धृष्ट, वीर । नाग – हाथी । धू – मस्तक । झोकै – धकेले, बढ़ाकर आक्रमण करावे । रोखंगी – रोषान्वित । रोकै – रोकता है । आकारीठ – युद्ध ।

५. गिरंदां – पहाड़ों । कंकोड़ – जयपुर में एक स्थान जहाँ पर यह युद्ध लड़ा गया था । डंडा रोड़ – नगाड़े बजवा कर । भीत – डर । कारिमां – कायर । भाराथ – युद्ध । सार धारा – तलवार । सिनांन – स्नान । बाजै – लड़ता है ।

काळी श्रोण वोका लेत लोहणेस वाळा कुंड,
झाळा खगां खोहणेस वाळा तोका झंड ।
बिमाणां अरोहणेस वाळा वौम लोका बोले,
मोहणेस वाळा काळा झोका राड़ी मंड ॥६॥

नंद भूतनाथ नूं नचाड़ी धाड़ी बीर नट्टां,
रूक हूंत राड़ि नाग घटां कीध रोध ।
क्रोध धार हटां जूझ बटां थटां झड़े केई,
जोध मारहटां पाड़ो पड़े महाजोध ॥७॥

झाळ काळ भड़ां घड़ां झड़क्की श्रोझड़ां बाहे,
दाहे बज्रबांण भडां छडां बांण घोक ।
सूरधीर बांण कै कबांणगीर बाण साहे,
लाहे गीरबांण रूपी नीरबांण लोक ॥८॥

—हुकमीचंद खिड़िया रौ कह्यौ

---

६. काळी – कालिका । वोका – अञ्जुली । लोहणेस वाळा कुंड – रक्त कुण्ड में, रणस्थल रूपी कुण्ड में । झाळा ज्वाला । खगां – तलवारों । खोहणेस – विनाश करने वाले । तोका – शस्त्र-प्रहार । अरोहणेस – आरोहण, सवारी । वौम – आकाश । मोहणेस वाळा – मोहनसिंह वाले । काळा – वीर । झोका – धन्य । राड़ी मंड – युद्ध लड़ने ।

७. नंद – नंदिगण । भूतनाथ – शिव । नचाड़ी – नृत्य कराकर । धाड़ी – वीर, दहाड़ कर । वीर नट्टां – वीर नट । रूक हूंत – तलवार से । राड़ि – युद्ध । नाग घटां – गज सेना । कीध रोध – रौंद दी, रोक दी । हटां – हठपूर्वक । जूझ बटां – युद्ध-पथ । थटां – सेना । झड़े – कट कर गिर पड़े । जोध – जोधसिंह ने । मारहटां – मरहठों को । पाड़ी – गिरा कर । महाजोध – महान् योद्धा ।

८. घड़ां – सेना । झड़क्की – झटका देकर, प्रहार कर । श्रोझड़ां – तलवार के तिरछे प्रहार । बाहे – चला कर । छडां – भाले । बांण – तोप । घोक – अविरल प्रहार । कबांणगीर – धनुर्धर । साहे – लिए, धारण किये । गीरबांण – देवता । नीरबांण – निर्वाण ।

१४५. गीत महाराणी अतरंगदे कछवाही जोधपुर री

प्रथम बैस सोव्रन तुला तेड़ सारी प्रथी,
जस तणी बात सह गढ़े जांणी।
राज राखण रीधू नांम वरसींघ री,
रचे आरंभ धरम तणी रांणी ॥१॥

सरोवर बडौ परणाय कीधौ सुक्रत,
हेम रूपौ दीयौ बहौ हाथे।
सधू वरसींघ री तुला चढ़तां सही,
मौड़ बांधां घणा दुजां माथे ॥२॥

ऊधमे धांन पकवांन अतरंग दे,
जस तणौ करायौ प्रथी जैकार।
चली घ्रत नंदी चळै तुला चढंतां,
इसौ कीधौ नहीं किणी आचार ॥३॥

---

१४५. गीतसार—उपरोक्त गीत जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह प्रथम की महारानी अतरंग दे कछवाही के तुलादान की प्रशंसा का है। अतिरंगदे खण्डेला के राजा वरसिंह की राजकुमारी थी। गीत में लिखा है कि कछवाही ने राज्य एवं अपने पति के कल्याण के लिए तुलादान कर संसार में प्रसिद्धि प्राप्त की।

---

१. बैस – बिराज कर, बैठ कर। सोव्रन तुला – स्वर्ण की तुला पर। तेड़ – बुलवा कर, निमंत्रित कर। सारी – समग्र। जस तणी – यश की। सह गढ़े – समस्त गढ़ों, रियासतों। रीधू – अटल, स्थिर। आरंभ – श्री गणेश कर, प्रारंभ कर।

२. परणाय – विवाह कर, राजस्थान में तालाब, वापी, पीपल वृक्ष आदि का विवाह किया जाता रहा है। सुक्रत – सुन्दर कार्य, पुण्य कार्य। हेम रूपौ – स्वर्ण और चाँदी धातुएँ। बहौ – बहुत-सा। सधू – कन्या, पुत्री। वरसिंघ री – राजा वरसिंह शेखावत की। मौड़ बांधां – सेहरे बांधे, ब्राह्मण कन्याओं का विवाह कर पुण्य लिया। घणा – घने, बहुत। दुजां – द्विजों, ब्राह्मणों के। माथे – मस्तकों पर।

३. ऊधमे – दान कर के। धांन – अन्न। जैकार – जयजयकार की ध्वनि। घ्रत नंदी – घृत की नदी। चळै – पलड़े में। इसौ – ऐसा। किणी – किसी ने भी। आचार – व्यवहार, दान-पुन्य का व्यवहार।

आद तरवार नवही खंड ऊपरां,
आद सेखावतां घरे आचार।
कुळ बहू गजन री राज इचरिज किसौ,
सुजस मुख मुख हूवौ सरब संसार ।।४।।
जानसर बणै सातों समंद जोड़ री,
लाख द्रब खरच सोभाग लीधौ।
आप रै भाग जसराज री अरधंगा,
करै किरतब प्रथीनाम कीधौ ।।५।।

१४६. गीत राणी अतरंगदे कछवाही जोधपुर रौ

बिरखा जिम करग अहोनिस बरसै, सेखावती धारां सबळ।
अवरां तणा दान जग ऊपर, काती डंबर तणी कळ ।।१।।
बरसिंघ सुता तिहारा बसुधा, पांण सुद्रब बरसण पारीख।
दूजां तणां त्याग रा डंबर, सरद तणा अंबर सारीख ।।२।।

---

१४६. गीतसार–गीतकार ने उपरोक्त गीत में महाराजा जसवंतसिंह प्रथम की महारानी अतरंगदे कछवाही के दान की श्लाघा की है। गीत में लिखा है कि शेखावत कुलोत्पन्न महारानी जहांन कुंवरि के हाथ वर्षा की झड़ी के समान रात दिन बरसते रहते हैं। उसके दान के सामने अन्य राजा-रानियों की उदारता कार्त्तिक के मेघों की भाँति केवल कृत्रिम आडम्बर मात्र भासित होती है।

---

४. आद – आदिकाल से ही। तरवार – तलवार, युद्ध-कर्म। आचार – व्यवहार। कुळ बहू – कुलवधू। गजन री – महाराजा गजसिंह की। राज – आपके लिए। इचरिज – विस्मय। किसौ – कैसा। सुजस – सुयश। सरब – सर्व, समस्त।

५. जानसर – जान सरोवर, यह अब शेखावत जी के तालाब के नाम से जोधपुर में प्रसिद्ध है। जोड़ री – बराबरी का। लीधौ – लिया। जसराज री – महाराजा जसवंतसिंह प्रथम की। अरधंगा – अर्द्धांगिनी, महारानी। किरतब – कर्त्तव्य, शुभ एवं प्रशंसनीय कार्य। प्रथीनाम – पृथ्वी पर अपना नाम किया, संसार में प्रसिद्धि प्राप्त की।

१. बिरखा – वर्षा। जिम – जिस प्रकार, जैसे। करग – हाथ। अहोनिस – रात्रि-दिवस। धारां सबळ – सबल धाराएँ। अवरां तणा – अन्य लोगों का। काती डंबर तणी – कार्तिक मास के घटाडम्बर को जो बरसते बहुत कम हैं। कळ – तरह, भांति।

२. बरसिंघ सुता – राजा बरसिंह की पुत्री। तिहारा – तुम्हारा, तेरा। पांण – हाथ। बरसण – बरसने वाले। डंबर – वैभव प्रदर्शन, आडम्बर, मौज। सरद – शरद ऋतु। अंबर – मेघ, आकाश। सारीख – सदृश।

कर सांवण भाद्रव मुगता कर, रेणू-सर झिलिया रिध।
अदवां ग्राह मंडीया उवराड़े, बादळ ठालां तणी बिध ॥३॥

अति वौळां ठालां अदतारां, विध चात्रगन घरै वेसास।
गुणधारी दिस ही दिस गावैं, जहांन कंवर थांरो सुजस ॥४॥

१४७. गीत ठाकर सांवतसिंघ चत्रभुजोत बगरू रौ

धकै जज्र धू अकेला रातांखिया सांम काज धोरी,
पैलां दळां रोका नाग धांखिया पंखाळ।
हूर वनां पनां गिलां जंगा निसां किया होसी,
लारै सूर नंद भीछ डांकिया लंकाळ ॥१॥

भीम पाथ जेहा जुधां गैणाग तोला सा भुजां,
अरीहरां माथै वज्र गोळां सा ओपाळ।
वसू हबोळां सा इन्द्र टोळा सा बिजाई बाघ,
भड़ां दौळा रखै सीह टौळा सा भोपाळ ॥२॥

---

१४७. गीतसार—उपर्युक्त गीत जयपुर राज्य के बगरू ठिकाने के स्वामी सावंतसिंह चतुर्भुजोत कछवाहा के योद्धाओं की स्वामिभक्ति एवं पराक्रम की सराहना का है। गीत में लिखा है कि सांवतसिंह के योद्धा अपने स्वामी के कार्य के लिए कुशल, युद्ध में अर्जुन तथा भीम की भाँति प्रचण्ड वीर और शत्रुओं के नाश के लिए वज्राघात के सदृश हैं।

---

३. कर – हाथ। मुगताकर – मौक्तिक। रेणु-सर – पृथ्वी-सरोवर, याचक रूपी सागर। झिलिया – परिपूर्ण होकर छलकने लगे। रिध – ऋद्धि। अदवां – कृपणों के। उवराड़े – हृदय में। ठालां – रिक्त, बेकाम।

४. अदतारां – कंजूसों। वेसास – विश्वास। थांरो – तेरा, तुम्हारा।

१. जज्र – यमराज। धू – मस्तक। रातांखिया – रक्तिम नेत्र। सांम काम – स्वामी के कार्य के लिए। धोरी – मुखिया। पैलां – प्रतिपक्षी, दूसरों के। नाग – सर्प। धांखिया – क्रुद्ध, प्रबलेच्छु। पंखाळ – पंखधारी। हूर – अप्सरा। वनां – दुल्हा। पनां गिलां – रसिक, छैला। निसांकिया – निशंक। लारै – पीछे। सूर नंद – सांवतसिंह। भीछ – योद्धा। डांखिया – भूखे, कुपित। लंकाळ – सिंह।

२. भीम पाथ – भीमार्जुन। गैणाग – आकाश को। तोला सा – तोलने वाले, तोलने जैसे। अरीहरां – वैरियों के। माथै – सिर, पर। ओपाळ – शोभित, फबने वाले। वसू – संसार। हबोळां सा – तरंग समूह, हिलोरे जैसे। इन्द्र टोळा – इन्द्र के सैनिकों के समूह, मेघमाला। बिजाई – द्वितीय। बाघ – बाघसिंह। दौळा – चारों ओर, आसपास। सीह टौळा सा – सिंहों का समूह-सा। भोपाळ – भूपाल, राजा।

कुंती प्रवार का सा तीकी सींभू सारका कोट,
सपूताचार का हेम दती की सी साथ।
विरद्दां लार का जती की सोरित थर्घ वापो,
परघं धार का पती को सी प्रथीनाथ ॥३॥

दनोज तनेज री सी प्रभता भणांई देसां,
उग्रता मनोज री सी जणाई आवंत।
सक्र चोज री सी भोज हनोज री सी गणाई,
साजां सभा राजा भोज री सी वणाई सावंत ॥४॥

—चंडीदान हरमाड़ा री कह्यौ

१४८. गीत रघुनाथसिंघ मेड़तिया मारोठ रा धणी रौ

जोधां जसराज कूरमां जैसिंघ, जग हाडां भावसी जपै।
राजड़ तेम अहाड़ां राणो, तिम मेड़तियां रुघो तपै ॥१॥

---

१४८. गीतसार—उपर्युक्त गीत गौड़ावाटी पर मेड़तिया राठौड़ों का राज्य संस्थापक ठाकुर रघुनाथसिंह सांवलदासोत की प्रशंसा पर कहा हुआ है। गीत में रघुनाथसिंह की महाराजा जसवंतसिंह जोधपुर, महाराजा सवाई जयसिंह आमेर, महाराव भावसिंह बूंदी और महाराणा राजसिंह उदयपुर के साथ समता प्रकट करते हुए सराहना की गई है।

---

३. कुंती प्रवार का सा – कुन्ति के परिवार जैसा, अर्जुन के बाण तुल्य। तीकी – तीक्ष्ण। सींभू – शिव के। सार का कोट – उत्तम कोटि के लोहे का दुर्ग सदृश, शिव के त्रिशूल जैसा। हेम दती – स्वर्ण-दानी, राजा कर्ण। विरद्दां – विरुदों। जती – हनुमान। थर्घे – थाह प्राप्त करे। वापो – पिता तुल्य। परघं – सेना, परिजन। धार का पति – धारा नगरी का स्वामी, राजा भोज पंवार।

४. दनोज – सूर्य। प्रभता – प्रभुता, ज्योति, कीर्ति। भणांई – पठन करवाना, कीर्ति पाठ करवाया। मनोज – कामदेव। जणाई – प्रसिद्ध की। सक्र – इन्द्र। चोज – आनंद, दान, विनोद। मौज – आनंद, दान की लहर। हनोज री – आज भी। साजां – ठाठ-बाट से सज्जित। सावंत – सावंतसिंह ने।

१. जोधां – राठौड़ों की जोधा शाखा वालों में। जसराज – महाराजा जसवंतसिंह प्रथम जोधपुर। कूरमां – कछवाहों में। जैसिंघ – महाराजा सवाई जयसिंह प्रथम आमेर। हाडां – चौहानों की हाडा शाखा वालों में। भावसी – बूंदी का शासक महाराव भावसिंह। राजड़ – महाराणा राजसिंह प्रथम उदयपुर। तेम – वैसे। अहाड़ां – आहड़ स्थान पर रहने वाले सीसोदियों में। राणो – महाराणा [illegible]। तिम – वैसे ही। मेड़तियां – राठौड़ों की मेड़तिया शाखा वालों में। रुघो – रघुनाथसिंह। तपै – [illegible]।

गढ़ आमेर जोधांण बडे गढ़, घर बूंदी गढ़ नूभै घणी।
गढ़ दस सहस चीतगढ़ राजै, तेम स गढ़ मारोठ तणी ॥२॥

तण गजसाह अनै माहव तण, घायक तण सत्रसाल धणी।
जगड़ तणै जिसड़ौ जोरावर, तिसड़ौ सांवळदास तणौ ॥३॥

आलम लियां बडा भड़ भळहळ, धूहड़ जस खत्रवाट धरै।
पांच ठौड़ आलम पतसाहां, सो जालम संसार सिरै ॥४॥

१४६. गीत रांणी जसवंतदे हाडी जोधपुर रौ

रचिया ध्रम जिगन प्रथी सिर रांणी, राखण मोटी घर रीत।
हाथ सदा मोटा हाडी रा, गढ़ गढ़ भला गवाड़े गीत ॥१॥

बाग तुलाव तलाव त्रिणे बिध, करमेती कीधौ सुक्रम।
जस खाटियौ वडौ जसवंतदे, धन रांणी थारौ सुध्रम ॥२॥

---

१४६. गीतसार—उपर्यंकित गीत जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह प्रथम की महारानी जसवंतदे के तुलादान समारोह का सूचक है। जसवंतदे ने कल्याण-सागर नामक तालाब और राईका बाग उद्यान का निर्माण करवाकर स्वर्ण तुलादान किया था। गीतकार ने लिखा है कि उदार हाथों वाली जसवंतदे ने संसार में तुलादान का आयोजन कर अपनी वंश-परम्परा का निर्वाह किया।

---

२. जोधांण – जोधपुर। नूभै – निर्भय। घणी – घना, बहुत। दस सहस – दश हजार गाँवों का स्वामी, मेवाड़ का शासक। चीतगढ़ – चित्तौड़। राजै – शोभित होता है। तेम स – त्योंही, उसी प्रकार। मारोठ तणौ – मारोठ का स्वामी।

३. तण गजसाह – महाराजा गजसिंह का पुत्र जसवंतसिंह। अनै – अन्य, और। माहवतण – महासिंह-तनय, सवाई जयसिंह। तण सत्रसाल – महाराव-शत्रुशाल पुत्र, भावसिंह हाडा। जगड़ तणै – महाराजा जगतसिंह का पुत्र राजसिंह। सांवळदास तणौ – सांवलदास का पुत्र रघुनाथसिंह।

४. भड़ – भट्ट, वीर। भळहळ – दीप्तिमान। खत्रवाट – क्षत्रियत्व। ठौड़ – स्थान। पतसाहां – बादशाहों में। जालम – वीर। सिरै – शिरमौर, श्रेष्ठ।

१. रचिया – रचा, किया। जिगन – यज्ञ। प्रथी सिर – संसार पर। घर रीति – कुल-व्यवहार, वंश की रीति। मोटा – बड़ा, उदार। हाडी रा – महारानी जसवंतदे हाडी का। भला – अच्छे, कीर्ति प्रदान करने वाले। गवाड़े – गान करवाकर।

२. बाग – उद्यान। तुलाव – तुलादान। तलाव – तालाब। त्रिणे विध – तीनों विधि से। करमेती – जसवंतदे का पितृगृह का नाम कर्मावती था। कीधौ – किया। जस – यश। खटियौ – प्राप्त हुआ। थारौ – तेरा, तुम्हारा। सुध्रम – सुधर्म।

सत्रसल सधू गजन ग्रह सुबहू, पातां घणां करण प्रतपाळ ।
गोपीनाथ हरी मोटै गढ़, ओपी बेहूं पखां उजवाळ ।।३।।

सांम कल्याण तणी कर सागर, वणीयौ वळै अनोपम बाग ।
चढ़तां सपत धात रै चेळै, भूअपत त्रिया सराहै भाग ।।४।।

पकवांनां धानां पाटंबर, सारौ जस अवियो सरस ।
पाजां महण लगै परवरियौ, जसवंतदे थारौ सुजस ।।५।।

तुला बैसि रचि जिगन तेवड़ा, वळ छेळै अढ़ारे बरग ।
जग ऊपर कीधा जोधांणै, करमेती रांणी करग ।।६।।

अचळ जोड़ अहवात अखंडित, कीरत पुणै सदा कविपात ।
राजा सहत विराजै रांणी, छाजै जसी हींदवी छात ।।७।।

—प्रथीराज आढ़ा हींगळा रौ कह्यौ

---

३. सत्रसल सधू – महाराव शत्रुशाल हाडा बूंदी की पुत्री । गजन ग्रह सुबहू – महाराजा गजसिंह राठौड़ की कुलवधू । पातां – पात्रों, कवियों, याचकों । घणां – घना, अधिक । गोपीनाथ हरी – राजकुमार गोपीनाथ हाडा की पौत्री । ओपी – शोभित हुई । बेहूं पखां – दोनों पक्ष में, ससुर और पितृ पक्ष में । उजवाळ – उज्ज्वल करने वाली, कीर्तिमान् बनाने वाली ।

४. सांम कल्याण – स्वामी के कल्याण की कामना से । सागर – तालाब, तालाब का नाम कल्याण सागर रखा गया था जो आजकल रातानाडा के नाम से प्रसिद्ध है । वळै – पुनः, फिर । अनोपम – अनुपम । सपत धात रै – सप्त धातु के । चेळै – पलड़े, पालने में । भूअपत त्रिया – राजा और रानी, रानी के भाग्य की अन्य भूपति । सराहै – श्लाघा करते हैं । भाग – भाग्य की, सौभाग्य की ।

५. पकवांनां – पकवान, पकाया हुआ अन्न । धानां – अन्न, अनाज । पाटंबर – रेशमी वस्त्र । सारौ – समस्त । जस – यश । अवियो – अत्यधिक दान दिया हुआ, बरसा हुआ । महण – समुद्र । परवरियौ – फैला, बढ़ा, तरंगें लेने लगा । थारौ – तेरा ।

६. बैसि – बैठकर । जिगन – यज्ञ । तेवड़ा – प्रारंभ करना । वळ – भोजन । छेळै – [illegible] किये । अढ़ारे बरग – अठारह वर्णों को, बहुत अधिक । जोधाणै – जोधपुर । करग – हाथ ।

७. जोड़ – जोड़ी । अहवात – सौभाग्य । कीरत – कीर्ति । पुणै – कहते हैं । कविपात – कवि पात्र, कवि और याचक । विराजै – बैठकर । छाजै – शोभित होती है । जसी – [illegible] । छात – छत्र, राजा ।

१५०. गीत महाराव प्रतापसिंघ अलवर रौ

अेळा इन्द्र सूं जूझवा क्रोध उमंतां ब्रजेन्द्र आयो,
वेळां जेण आयो पत्तौ विरद्दां वंकेस।
बांण पती आयो मांणी पांण बांण बिच्छूटतां,
लांघो वीर आयो जांणी जूटतां लंकेस ॥१॥
चाळ लोहां मंडे नाथ कुरम्मा जुहार चोड़ै,
काळ बोहां थंडे जोर बीजौ ग्रहे कूंत।
किरीटी कुरिन्द्र रोस हक्कै कैरवेस किनां,
हुचक्कै वज्रंगी बीस भुजा डंडा हूंत ॥२॥
धरा धींग बेबे बाज बम्मे घाव श्रोण धारां,
राव खळां खोण धारा धम्मे तावरीस।
अखेतौण धारा धू द्रजोण बौण धारा आयो,
सेळ द्रोण धारा अबे कौण धारा सीस ॥३॥

---

१५०. गीतसार—उपरोक्त गीत अलवर पर नरूका राज्य के संस्थापक महाराव प्रतापसिंह नरूका पर रचित है। प्रतापसिंह ने भरतपुर के महाराजा जवाहरमल्ल जाट के जयपुर राज्य पर आक्रमण करने पर मांवडा मंडोली स्थान पर युद्ध कर उसे हराया था। गीत में लिखा है कि कर्ण अथवा दुर्योधन के महाभारत में बाण संधान करते समय अर्जुन तथा लंका विजय के लिए रावण से सामुख्य करते समय हनुमान जिस प्रकार रणस्थल में आया था, उसी प्रकार के उत्साह से महाराजा माधवसिंह और महाराजा जवाहरमल्ल के परस्पर युद्ध करते समय प्रतापसिंह युद्ध में आया।

---

१. अेळा इन्द्र — पृथ्वीपति, महाराजा माधवसिंह प्रथम। जूझवा — युद्ध करने। उमंतां — मदमस्त, उमड़ता। ब्रजेन्द्र — व्रजपति, जवाहरमल्ल। वेळां — समय। पत्तौ — प्रतापसिंह। विरद्दां वंकेस — बाँकुरा विरुदधारी। बांण पती — अर्जुन। मांणी — भोगने वाला, मानी। पांण — भुजा, बल। बिच्छूटतां — छोड़ते, चलाते। लांघो वीर — वीर हनुमान। जूटतां — भिड़ते। लंकेस — रावण।

२. लोहां — लोहा, शस्त्र। नाथ कुरम्मा — कछवाहों के स्वामी। जुहार — जवाहिरसिंह। थंडे — । कूंत — भाला। किरीटी — अर्जुन, इन्द्र। कुरिन्द्र — । रोस — रोष। कैरवेस — कौरवों के स्वामी। किनाँ — किंवा। हुचक्कै — झपटे, भिड़े। वज्रगी — हनुमान। बीस भुजा — रावण। डडा हूंत — दण्डों से।

३. धींग — वीर, बलवान। बम्मे — बहते। श्रोण धारा — रक्त की धारा। राव — राव उपटंकधारी प्रतापसिंह। खळां — शत्रुओं को। खोण — नष्ट करने। धम्मे — चलाता। तावरीस — अत्यधिक रुष्ट। अखेतौण — अक्षय तूणीर, अर्जुन। धू — मस्तक। द्रजोण — दुर्योधन।

रुद्र सो रूठतो कूंत त्रभागो भूबळां रोळै,
अथागो ऊतोलै दळां दूठतो औनाड़ ।
ऊठतो गांजीव घोख लागो माधवाण वाळो,
पैउमांण वाळो बागो वूठतो पहाड़ ॥४॥

जटाधार माधवेस खूटो नेत क्रोध जांणे,
अंसी मोहवतेस तेगां तूटो वज्र आड़ ।
जूटो पंडवेस आगे भाराथ पाराथ जांणे,
राम आगे हणूंमान जूटो लंक राड़ ॥५॥

धनंजै अठारा दीह आसे मीर वाणां धीठ,
गिरव्वाणां पाणां जत्ती छमासे उग्राह ।
फौजां रोस रत्ते तेगां तत्ते वाही कीधी फतै,
महावीर मत्ते पत्ते हेके दीह मांह ॥६॥

—हुकमीचंद खिड़िया रौ कह्यौ

---

४. रुद्र सो – महादेव सदृश । रूठतो – नाराज होता, कुपित । कूंत त्रभागो – तीन धार वाला भाला । भूबळां – भूरि बल । अथागो – अतीव फुर्ती से, शीघ्रता से । ऊतोलै – प्रहार हेतु उठाकर । दूठतो – क्रुद्ध । औनाड़ – जो बंधन न सहे । गांजीव – गांडीव, अर्जुन का धनुष, बर्छी, भाला । घोख – गरजने का शब्द, घोर । माधवाण – महाराजा माधवसिंह । पैउमांण – हनुमान, पवन [illegible] । बागो – लगने लगा । वूठतो – बरसाता, वर्षा करता ।

५. जटाधार – शिव । माधवेस – महाराजा सवाई माधवसिंह । खूटो – खुला । नेत – नेत्र । अंसी – [illegible], पुत्र । मोहवतेस – राव मोहब्बतसिंह । तेगां – तलवारें । तूटो – टूटा, [illegible] । जूटो – भिड़ा । पंडवेस – युधिष्ठिर । आगे – [illegible] । पाराथ – पार्थ, अर्जुन । राड़ – लड़ाई, युद्ध ।

६. धनंजै – अर्जुन । अठारा दीह – अठारह दिन । धीठ – धृष्ट, वीर । गिरव्वाणां – [illegible] । [illegible] – [illegible] । जत्ती – हनुमान । उग्राह – उद्धार, मुक्त, [illegible] । रोस – रोष । रत्ते – [illegible] । [illegible] – [illegible], तेज । वाही – [illegible] । [illegible] – [illegible] । हेके दीह मांह – एक दिन में ही ।

१५१. गीत रांणी जसवंतदे हाडी जोधपुर रौ

प्रथम पांच पकवांन घ्रत धांन मांडै प्रिथी, उमंडी नदी छह छंडी आडी।
बडै गढ़ जोधपुर सादेसां विचै, हैकव हूवौ जसवास हाडी ॥१॥
दान सोव्रन सुद्रब कीया जसवंतदे, तुळ चढ़ै मेटियौ अवां तोटौ।
मही मंडळ थयौ सुजस लाखां मुखां, महाराणी कीयौ जाग मोटौ ॥२॥
अवै घातां सपत तणा छांही अणां, जनम चा नांखीया दळद जूदा।
सुर भवण अंजसिया राव सत्रसल, सधू दान सुण राव रतन भोज दूजा ॥३॥
पत्रोठे बाग दरियाव पोखै प्रथी, पूगवी प्रसध दध सात पाजां।
रिधू जुग कोड़ लग जोड़ काइम रहौ, राज अहवात छत्र महाराजा ॥४॥
सतरमें समत सुभ तीस मै समंछर, पख सुकळ वारस तिथ पूर।
कमां कलियाणसर कीत थंभ थिर कियौ, साख सुद जेठ संसार सिस सूर ॥५॥

—सांमा बारहठ रौ कह्यौ

---

१५१. गीतसार—उपर्यंकित गीत महारानी जसवतदे हाडी जोधपुर की वदान्यता का बोधक है। जसवंतदे बूंदी नरेश शत्रुशाल की राजकुमारी और महाराजा जसवंतसिंह जोधपुर की पट्टरानी थी। महारानी ने कल्याण सागर तालाब की सम्पन्नता के समारोह पर तुलादान कर याचकों को द्रव्य, अन्न और वस्त्र दान कर अपनी उदारता की ख्याति अर्जित की थी। गीत में उसके दान की समसामयिक कवि द्वारा श्लाघा की गई थी।

---

१. पकवांन — पकवान। घ्रत — घृत। धांन — अनाज। मांडै — दिये, बनाये, मंडित किये। उमंडी — उमड़ी। छह — उत्साह, उमंग। छंडी — छोड़कर, चढ़कर। आडी — टेढ़ी। सादेसां — सब देशों, स्वदेशों। हैकव — हाक, हल्ला। जसवास — यश, यश की सुगंध।

२. सोव्रन — स्वर्ण। तुळ — तुला पर। अवां — दानों, देकर। तोटौ — अभाव, दरिद्रता। थयौ — हुआ। मुखां — मुखों। जाग मोटौ — बड़ा याग, बड़ा यज्ञ।

३. अवै धातां — धातुओं का दान देकर। सपत — सप्त। छांही अणां — — षट् वर्ण वाले, यती, योगी, सन्यासी, ब्राह्मण, चारण, साद ये छः षड् दर्शनी कहलाते हैं। जनम चा — जन्म के। नाखीयां — डाले, गिराये, दूर किए। दळद — दरिद्रता। जूदा — अलग। सुर भवण — देव-लोक में। अंजसिया — गौरवान्वित हुए, गर्वित हुए। सधू दान — पुत्री द्वारा प्रदत्त दान से।

४. पोखै — पोषित किये। पूगवी — पहुँची। दध सात — सात समुद्रों। पाजां — पाजें। रिधू — स्थिर। काइम — मौजूद, अटल।

५. मै — में। समंछर — संवत्सर। पख — पक्ष। वारस — द्वादशी। तिथ — तिथि। पूर — पूर्ण। कमां — करमेती। कीत थंभ — कीर्त्ति स्तंभ। थिर — स्थिर। जेठ — जेष्ठ मास में।

१५२ गीत ठाकर सूरसिंघ चत्रभुजोत बगरू रौ

अडर थाट सझियां थकां उमंग ऊससै,
धले कर मूंछ उतमंग ब्रहमंड घसै।
हंस नभ थंभियौ देखि कौतिग हंसै,
कसी रुख सूर नृप तुरंग दुतंगां कसै ॥१॥

घरर रव होत इकडंक त्रमंक घर-हरे,
फबि गजां पीठ पचरंग झंडा फरहरे।
पिसण जो करण दोय सिर तिकण धड़ परे,
कूरमां छात किण माथ आरंभ करे ॥२॥

हैमरां थाट भड़ वळोवळ हड़बड़ै,
झले कर वंदूकां पमंग तोड़ा झड़ै।
गाढ़मल हरख ज्यूं दियै पग पागड़ै,
खाग झळ बाघ सुत कठी काथा खड़ै ॥३॥

---

१५२. गीतसार—उपर्यंकित गीत बगरू के ठाकुर शूरसिंह चतुर्भुजोत कछवाहा पर कहा हुआ है। गीत में गीतकार ने शूरसिंह के युद्ध-प्रयाण के लिए सज्जित होने का वर्णन करते हुए लिखा है कि शूरसिंह की सज्जित सेना को देखकर आकाशचारी सूर्य विस्मित होकर स्तब्ध हो गया। संसार में शूरसिंह का ऐसा कौन विरोधी है जिसके धड़ पर दो सिर हैं।

---

१. अडर थाट – निर्भीक सैन्यदल। सझियां – सज्जित। थकां – होते हुए। ऊससै – जोश में आये हुए। धले कर मूंछ – मूंछ पर हाथ डाल कर। उतमंग – उत्तमांग, मस्तक। ब्रहमंड – आकाश। घसै – रगड़ना, बार बार स्पर्श करना। हंस – सूर्य। कौतिग – कुतूहल। कसी रुख – किस तरफ। सूर नृप – शूरसिंह नरेश, बगरू के स्वामी जयपुर राज्य के अधराजिया (अर्द्ध राजा) कहलाते थे इसलिए गीत में कवि ने शूरसिंह को नृप कहा है। तुरंग – घोड़े। दुतंगां – दो तंग, घोड़े के जीन को बांधने के उपकरण। कसै – बांधता है।

२. रव – ध्वनि, शब्द। इकडंक – एक दण्डक की चोट से। त्रमंक – ताम्बा के पेंदे के नगाड़े। घरहरे – बजते हैं, गर्जन करते हैं। पचरंग झंडा – जयपुर राज्य का ध्वज जो पांच रंगों की वस्त्र पट्टियों का बना होता था। पिसण – शत्रु। धड़ पर – शरीर पर। कूरमां – कछवाहों का। किण माथ – किस पर। आरंभ – प्रस्थान।

३. हैमरां थाट – अश्व सेना। भड़ – योद्धा। वळोवळ – चारों ओर, बार बार। हड़बड़ै – त्वरता से फिरते हैं। झले कर – हाथ में लिए हुए। पमंग – घोड़ा। तोड़ा – देशी बंदूकों के पलीते। गाढ़ मल – धीर, गंभीर। हरख – हर्ष। पग – पैर। पागड़ै – रकाब में। खाग – तलवार। झल – ग्रहकर, उठाकर। कठी – किधर। काथा – शीघ्रता से। खड़ै – प्रस्थान करता है।

रिमां सिर सभे सेना क्रतंत रूप रै,
धरा लचके मचक नागपती धूपरै।
सुहड़ थट दिपै लंकाळ सारूप रै,
आज इण भंति प्रारंभ किण ऊपरै ॥४॥

झिले कुंण आंन इण गजब री झाटसी,
खगां बळ अघट उप्रवट बिरद खाटसी।
थिरू पर खंड थाणां प्रचंड थाटसी,
दूठमल पदमहर रिमां धर दाटसी ॥५॥

आज जग सिरि टकरि सहे कुंण ऐण रौ,
जोध अवरी वरण अधिक छक जेण रौ।
लोभ मन कियौ धर पराई लेण रौ,
अजड़ खापां मंहि न मावै तेण रौ ॥६॥

---

४. रिमां सिर – शत्रुओं पर। क्रतंत – यमराज। लचके – लचकने की क्रिया का भाव, दोलित। मचक – ऊपर नीचे हिलना। नागपती – शेषनाग। धूपरै – मस्तक, पर। सुहड़ थट – योद्धा-समूह। दिपै – शोभित होते हैं। लंकाळ – सिंह। सारूप रै – स्वरूप के, सदृश। इण भंति – इस तरह। प्रारंभ – प्रस्थान। किण ऊपरै – किस पर।

५. झिलै – सहें, अपने ऊपर लें। कुंण आंन – अन्य कौन। गजब री – भयानक की, कुपित की, दैव-प्रकोप की। झाट सी – प्रहार जैसी। खगां बळ – खड्ग-बल। अघट – अघटनीय, विकट। उप्रवट – अधिक, सबसे अधिक। खाटसी – प्राप्त करेगा। थिरू – स्थिर। पर खंड – दूसरों के स्थान। थाणां – सैनिक चौकियां। थाट सी – स्थापित करेगा। दूठमल – बहादुर, योद्धा। पदमहर – पदमसिंह का पौत्र। रिमां धर – शत्रुओं की भूमि। दाटसी – दबाएगा, अधिकृत करेगा।

६. टकरि – टक्कर, भिड़न्त। सहे – सहन करें। ऐण री – इसकी। जोध – योद्धा। अवरी वरण – बिना लड़ी हुई सेना, कुमारी सेना जो युद्धार्थ सज्जित हो। छक – मस्ती। जेण री – जिसकी। पराई – दूसरे की। लेण री – लेने को। अजड़ – तलवार। खापां – म्यान, कोश। मंहि – में, भीतर। न मावै – समाहित नहीं होता है। तेण री – तिनका, उनका।

झाट इण गजब री कहो कुण झेलसी,
ठाकुरे खगां बळ सबळ दळ ठेल सी।
पांण हथ दंड दे घांण करि पैलसी,
मांण हथ करे सुरपति मंदर मेल सी ॥७॥

आज री घाट इसड़ौ निजर आवियौ,
थाट पति दूवां मन अचंभौ थावियौ।
प्रथी सिर भुजां बळ प्रसध पद पावियौ,
दुवौ जसवंत अरि अंत दरसावियौ ॥८॥

धीह त्राम्बाळ नद जेठ रा धाहुड़,
होइ दिग-विजै सिर उरस हूंतां अड़े।
असो विध भुजां भाला लिया आहुड़े,
वीर वर बोल बाला कीयां बाहुड़े ॥९॥

—कल्याणदास चारण रौ कह्यौ

---

७. झाट – चोट, आघात। इण – इस। झेलसी – सहन करेगा। खगां बळ – खड्ग बल। सबळ दळ – शक्तिशाली सेना। ठेलसी – धकेलेगा। पांण हथ – भुजबल। घांण – घमासान युद्ध, कुचल कर। मांण हथ – मानविहीन। सुरपति मंदर – स्वर्गधाम, इन्द्रलोक।

८. घाट – ढंग, आकृति। इसड़ौ – ऐसा। थाट पति – राजा, सेनापति। दूवां – अन्य, दूसरे। थावियौ – हुआ। प्रसध – प्रसिद्ध। दुवौ जसवंत – द्वितीय जसवंतसिंह। अरि – दुश्मन के लिए, दुश्मन को। अन्त – काल, मृत्यु। दरसावियौ – दीख पड़ा।

९. धीह त्राम्बाळ – नगाड़े की ध्वनि। नद – समुद्र, नदी। जेठ रा – जेष्ठ मास का। धाहुड़े – गर्जन करे। दिग-विजै – दिग्विजय। उरस हूंतां – आकाश से। अड़े – स्पर्श करे। असो विध – ऐसी विधि से। आहुड़े – भिड़े, टक्कर ले। बाहुड़े – लौटे, वापस आवे।

परिशिष्ट १

ऐतिहासिक टिप्पणियाँ

पृ० १ गीत १ ठाकुर सूरतसिंघ चहुवांण—मेवाड़ के इतिहास-ग्रंथों तथा ख्यातों में ठाकुर सूरतसिंह चौहान विषयक कोई उल्लेख नहीं मिला। मेवाड़ में चौहान वंश के क्षत्रियों के ठिकाने वेदला, कोठारिया, पारसोली, गुड़ला आदि थे। किन्तु इतिहास से पता नहीं चलता कि वह इन में से किस ठिकाने के भाई–बेटों में से था। गीत में उसके मरहठों की सेना से लड़ते हुए खेत रहने का वर्णन हुआ है। इसके अतिरिक्त यह भी संकेत मिलता है कि वह चित्तभ्रम होते हुए भी शत्रु-सेना से लड़कर मारा गया था।

पृ० २ गीत २ ठाकर जवानसिंघ—ठाकुर जवानसिंह राठौड़ों की दूदावत (मेड़तिया) शाखा का सरदार था। मारवाड़ का पालड़ी ठिकाना उसकी जागीर में था। जोधपुर के महाराजा विजयसिंह के समय मरहठों के मारवाड़ पर आक्रमण करने पर उसने महाराजा की ओर से मरहठों से युद्ध कर वीरगति प्राप्त की थी। किन्तु मारवाड़ के इतिहास तथा ख्यातों में कहीं वर्णन नहीं मिलता कि मरहठों के विरुद्ध लड़े गए किस स्थान के युद्ध में वह काम आया था।

पृ० ३ गीत ३ रावत अजीतसिंघ कानोड़—रावत अजितसिंह सीसोदियों की सारंग-देवोत शाखा का वीर था। उसके पिता का नाम रावत जालिमसिंह था। वह महाराना भीमसिंह के शासन काल में सं० १८५९ में अंबाजी इंगलिया के भाई बालेराव को महाराना की कैद से छुड़ाने के लिए जब राजराणा जालिमसिंह झाला ने मेवाड़ पर आक्रमण किया तब महाराना के पक्ष में चेजा की घाटी के युद्ध में लड़ा और उसमें घायल होकर जीवित बच रहा।

पृ० ४ गीत ४ राव रायसिंह राठौड़—राव रायसिंह राठौड़ जोधपुर के राव मालदेव का पौत्र और राव चंद्रसेन का पुत्र था। वह सं० १६२७ वि० में नागौर में बादशाह अकबर की सेवा में उपस्थित हुआ। राव चंद्रसेन के देहावसान पर सं० १६३७ में बादशाह ने रायसिंह को सोजत का पर्गना जागीर में प्रदान किया। वि० सं० १६४० में महाराना उदयसिंह के छोटे पुत्र जगमाल को जब सिरोही के राव सुरतान देवड़ा को परास्त कर उस पर अधिकार करने के लिए शाही सेना भेजी गई, उसमें वह भी नियुक्त हुआ था। दत्ताणी नामक स्थान पर राव सुरताण और शाही सेना में मुकाबिला हुआ, उसमें शाही सेना की पराजय हुई। सुरताण ने अचानक रात्रि–आक्रमण किया जिसमें राव रायसिंह, और जगमाल सीसोदिया अपने अनेक योद्धाओं सहित मारे गए।

—मारवाड़ का इतिहास प्र० भाग रेउ पृ० १६७–१६६, द्वि० भाग पृ० ६६१

पृ० ५ गीत ५ महाराजा जसवंतसिंघ राठौड़—जोधपुर के महाराजा गजसिंह का द्वितीय राजकुमार और उत्तराधिकारी महाराजा जसवंतसिंह राठौड़ जोधपुर। जसवंतसिंह ने

बादशाह शाहजहाँ के शासन काल में कई युद्धों में वीरता दिखाई तथा वि. सं. १७१५ में धर्मात के पास बादशाह के शाहजादे औरंगजेब और मुराद की सेना से दाराशिकोह के पक्ष में रह कर पराक्रम प्रदर्शित किया किन्तु तोपखाने के कासिम खां आदि अधिकारियों के शाहजादों से सांठ-गांठ होने के कारण युद्ध का परिणाम विपरीत रहा। जब धौलपुर के पास शामूगढ़ के युद्ध में दाराशिकोह के पराजित होकर भाग जाने के बाद जसवंतसिंह औरंगजेब की सेवा में चला गया। राजा शिवा सीसोदिया के विरुद्ध भेजी गई शाही सेना का वह प्रमुख सेना नायक था। अन्त में वह जमरूद के थाने पर नियुक्त हुआ, जहाँ वि० सं० १७३५ में उसका निधन हो गया। उस समय उसका मनसब सात हजारी जात था।

पृ० ६ गीत ६ महाराणा जवानसिंह—मेवाड़ के महाराना भीमसिंह का पुत्र महाराना जवानसिंह उदयपुर। वि. सं. १८८५ में महाराना जवानसिंह मेवाड़ का शासक हुआ। इसका शासन काल भी उस के पिता के शासन काल की भाँति युद्धों—पारस्परिक बखेड़ों और आर्थिक दबाव में व्यतीत हुआ। मरहठों द्वारा आर्थिक रूप में जर्जरित मेवाड़ को महाराना बड़ी कठिनता से सम्हाल पाये। वह ब्रज भाषा का उत्तम कवि, संगीत तथा आखेट-प्रेमी शासक था। इनकी 'ब्रजराज पद्यावली' नामक पद संग्रह की पुस्तक गत वर्ष ही छपी है। सं० १८९५ विक्रमी भाद्रपद सुदि १० को इनका परलोक वास हो गया।

—वीर विनोद द्वि० भाग पृ० १७८५-१८०७

पृ० ७ गीत ७ महाराणा भीमसिंह—उदयपुर के महाराना अरिसिंह के द्वितीय पुत्र महाराना भीमसिंह। वह अपने बड़े भाई महाराना हम्मीरसिंह के देहान्त के बाद वि. सं. १८३४ पौष शुक्ला ६ को गद्दी पर बैठा था। इसके शासन काल में मरहठों की लूट-खसोट, जयपुर और जोधपुर का महाराना की पुत्री कृष्णा कुमारी के विवाह के प्रश्न को लेकर विग्रह तथा मेवाड़ के जागीरदारों के आपसी टण्टे-बखेड़े होते रहे। मेवाड़ का राज्य कोष युद्धों और समझौतों के कारण रिक्त हो गया था। युद्धों में भारी व्यय के अतिरिक्त वह बड़ा दानी भी था। उसने अपने जीवन में कवियों को सहस्रों हाथी, घोड़े तथा अनेक लाख पसाव दिए थे। वि. सं. १८८५ चैत्र शुक्ला १४ को इनका निधन हो गया।

—वीर विनोद द्वि. भा. पृ. १७०३-१७४६

पृ० ६ गीत ८ राव जोधा राठौड़—मारवाड़ के राव रिड़मल के द्वितीय पुत्र और उत्तराधिकारी राव जोधा राठौड़। राव जोधा ने अपने पिता के साथ रहकर बारह वर्ष की अवस्था में मंडोर के युद्ध में भाग लिया था। तदनन्तर उसने रावत चूंडा सलूम्बर द्वारा मंडोरादि पर महाराना कुंभा के अधिकार स्थापित करने के कारण राज्यच्युत होकर पुनः मंडोर हस्तगत करने के प्रयत्नों में लगा रहा। अन्त में सं० १५१५ वि० में मंडोर पर विधिवत राज्याभिषेक हुआ। वि. सं. १५१६ में जोधपुर नगर का निर्माण एवं वहाँ के प्रसिद्ध पहाड़ नागदौल पर दुर्ग का निर्माण किया। सं. १५४५ वि० में ७३ वर्ष की आयु में जोधपुर में उसका देहावसान हो गया। राव जोधा की संतति में राठौड़ों की जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, रतलाम, ईडर, झाबुआ, सीतामऊ आदि सात रियासतें थीं।

—मारवाड़ का इतिहास रेउ भाग १ पृ० ८३-१०३

पृ० ११ गीत ६ बिक्रमादीत राठौड़—जोधपुर के राव जोधा राठौड़ का पांचवां पुत्र और जांगल प्रदेश पर राठौड़ राज्य का संस्थापक राव बीका अथवा विक्रमादित्य राठौड़। राव बीका ने अपने चाचा कांधल की सहायता से जांगल प्रदेश पर अधिकार कर अपने नाम पर बीकानेर नगर आबाद किया। बीका ने अजमेर की शाही कैद में बंदी मेड़ता के शासक वरसिंह को मुक्त करने के लिए अजमेर के सूबेदार मल्लूखाँ पर चढ़ाई की थी। किन्तु बीका के अजमेर पहुँचने के पहिले ही मल्लूखाँ ने डर कर वरसिंह को मुक्त कर दिया। वि. सं. १५६१ में बीका का देहान्त हो गया।

—बीकानेर राज्य का इतिहास ओझा भा. १ पृ. १०८–१०९

पृ० १२ गीत १० राव कलियाणमल राठौड़—बीकानेर के राव जैतसिंह का जेष्ठ पुत्र तथा उत्तराधिकारी राव कल्याणमल राठौड़। उसका जन्म वि. सं. १५७५ में हुआ था। जोधपुर के राव मालदेव ने जब बीकानेर पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया तब राव कल्याणमल सिरसा में रहकर बीकानेर को प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगा। जोधपुर पर बादशाह शेरशाह के आक्रमण करने के लिए प्रस्थान करने पर राव मालदेव ने वहाँ नियुक्त अपने सामन्त कूंपा मेहराजोत को वापस बुलवा दिया तब कल्याणमल के पक्षधर रावत किशनसिंह ने बीकानेर पर राव कल्याणसिंह के शासन की घोषणा कर अधिकार स्थापित किया। कल्याणमल ने राव जयमल मेड़तिया और हाजी खां की विपत्तिकाल में सहायता की थी। सं० १६२८ वि० में उसका स्वर्गवास हो गया।

—बीकानेर राज्य का इतिहास ओझा भाग १ पृ. १३६, १४४, १४६, १५२, १५६।

पृ० १३ गीत ११ अनां राठौड़—राव कल्याणमल राठौड़ का पुत्र महाराजा अनूपसिंह बीकानेर। वह अपने पिता के शाही कोप का भाजन होने पर बीकानेर की गद्दी पर बैठा और दक्षिण में नियुक्त हुआ। जब वह औरंगाबाद का अध्यक्ष था तब राजा शिवा सीसोदिया ने औरंगाबाद के आसपास आक्रमण किये। अनूपसिंह ने दक्षिण के राज्यपाल ख़ानेजहाँ बहादुर के साथ उपद्रवियों का सामना कर उनको भगा दिया। तदनन्तर वह दलपत बूंदेला के स्थान पर अदोनी का अध्यक्ष नियुक्त हुआ। सन् १७४४ में इसकी मृत्यु हो गई। वह बड़ा साहित्य-अनुरागी एवं साहित्य-मर्मी कुशल शासक था। उस ने संस्कृत, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के सहस्रों ग्रंथों का संकलन कर बीकानेर में पोथीखाना स्थापित किया जो अनूप संस्कृत पुस्तकालय के नाम से प्रसिद्ध है। गीत में औरंगाबाद में राजा शिवा से लड़कर पराजित करने का वर्णन है।

—मुगल दरबार भाग १ पृ० ८८–९०

पृ० १४ गीत १२ पाबू धांधळोत राठौड़—खेड़ के स्वामी राव आसथानजी के द्वितीय पुत्र धांधल के छोटे पुत्र प्रसिद्ध लोक-देवता पाबूजी राठौड़। पाबूजी बड़ा वीर और प्रतिज्ञा का धनी क्षत्रिय था। उसकी सेना में थोरी जाति के सेवक थे। एक बार नागौर प्रान्त के जायल राज्य के शाक जिन्दराज खीची ने ऊदा चारण की पत्नी देवलबाई चारणी से कालमी नामक घोड़ी मांगी। किन्तु देवलबाई ने वह घोड़ी जिन्दराव को देने से मना

कर दिया और पाबूजी के मांगने पर इस शर्त पर पाबूजी को देदी कि उसकी गायों का अपहरण होने पर वह उसकी रक्षा करेंगे। इससे पाबूजी और जिन्दराज के आपस में गहरा विरोध उत्पन्न हो गया। पाबूजी का विवाह सम्बन्ध ऊमरकोट (पाकिस्तान के सिंध भू भाग) में निश्चित हुआ था। जिस समय पाबू ऊमरकोट में विवाह करने के लिए गया उस समय पीछे से अवसर पाकर जिन्दराज देवलबाई की गायों को घेर कर ले गया। देवलबाई ने पाबूजी के पास फरियाद कर रक्षा-वचन का स्मरण दिलाया। पाबूजी ने अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण कर विवाह मण्डप में ग्रंथी-बंधन छोडकर देवलबाई की गायें वापस लाने के लिए प्रस्थान किया और इसी लड़ाई में अपने बड़े भाई बूडा सहित जूझकर मारे गए। तदनन्तर वयस्क होने पर बूंडा के पुत्र झरड़ा राठौड़ ने जिन्दराज को मार कर अपने पिता तथा चाचा का वैर लिया। पाबूजी की गणना राजस्थान के प्रसिद्ध पाँच लोक-देवताओं में होती है। पाबूजी का स्मारक—देवालय पोकरण फलोदी के समीपस्थ कोलू ग्राम में है। पाबूजी का निधन संवत् १३२३ वि० में माना जाता है। ख्यातों एवं ऐतिहासिक काव्यों में लिखा है—

तेरह सै तेवीसिये, सांवण दसमो श्वेत।
पाल समर पड़ियो प्रसध, हठी वरण रै हेत॥

—मारवाड़ का इतिहास रेउ प्र० भाग पृ० ४५, क्षात्रधर्म मासिक पत्र वर्ष २ अंक १–२ पृ० ९१–९२ सन् १९३८

पृ० १५ गीत १३ कंवर नरपाल देवल लोहियाणा—लोहियाणा (अब जसवंतपुरा के) राव धींगा का पुत्र कुँवर नरपालदेव देवल। लोहियाणा मारवाड़ राज्य के भीनमाल प्रांत में है। पहिले वहां चौहानों की देवल शाखा के क्षत्रियों का राज्य था। कुंवर नरपालदेव ने अपने पिता से रण में धड़ से सिर कटने के पश्चात् अपनी कटारी को अपने अंगरखे के अंदर के छोर से मज्जित कर प्राण त्यागने की प्रतिज्ञा की थी। अपनी प्रतिज्ञा का निर्वाह करने के लिए उसने पच्चीस वर्ष की आयु में सैयद बंधुओं की सेना से लड़ कर वचन निभाया था। यह घटना सम्भवतः बादशाह फर्रुखशियर के शासनकाल की है।

—संघ शक्ति मासिक, जयपुर वर्ष ४ अंक ४।

पृ० १७, गीत १४ बाघसिंह चांदावत राठौड़—राठौड़ों की चांदावत उप शाखा के फतहसिंह का वंशज बाघसिंह चांदावत। बाघसिंह मारवाड़ में किस स्थान का जागीरदार था ख्यात ग्रंथों में कोई वर्णन प्राप्त नहीं हुआ। मारवाड़ में चांदावतों के बळूदा तथा कुड़की दो प्रसिद्ध ठिकाने थे। किन्तु बाघसिंह किस ठिकाने का स्वामी था कोई आधार-श्रोत नहीं मिला।

पृ० १८ गीत १५ कंवर रघुनाथसिंह चांदावत—फतहसिंह चांदावत का पौत्र तथा रतनसिंह का पुत्र कुंवर रघुनाथसिंह चांदावत। रघुनाथसिंह पर इतिहास तथा ख्यातों में कहीं उल्लेख नहीं मिलता। वह मेड़ता के राव वीरमदेव के पुत्र राव चांदा का वंशज था।

पृ० १९ गीत १६ ठाकर रतनसिंघ—ठाकुर रतनसिंह चांदावत उपशाखा का मेड़तिया राठौड़ था। वह फतहसिंह का वंशज और भवानीसिंह का पुत्र था। महाराजा मानसिंह जोधपुर की उस पर महती कृपा थी। उदयपुर की राजकुमारी कृष्णाकुमारी के विवाह के

प्रश्न को लेकर महाराजा मानसिंह जोधपुर और महाराजा सवाई जगतसिंह जयपुर के आपसी युद्ध में वह महाराजा मानसिंह का तरफदार बना रहा। तब उसकी जागीर में कितने ग्राम थे कहीं कोई संकेत उपलब्ध नहीं हुआ।

पृ० २० गीत १७ महाराजा अभैसिंघ राठौड़—जोधपुर के विख्यात महाराजा अजितसिंह का ज्येष्ठ राजकुमार तथा उत्तराधिकारी महाराजा अभयसिंह राठौड़। वि० सं० १७५६ मार्गशीर्ष कृष्णा १४ को उसका जन्म हुआ और महाराजा अजितसिंह के मारे जाने पर सं० १७८१ में जोधपुर के सिंहासन पर आरूढ हुआ। वह बादशाह फर्रुखशियर तथा मुहम्मदशाह द्वारा सम्मानित हुआ था। मुहम्मदशाह ने सं० १७८७ वि० में इसे गुजरात का राज्यपाल नियत किया था। किन्तु गुजरात के विद्रोही सूबेदार नवाब सर बुलंदखां ने अपनी पदमुक्ति की आज्ञा नहीं मानी और महाराजा से युद्ध करने के लिए तत्पर हुआ। तब उक्त संवत् में अहमदाबाद में युद्ध हुआ जिसमें महाराजा की विजय हुई। उसने शाही सेवा में रह कर कई युद्धों में भाग लिया। उसके अहमदाबाद के युद्ध पर कविया करणीदान ने सूरजप्रकास, रतनू वीरभान ने राजरूपक और बख्ता खिड़िया ने 'अहमदाबाद रा जुद्ध रा कवित्त' नामक काव्यग्रंथों में बड़ा ओजस्वी वर्णन किया है। वि० सं० १८०६ में अजमेर में उसका स्वर्गवास हो गया। वह विद्वानों का आश्रयदाता और स्वयं उत्तम कोटि कवि था।

—मारवाड़ का इतिहास रेउ प्र. भाग पृ. ३३१–३५७

पृ० २१ गीत १८ दिखणी पवन रा बिनाण री जसवंत राव री—जसवंतराव होल्कर तुकोराव होल्कर के घराने का प्रमुख व्यक्ति था। वह अंग्रेजों का कट्टर विरोधी था। उसने सन् १८०५ में भरतपुर के किले की शरण लेकर अंग्रेजों को परास्त किया था। उस समय भरतपुर का राजा रणजीतसिंह था। अंग्रेज अफसर लेक को अपने प्राणों की रक्षा की चिन्ता पड़ गई। अन्त में विवश होकर अंग्रेजों को महाराजा रणजीतसिंह जाट से सन् १८०५ में सन्धि करनी पड़ी। तब फिर होल्कर भरतपुर को त्याग कर पजाब की ओर चला गया।

—पूर्व आधुनिक राजस्थान पृ. २३२, गोरा हट जा (परम्परा)
अंक पृ० १३९–१४१

पृ० २२ गीत १९ बहादरसिंघ मेड़तिया—रघुनाथसिंहोत शाखा के ठाकुर जालमसिंह मेड़तिया कुचामन के स्वामी का पौत्र बहादुरसिंह मेड़तिया। बहादुरसिंह के मरहठों के मेवाड़ पर आक्रमण करने पर महाराना के पक्ष में युद्ध में भाग लेकर वीरगति प्राप्त करने का गीत में वर्णन हुआ है। किन्तु कुचामन ठिकाने की ख्यात अथवा मेवाड़ के इतिहास में बहादुरसिंह के विषय में कहीं कोई संकेत उपलब्ध नहीं होता। उसके ठिकाने आदि का परिचय भी अनुपलब्ध है।

पृ० २४ गीत २० दुरगादास करणौत राठौड़—महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम जोधपुर के सामन्त आसकरण राठौड़ का पुत्र प्रसिद्ध वीर दुर्गादास राठौड़। महाराजा जसवंतसिंह की जमरूद के थाने पर मृत्यु हो जाने पर उसने चांपावत वीर सोनंग, ठाकुर मोहकमसिंह मेड़तिया तोसीना आदि राठौड़ वीर का संगठन कर महाराजा की रानियों तथा नवजात

राजकुमार अजितसिंह को बादशाह औरंगजेब के कुटिल पाश से बचा कर पोषण किया था। अनवरत पच्चीस वर्षों तक शाही सेनाओं से युद्ध लड़ कर उसने औरंगजेब को तंग कर दिया था। जब औरंगजेब की मृत्यु हो गई और उसके पुत्र बहादुरशाह ने परेशान होकर अजितसिंह को मारवाड़ का महाराजा स्वीकार किया तब अजितसिंह की अदूरदर्शिता से दुर्गादास को मारवाड़ त्याग कर उज्जैन में जाकर रहने को बाध्य होना पड़ा। वह अस्सी वर्ष ३ माह और २८ दिन तक जीवित रहा। मारवाड़ में उसकी जागीर में झांवर, साळवा और मेवाड़ में सादड़ी का ठिकाना था। राजस्थान में दुर्गादास जैसा स्वामि-भक्त, राजनीतिज्ञ और युद्ध-वीर अन्य नहीं हुआ। उसके समस्त जीवनकाल का चित्र इस दोहे में यों समझा जा सकता है।

कंध वसन रण हाथ खग, घोड़ा ऊपर गेह।
घर रखवाळी बिन घरण, गिणै न त्रण सम देह।

—अजीतविलास हस्तलिखित, बांकीदास री ख्यात पृ. ५५-५६

पृ० २५ गीत २१, पृ० २६ गीत २२ पाबू राठौड़ धांधळोत—राव आसनाथजी के छोटे पुत्र धांधल का दूसरा पुत्र पाबूजी राठौड़। पाबूजी की राजस्थान के पांच प्रसिद्ध लोक-देवताओं में सर्व प्रथम गणना होती है। उन पर यह ऐतिहासिक दोहा प्रचलित है—

पाबू हरभू रामदे, गोगाजी जेहाह।
पांचों पीर पधारज्यो, मांगळिया मेहाह।।

विशेष परिचय के लिए देखें टिप्पणी पृ. १४ गीत १२

पृ० ३७ गीत २३ हरपाल गोगादे राठौड़—मारवाड़ के शेरगढ संस्थान का शासक हरपाल राठौड़। राव सलखा के छोटे पुत्र राव वीरम सेतरावा के शासक के पांचवां पुत्र गोगादे हुआ। उसने आसायच राजपूतों का दमन कर २७ गावों सहित सेखाला नाम का ठिकाना स्थापित किया। गोगादे की सन्तति परम्परा में हरपालदे हुआ, जिसने शेरड़ा (शेरगढ) और साई ग्राम की रक्षा करते हुए यवन सेना से लोहा लेकर प्राण त्याग किया। यह घटना सम्भवतया संवत् १६४४ वि० से आसपास की है। ख्यातों में इस संबंध में कोई विवरण नहीं मिलता।

—मारवाड़ का इतिहास रेउ भाग १ पृ० ३६, बांकीदास री ख्यात पृ. ६।

पृ० ३८ गीत २४ मदनसिंघ नै सूरसिंघ गोड़—गौड़ क्षत्रियों की भाखरोत शाखा के राजा शिवराम सरवाड़ के शासक के पुत्र रामसिंह और परशुराम के पुत्र मदनसिंह और सूरसिंह गौड़। संभवतया इन दोनों चचेरे भाइयों ने औरंगजेब के शाहजादों के राज्य प्राप्ति के जाजव स्थान के युद्ध में वीरगति प्राप्त की थी। इन के वतन एवं मनसब आदि का कोई इतिवृत्त प्राप्त नहीं हुआ।

पृ. ३६ गीत २५ रावराजा फतहसिंघ नरूका कछवाहा—जयपुर राज्य के उनियारा संस्थान के शासक रावराजा फतहसिंह नरूका। उसके पिता का नाम चंद्रभान था। उसने

मिर्जा राजा जयसिंह आमेर नरेश की ओर से मेवात के विद्रोही मेवों का दमन किया। कामां पहाड़ी प्रान्त को विजित कर आमेर के अधीन किया। शाहजादे शुजाअ के विरुद्ध उसने जयसिंह की सेना में रहकर पराक्रम दिखाया था। तब उसके अधिकार में काकोड़, बनेठा और उनियारा का राज्य था। मेवातियों का दमन सन् १६४६ के अन्त में किया गया था। मिर्जा राजा जयसिंह तथा राजकुमार कीर्त्तिसिंह की इस पर अत्यधिक कृपा थी।

—लावा रासा भूमिका पृ० ३३, राजपूताने का इतिहास गहलोत भाग ३ पृ० १६८, मुगलदरबार भाग १ पृ० १०२

पृ० ४० गीत २६ राजा रतनसिंघ महेसदासोत राठौड़—महेशदास राठौड़ का पुत्र राजा रतनसिंह राठौड़ रतलाम। पहिले उसके वतन में मारवाड़ का जालोर प्रान्त था फिर बादशाह शाहजहाँ ने मालवा में जागीर प्रदान की। रतनसिंह ने अपने नाम पर रतलाम राज्य की स्थापना की। वह शाही मनसबदार था। शाही सेवा में रहकर उसने बीजापुर, कल्याणी आदि युद्धों में भाग लिया। तदनन्तर दक्षिण से प्रस्थान कर आगरा पहुँचा। शाहजादे औरंगजेब और मुराद के विद्रोह का दमन करने के लिए प्रेषित शाही सेना में महाराजा जसवंतसिंह तथा महाराव मुकुन्दसिंह हाडा के साथ उसकी भी नियुक्ति हुई। १६ अप्रैल १६५८ ई. में उज्जैन के रणक्षेत्र में वह शाहजादों के विरुद्ध जूझता हुआ स्वर्ग गया। गीत में रतनसिंह द्वारा एक उन्मत्त हाथी को वश में करने का उल्लेख है।

—वचनिका पृ० ८३-८६

पृ० ४१ गीत २७ विठलदास चांपावत—मारवाड़ में पाली ठिकाने के स्वामी ठाकुर गोपालदास राठौड़ का पुत्र ठाकुर विट्ठलदास चांपावत राठौड़। वह अपने युग का प्रसिद्ध योद्धा था। महाराजा जसवंतसिंह राठौड़ जोधपुर के प्रमुख सरदारों में से एक था। शाहजादे औरंगजेब मुराद के विद्रोह करने पर उन्हें रोकने के लिए महाराजा जसवंतसिंह के साथ भेजी सेना में वह भी शामिल था। मालवा में उज्जैन के समीप हुए युद्ध में सन् १६५८ ई० में वह भी खेत रहा था। तब बिलाड़ा परगने का रिणसी गाँव उसके पट्टे था। गीत में महाराजा जसवंतसिंह के भागने और उसके मारे जाने का वर्णन है, जो इतिहास-सम्मत है।

—वचनिका पृ० ११६

पृ० ४२ गीत २८ पृ० ४३ गीत २६ सुभराम गौड़ बलिरामोत—लाखेरी के स्वामी राजा गोपालदास गौड़ के जेष्ठ पुत्र कुंवर बलिराम गौड़ का पुत्र शुभराम गौड़। शुभराम शाही सेवा में नियुक्त मेवाड़ की सेना में था। उसने दक्षिण के किसी युद्ध में वीरतापूर्वक जूझते हुए देह त्याग किया था। किन्तु वह युद्ध किस के विरुद्ध, कब और कहाँ लड़ा गया था, कोई इंगित नहीं मिलता। गीत में उसके पितामह राजा गोपालदास और पिता बलिराम के ठट्ठा स्थान के युद्ध तथा दो भाई मुकुंददास और बिहारीदास के धौलपुर के रण-स्थल में मारे जाने का उल्लेख है।

—गोपालदास गौड़ की बात, गौड़ों की वंशावली

पृ० ४४ गीत ३० ठाकर सिवनाथसिंघ कूंपावत—ठाकुर शिवनाथसिंह कूंपावत राठौड़ आसोप। वह ठाकुर बख्तावरसिंह के निःसंतान मर जाने पर हींगोली ग्राम से गोद आकर

वि० सं० १८९३ चैत्र सुदि ९ को आसोपा का पट्टाधिकारी हुआ। वि० सं० १९१४ के अंग्रेजों के विरुद्ध के राष्ट्रव्यापी युद्ध में ठाकुर शिवनाथ सिंह भी गूलर आदि के मेड़तिया एवं आहुवा ठाकुर कुशालसिंह के साथ मिलकर विद्रोही हो गया। महाराजा तख्तसिंह जोधपुर अंग्रेजों के पक्षपाती थे। फलस्वरूप महाराजा ने सेनापति कुशलराज सिंघवी को सेना देकर शिवनाथसिंह पर भेजा। बड़लू स्थान पर कुछ दिनों तोपों की लड़ाई हुई। तत्पश्चात् शिवनाथसिंह को बंदी बनाकर जोधपुर ले आये। किन्तु वि. सं. १९१६ की दीपमालिका के दिन वह जोधपुर के किले से निकल भागा और महाराजा सरदारसिंह बीकानेर की सेवा में जा रहा। अन्त में वि. सं. १९२५ में बीकानेर से आकर इसने आसोप पर पुनः अधिकार कर लिया। वि. सं. १९२९ पौष सुदि १२ को आसोप में उसका निधन हो गया। गीत में शिवनाथसिंह के आहुवा स्थान पर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने का उल्लेख है।

—आसोप का इतिहास पृ० १५९-१७१

पृ० ४५ गीत ३१ ठाकर सांवतसिंघ उदावत नींमाज—मारवाड़ में उदावत खांप के राठौड़ों के ठिकाने निम्बाज का ठाकुर सांवतसिंह उदावत। सांवतसिंह ने प्रथम भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में ठाकुर बिशनसिंह मेड़तिया गूलर, ठाकुर अजितसिंह मेड़तिया आलनियावास और ठाकुर कुशालसिंह चांपावत आहुवा से मिलकर अंग्रेजों का सशस्त्र विरोध किया था। आहुवा स्थान पर अंग्रेजों के पक्षधर महाराजा तख्तसिंह जोधपुर की सेना से राड़ हुई। जिसमें राजमल और ओनाड़सिंह पंवार मारे गए। गीत में ठाकुर सांवतसिंह का तलवार से एक हाथ कट जाने का भी वर्णन है।

—मारवाड़ का इतिहास रेउ द्वि. भाग पृ० ४४९-४५०

पृ० ४६ गीत ३२ राजा उमेदसिंघ सीसोदिया साहपुरा—शाहपुरा राज्य के राजा भारतसिंह का पुत्र राजा उम्मेदसिंह सीसोदिया। राजा उम्मेदसिंह का जन्म सोमवार कार्त्तिक सुदि ७ सं. १७५५ में हुआ और सन् १७२७ ई० में उसने अपने पिता राजा भारतसिंह को बंदी बनाकर शाहपुरा का शासन तंत्र हस्तगत कर लिया। तदनन्तर राजा भारतसिंह की मृत्यु के बाद ३१ मार्च १७२९ को शाहपुरा की गद्दी पर बैठा। उम्मेदसिंह ने कौमार्यकाल में ही राजा अजितसिंह जोधपुर के विरुद्ध अजमेर पर भेजी गई शाहपुरा की सेना का संचालन किया था। वि. सं. १७९८ के महाराजा सवाई जयसिंह और राजाधिराज बख्तसिंह के गंगवाणा स्थान के युद्ध में जयपुर के पक्ष में शौर्य प्रदर्शित कर सम्मान एवं प्रसिद्धि प्राप्त की। तदनन्तर वह महाराना अरिसिंह मेवाड़ के पक्ष में रहकर मेवाड़ और मरहठों तथा रतनसिंह और अरिसिंह के बखेड़ों में महाराना अरिसिंह का सहायक बना रहा। अन्त में पौष बदि ६ संवत् १८२५ में ग्वालियर के शासकों के पूर्वज महादा सिंधिया के साथ उज्जैन में भयानक युद्ध हुआ। इस युद्ध में प्रारंभ में तो मेवाड़ पक्ष की विजय रही किन्तु अचानक मरहठों की सहायता पर जयपुर से दस हजार नागाओं की सेना आ जाने पर विजय पराजय में परिणित हो गई। और राजा उम्मेदसिंह, रावत पहाड़सिंह सलूम्बर आदि मेवाड़ पक्ष के प्रसिद्ध वीर मारे गए।

उम्मेदसिंह जैसा वीर था वैसा ही उदार और राज्य-कार्य-संचालन में दक्ष था। उसने प्रसिद्ध कवि हुकमीचंद खिड़िया, करणीदान कविया आदि कवियों को एक एक ग्राम और

'लाख पसाव' दिए थे। गीत में प्रसिद्ध और समकालीन कवि कर्णीदान ने उज्जैन के युद्ध में प्रदर्शित राजा उम्मेदसिंह की वीरता का सजीव वर्णन किया है।

—परम्परा चौपासनी अंक २३, शाहपुरा राज्य की ख्यात जिल्द प्रथम, राजा उम्मेदसिंह के नाम महाराना अरिसिंह के पत्र

पृ० ४९ गीत ३४ माधोसिंह कछवाहा—जयपुर के प्रतापी महाराजा सवाई जयसिंह का छोटा पुत्र महाराजा माधवसिंह प्रथम जयपुर। माधोसिंह का जन्म २८ नवम्बर १७२७ में हुआ था। उसका बाल्यकाल अपने ननिहाल मेवाड़ में व्यतीत हुआ। महाराना संग्रामसिंह द्वितीय ने रामपुरा का परगना जागीरस्वरूप माधवसिंह को दिया था। महाराजा ईश्वरीसिंह के विषपान कर मर जाने के बाद सन् १७५१ ई० में वह जयपुर की राजगद्दी पर आसीन हुआ। उसके समय में जय अप्पा सिंधिया मल्हारराव होल्कर और रघुनाथ राव आदि का बड़ा आतंक फैला रहा। माधवसिंह ने जयपुर भटवाड़ा और मावंडा मंडोली स्थानों पर युद्ध लड़े। मावंडा का युद्ध भरतपुर के राजा जवाहरमल्ल के साथ हुआ था। इसमें जवाहरमल्ल की सैनिक क्षति के साथ साथ राज्य शक्ति की भी हानि हुई। यह युद्ध १४ दिसम्बर १७६७ को हुआ था। गीत में माधवसिंह की बाण विद्या का वर्णन किया गया है। वह ६ मार्च १६६८ में संग्रहणी रोग से पीड़ित होकर मर गया।

—राजपूताने का इतिहास, गहलोत तृतीय भाग पृ. १०६-११४

पृ० ५० गीत ३५ महाराजा मानसिंह राठौड़—महाराजा विजयसिंह जोधपुर का पौत्र और गुमानसिंह का पुत्र महाराजा मानसिंह राठौड़ जोधपुर। वह जोधपुर के महाराजा भीमसिंह के मरणोपरान्त जोधपुर की राजगद्दी पर बैठा। उसका जीवन भयानक संघर्षों और बखेड़ों में गुजरा था। प्रारम्भ में महाराजा भीमसिंह से लड़ाई रही और बाद में ठाकुर सवाईसिंह चांपावत पोकरण, अमीरखां टोंक वालों के पूर्वज, महाराजा सवाई जगतसिंह जयपुर प्रभृति सरदारों से प्रबल विरोध रहा। उसके शासन के ४० वर्षों में वह नित्य नए बखेड़ों एवं युद्धों में लगातार उलझा रहा। किन्तु वह बड़ा साहसी, विद्वान एवं स्वतन्त्र प्रकृति का शासक था। उसमें वीरता एवं वदान्यता के उत्तम गुण थे। वह स्वयं भी राजस्थानी का प्रकाण्ड विद्वान, संगीतकार और नीति-निपुण शासक था। उसने चारणों तथा राव याचकों को ६१ ग्राम दान किए थे।

—मारवाड़ का इतिहास रेउ द्वि० भाग पृ० ४०१-४४०

पृ० ५१ गीत ३६ बदनौर रा धणी जैतसिंघ—मेवाड़ में मेड़तिया राठौड़ों के प्रमुख ठिकाने बदनोर का ठाकुर जैतसिंह राठौड़। वह प्रसिद्ध मेड़तिया वीर राव जयमल का आठवां वंशधर और ठाकुर अक्षयसिंह का पुत्र था। महाराना भीमसिंह के समय में मेवाड़ में आंबाजी इंगलिया के नायब गणेश पन्त और लकवा की जो लड़ाइयां हुईं उनमें जैतसिंह ने लकवा का साथ दिया था। वह बड़ा निर्भीक वीर था। गीत में उस की सैनिक सज्जा, अश्वों तथा योद्धाओं के युद्धाभियान का ध्वन्यात्मक वर्णन है।

—राजपूताने का इतिहास ओझा चतुर्थ खण्ड पृ० १२२४

पृ० ५३ गीत ३७ जैपुर नगर री बरणन—राजस्थान की राजधानी जयपुर नगर का

निर्माण महाराजा सवाई जयसिंह ने २५ नवम्बर १७२७ शनिवार के दिन प्रारंभ करवाया था। महाराजा ने देश-विदेश के विभिन्न सुन्दर नगरों के नक्शे मँगवाकर उनका अध्ययन किया। तदनन्तर जयपुर का निर्माण आरंभ करवाया। जयपुर एक समान चौड़ाई लम्बाई एवं एक सदृश भवनों के कारण नगर-निर्माण-कला का अद्वितीय एवं सुन्दर नगर है। इसके निर्माण के बाद फ्रांस, इटली, काबुल पुर्त्तगाल, अरब, ईरान आदि के ज्योतिषियों की सहायता से वेधशालाओं की स्थापना की और ज्योतिष शास्त्र में भी सुधार किया। यह महाराजा सवाई जयसिंह की बुद्धिमानी, कला-प्रेम और स्थापत्य का अद्भुत नमूना है। गीत में बाजार, चौपड़, प्रासाद, झरोखे, देव मंदिर, पूजा पाठ आदि का वर्णन किया गया है। जयपुर की सुन्दरता के लिए लोक में प्रचलित है—

न देख्यो जैपरियो तो कळ में आकर के करयो।

—राजपूताने का इतिहास गहलोत तृतीय भाग १०९८

पृ० ५५ गीत ३८ ठाकर केसरसिंघ ऊदावत रास—उदावतों के रास ठिकाने के ठाकुर बख्तसिंह का पुत्र ठाकुर केशरीसिंह। उसने जयअप्पा के साथ महाराजा विजयसिंह के मेड़ता नगर के पास के गंगारड़े के युद्ध में सं० १८११ वि० में बड़ी बहादुरी से लड़ते हुए वीरता का परिचय दिया था। किन्तु नींबाज ठाकुर के स्वर्गवास हो जाने पर केशरीसिंह ने महाराजा विजयसिंह की बिना स्वीकृति ही नींबाज ठिकाने पर अपने पुत्र दौलतसिंह को गोद बैठा दिया। इससे महाराजा रुष्ट हो गए। और केशरीसिंह, पोकरण के ठाकुर देवीसिंह, आसोप ठाकुर छत्रसिंह और रास ठाकुर दौलतसिंह को विजयसिंह ने अपने गुरु आत्माराम के निधन पर किले में बुलवा कर १८१६ फाल्गुन वदि १ को पकड़वा लिया और कारागार में डाल दिया। केशरीसिंह का महाराज के कारागृह में देहांत हुआ। गीत में महाराजा विजयसिंह की इस कृत्य के लिए भर्त्सना की गई है। मारवाड़ में उपर्युक्त चारों ठाकुरों की गिरफ्तारी के लिए निम्न पंक्तियां प्रचलित हैं—

केहर देवो छत्रसी, दल्लो राजकुमार।
मरते मोडे मारिया, चोटी वाला चार॥

—मारवाड़ का इतिहास द्वि. भाग पृ० ३७२-३७७

पृ० ५७ गीत ३९ करमां अखावत पड़िहार—पड़िहार शाखा कि अखा का वंशधर कर्मसेन। वह महाराजा जसवंतसिंह प्रथम जोधपुर की सेना में साहनी के पद पर था। शाहजादों के उत्तराधिकार के उज्जैन के युद्ध में उसने भी भाग लिया था। उसके साथ साहणी रावो तथा साहणी सदो भींवा का भी काम आया।

—अजीत विलास

पृ० ५८ गीत ४० ठाकर लालसिंघ दूलावत राठौड़—अजमेर मेरवाड़ा के बड़ली ठिकाने का ठाकुर लालसिंह दूलहसिंहोत राठौड़। उसने ग्वालियर के सिंधियों के पूर्वज महादाजी सिंधिया के साथ बड़ली में युद्ध कर जीवन त्याग किया था। ठाकुर लालसिंह के युद्ध पर रचित गई गीत, दोहे और कवित्त कहावतों के रूप में प्रचलित हैं। एक दोहा प्रसिद्ध है—

दळ आगी दिखणाद रा, तोपां पड़सी ताव।
जा बड़ली निकसी जदन, मो सिर पड़सी घाव॥

पृ० ६१ गीत ४१ राव जगन्नाथ जसवंतोत अमभ्करा—जोधपुर के राव मालदेव के ज्येष्ठ राजकुमार रामसिंह थे। रामसिंह ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था जिससे राव मालदेव ने उसको राज्याधिकार से वंचित कर दिया। तब वह मारवाड़ से मेवाड़ में अपने ससुराल महाराना उदयसिंह के पास, जा रहा। महाराणा ने रामसिंह को केलवा की जागीर दी थी। किन्तु वह उससे सन्तुष्ट नहीं हुआ और मेवाड़ से बादशाह अकबर की सेवा में जा रहा। रामसिंह के पुत्र कल्याणसिंह हुआ। कल्याणसिंह के जसवंतसिंह और जसवंतसिंह के राव जगन्नाथ हुआ। राव जगन्नाथ ने सं० १६६१ वि० में मालवा में अमझरा के स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। राव जगन्नाथ ने बादशाह जहाँगीर की सेवा में रह कर शाहजादे शहरयार और शाहजादे खुर्रम के विरुद्ध के युद्धों में भाग लिया था। गीत में जगन्नाथ और महाराजा गजसिंह दोनों द्वारा शाहजादे शहरयार को उत्तार में और खुर्रम को पूर्व में पराजित करने का वर्णन है।

—मारवाड़ का इतिहास, रेउ प्र० भाग पृ० १४४ की पाद टिप्पणी

क्षत्रिय गौरव मासिक जयपुर सन् १९४७
अमझेरा का मामला वर्ष २ अंक ४ पृ० २१

पृ० ६२ गीत ४२ राणी किसनावती कछवाही—कछवाहा नरेश जयसिंह की पुत्री और राव जगन्नाथ राठौड़ अमझरा की पत्नी राणी किसनावती कछवाही। किसनावती के विषय में कछवाहों की ख्यातों में कोई वृत्तांत नहीं मिलता। संभवतया वह आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह की राजकुमारी थी। किसनावती ने राजा शिवा मरहठा की सेना के आक्रमण करने पर अपने पुत्र राव केशरीसिंह अमझरा तथा छोटे पुत्र सुजानसिंह व उनकी पत्नियों के साथ शत्रुओं का साहसपूर्वक सामना कर रणभूमि में वीरगति प्राप्त की थी। यह युद्ध संवत् १६३५ वि० में हुआ था।

मरु-भारती त्रैमासिक पत्रिका पिलानी, वर्ष ११, अंक ४, पृ० ३२-३६ जनवरी १९६४, मारवाड़ का इतिहास रेउ भाग २ पृ० ६८५।

पृ० ६३ गीत ४३ राव केसरीसिंघ राठौड़ अमझरा— मालवा में राठौड़ों के अमझरा राज्य का शासक राव केशरीसिंह। वह राव जगन्नाथ का पुत्र था। राजा शिवा सीसोदिया की सेना के मुकाबिले दक्षिण के मोरी गढ़ की रक्षा करते हुए खेत रहा था। केशरीसिंह के साथ उसका भाई सुजानसिंह, राजमाता कछवाही किसनावती और उन दोनों भाइयों की पत्नियों ने भी शत्रुओं का संहार करते हुए रण-भूमि में प्राणोत्सर्ग किया था।

—मरु भारती, त्रैमासिक पत्रिका, पिलानी वर्ष ११ अंक ४ सन् १९६४

पृ० ६४ गीत ४४ राणी किसनावती कछवाही—अमझरा के राव जगन्नाथ की रानी किसनावती कछवाही। पहले पृ० ६२ गीत ४२ की टिप्पणी देखें।

पृ० ६५ गीत ४५ सुजाणसिंघ जगनाथोत राठौड़—मालवा में अमझरा के राव जगन्नाथ का छोटा पुत्र सुजानसिंह राठौड़। वह बादशाह औरंगजेब के पक्ष में दक्षिण के मोरीगढ़

की रक्षा में राजा शिवा सीसोदिया के आक्रमण का सामना करते हुए अपने बड़े भाई, माता, भोजाई और पत्नी सहित खेत रहा था।

—मारवाड़ की ख्यात

पृ० ६६ गीत ४६ राव केसरीसिंघ अमझरा—मालवा में अमझरा रियासत का स्वामी राव केशरीसिंह राठौड़। वह राजा शिवा सीसोदिया के मोरीगढ़ पर आक्रमण करने पर सपरिवार रण क्षेत्र में खेत रहा था। पहले पृ० ६३ गीत ४३ की टिप्पणी देखें।

पृ० ६७ गीत ४७ राव देवीसिंघ सेखावत सीकर—शेखावटी के सीकर राज्य का स्वामी राव देवीसिंह शेखावत। वह राव शिवसिंह का पौत्र और राव चांदसिंह का पुत्र था। वह संवत् १८२० में सीकर की राजगद्दी पर अधिष्ठित हुआ। सं० १८३१ में मित्रसेन अहीर ने शेखावाटी पर आक्रमण किया। राव देवीसिंह ने अपने सरक्तीय शार्दूलसिंहोत को साथ लेकर उसको परास्त किया। तदनन्तर संवत् १८३६ श्रावणी पूर्णिमा के दिन मेवात के सूबेदार मुर्त्तजाअली भड़ेच से खाटू स्थान पर युद्ध लड़ा। इस युद्ध में खूड़ के ठाकुर भक्तसिंह, पालड़ी के ठाकुर उम्मेदसिंह, साँगलिया के ठाकुर चाँदसिंह, डूंगरी के ठाकुर चूहड़सिंह और मंगलदास दादूपंथी आदि योद्धा काम आए। किन्तु राव देवीसिंह की विजय हुई। सं० १८५२ मार्गशीर्ष कृष्णा को इनका देहावसान हो गया। गीत में देवीसिंह की सेना तथा सैनिक अभियान का वर्णन है।

—सीकर का इतिहास पृ० ८८-१०२, रायसल जससरोज हस्तलिखित

पृ० ६९ गीत ४८ ठाकुर महेसदास कूंपावत आसोप—जोधपुर के राव जोधा राठौड़ के अनुज अक्षयराज के वंशधर कुंवर दलपत का पुत्र ठाकुर महेसदास राठौड़। वह मारवाड़ के आसोप ठिकाने का स्वामी था। जोधपुर-नरेश विजयसिंह के शासनकाल में उसने सिन्ध के बीजड़ टालपुरिया के विरुद्ध युद्ध में साहस दिखाया था। संवत् १७८७ ई० में महादाजी सिन्धिया और महाराजा सवाई प्रतापसिंह के मध्य हुए पाटन के युद्ध में उसने जयपुर की सहायतार्थ भेजी गई जोधपुर की सेना में रह कर युद्ध लड़ा। उस युद्ध की हार का प्रतिशोध लेने के लिए महादाजी ने सं० १८४७ में मेड़ता पर चढ़ाई की। मरहठों के पास जनरल डिबोय ने द्वारा प्रशिक्षित विशाल सेना और ८० तोपें थीं। और राठौड़ों के पास केवल अश्व सेना थी। महेशदास ने राठौड़ों की सेना का नेतृत्व करते हुए भयानक आक्रमण किया जिसमें मरहठों के तोपखाने को प्रभावहीन कर दिया और अनेक वीरों के साथ वह रणभूमि में सदा के लिए सो गया।

—जोधा जयप्रकास पृ० १६-१९, आसोप का इतिहास पृ० १०६

पृ० ७१ गीत ४९ ठाकुर नवलसिंघ सेखावत दांता रो—शेखावाटी के दांता रामगढ़ परगने के ठिकाने दांता का ठाकुर नवलसिंह शेखावत। वह ठाकुर अमानीसिंह का पुत्र था। दांता ठिकाना जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम ने संवत् १७०६ वि० में साला कटारी में ठाकुर अमरसिंह बैरीसिंहोत को प्रदान किया था। नवलसिंह महाराजा सवाई जगतसिंह जयपुर का समसामयिक और कृपापात्र सरदार था। जयपुर नरेश जगतसिंह और जोधपुर के महाराजा मानसिंह के आपस में हुए परबतसर के समीप गीगोली स्थान के युद्ध में जयपुर की सेना में रह कर वीरता दिखाई थी। दोनों राजाओं के आपस में मेल-

जोल हो जाने के बाद ठाकुर नवलसिंह ने जोधपुर नरेश मानसिंह की विद्रोहियों के दमन में सहायता की थी। उस सहायता के उपलक्ष में सं० १८८४ वि० में मानसिंह ने नवलसिंह को नागौर प्रांत का चार हजार की रेख का भदाणा ठिकाना प्रदान कर सम्मानित किया था। गीत में उसकी निर्भीकता, वीरता और साहस उल्लेखित है।

—ठिकाना दांता के परवाने व खासा रुक्के रायसल जस सरोज, लावा रासा पृ० ३ अजीतबिलास ख्यात

पृ० ७२ गीत ५० प्रतापसिंघ सत्रसालोत राठौड़—रतलाम (मालवान्तर्गत) के राजा रतनसिंह के छोटे पुत्र शत्रुशाल का पुत्र प्रतापसिंह राठौड़। प्रतापसिंह ने शाही सेवा में रह कर दक्षिण के किस युद्ध में वीरता दिखा कर मृत्यु प्राप्त की थी। गीतकार किशनगढ़ का महाराजा राजसिंह है जो स्वयं शाही मनसबदार और प्रसिद्ध योद्धा था।

पृ० ७४ गीत ५१ हरसहाय गुरसहाय खत्री—जयपुर के महाराजा माधवसिंह प्रथम के फौजबक्षी हरसहाय खत्री और उसका भाई गुरुसहाय खत्री। १४ दिसम्बर १७६७ को भरतपुर के महाराजा जवाहरमल्ल जाट से तोरावाटी के मांवडा मंडोली स्थान पर घमासान युद्ध हुआ जिसमें जयपुर की सेना के सेनापति राव दलेलसिंह गोगावत धूला अपने द्वितीय पुत्र और पौत्र सहित मारे गए। उनके साथ जोबनेर के ठाकुर बंशीसिंह खंगारोत मय अपने तीन पुत्रों तथा पचार के ठाकुर गुमानसिंह शेखावत, घानोता के ठाकुर शिवदास शेखावत, मूंडरू के ठाकुर रघुनाथसिंह शेखावत, कटराथल के ठाकुर बुधसिंह शेखावत और हरसहाय गुरुसहाय दोनों भाई रणखेत रहे। जयपुर राज्य का ऐसा कोई सामन्त परिवार नहीं था कि जिसमें से कोई न कोई इस युद्ध में न मारा गया हो। इस युद्ध में जवाहरमल्ल की भयानक रूप में हार हुई और सदा के लिए उसको अपने राज्य का अलवर और राजगढ़ भूभाग खो देना पड़ा।

—राजपूताने का इतिहास गहलोत तृतीय भाग पृ० ११३-११४, सीकर का इतिहास पाद टिप्पण पृ० २६, रायसल जससरोज

पृ० ७५ गीत ५२ राव चांदसिंघ सेखावत सीकर—राव चांदसिंह सीकर राज्य के अधिपति राव शिवसिंह का चतुर्थ पुत्र था। राव शिवसिंह की संवत् १८०५ वि० में बगरू के युद्ध में घायल होने के कारण मृत्यु हो गई। उनकी गद्दी पर राव समर्थसिंह बैठे और चाँदसिंह को बलारां कटराथल का ठिकाना मिला। राजाधिराज बख्तसिंह नागौर और महाराजा रामसिंह के आपस के मेड़ता के युद्ध में चाँदसिंह ने रामसिंह का साथ दिया था। तदनन्तर फतहपुर की लड़ाई में कायमखानियों को हराया। संवत् १८१३ वि० में वह अपने भतीजे नाहरसिंह से सीकर राज्य छीन कर गद्दी पर बैठा। नागरचाल प्रदेश के ककोड़ स्थान के युद्ध में राव चाँदसिंह ने महाराजा सवाई माधवसिंह जयपुर की ओर से मल्हारराव होलकर को पराजित कर वीरता दिखाई और जयपुर से लौटते हुए रींगस पर अधिकार स्थापित किया। यह युद्ध सं० १८१६ वि० में हुआ था। सीकर के गनेड़ी स्थान पर १८२० में उसका देहावसान हो गया। गीत में उसके योद्धा-जीवन की प्रशंसा की गई है।

—माधववंश प्रकास हस्तलिखित

पृ० ७७ गीत ५३ राव देवीसिंघ सेखावत सीकर—सीकर के राव चाँदसिंह के पुत्र तथा उत्तराधिकारी राव देवीसिंह का वैशाख शुक्ला ३, वि.सं. १८१० में जन्म हुआ और सं. १८२० वि० में अपने पिता का उत्तराधिकारी बना। सं. १८३६ श्रावण शुक्ला १५ के दिन शेखावाटी के खाटू स्थान पर बादशाह अलीगोहर शाहआलम के सेनापति नवाब मुर्तजाअली खाँ तथा राव देवीसिंह के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध में खूड़ के ठाकुर भक्तसिंह, सेवा के दलेलसिंह खंगारोत, दूजोद के सल्हदीसिंह शेखावत, हनुवन्तसिंह बलारां प्रभृति कतिपय योद्धा मारे गए। नजबकुली शेखावत शक्ति का लोहा नहीं सह सका और दूसरे दिन रात्रि में अचानक मैदान छोड़कर भाग गया। तदनन्तर राव देवीसिंह ने पूरणमल खवासवाल से कासली का प्रान्त छीन कर अपने राज्य में मिला लिया। देवीसिंह स्थापत्य और काव्य का मर्मी एवं प्रेमी शासक था। उसके रचित बड़े भावमय वीरगीत मिलते हैं। वह सं० १८५२ मार्गशीर्ष कृष्णा चतुर्दशी को इस संसार से उठ गया।

—रायसल जससरोज, सीकर का इतिहास पृ० ८८–१०२

पृ० ७९ गीत ५४ महाराव रामसिंघ हाडा बूंदी—हाडा चहुवानों के बूंदी राज्य का सासक महाराव रामसिंह हाडा। वह विद्याविलासी और आखेटप्रेमी शासक था। वंशभास्कर, वीरसतसई तथा बलद्विलास आदि काव्यों का रचित महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण इनका आश्रित कवि था।

पृ० ८० गीत ५५ महाराव रामसिंघ हाडा बूंदी—हाडावाटी प्रान्त की बूंदी रियासत का शासक महाराव रामसिंह हाडा। विशेष परिचय के लिए महाकवि सूर्यमल्ल का वंश-भास्कर देखें।

पृ० ८२ गीत ५६ रावत केसरीसिंघ सलूम्बर—उदयपुर के सलूम्बर ठिकाने के रावत पदमसिंह का उत्तराधिकारी रावत केशरीसिंह द्वितीय। वह महाराना स्वरूपसिंह का समकालीन था। महाराना और केशरीसिंह के आपस में अनबन थी। महाराना स्वरूपसिंह ने रावत केशरीसिंह के कई ग्राम जब्त कर लिए थे किन्तु उसने मेवाड़ के सैनिकों को मारकाट कर अपने गाँवों से निकाल दिया था। वह महाराना मेवाड़ और अंग्रेज सरकार से कभी भी दब कर नहीं रहा। गीत में उसके अंग्रेजों के विरोध में रहने का वर्णन है। संवत् १९१९ विक्रमाब्द में उसका देहान्त हो गया।

—राजपूताने का इतिहास ओझा दूसरी जिल्द पृ० ११९६–११ ९७

पृ० ८३ गीत ५७ प्रिथीसिंघ हाडा—हाडौती क्षेत्र के कोटा राज्य के शासक राव माधव-सिंह का वंशज पृथ्वीसिंह हाडा। वह कोटा के महाराव उम्मेदसिंह प्रथम का तृतीय पुत्र था। अपने भाई महाराव किशोरसिंह द्वितीय के शासनकाल में जब महाराव और कोटा के मुसाह-आला महाराणा जालिमसिंह झाला के आपसी सम्बन्ध बिगड़ गए तब हाडौती के रेजिडेन्ट कर्नल जेम्स टाड ने जालिमसिंह झाला का पक्ष लिया। महाराव अपने सामन्त राजसिंह हाडा कोयला, कुं. बलभद्रसिंह, कुंवर सलामतसिंह तथा उनके चाचा दयानाथ गैंता, अमरसिंह चँद्रावत हरीगढ़ तथा महाराव के भाई गीतनायक पृथ्वीसिंह आदि सात-आठ हजार हाडा वीरों को साथ लेकर जालिमसिंह तथा उसके पक्षपाती अंग्रेज एम. मिलन, लेफ्टिनेंट क्लार्क,

लेफ्टिनेन्ट रीड तथा लेफ्टिनेन्ट कर्नल जेरिज की सेना से भिड़ गए। क्लार्क और रीड युद्ध में मारे गए। जेरिज घायल हुआ। पृथ्वीसिंह ने राजगढ़ के जागीरदार देवसिंह आदि वीरों के साथ जालिमसिंह झाला पर आक्रमण किया। उसके साथी मारे गए और देवीसिंह तथा पृथ्वीसिंह घायल होकर रणस्थल में गिर पड़े। कर्नल टाड पृथ्वीसिंह को उठाकर चिकित्सा के लिए ले गया, किन्तु भाले के घातक प्रहार के कारण उसका दूसरे दिन देहान्त हो गया। यह युद्ध सन् १८२१ में हुआ।

—राजपूताने का इतिहास गहलोत दि० भा० पृ० ८५—८८

पृ० २६ गीत ५८, पृ० ८८ गीत ५९ महाराव रामसिंघ हाडा—बूंदी का हाडावंशीय शासक महाराव रामसिंह। वह बूंदी के महाराव विष्णुसिंह का उत्तराधिकारी एक आखेट-प्रिय शासक था। कविराजा सूर्यमल्ल से रामसिंह ने प्रसिद्ध इतिहास-ग्रंथ वंशभास्कर लिखवाया था।

पृ० ८९ गीत ६० कवर दौलतसिंघ हाडा—कुंवर दौलतसिंह हाडा देवीसिंह हाडा का पुत्र था। दौलतसिंह हाडौती के ठिकानों में किस ठिकाने का कुंवर था कोटा तथा बूंदी के प्रकाशित इतिहास ग्रंथों में कोई स्पष्ट वृत्तान्त नहीं मिला। गीत में उसकी आखेटप्रियता का वर्णन है। संभवतः वह राजगढ़ के मोहनसिंहोत हाडा के वंशधर देवीसिंह का पुत्र था। देवीसिंह महाराव किशोरसिंह दूसरे के पक्ष में रह कर जालिमसिंह झाला के विरुद्ध सन् १८२१ ई० में मांगरोल में लड़े गए युद्ध में घायल हुआ था।

पृ० ९१ गीत ६१ अखा हींगोल बाहड़मेरा—अक्षयराज, राठौड़ों की बाड़मेरा शाखा का योद्धा था। बाड़मेर में राठौड़ों की महेचा शाखा का राज्य था। इसलिए महेचा शाखा वाले राठौड़ों को बाड़मेरा भी कहते हैं। यह जातीय सम्बोधन इस शाखा वालों का बाड-मेर भूभाग पर शासन रहने के कारण प्रचलित हुआ। गीतनायक के विषय में अन्य जान-कारी प्राप्त नहीं हुई।

पृ० ९२ गीत ६२ राजा केसरीसिंघ सेखावत खण्डेला—शेखावाटी प्रदेश के खण्डेला राज्य का स्वतंत्र शासक राजा केशरीसिंह शेखावत। वह बादशाह शाहजहाँ के मनसबदार राजा वैरीसिंह का पौत्र और राजा बहादुरसिंह का पुत्र था। राजा केशरीसिंह अपने पिता के निधन पर संवत् १७४० फाल्गुन कृष्णा ८ के दिन खण्डेला की गद्दी पर बैठा था। राजा केशरीसिंह ने शाही मामला (राज्य कर) नहीं दिया और स्वतंत्र भाव से राज्य करने लगा। इससे रुष्ट होकर बादशाह औरंगजेब ने अजमेर के सूबेदार सैयद अब्दुला खां को खण्डेला पर आक्रमण कर केशरीसिंह को पकड़ लाने का आदेश दिया। राजा केशरीसिंह ने अपने सजातीय वीर शेखावतों को युद्ध में सहायतार्थ आमंत्रित किया। फलस्वरूप राव जगतसिंह श्यामरामोत कासली, उदयसिंह बहादुरसिंहोत (केशरीसिंह का अनुज) संग्रामसिंह वैरीसिंहोत, रतनसिंह मोहकमसिंहोत, श्यामसिंह वैरीसिंहोत खूड़ का ठाकुर, रूपसिंह जूझारसिंहोत, पृथ्वीसिंह पुरुषोत्तमसिंह, उदयसिंह भीमसिंहोत भोजराज के वंशज, कान सिंह तथा शक्तिसिंह लाडखानोत, अखमाल बृजभानोत हरीरामोत, अचलदास अमरदासोत मूंडरू का ठाकर, सुखसिंह फतहसिंह राठौड़, सुखसिंह गौड़ मारोठ का, गजसिंह अजमा-लोत गौड़ और मनोहरपुरा शाहपुरा की सेना हरीपुरा के मैदान में आ एकत्रित हुई। दोनों

पक्ष में भयानक युद्ध हुआ। किन्तु मनोहरपुर शाहपुरा और लाडखानोतों के युद्ध से हट जाने के कारण केशरीसिंह और राव जगतसिंह भयानक रूप से शत्रुओं से घिर गए। राव जगतसिंह ने शाही अफसर नूरुद्दीन को साँग से मार डाला। राजा केशरीसिंह जूझते हुए धराशायी हुए। इस युद्ध में शाही पक्ष के दो हजार सैनिक मारे गए थे। इनके साथ ही संग्रामसिंह, रतनसिंह, पृथ्वीसिंह, अचलदास, भोपालसिंह आदि रणखेत रहे। ठाकर श्यामसिंह खूड़ और मोहकमसिंह अलोदा का ठाकुर जो केशरीसिंह का काका था, घायल होकर वच रहा। यह युद्ध सं. १७५४ आसोज सुदि ११ को हुआ था।

—रायसल जससरोज, सीकर का इतिहास पृ० ५५, खण्डेला का इतिहास पृ० ८५–९४, हरीपुरे का युद्ध-लेख कुंवर देवीसिंह मंडावा संघ शक्ति जयपुर जनवरी १९६२ पृ० ३९–४१.

प० ९३ गीत ९३, पृ० ९४ गीत ९४, पृ० ९५ गीत ९५ राजा केशरीसिंघ सेखावत खण्डेला—प्रसिद्ध राजा रायसल दरबारी के पुत्र राजा गिरधरदास का चतुर्थ वंशधर राजा केशरीसिंह खण्डेला। वह संवत् १७४० में अपने पिता राजा बहादुरसिंह का उत्तराधिकारी बना। उसने सं० १७५४ आसोज शुक्ला ११ के दिन हरीपुरा रणक्षेत्र में शाही सेना से लड़ते हुए वीर गति प्राप्त की थी। पृ० ९२ गीत ९२ की टिप्पणी देखें।

पृ० ९६ गीत ९६ सुजानसिंह भोजराजोत सेखावत—राजा रायसल दरबारी के तृतीय पुत्र भोजराज के वंशज ठाकुर श्यामसिंह का पुत्र सुजानसिंह शेखावत। सुजानसिंह ने राजा बहादुरसिंह के समय में सं० १७३६ चैत्र शुक्ला ६ को औरंगजेब ने जब दरावखाँ और बहरेमद खाँ को खण्डेले पर आक्रमण करने के लिए भेजा तब सुजानसिंह मारवाड़ से विवाह कर के लौट रहा था। उसे खण्डेला के युद्ध की मार्ग में आते समय सूचना मिली। वह अपने गांव न जाकर सीधा खण्डेला पहुँचा और अपने साठ आदमियों सहित शाही सेना से लड़ता हुआ धराशायी हुआ। खण्डेला से उदयपुर जाने वाले मार्ग पर उसकी नव-विवाहिता पत्नी, जो सती हुई थी, पर एक स्मारक है। सुजानसिंह छापोली का ठाकुर था।

—खण्डेला का इतिहास पृ० ८२, संघ शक्ति, जयपुर जनवरी १९६२ का अंक

पृ० ९७ गीत ९७ सुजाणसिंघ नै भवानीसिंघ सेखावत—शेखावतों की भोजराजोत शाखा का ठाकुर सुजानसिंह छापोली और राजा रायसल के छोटे पुत्र हरिराम का वंशज भवानीसिंह शेखावत। सुजानसिंह और भवानीसिंह ने चैत्र कृष्णा ६ विक्रमी संवत् १७३६ में खण्डेला के मोहनदेवजी के मन्दिर की रक्षा करते हुए औरंगजेब के सेनानायक दराव खाँ और बहरेमदखाँ से युद्ध कर वीर गति प्राप्त की। पहिले पृ० ९६ गीत ९६ की टिप्पणी देखें।

पृ० ९८ गीत ९८ मदनसिंह सीसोदिया—उदयपुर में शक्तावतों के मुख्य ठिकाने भींडर के महाराज हम्मीरसिंह का पुत्र तथा मोहकमसिंह का प्रपौत्र महाराज मदनसिंह सीसोदिया। गीत में मदनसिंह की तलवार के आतंक का किसी समसामयिक कवि ने वर्णन किया है।

—राजपूताने का इतिहास चतुर्थ खण्ड ओझा पृ० १२२२

पृ० ९९ गीत ९९ रावराजा लछमणसिंघ सेखावत सीकर—शेखावाटी प्रदेश के सीकर

राज्य का शासक राव-राजा लक्ष्मणसिंह शेखावत। वह राव देवीसिंह का पुत्र था। वह अपने पिता के निधन के बाद सं० १८५२ विक्रमाब्द में सीकर की राजगद्दी पर बैठा। लक्ष्मण-सिंह ने जोधपुर के महाराजा मानसिंह और जयपुर के महाराजा सवाई जगतसिंह के मध्य लड़े गए गींगोली के युद्ध में जयपुर की ओर से भाग लिया था। इस युद्ध में राजा अभयसिंह खेतड़ी, ठाकुर श्यामसिंह शेखावत बिसाऊ और शेखावाटी के अन्य ठिकानों के दस हजार योद्धाओं ने युद्ध में भाग लिया था। तदनन्तर लक्ष्मणसिंह ने खण्डेला पर आक्रमण कर अपने अधिकार में कर लिया था। वह स्थापत्य कलाज्ञाता, विद्यानुरागी, दानी और वीर शासक था। उसने अपने राज्यकाल में चारणों को ४५ ग्राम दान किए थे।

—माधव वंश प्रकाश, सीकर का इतिहास, पृ० १०२-११२

पृ० १०० गीत ७० रावत संभूसिंह गोगावत दूणी—जयपुर राज्य के दूणी ठिकाने का स्वामी राव शंभूसिंह गोगावत कछवाहा। वह राव प्रेमसिंह का पुत्र था। शंभूसिंह महा-राजा सवाई माधवसिंह प्रथम का समकालीन था। राव शंभूसिंह का पुत्र राव चांदसिंह जयपुर का दीवान रहा।

—राजपूताने का इतिहास गहलोत तृतीय भाग पृ० २०३

पृ० १०२ गीत ७१ चतरा रामावत राठौड़—रामसिंह राठौड़ का वंशज चतुरसिंह राठौड़। चतुरसिंह के ठिकाने तथा जीवन सम्बन्धी कोई उल्लेख प्राप्त नहीं हुआ और न गौड़ावाटी तथा चौरासी के ठिकानों के वृत्तान्त में चतुरसिंह के विषय में जानकारी मिली। संभवतः वह महाराजा अजितसिंह के शैशवकाल में राठौड़ दुर्गादास, जगरामसिंह उदावत, सोनंग चांपावत और मोहकमसिंह मेड़तिया आदि द्वारा किये गए युद्धों में अजितसिंह के पक्ष में शाही अफसर इनायत खां, नूरअली तथा महमूद अली के साथ के मेड़ता के युद्धों में लड़ा हो।

पृ० १०३ गीत ७२ मोहकमसिंघ राठौड़—मोहकमसिंह राठौड़ को गीत में जोधावत आलेखित किया है। उसके पिता एवं जागीरादि का परिचय अनुपलब्ध है। मोहकमसिंह ने अजमेर मेरवाड़ा के दस्यु-कर्मी गूजरों के पशुधन का हरण कर उनकी डाकेजनी बन्द करवा दी थी।

पृ० १०४ गीत ७३ बीजा राठौड़—सबलसिंह का पुत्र विजयसिंह राठौड़। वह महा-राजा अजितसिंह राठौड़ के बाल्यकाल के समय में राठौड़ों द्वारा किए गए विखें' में सम्मि-लित रहा और शाही मनसब स्वीकार नहीं किया, जब कि मोहकमसिंह और आनन्दसिंह मेड़तिया तथा सुजानसिंह जूनियां (अजमेर मेरवाड़ा) के स्वामियों ने शाही मनसब स्वीकार कर महाराजा का साथ छोड़ दिया था। सबलसिंह की जागीरादि का पता नहीं लगा। उसने सं० १७३० वि० में महाराजा के पक्ष में सोजत, पीपाड़ और बीलाड़ा में लड़ाइयां लड़ीं। वह राठौड़ों की चांपावत शाखा का योद्धा था।

—अजीत विलास पृ० ७९

पृ० १०५ गीत ७४ हठीसिंघ जोगावत राठौड़—जोगीदास राठौड़ का पुत्र हठीसिंह राठौड़। वह महाराजा अभयसिंह जोधपुर और अहमदाबाद के सूबेदार नवाब सरबुलंद खां

के मध्य लड़े गए वि०सं० १७८९ के युद्ध में मारा गया था। वह राठौड़ों की जोधा शाखा के ठिकाने खैरवा के भाइयों में था।   अजीतविलास पृ० २५२

—ऐतिहासिक रुक्के-परवाने (परम्परा त्रैमासिक पत्र) जोधपुर भाग २४
पृ० १६, मारवाड़ का इतिहास रेउ द्वि. भा. पृ. ६७०

पृ० १०७ गीत ७५ करण महेचा राठौड़—मारवाड़ के थोब ठिकाने के ठाकुर विजयसिंह का पुत्र ठाकुर करणसिंह महेचा राठौड़। करणसिंह ने महाराजा अजितसिंह राठौड़ की आज्ञा से दिल्ली जाकर नागौर के राव मोहकमसिंह इन्द्रसिंहोत को चूक कर मस्तक काट कर जोधपुर लौट आया। तब करणसिंह के साथ मोहकमसिंह अमरसिंह घवेचा पादरू तथा भाटी अमरसिंह प्रयागदासोत कीटनोद का ठाकुर भी दिल्ली गया था। मारवाड़ के इतिहास में रेउजी ने मोहकमसिंह को मारने वाला अमरसिंह भाटी को बतलाया है, किन्तु गीत और अजीत विलास में करणसिंह महेचा को माना गया है।

—अजीत विलास हस्तलिखित पृ० १०४

पृ० १०८ गीत ७६ राव जैतसिंघ सेखावत कासली—राव श्यामराम के पौत्र राव जगतसिंह का अनुज जैतसिंह शेखावत। जैतसिंह ने खण्डेला राजा केशरीसिंह और कासली के राव जगतसिंह श्यामरामोत के वैर में अब्दुल्ला खांन के सेनानायक नूरुद्दीन को युद्ध-स्थल में मार कर वैर शोधन किया।

पृ० १०९ गीत ७७ सहसमल राठौड़—करण का पुत्र सहसमल्ल राठौड़। सहसमल्ल ने युद्ध में शत्रुओं का संहार कर वीर गति प्राप्त की थी। किन्तु वह किस स्थान का निवासी था तथा कहां किस से लड़ा कोई आधार प्राप्त नहीं हुआ।

पृ० ११० गीत ७८ महाराव हनमंतसिंह सेखावत—शेखावतों के पट्ट राज्य मनोहरपुर शाहपुरा के शाही मनसबदार राव लूणकरण शेखावत का वंशज राव हनुमन्तसिंह। वह विष्णुसिंह का पुत्र था। वह महाराजा सवाई रामसिंह की नाबालगी में जयपुर की रिजेन्सी कौन्सिल का सदस्य रहा।

—रायसल जस सरोज, राजपूताने का इतिहास गहलोत
तृतीय भाग पृ. १९६

पृ० १११ गीत ७९ कुम्भा खीची—गागरौनगढ़ के गांगा खीची का पुत्र कुंभा खीची। कुंभा ने गागरौन पर मुसलमानों के आक्रमण के समय गौवन की रक्षा करते हुए प्राण विसर्जित किए थे। उसके वृत्तान्त के सम्बन्ध में कोई आधार उपलब्ध नहीं हुआ।

पृ० ११२ गीत ८० ठाकर मुकन्दसिंह सेखावत घींगपुर—शेखावाटी के दांतारामगढ़ परगने के घींगपुर ठिकाने का ठाकुर मुकुन्दसिंह। वह शेखावतों की लाडखानोत शाखा के ठाकुर हम्मीरसिंह का पुत्र था। उसने जयपुर राज्य की सेना के घींगपुर पर आक्रमण करने पर साहसपूर्वक उसका सामना किया था। गीत में उसकी युद्ध-वीरता का समकालीन कवि ने वर्णन किया है। परन्तु वह युद्ध किस संवत् में तथा क्यों हुआ तथा क्या परिणाम रहा आदि इतिवृत्त नहीं मिला।

—रायसल जस सरोज

पृ० ११६ गीत ८१ पंचाइण सांगाउत चहुवांण—चौहान शाखा का पंचायण सांगावत क्षत्रिय योद्धा। पंचायण के विषय में कहीं कोई इतिवृत्त नहीं मिला। वह पन्द्रहवीं शताब्दी के दानी पुरुषों में प्रसिद्ध था। गीतकार नांदण बारहठ ने जो अकबरकालीन कवि लक्खा बारहठ का पिता तथा अवतार चरित्र के लेखक नरहरिदास बारहठ का प्रपितामह था, उसकी दानवीरता का वर्णन किया है।

पृ० ११७ गीत ८२ परबत मदाउत रांदा—मदा का पुत्र पर्वत रांदा राजपूत योद्धा। पर्वत ने किस युद्ध में विजय प्राप्त की, इसका ख्यातों आदि इतिहास स्रोतों में कहीं कोई प्रमाण नहीं मिला।

पृ० ११८ गीत ८३ महाराव हणूतसिंघ सेखावत—कछवाहा वंश की शेखावत शाखा के प्रधान राज्य मनोहरपुर शाहपुरा का शासक महाराव हनुमंतसिंह शेखावत। मनोहरपुर शाहपुरा के शासक राव लूणकर्ण, राव मनोहर, राव तिलकचंद, राव रायचंद और राव शक्तिसिंह शाही मनसबदार थे और शाही सेवा में रह कर युद्धों में भाग लेते रहे थे। राव हनुवंतसिंह राव विशनसिंह का पुत्र था। वह महाराजा सवाई रामसिंह जयपुर का समकालीन था।

पृ० ११९ गीत ८४ ठाकुर सवाईसिंह चांपावत पोकरण—चांपावतों के प्रमुख ठिकाने पोकरण के ठाकुर सबलसिंह का पुत्र ठाकुर सवाईसिंह चांपावत। जोधपुर के महाराजा विजयसिंह राठोड़ ने इसके दादा ठाकुर देवीसिंह और पिता सबलसिंह को छलपूर्वक बंदी बनवा कर मरवा दिया था। सवाईसिंह जब वयस्क हुआ तब उसने जोधपुर के महाराजा भीमसिंह की मृत्युपरांत उत्पन्न पुत्र धौकलसिंह का पक्ष ग्रहण कर महाराजा मानसिंह को राज्यच्युत करने का प्रबल प्रयत्न किया और मारवाड़ के सरदारों, शेखावाटी के राजा अभयसिंह खेतड़ी, रावराजा लक्ष्मणसिंह सीकर, ठाकुर नवलसिंह दांता और महाराजा सवाई जगतसिंह जयपुर को अपने पक्ष में लेकर जोधपुर पर आक्रमण किया। परबतसर के पास गींगोली स्थान पर मानसिंह को पराजित होकर जोधपुर के किले की शरण पकड़ने को बाध्य होना पड़ा। फिर महाराजा मानसिंह ने टोंक वालों के पूर्वज अमीरखां जो उस समय डाकेजनी और छल-युद्धों में प्रसिद्ध था से मित्रता स्थापित कर नागौर के पास मूंडवा स्थान पर सवाईसिंह को सं १८८५ चैत्र सुदि २ को शिविरों में बारूद बिछवा कर मरवा डाला। उसके साथ ठाकुर बख्शीराम चंडावल, ठाकुर ज्ञानसिंह पाली, ठाकुर केशरीसिंह बगड़ी, थे अपने एक हजार सैनिकों सहित मारे गए थे।

वह महान् योद्धा, राजनीतिज्ञ और संगठनकर्त्ता सरदार था। महाराजा मानसिंह जिसने सवाईसिंह को मरवाया था ने सवाईसिंह की मृत्यु पर खिन्न चित्त हो निम्न दोहा कह कर श्रद्धांजलि अर्पित की—

> मुरधर करगो मोड़की, धर पर पड़तां धींग।
> सरगां लेगो सेवरो, सेर सवाई सींग॥

—मारवाड़ का इतिहास रेउ द्वि. भाग पृ. ४१२-४१३
संघ शक्ति मासिक वर्ष ३ अंक १२ पृ. १५-१६ दिसम्बर १९६२ ई.

पृ० १२० गीत ८५ ठाकुर हणूंतसिंघ सेखावत बिसाऊ—शेखावाटी के भोजराजोत प्रशाखा के शेखावतों के ठिकाने बिसाऊ का ठाकुर हनुमन्तसिंह शेखावत। वह ठाकुर केशरी-सिंह का पुत्र था। हनुमन्तसिंह ने महाराजा सवाई माधवसिंह प्रथम जयपुर और भरतपुर के महाराजा जवाहरमल्ल के मध्य तंवरावाटी के मावंडा मंडोली के स्थान पर १४ दिसम्बर १६६७ के युद्ध में वीरता प्रदर्शित की। इस युद्ध में भरतपुर नरेश के छत्र, चंवर आदि राज-चिह्न छीन लिए थे। तदनन्तर महराव प्रतापसिंह नरूका अलवर के विरुद्ध महाराजा सवाई प्रतापसिंह जयपुर के आक्रमण में ठाकुर हनुमन्तसिंह अपने भाई सूरजमल्ल, विजय-सिंह नवलसिंहोत शेखावत, राजा अभयसिंह शेखावत खेतड़ी तथा राव देवीसिंह सीकर सहित सम्मिलित हुआ था। गीत में मावंडा मंडोली स्थान के युद्ध का वर्णन है।

—राजपूताने का इतिहास गहलोत तृतीय भाग पृ. १६६
महाराजा प्रतापसिंघ जयपुर री निसांणी

पृ० १२२ गीत ८६ महाराव श्रीनाथसिंघ सेखावत मनोहरपुर—शेखावतों के मनोहर-पुर शाहपुरा राज्य का शासक महाराव श्री नाथसिंह (नाथूसिंह) शेखावत। वह महाराव जसवंतसिंह का पुत्र था। श्री नाथसिंह के समय में आमेर और शाहपुरा के पारस्परिक युद्ध हुआ, जिसमें शाहपुरा की विजय का गीत में संकेत किया गया है। यह युद्ध किस समय लड़ा गया कोई आधार नहीं मिला।—राजपूताने का इतिहास गहलोत तृतीय भाग पृ. १६६

पृ० १२३ गीत ८७ ठाकर नौलसिंघ सेखावत—शेखावाटी में झुंझनूं का स्वामी ठाकुर नवलसिंह शेखावत। नवलसिंह ठाकुर शार्दूलसिंह का चतुर्थ पुत्र था। उसने सं० १७९४ में रोहली ग्राम को अपने नाम पर नवलगढ़ का स्वरूप देकर लोगों को बसाने के लिए आमं-त्रित किया और झुंझनूं से बदल कर अपनी राजधानी का मुख्यावास बनाया। उसने शेखा-वाटी प्रदेश पर मित्रसेन अहीर के नेतृत्व में मुगलसेना के आक्रमण करने पर मांढण के रणक्षेत्र में अपने सजातीय वारों के साथ उसका सामना किया जिसमें उसका पुत्र लालसिंह मारा गया और बिसाऊ का ठाकुर सूरजमल घायल होकर बच रहा। यह युद्ध सं० १७७५ में हुआ था। ईस्वी सन् १७७८ में बादशाह शाह आलम ने इसे राजा की पदवी प्रदान कर अपना तीन हजारी मनसबदार बनाया था। वह १७८० ई० में अस्वस्थ हो कर स्वर्ग गया।

—खेतड़ी का इतिहास पृ. ४१, राजपूताने का इतिहास, गहलोत
तृतीय भाग पृ० १९१; शेखावाटी प्रकाश एकादशअध्याय
पृ० ७

पृ० १२५ गीत ८८ राजा रायसल सेखावत खण्डेला—शेखावाटी के अमरसर संस्थान के राव सूर्यमल्ल के द्वितीय पुत्र राजा रायसल शेखावत खण्डेला का शासक। राजा रायसल को पैतृक अधिकार में लाम्बा ग्राम मिला था किन्तु उसने बादशाह अकबर के दरबार में पहुँच कर शेखावाटी के रेवासा, खण्डेला आदि परगने प्राप्त किए। वह अकबर के शाही महल का प्रबन्धक रहा। उसने भटनेर के युद्ध, गुजरात की अकबर की चढाइयों और जहांगीर के साथ मेवाड़ के युद्धों में भाग लिया था। जहांगीर को दिल्ली की गद्दी पर बैठाने वालों में यह और राजा मानसिंह का भाई माधवसिंह अजबगढ़ भानगढ़ का शासक प्रमुख

व्यक्ति थे। खण्डेला पर वि० सं० १६३५ में निर्वाण क्षत्रिय शासक राव लखू भोजावत तथा भीमा हेमावत से छीन कर अपना आधिपत्य स्थापित किया। रायसल का दीवान शाह गोत्र का देवीदास नामक नीतिज्ञ व्यक्ति था। जिसने राजनीति के १२० कवित्त व्रज भाषा में रचे हैं। रायसल का सं० १६७५ में दक्षिण में स्वर्गवास हुआ।

—खेतड़ी का इतिहास पृ २८, मुगल दरबार भाग १ पृ० ३५१-३५२, निरवाणां री पीढियां, माधव वंश प्रकाश

पृ० १२६ गीत ८९ राजा रायसल शेखावत खण्डेला—खण्डेला का शासक राजा रायसल शेखावत दरबारी। राजा रायसल ने बादशाह अकबर के गुजरात के सुलतान मुजफ्फरशाह के विरुद्ध लड़े गए अहमदाबाद के युद्ध में बादशाह पर आक्रमण करने वाले अमीर मुहम्मद पर प्रहार कर बादशाह की प्राण-रक्षा की थी। यह युद्ध सं० १६३० विक्रमी में हुआ था। बादशाह अकबर ने रायसल को राजा की पदवी और रेवासा कासली के परगने प्रदान कर सम्मानित किया था। गीत में अमीर मुहम्मद को मारने का वर्णन है।

—केसरीसिंह समर पृ० २०-२४, शोध पत्रिका त्रैमासिक उदयपुर पृ० ३-४ भाग १० अंक १-२ सितम्बर दिसम्बर १९५८

पृ० १२७ गीत ९० राव सिवसिंघ सेखावत सीकर—शेखावत शाखा के राव तिरमल के वंशज राव दौलतसिंह का पुत्र राव शिवसिंह शखावत। राव शिवसिंह सं० १७७८ में सीकर की गद्दी पर आसीन हुआ और सं० १७८१ में सीकर के चारों ओर शहर पनाह बनवा कर नगर का स्वरूप प्रदान किया। तब बादशाह मुहम्मदशाह का सेनापति जानिसारखाँ सीकर को ध्वस्त करने के लिए चढ आया। किन्तु महाराजा सवाई जयसिंह जयपुर के कारण युद्ध टल गया। तदनन्तर राव शिवसिंह ने सं० १७८७ चैत्र कृष्ण १३ को फतहपुर पर आक्रमण कर कायमखानियों से फतहपुर छीन लिया। इस युद्ध में ठाकुर गुमानसिंह खाचरियावास, ठाकुर रूपसिंह खूड़, ठाकुर शार्दूलसिंह झुंझुनूं, ठाकुर सल्हदीसिंह खोरोड़, भावसिंह बीदावत आदि ने बड़ी वीरता दिखाई। उस समय फतहपुर का नबाब कामयाबखां था।

राव शिवसिंह सवाई जयसिंह जयपुर नरेश का विश्वस्त सहयोगी सामन्त था। उसने अभयसिंह के विरुद्ध जोधपुर के घेरे, राजाधिराज बख्तसिंह नागौर के विरुद्ध गगवाना के युद्ध और महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह के राजमहल तथा बगरू के युद्धों आदि में सदैव भाग लिया। और सं० १८०५ में बगरू के युद्ध में घायल होकर वीर गति को प्राप्त हुआ।

—सीकर का इतिहास पृ० ५९-७९, माधव वंश प्रकाश, रायसल जस सरोज

पृ० १२९ गीत ९१ राव देवीसिंघ सेखावत सीकर—सीकर के राव चांदसिंह का पुत्र देवीसिंह शेखावत। पहिले पृ० ६७ गीत ४७ का टिप्पण देखो।

पृ० १३० गीत ९२ राजा सिवा सीसोदिया दिखणी—मेवाड़ के सीसोदिया वंश के राणा लाखा के पुत्र सज्जा की संतति परम्परा में पूना सतारा के राजा शाहू का पुत्र छत्रपति शिवा सीसोदिया। शिवा ने बादशाह औरंगजेब की हिन्दू धर्म विरोधी नीति का विरोध

किया था। उसने बीजापुर के सुल्तान आदिलखां के सरदार अफजलखां को मार कर प्रसिद्धि प्राप्त की। तदनन्तर मुगल सूबेदार शायस्ताखां जो शिवा को दण्डित करने के लिए दक्षिण में नियुक्त हुआ था, को भी नैश्य आक्रमण कर, शिवा ने पराजित किया। तब बादशाह औरंगजेब ने उसका दमन करने के लिए जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह राठौड़ को सन् १६६१ ई० में गुजरात का सूबेदार बना कर भेजा। जसवन्तसिंह भी शिवा को दण्ड देने में विफल रहा। तब उसके स्थान पर आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह प्रथम को भेजा। जयसिंह ने शिवा के रक्षित पुरन्दर गढ़ आदि औरंगाबाद के दुर्गों पर कब्जा कर शिवा को संधि के लिए विवश कर दिया। तदनन्तर शिवा को समझा कर ससम्मान शाही दरबार में भिजवा दिया। वहाँ औरंगजेब उसको बन्दी बना कर छलपूर्वक मारने का षड्यंत्र रचने लगा, उस समय जयसिंह के राजकुमार रामसिंह ने शिवा को आगरा से निकल भागने का अवसर प्रदान कर अपने पिता द्वारा शिवा को दिए गए रक्षा-वचन का निर्वाह किया।

—मुगल दरबार भाग १, पृ० १६२, १७३, अजीत विलास

पृ० १३१ गीत ६३ राणा कुसालसिंघ स्यामसिंघोत—श्यामसिंह का पुत्र राणा पदवीधारी कुशालसिंह। कुशालसिंह की जागीर एवं वंश-परिचय का कहीं कोई प्रमाण नहीं मिला। गीत में कवि ने उसकी दानवीरता का वर्णन किया है।

पृ० १३२ गीत ६४ राव बखतसिंघ चुवांण वेदला—मेवाड़ में चौहान क्षत्रियों के वेदला ठिकाने का राव पदवीधारी बख्तसिंह प्रथम। वह राव सुलतानसिंह का पुत्र और महाराना संग्रामसिंह द्वितीय मेवाड़ का समसामयिक सामन्त था। वह बड़ा उदार और वीर प्रकृति का योद्धा था। गीत में उसकी वदान्यतादि गुणों का किसी समकालीन कवि ने बखान किया है।

—राजपूताने का इतिहास गहलोत पहला भाग पृ. ३३७ राजपूताने का इतिहास ओझा, चतुर्थ खण्ड पृ. ११८५-११८६

पृ० १३३ गीत ६५ ठाकर रतनसिंघ शेखावत कणवाई—मारवाड़ के नागौर प्रांत के कणवाई ठिकाने का ठाकुर रतनसिंह शेखावत। वह शेखावतों की लाड़खांनोत शाखा के ठाकुर फतहसिंह का पुत्र तथा अजबसिंह का पौत्र था। रतनसिंह जोधपुर के महाराजा मानसिंह राठौड़ का समकालीन था। अमीरखां पिंडारी ने कणवाई पर आक्रमण कर दो दिन तक तोपों की लड़ाई की। किन्तु वह कणवाई के धूलिकोट पर विजय नहीं पा सका। तब घेरा उठा कर चला गया। रतनसिंह जैसा वीर था वैसा ही उदार हृदय भी था। वह कवियों तथा याचकों को मुक्तहस्त से द्रव्य देकर प्रसन्न करता था। गीत में रतनसिंह के दान की प्रशंसा में यह दोहा अति प्रचलित है—

कणवाई कोटां सिरै, रावां सिरै रतन्न।
आयां रा आदर करै, जाभा करै जतन्न॥

पृ० १३४ गीत ६६ कंवर हणूंतसिंघ सेखावत खंडेला—शेखावाटी प्रदेश के रायसलोत शाखा के ठिकाने खण्डेले के राजा इन्द्रसिंह का पुत्र कुंवर हनुमन्तसिंह। खण्डेला ठिकाना में दो हिस्से थे, एक हिस्सा राजा उदयसिंह का जो बड़ा पाना कहलाता है और दूसरा भाग

राजा धीरसिंह का जो बड़ा होते हुए भी छोटा पाना कहलाता है। कुंवर हनुमन्तसिंह छोटे पाने के अधिपति इन्द्रसिंह का पुत्र था। उसने कोट सकराय के पहाड़ी दुर्ग पर सीकर के रावराजा लक्ष्मणसिंह के आक्रमण करने पर चार मास तक डट कर अनवरत तोपों का युद्ध लड़ा और दुर्ग पर शत्रु सेना का अधिकार नहीं होने दिया। अन्त में खाद्य सामग्री तथा युद्ध सामग्री न पहुँचने पर किले के किवाड़ खोल कर वह अपने साथियों सहित लड़ता हुआ मारा गया। यह युद्ध सं० १८६९ में हुआ था।

—सीकर का इतिहास पृ. १११, रायसलजस सरोज

पृ० १३५ गीत ९७ सेरसिंघ कुसलसिंघ राठौड़ रौ भेळौ—मारवाड़ के मेड़ता भूभाग के प्रसिद्ध ठिकाने रियां के ठाकुर सरदारसिंह का पुत्र ठाकुर शेरसिंह और चांपावतों के आऊवा ठिकाने के ठाकुर हरनाथसिंह का पुत्र ठाकुर कुशलसिंह चांपावत। जोधपुर के महाराजा रामसिंह और उनके काका राजाधिराज बख्तसिंह नागौर के पारस्परिक युद्धों में महाराजा रामसिंह के पक्ष का प्रमुख नेता ठाकुर शेरसिंह था और राजाधिराज के दल का नेतृत्व ठाकुर कुशलसिंह करता था। वि० सं० १८०७ में मेड़ता में दोनों पक्षों में युद्ध हुआ जिसमें दोनों पक्ष के कथित दोनों सेनानायक एक दूसरे के प्रहार से मारे गए। ठाकुर शेरसिंह के भाले से कुशलसिंह और कुशलसिंह की सांग से शेरसिंह मारा गया।

—मारवाड़ का इतिहास रेउ प्र. भा. पृ. ३५३,
मारवाड़ रा उमरावां री वारता

पृ० १३६ गीत ९८ कुसलसिंघ चांपावत आऊवा—मारवाड़ के पाली भूभाग के आउवा ठिकाने का ठाकुर कुशलसिंह चांपावत राठौड़। कुशलसिंह महाराजा अभयसिंह के प्रसिद्ध सरदारों में था। उसने अहमदाबाद में नबाब सर बुलंदखां के साथ लड़े गए अभयसिंह के युद्ध में भाग लिया था। उसके पितामह ठाकुर तेजसिंह ने महाराजा अजितसिंह के बाल्यकाल के युद्धों में अनेक स्थानों पर शाही सेना को परास्त कर अजितसिंह की मदद की थी। महाराजा रामसिंह के समय में रामसिंह की दुर्बुद्धि के कारण वह असन्तुष्ट होकर नागौर के राजाधिराज बख्तसिंह के पास चला गया और महाराजा रामसिंह और राजाधिराज बख्तसिंह के मध्य हुए मेड़ता के युद्ध में वह राजाधिराज बख्तसिंह के पक्ष का नेतृत्व करते हुए ठाकुर शेरसिंह के भाले के प्रहार से घायल होकर मारा गया था। वह युद्ध १८०७ वि० में लड़ा गया था।

मारवाड़ का इतिहास रेउ प्र. भा. पृ. ३६३, मारवाड़ रा उमरावां री वारता, अजीतविलास।

पृ० १३७ गीत ९९ हीरा मांगलिया—क्षत्रियों की मांगलिया शाखा के आनंदसिंह का पुत्र हीरासिंह। वह किस ठिकाने अथवा सरदार की सेना में था इसका कोई प्रमाण नहीं मिला। हीरा पर 'जंगलदल' के आक्रमण करने का गीत में वर्णन है। राजस्थान में जंगल अथवा जांगळू बीकानेर भूभाग का प्राचीन नाम है। इसलिए सम्भवतया हीरा ने बीकानेर के शासकों के साथ की किसी लड़ाई में जूझते हुए वीरगति प्राप्त की होगी।

पृ० १३८ गीत १०० राजा फतैसिंघ खीची—चौहान क्षत्रियों की खीची शाखा के

राजा गजसिंह का पुत्र राजा फतहसिंह खीची। वह नृसिंहगढ राज्य का शासक था। फतहसिंह ने मरहठों के नृसिंहगढ पर आक्रमण करने पर उसने युद्ध किया था। खीचियों के इतिहास खीची 'इतिहास संग्रह' (कुंवर माधोसिंह खीची कृत) में इस युद्ध की कोई जानकारी नहीं दी गई है कि यह कब और किस मरहठे सेनानायक से लड़ा गया था।

पृ० १३९ गीत १०१ धीरतसिंघ खीचीं—लालसिंह खीची का पुत्र धीरतसिंह खीची। धीरतसिंह ने शत्रुओं के आक्रमण करने पर अपने साथियों के रण त्याग कर भागने पर भी उनसे लोहा बजाया। वह खीची धारू का वंशधर था। किन्तु खीचियों की ख्यात तथा इतिहास में धीरतसिंह के स्थान, युद्ध स्थान एवं विपक्षियों आदि के सम्बन्ध में कोई संकेत नही मिला।

पृ० १४१ गीत १०१ बखतसिंघ करणोत राठौड़—राठौड़ों की करणोत शाखा का योद्धा बख्तसिंह। वह राठौड़ दुर्गादास के वंशज अभयकरण के वेटे केशरीसिंह का पुत्र था। गीतनायक ने गीत में वर्णित वीरता किस स्थान के युद्ध में दिखाई थी कोई प्रमाण नहीं मिला। संभवतः वह जयपुर के नटवाड़ा तथा स्योड़ा ठिकाना वालों के पूर्वजों में था। गीतकार वीरभान रतनू 'राजरूपक' ऐतिहासिक काव्य का रचयिता है। अतः गीतनायक राजाधिराज बख्तसिंह नागौर का समसामयिक हो सकता है।

पृ० १४२ गीत १०३ चांपावत ठाकुर कुसलसिंघ मेड़तिया सेरसिंघ—आऊवा का ठाकुर कुशलसिंह चांपावत और रियाँ का ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया। ये दोनों वीर मेड़ता के युद्ध में एक दूसरे के प्रहार से मारे गए थे। पहले पृ० १३५ गीत ९७ की टिप्पणी देखो।

पृ० १४४ गीत १०४ सेरसिंघ मेड़तिया रियां—रियां ठिकाने का ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया। वह मेड़तियों की माधोदासोत उपशाखा में था। शेरसिंह महाराजा रामसिंह जोधपुर की ओर से मेड़ता के युद्ध में राजाधिराज बख्तसिंह नागौर के पक्षधर ठाकुर कुशलसिंह चांपावत को मार कर मारा गया था।

—पहिले पृ० १३५ गीत ९७ का टिप्पण देखो

पृ० १४५ गीत १०५ पृ० १४६ गीत १०६ पातसाह अकबर साह—मुगल सम्राट् जलालुद्दीन अकबर। गीतकार, बादशाह अकबर का समकालीन चारण दुरसा आढा है। दुरसा आढा ने महाराणा प्रतापसिंह मेवाड़, महाराजा मानसिंह आमेर, महाराना अमरसिंह उदयपुर आदि पर गीत लिखे थे। गीत में अकबर की युद्ध-विजयों एवं प्रताप का वर्णन किया है।

पृ० १४७ गीत १०७ मानसिंघ सकतावत—महाराना उदयसिंह मेवाड़ के पुत्र शक्तिसिंह का पोत्र तथा भाणा का पुत्र मानसिंह शक्तावत सीसोदिया। वह महाराना अमरसिंह के पुत्र शाही मनसबदार राजा भीमसिंह सीसोदिया का घनिष्ठ मित्र तथा सजातीय योद्धा था। बादशाह जहांगीर के विरुद्ध उसके पुत्र शाहजादे खुर्रम ने जब बगावत की तो उसको दंड देने के लिए शाहजादे पर्वेज, मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा, राजा गजसिंह राठौड़ प्रभृति सेनानायकों के नेतृत्व में एक सेना भेजी गई थी। उस सेना के साथ हाजीपुर पट्टन में सं० १६७१ में घमासान युद्ध हुआ। उस युद्ध के विरोधी पक्ष का नेतृत्व राजा भीमसिंह ने

सम्हाला था। युद्ध से पूर्व जौनपुर के मुकाम पर राजा भीमसिंह ने अपने सामंतों को युद्धार्थ कवच तथा घोड़े दिए तब एक जिरहबख्तर मानसिंह के लिए रक्खा तब उसके उपस्थित सरदारों ने कहा-वह तो यहां से बहुत दूर मेवाड़ में बैठा है, उसके आने का क्या भरोसा है। तब राजा भीमसिंह ने कहा कि वह मेरा मित्र है और युद्ध का ऐसा शुभ अवसर वह कभी नहीं छोड़ेगा। अन्ततोगत्वा वह मेवाड़ से प्रस्थान कर युद्धस्थल पर उपयुक्त समय पर पहुंचा और उसके लिए रखी हुई जिरह धारण कर भीमसिंह के साथ अपूर्व शौर्य प्रदर्शित कर जूझ मरा।

—वीर विनोद द्वि० भाग पृ० २८५-२८६

पृ० १४८ गीत १०८ राव सिवसिंघ सेखावत सीकर—शेखावाटी में शेखावतों के सीकर राज्य का स्वामी शिवसिंह शेखावत। वह राव दौलतसिंह का पुत्र था। जयपुर-नरेश महाराजा सवाई जयसिंह की ओर से उसने अनेक युद्धों में भाग लेकर वीरता दिखाई। इसने कायमखांनियों से फतहपुर छीन कर अपने राज्य में मिलाया। विशेष देखें पृ० १२७ गीत ९० की टिप्पणी।

पृ० १४९ गीत १०९ अमरसिंघ सलेदीसिंघोत—शेखावाटी में उदयपुर के शासक भोजराज शेखावत के वंशज ठाकुर शार्दूलसिंह का छोटा भाई सल्हदीसिंह था। सल्हदीसिंह के वंशजों में गीतनायक अमरसिंह हुआ। अमरसिंह के अधिकार में हरियाना प्रांत का १२ ग्रामों का बहल नामक ठिकाना था। अमरसिंह ने बादशाही सेनानायक नवाब नजबकुलीखां से युद्ध लड़ा था। यह युद्ध विक्रमी सं० १८३५ के आसपास लड़ा गया था। गीतनायक के संबंध में अन्य वृत्तांत प्राप्त नही होता।

पृ० १५० गीत ११० स्यामसिंघ सेखावत बिसाऊ—शेखावाटी के बिसाऊ ठिकाने का ठाकुर श्यामसिंह शेखावत। वह ठाकुर सूरजमल का पुत्र था। सूरजमल तुंगा के युद्ध में जयपुर की ओर से लड़ते हुए सं० १७८८ ई० में मारा गया था। श्यामसिंह की प्रारम्भ में जयपुर राज्य से काफी समय तक अनबन रही। किन्तु फिर महाराजा सवाई जयसिंह तृतीय के शासनकाल में वह जयपुर का पक्षधर बन गया। उसने अपनी सेना को यूरोपियन ढंग से शिक्षित किया था। वह अंग्रेजों का प्रबल विरोधी रहा।

—राजपूताने का इतिहास गहलोत तृतीय भाग पृ० १९६

पृ० १५१ गीत १११ डूंगरसिंघ जंवारसिंघ सेखावत—शेखावाटी के सीकर राज्य के ठिकाने पाटोदा का ठाकुर जवाहरसिंह शेखावत और उसका काका डूंगरसिंह शेखावत। ठाकुर जवाहरसिंह राव शिवसिंह के पुत्र राजकुमार कीर्तिसिंह के पौत्र दलेलसिंह का पुत्र था। सीकर राज्य से इनकी भूमि के मामले को लेकर अनबन हो गई थी। अंग्रेजी सरकार ने सीकर का पक्ष लिया तब ये विद्रोही बन गए और धनाढ्य सेठों तथा राजकीय कोषों को लूट कर गरीबों को बांट देते थे। इन्होंने सीकर के रामगढ नगर को घेर कर वहाँ के सेठ गुरुसहायमल से बीस हजार की राशि प्राप्त कर घेरा उठाया। तब अंग्रेज सरकार ने मेजर फारेस्टर के अधिनायकत्व में 'शेखावाटी ब्रिगेड' नामक एक सेना का गठन कर शेखावाटी तथा चूरू आदि पड़ोसी इलाकों में नियुक्त की। इस पर ठाकुर जवाहरसिंह,

डूंगरसिंह और ठाकुर भोपालसिंह ने एक जबरदस्त सैनिक संगठन गठित किया। इनकी देखा-देखी खीरोड़, मोहनवाड़ी, खडब तथा देवता ग्रामों के सल्हदीसिंहोत शेखावतों का भी ठाकुर सम्पतसिंह के मार्ग-दर्शन में एक दल तैयार हुआ। डूंगरसिंह जवाहरसिंह ने मेजर फारेस्टर के शिविर पर धावा मार कर उसके ऊंट तथा घोड़े छीन लिए। इससे मेजर फारेस्टर की बड़ी अपकीर्त्ति हुई तब उसकी सहायता के लिए नसीराबाद से कर्नल खां के सेनानायकत्व में सेना भेजी गई। सीकर के सिंहरावट दुर्ग पर जवाहरसिंह ने मुकन्दसिंह, हुक्मसिंह खवास-वालों का सहयोग प्राप्त कर एक माह तक लड़ता रहा। फिर किला खाली कर अंग्रेज शासित अजमेर मेरवाड़ा के ग्रामों पर छापे मार कर लूटने लगे। दैववशात् एक दिन डूंगरसिंह अजमेर के समीपस्थ झड़वासा ग्राम के गौड़ क्षत्रियों के वहाँ ठहरे हुए थे। गौड़ों ने अंग्रेजों से मिल कर छलपूर्वक डूंगरसिंह को शराब पिला कर सं० १८४५ ई० में पकड़वा दिया। अंग्रेज सरकार ने डूंगरसिंह को बंदी बना कर आगरा के किले में भेज दिया। तब ठाकुर जवाहरसिंह ने भोपालसिंह, मानसिंह लाडखानी, बरड़वा चिमनसिंह खवासवाल, लोटिया जाट और करणिया मीणा को साथ लेकर सं० १९०३ वि० के शीतकाल में आगरा दुर्ग पर आक्रमण कर अनेक बंदियों सहित डूंगरसिंह को निकाल कर ले गए। और डूंगरसिंह को गिरफ्तार करने का बदला लेने के लिए नसीराबाद की सैनिक छावनी पर आक्रमण कर वहाँ के कोष से ५२ हजार रुपए तथा युद्ध-सामग्री लूट ली। तब कर्नल खां, मेजर फारेस्टर सीकर की सेना, जोधपुर की सेना और बीकानेर की सेना ने इनका पीछा किया। बीकानेर राज्य के घड़सीसर ग्राम में दोनों पक्षों में भयानक मुकाबला हुआ। तदनन्तर ठाकुर जवाहरसिंह सेना के घेरे को चीर कर निकल गया और बीकानेर महाराजा रतनसिंह के पास चला गया और फिर जीवनपर्यन्त बीकानेर नरेश के पास ही रहा। डूंगरसिंह जैसल-मेर के इलाके में जा घुसा। अंग्रेजों तथा जोधपुर की सेना ने पीछा करते हुए जैसलमेर राज्य के गिरादड़े ग्राम में डूंगरसिंह को घेर लिया। वहां दिन भर बंदूकों की लड़ाई होती रही। अन्त में लेड़ी तथा नीम्बी के ठाकुरों के समझाने पर डूंगरसिंह ने जोधपुर की सेना के सामने सं० १९०४ वि० को ससम्मान आत्मसमर्पण कर दिया। डूंगरसिंह महाराजा तख्तसिंह जोधपुर की निगरानी में जोधपुर में ही मरा।

—सीकर का इतिहास पृ. १२०, रायसल जस सरोज, संयुक्त राजस्थान,
अगस्त १९५७ का अंक पृ० २२-२८, डूंगजी जंवारजी री पड़

पृ० १५३ गीत ११२ डूंगरसिंघ जंवारसिंघ सेखावत—सीकर राज्य के भाइयों के ठिकाने पाटोदा का ठाकुर जवाहरसिंह और उसका काका ठाकुर डूंगरसिंह। इन काका भतीजों ने अंग्रेजों का विरोध कर नसीराबाद की छावनी पर आक्रमण कर सरकारी खजाना तथा सैनिक सामान लूट लिया था। गीतों में जवाहरसिंह, डूंगरसिंह और भोपाल-सिंह के अंग्रेजों से लड़ने का समकालीन कवि शंकरदान सामोर ने वर्णन किया है।

पृ० १५४ गीत ११३ विसनसिंघ राठौड़—मेड़तियों के गूलर ठिकाने का ठाकुर विशन-सिंह मेड़तिया। वह ठाकुर बख्तावरसिंह का पुत्र था। विशनसिंह ने १८५७ के स्वातंत्र्य युद्ध में अंग्रेजों का सशस्त्र विरोध किया था। महाराजा तख्तसिंह ने सं० १९१४ वि० में गूलर पर सेना भेज कर वहाँ पर अपना अधिकार कर लिया। तब ठाकुर विशनसिंह ने नागौर

परगने के रोल ग्राम पर आक्रमण कर लूट लिया। और ठाकुर कुशालसिंह आऊवा के पास जाकर विद्रोह का नेतृत्व किया। जब अंग्रेजों ने पीछा किया तब वह बीकानेर की ओर चला गया।

—मारवाड़ के ठिकानेदारों की वंशावली

पृ० १५५ गीत ११४ ठाकर रूपसिंघ राठौड़—रूपसिंह मारवाड़ के नागौर प्रांत के कर्मसोत राठौड़ के खींवसर ठिकाने के भाई बेटों में था। वह नाहरसिंह का पुत्र और अक्षयसिंह का वंशधर था। गीतनायक ने ढूंढाड़ (जयपुर) के विरुद्ध किस स्थान पर लड़ कर वीरगति प्राप्त की ख्यातों आदि में कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिला।

पृ० १५७ गीत ११५ महाराजा भीमसिंघ राठौड़—जोधपुर के महाराजा विजयसिंह के द्वितीय पुत्र भोमसिंह के पुत्र और महाराजा विजयसिंह के उत्ताराधिकारी महाराजा भीमसिंह जोधपुर। भीमसिंह वि० सं० १८५० की आषाढ सुदि १२ को जोधपुर के सिंहासन पर बैठे। इनके चाचा जालिमसिंह, चचेरे भाई मानसिंह और महाराजा भीमसिंह के राज्य के लिए परस्पर लड़ाइयां होती रहीं। मानसिंह ने जालोर पर अधिकार कर और पाली कस्बे को लूट कर अराजकता फैलाई तब जालोर को घेर कर मानसिंह को तंग किया। महाराजा ने सं० १८५९ में मरहठों से सांभर तथा परबतसर के परगने छुड़वा कर अपना अधिकार स्थापित किया। सं० १८६० कार्तिक सुदि ४ को इनका देहांत हो गया। गीतों में इनके हाथियों की लड़ाई का वर्णन है।

—मारवाड़ का इतिहास रेउ प्र. भा. पृ० ३९६-३९९

पृ० १५८ गीत ११६ ठाकुर सादूळसिंघ सेखावत झुंझुनूं—शेखावाटी के झुंझुनूं राज्य का स्वामी ठाकुर शार्दूलसिंह भोजराजोत शेखावत। वह ठाकुर जगरामसिंह का पुत्र था। उसने वि० सं० १७८७ में कायमखांनी नवाब रुहेलाखां से झुंझनूं छीन लिया। तदनन्तर बड़वासी के नवाब मानुल्लाखां कायमखांनी का दमन कर उससे बड़वासी छीन ली। शार्दूलसिंह ने अपने शेखावत बंधु राव शिवसिंह सीकर, ठाकुर गुमानीसिंह लाडखांनी रामगढ़ (खाचरियावास वालों के पूर्वज) ठाकुर रूपसिंह खूड़ तथा ठा० सल्हदीसिंह खीरोड़ का सहयोग प्राप्त कर नरहड़, सुल्ताना आदि कायमखांनियों के ठिकानों पर भी अधिकार कर लिया। बारवा के अपने चचेरे भाई सुखसिंह के वैर-शोधन में शार्दूलसिंह ने शेखावाटी में कायमखांनियों की सत्ता को सदैव के लिए दबा कर अस्तित्वहीन बना दिया। शार्दूलसिंह ने महाराजा सवाई जयसिंह और राजाधिराज बख्तसिंह नागौर के मध्य अजमेर के गगवाना स्थान के युद्ध में जयपुर का पक्ष लेकर भाग लिया था। फतहपुर पर राव शिवसिंह का अधिकार करवाने में भी उसने पूर्ण सहयोग दिया था।

—खेतड़ी का इतिहास पृ० ३५-४२, शे वाटी प्रकाश
दशम अध्याय पृ० १२

पृ० १५९ गीत ११७ राजाधिराज बखतसिंघ नागौर—मारवाड़ के नागौर प्रांत का स्वतंत्र शासक राजाधिराज बख्तसिंह राठौड़। वह जोधपुर के महाराजा अजितसिंह का द्वितीय पुत्र था। बख्तसिंह बड़ा साहसी, महान् योद्धा, नीतिज्ञ, न्यायप्रिय और विद्वान्

शासक था। उसने अपने ज्येष्ठ बंधु महाराजा अभयसिंह के साथ अहमदाबाद के युद्ध में भाग लिया था। गगवाना (अजमेर के पास का एक ग्राम) के युद्ध में उसने जयपुर के प्रतापी महाराजा सवाई जयसिंह से जबरदस्त मुकाबिला किया था। तब महाराजा सवाई जयसिंह की सेना में महाराजा सांवतसिंह किशनगढ, राजा उम्मेदसिंह शाहपुरा, राजा सूरजमल जाट भरतपुर, राव शिवसिंह सीकर, राजा गोपालसिंह करौली, ठाकुर शार्दूलसिंह झूंझनूं, राजा इन्द्रसिंह गौड़ शिवपुर और रामपुरा का राजा आदि २२ शासक योद्धा मय अपनी अपनी सेना के साथ थे। बख्तसिंह ने अपनी नागौर की पांच हजार सेना से जयपुर की विशाल सेना पर आक्रमण कर महाराजा सवाई जयसिंह को विस्मित कर दिया था। युद्ध में उसके पास केवल ६० सैनिक शेष बचे थे, जिन्हें लेकर वह नागौर चला गया। महाराजा अभयसिंह की मृत्यु के बाद उसने अपने भतीजे महाराजा रामसिंह से अनवरत एक वर्ष युद्ध लड़ कर जोधपुर छीन लिया। वह राजस्थान में मरहठा आक्रांताओं की सैनिक लूट-खसोट को समाप्त करने के लिए राजस्थानी शासकों का एक सैनिक संगठन बनाना चाहता था। किन्तु उसी प्रयत्नकाल में सं० १८०९ वि० में सींघोली स्थान पर कालकवलित हो गया।

—मारवाड़ का इतिहास रेउ प्र. भाग पृ. ३६८
अजीतविलास

पृ० १६० गीत ११८ महाराजा अभैसिंघ राठौड़—जोधपुर के महाराजा अजितसिंह का ज्येष्ठ पुत्र और उत्तराधिकारी महाराजा अभयसिंह राठौड़। वह राजकुमार अवस्था में बादशाह फर्रुखसियर और मुहम्मदशाह से कई बार सम्मानित हुआ। मुहम्मदशाह ने सं० १७८७ में अभयसिंह को गुजरात का राज्यपाल नियत किया। किन्तु तब वहां के राज्यपाल नवाब सर बुलंदखां ने अभयसिंह के पक्ष में वह पद नहीं छोड़ा और लड़ने के लिए उद्यत हो गया। अभयसिंह अपने भाई राजाधिराज बख्तसिंह नागौर और मारवाड़ की राठौड़-वाहिनी को लेकर अहमदाबाद पहुँचा। दोनों पक्षों में दो दिन तक घमासान युद्ध हुआ। अन्त में सरबुलंदखां पस्त हिम्मत होकर गुजरात से निकल कर प्रतापगढ़ के महारावत प्रतापसिंह सीसोदिया के पास कुछ दिन रह कर आगरा चला गया।

महाराजा अभयसिंह के अहमदाबाद के इस युद्ध पर कविया करणीदान ने सूरजप्रकास और बिड़दसिणगार, वीरभान रतनू ने राजरूपक, बखता खिड़िया ने अहमदाबाद रा जुद्ध रा कवित्त आदि काव्य ग्रंथ लिखे हैं। गीत में अहमदाबाद के युद्ध का वर्णन है।

—अजीतविलास मारवाड़ का इतिहास रेउ प्र. भाग पृ० ३३८-३४०

—राजस्थानी वातां भा. ७ पृ.

पृ० १६१ गीत ११९ ठाकुर शिवनाथसिंह मेड़तिया—सूरजमल का पुत्र ठाकुर शिवनाथसिंह मेड़तिया। वह मेड़तियों की रघुनाथसिंहोत शाखा का व्यक्ति था। मारवाड़ में मेड़तियों के अधिकार में मारोठ प्रांत था। शिवनाथसिंह महाराजा सवाई जगतसिंह जयपुर का समकालीन था। किन्तु प्राप्त आधार स्रोतों से शिवनाथसिंह के ठिकाने आदि की जानकारी नहीं मिली। रघुनाथसिंहोत मेड़तियों के मींडा, कुचामन, मीठड़ी, पांचवा, पांचोत

नीमोद आदि प्रमुख ठिकाने थे।

—ठिकाना कुचामन की ख्यात

पृ० १६३ गीत १२० महाराजा अभयसिंघ राठौड़—बादशाह औरंगजेब के प्रबल विरोधी महाराजा जसवंतसिंह राठौड़ का पौत्र और महाराजा अजितसिंह का जेष्ठ पुत्र महाराजा अभयसिंह राठौड़। अभयसिंह को बादशाह मुहम्मदशाह ने सं० १७८७ वि० में गुजरात का राज्यपाल बना कर वहां के विद्रोही राज्यपाल नबाव सरबुलंदखां के विरुद्ध भेजा था। अभयसिंह ने अपने छोटे भाई राजाधिराज बख्तसिंह नागौर और मारवाड़ के जागीरदार सामंतों की प्रबल सेना लेकर सरबुलंदखां पर आक्रमण कर उसे समझौता करने के लिए विवश कर दिया था। तदनुपरांत वह अहमदाबाद छोड़ कर चला गया।

—कूंपावतों का इतिहास पृ. ३८२-३८५

पृ० १६५ गीत १२१ कचरा जसराजोत सलखावत—मारवाड़ के राव तीड़ा के छोटे पुत्र राव सलखा राठौड़ का वंशज कचरा। राव सलखा ने महेवे का कुछ भाग मुसलमानों से छीन कर भिरड़ कोट में अपनी राजधानी स्थापित कर राज्य किया। सलखा के वंश में अखा (अक्षयराज) हुआ। उसका पुत्र जसराज और जसराज का पुत्र गीतनायक कचरा राठौड़ था। कचरा ने मुसलमानों की सेना का संहार कर युद्ध में वीरगति प्राप्त की। किन्तु गीत से यह स्पष्ट नहीं होता कि उसने किस स्थान पर वह युद्ध लड़ा था।

—मारवाड़ का इतिहास रेउ प्र. भा. पृ० ५३

पृ० १६६ गीत १२२ राजा राजसिंघ गौड़—राजगढ (अजमेर मेरवाड़ा) ठिकाने का शासक राजा राजसिंह गौड़। वह राजा विट्ठलदास गौड़ के द्वितीय पुत्र अर्जुन गौड़ का जेष्ठ पुत्र तथा उत्तराधिकारी था। महाराजा जसवंतसिंह के देहावसान पर जब औरंगजेब ने मारवाड़ पर कब्जा कर लिया तब राठौड़ दुर्गादास वगैरह ने औरंगजेब के विरुद्ध जबरदस्त विद्रोह किया था। उस समय दुर्गादास ने राजगढ़ पर आक्रमण कर वहां से द्रव्य लूटा था। गीत में राजसिंह की वीरता का वर्णन हुआ है।

—विन्हैरासो (गौड़ों की वंशावली) पृ० २१८
राजा गोपालदास गौड़ री वारता

पृ० १६७ गीत १२३ जगनाथ कल्याणदासोत राठौड़—कल्याणदास राठौड़ का पुत्र जगन्नाथ राठौड़। जगन्नाथ ने जोधपुर नरेश के पक्ष में रह कर मंडोर में शाही अधिकारी सैयद की सेना से युद्ध लड़ा था। उसने भाटी क्षत्रियों के विरुद्ध भी एक युद्ध में भाग लिया था। वह मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र नरहरदास के छोटे पुत्र कल्याणदास का पुत्र था। उसके ठिकाने आदि की जानकारी नहीं मिली।

—बांकीदास पृ० २४-२५

पृ० १६८ गीत १२४ ईसरदास वीरमदेवोत राठौड़—मेड़ता के राव वीरमदेव का छोटा पुत्र और राव जयमल का भाई ईश्वरदास राठौड़। ईश्वरदास ने महाराना उदयसिंह और बादशाह अकबर के सं० १६२४ वि० के चित्तौड़ के युद्ध में अपने बड़े भाई राव जयमल के साथ रह कर महाराना उदयसिंह के पक्ष में चित्तौड़ दुर्ग की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त की थी। गीत में ईश्वरदास द्वारा चित्तौड़ पर अकबर से लड़ कर मारे जाने का वर्णन है।

पृ० १६६ गीत १२५ राजसिंघ विसनदासोत राठौड़—बिशनदास का पुत्र राजसिंह [illegible] राठौड़। राजसिंह ने सम्भवतः महाराजा अजीतसिंह के बाल्यकाल के 'विखे' में राठौड़ दुर्गादास आदि के साथ दक्षिण के किसी युद्ध में भाग लिया था। वह उस युद्ध में घायल होकर बच गया था। मारवाड़ के इतिहास में उसके विषय में कहीं कोई वृत्तांत नहीं मिला। मारवाड़ में विशनदासोत राठौड़ों का प्रमुख ठिकाना बोरूंदा था। किन्तु वह बोरूंदा वालों में था अथवा कोई भिन्न कहा नहीं जा सकता।

पृ० १७० गीत १२६ भगवानदास उदावत राठौड़—जोधपुर के मोटे राजा उदयसिंह का तृतीय पुत्र भगवानदास राठौड़। भगवानदास बुन्देलों के हाथ से मारा गया था। उसका वैर शोधन करने के लिए राठौड़ गोयंददास, राठौड़ राघोदास तथा नरहरदास आदि ने मिल कर राव दलपत बुंदेला को संवत १६६७ के पौष मास में मारा था।

—बांकीदास पृ० २३, २४, २५

पृ० १७१ गीत १२७ राजा मानसिंघ भगवंतदासोत कछवाहा—आमेर के राजा भगवन्तदास का पुत्र मिर्जा राजा मानसिंह कछवाहा वह सं० १६१६ वि० में अपने पिता के साथ [illegible] बादशाह अकबर के दरबार में आगरा गया तदनुपरान्त सन् १५७२ ई० में बादशाह की ओर से शेरखां फौलादी को दण्डित करने के लिए भेजा गया। सरनाल तथा गुजरात के युद्धों में योग दिया। सन् १५७५ ई० में डूंगरपुर आदि के राजाओं से इन्होंने शाही अधीनता स्वीकार कराई। महाराना प्रतापसिंह के विरुद्ध की मेवाड़ की चढ़ाइयों तथा हल्दीघाट के प्रसिद्ध युद्ध का मानसिंह ने राजा लूणकरण शेखावत, राजा खंगार तथा राजा [illegible] के साथ नेतृत्व ग्रहण कर प्रतापसिंह को पराजित किया। बिहार, बंगाल, काबुल और आसाम प्रान्त को विजित कर शाही अधीनता में लिया। वह बादशाह अकबर के हिन्दू [illegible] में प्रमुख था। बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल में उसका ऐसा वैभव था कि जिसकी बराबर कोई समकालीन शासक नहीं कर सकता था। उस के भाट (राव कवि) [illegible] सौ हाथी थे। राजा मानसिंह सात हजारी जात मनसबदार था। यह मनसब उसके पूर्व किसी भी हिन्दू तथा मुसलमान शासक को नहीं मिला था। गीत में राजा मानसिंह द्वारा अकबर के राज्य को बढ़ाने का वर्णन है।

—मुगल दरबार भाग १ पृ० २६१–३०१

पृ० १७२ गीत १२८ वांकीदास करमसिंघोत राठौड़—जोधपुर के राव जोधा के नवें पुत्र [illegible] ठाकुर। वांकीदास करमसिंहोत राठौड़ वह मोहनसिंह का पुत्र था। वांकीदास [illegible] १७७८ वि० में जयपुर के [illegible] नरेश सवाई जयसिंह के विरुद्ध [illegible] स्थान के [illegible] की ओर से भाग लिया था। वह [illegible] के पांच हजार [illegible] में था। [illegible] ठिकाने आदि की [illegible] करमसिंहोतों (करमसोतों) के [illegible] था।

[illegible]

सवाई जयसिंह जयपुर और राजाधिराज बख्तसिंह के मध्य गगवाना स्थान के युद्ध में जैतसिंह राजाधिराज बख्तसिंह की सेना में था। युद्ध की स्थिति बख्तसिंह के विरुद्ध होते देखकर वह भी उसके साथ युद्धस्थल से निकल कर नागौर चला गया। वह युद्ध सं० १७९८ में लड़ा गया था।

पृ० १७४ गीत १३० सिवदानसिंह सबळसिंघोत राठौड़—सबलसिंह का पुत्र तथा भारमल का वंशज शिवदानसिंह राठौड़। वह अजमेर के समीपस्थ गगवाना स्थान के युद्ध में राजाधिराज बख्तसिंह नागौर की सेना में था। वह युद्ध जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह से सं० १७९८ वि० में हुआ था। शिवदानसिंह युद्ध में घायल होकर जीवित बच रहा था।

पृ० १७५ गीत १३१ संगरामसिंघ ऊदावत राठौड़—सबलसिंह का पुत्र संग्रामसिंह राठौड़। वह नागौर के राजाधिराज बख्तसिंह का सामन्त था। राजाधिराज बख्तसिंह और महाराजा सवाई जयसिंह कछवाहा जयपुर के मध्य लड़े गए संवत १७९८ के गगवाना स्थान के युद्ध में नागौर की सेना में रह कर लड़ा था और युद्ध में घावों से पूरित होकर वीरगति को प्राप्त हुआ।

पृ० १७७ गीत १३२ रावत जसवंतसिंह चूंडावत देवगढ़—मेवाड़ के देवगढ़ ठिकाने के रावत संग्रामसिंह का पुत्र तथा उत्तराधिकारी रावत जसवंतसिंह चूंडावत। महाराना संग्रामसिंह द्वितीय ने जयपुर की गद्दी पर अपने भानजे महाराजा माधवसिंह प्रथम को बिठाने के लिए महाराजा ईश्वरीसिंह के विरुद्ध सेना भेजी, उसमें जसवंतसिंह को भी भेजा गया था। महाराना जगतसिंह और महाराजकुमार प्रतापसिंह मेवाड़ के आपसी विग्रह में वह महाराना का पक्षधर रहा। प्रतापसिंह द्वितीय के महाराना बनने पर उसने महाराज नाथसिंह के सहयोग से उसे अपदस्थ करना चाहा। महाराना अरिसिंह के समय में उसके प्रतिद्वन्द्वी रतनसिंह का पक्ष ग्रहण कर अरिसिंह को अधिकारच्युत करने का उद्योग करता रहा। सं० १८२४ वि० के उज्जैन में महादा सिंधिया से लड़े गए महाराना अरिसिंह की सेना के युद्ध में वह महाराना के विपक्ष में रहा और जयपुर से पन्द्रह हजार नगाओं की सेना भेज कर मेवाड़ की विजय को पराजय में परिवर्तित कर दिया।

जसवंतसिंह ने फ्रांसिसी समरू को मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिए भेजा। वह आजीवन महाराना अरिसिंह के विपक्ष में रतनसिंह का सहयोगी बना रहा।

—राजपूताने का इतिहास ओझा चतुर्थ खण्ड पृ० १२००–१२०१.

पृ० १७८ गीत १३३ सेरसिंह बीका राठोड़—शिवसिंह (शिवदानसिंह) का पुत्र शेरसिंह। वह राठौड़ों की बीका शाखा का योद्धा था। उसके पितामह का नाम भीमसिंह था। शेरसिंह बीकानेर के बीका राठौड़ों के प्रमुख ठिकाने महाजन का ठाकुर था।

—बीकानेर राज्य का इतिहास ओझा द्वि भा. पृ. ६४५

पृ० १७९ गीत १३४ राजाधिराज बखतसिंघ नागौर—जोधपुर के महाराजा अजितसिंह का छोटा पुत्र और महाराजा अभयसिंह का अनुज राजाधिराज बख्तसिंह। वह नागौर का अधिपति था। महाराजा अभयसिंह के देहावसान के बाद वह अपने भतीजे रामसिंह से सं० १८०८ वि० में जोधपुर का राज्य छीन कर मारवाड़ का राजा बन बैठा। सं०

१८०६ में किशनगढ के सरहदी ग्राम सिंघोली में उसका देहांत हो गया।

—मारवाड़ का इतिहास रेउ प्र. भाग पृ० ३६६-३६६

पृ० १८० गीत १३५, १८१ गीत १३६ राजाधिराज बखतसिंघ नागौर—जोधपुर के महाराजा अजितसिंह का छोटा पुत्र राजाधिराज बख्तसिंह नागौर।

—पहिले पृ० १७६ गीत १३४ की टिप्पणी देखें

पृ० १८३ गीत १३७ ठाकर सेरसिंघ चौहाण संखवास—नागौर प्रांत के चौहानों के ठिकाने संखवास के ठाकुर शंभूदानसिंह का पुत्र शेरसिंह। वह महाराजा विजयसिंह और उनके पौत्र महाराजा भीमसिंह का समकालीन योद्धा था। महाराजा विजयसिंह ने अपने पौत्र भीमसिंह को वि० सं० १८५० वैशाख मास में पकड़वाने के लिए शेख पठान के नेतृत्व में बीस हजार सेना भेजी। उधर भीमसिंह के साथी शेरसिंह, ठा० सवाईसिंह पोकरण, ठा० जगरामसिंह कूंपावत, शिवचंद भंडारी आदि दो हजार सैनिक योद्धाओं ने झंवर स्थान पर सामना किया। दिन भर घमासान युद्ध हुआ। रात्रि को भीमसिंह को लेकर ठाकुर सवाई-सिंह जालौर की तरफ चला गया। तब महाराजा विजयसिंह ने युद्ध बंद करने की आज्ञा दी। महाराजकुमार भीमसिंह के पक्ष के योद्धाओं में सूरजमल मेड़तिया कुचामन, हरिसिंह कूंपावत चंडावल, दानसिंह सेवरिया और रूपसिंह नौखा आदि वीर मारे गए। शेरसिंह अपने भाई धीरसिंह सहित घायल हुआ था।

—कीरत प्रकास सांदू चैनकरण कृत, मारवाड़ का इतिहास
रेउ प्र. भा. ३६१-३६२, द्वि भा. पृ० ६७५

पृ० १८४ गीत १३८ कंवर सेरसिंघ संखवास—चौहानों के संखवास ठिकाने का कुं० शेरसिंह। वह ठाकुर शंभूदानसिंह का पुत्र था। उसने भंवर महाराजकुमार(पहले और बाद में) महाराजा भीमसिंह के पक्ष में सं० १८५० के झंवर स्थान के युद्ध, नागौर के हिलोड़ी स्थान के युद्ध और भीनमाल के युद्धों में वीरता दिखाई थी। शेरसिंह ने सं० १८४८ के मेड़ता के प्रसिद्ध युद्ध में भी महाराजा विजयसिंह की ओर से भाग लिया था। महाराजा भीमसिंह ने शेरसिंह को संखवास के अतिरिक्त बिलाड़े का कापरड़ा ग्राम प्रदान कर सम्मानित किया था।

—कीरतप्रकास

पृ० १८५ गीत १३९ कंवर धीरतसिंघ चौहाण संखवास—नागौर प्रदेश के चौहानों के संखवास ठिकाने के ठाकुर शिवदास का पुत्र कुंवर धीरतसिंह चौहान। इनके संखवास से पूर्व मारवाड़ का सांचोर प्रांत पट्टे में था। धीरतसिंह ने अपने चचेरे बड़े भाई शेरसिंह के साथ सं० १८५० के झंवर के युद्ध में महाराजकुमार भीमसिंह के पक्ष में महाराजा विजयसिंह की सेना से युद्ध लड़ा था। गीत में झंवर स्थान के युद्ध का वर्णन है।

— कीरत प्रकास, मारवाड़ का इतिहास रेउ प्र. भा. पृ० ३६१-३६२

पृ० १८६ गीत १४० ठाकर दूलहसिंघ अजीतसिंघोत—मेवाड़ के आसींद ठिकाने के ठा० अजितसिंह का पुत्र रावत दूलहसिंह चूंडावत। दूलहसिंह ने महाराणा की आज्ञा से मेवाड़ के प्रधान सोमदास गांधी के पुत्र शाह सतीदास को कैद किया। तदनन्तर दूलहसिंह को

महाराजकुमार अमरसिंह ने रावत की उपाधि और आसींद का ठिकाना प्रदान किया। वि० सं० १८७४ में महाराजकुमार अमरसिंह ने नवाब दिलेरखां के मेवाड़ पर आक्रमण करने पर जो युद्ध किया था उसमें दूलहसिंह मेवाड़ के पक्ष में लड़ा था। गीत में रावत दूलहसिंह की सिंह की शिकार का वर्णन है।

—राजपूताने का इतिहास ओझा चतुर्थ खण्ड पृ० १२३४-१२३५

पृ० १८६ गीत १४१ महाराव बुधसिंह हाडा—बूंदी के हाडा नरेश अनिरुद्धसिंह का पुत्र तथा उत्तराधिकारी महारावराजा बुधसिंह हाडा। औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके शाहजादे मुअज्जम और आजम के बीच राजसिंहासन के लिए धौलपुर के पास जाजव के मैदान में वि० सं० १७६४ में युद्ध हुआ। उस युद्ध में महारावराजा बुधसिंह मुअज्जम के पक्ष में लड़ा। आजम अपने पुत्र बेदारबख्श सहित युद्ध में मारा गया और मुअज्जम विजयी हुआ। उसने बुधसिंह का बड़ा सम्मान किया। बुधसिंह का पहला विवाह जयपुर नरेश सवाई जयसिंह की बहिन के साथ और दूसरा मेवाड़ के बेगू ठिकाने के रावत देवीसिंह के वहां हुआ था। बुधसिंह की कछवाही रानी से न बनने के कारण सवाई जयसिंह ने उससे बूंदी छीन कर करवाड़ के कुंवर दलेलसिंह को देदी। तब बुधसिंह विक्षिप्त चित्त हो अपने ससुराल बेगू चला गया। अन्त में बारह वर्ष बेगू में रहने के बाद बुधसिंह का बाघपुरा ग्राम में देहांत हो गया।

—राजपूताने का इतिहास ओझा पृ. १२०४, राजस्थानी वीरगीत संग्रह भाग १
टिप्पणी पृ० २६

पृ० १६० गीत १४१ राजाधिराज बखतसिंघ नागोर—जोधपुर के महाराजा अजितसिंह का छोटा पुत्र राजाधिराज बख्तसिंह नागोर। बख्तसिंह को उसके बड़े भाई महाराजा अभयसिंह ने राजाधिराज की उपाधि और नागौर का राज्य प्रदान किया था। बख्तसिंह वीर और साहसी योद्धा था।

—पहले टिप्पणी पृ० १७६ गीत १३४ देखें

पृ० १६३ गीत १४३ महाराजा राजसिंघ राठौड़—राजस्थान में राठौड़ों के किशनगढ राज्य का स्वामी महाराजा राजसिंह राठौड़। वह महाराजा रूपसिंह का पौत्र और महाराजा मानसिंह का पुत्र था। इसका जन्म सं० १७३१ में हुआ था। औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली की राजगद्दी के लिए जब उसके शाहजादों में युद्ध हुआ तब राजसिंह मुअज्जम के पक्ष में लड़ा था। मुअज्जम की मृत्यु के बाद जब उसके चारों बेटों में युद्ध हुआ वह शाहजादे अजीमुश्शान के पक्ष में लड़ा। किन्तु जब वह रावी नदी में डूब कर मर गया तब वह भी निराश होकर घर लौट गया। राजसिंह विद्वानों का आश्रयदाता और स्वयं उच्च श्रेणी का विद्वान् था। उसने बाहुविलास और रस पाय नामक व्रज भाषा में दो काव्य-ग्रंथ रचे थे। बाहुविलास में श्रीकृष्ण रुक्मणी के विवाह का वर्णन है। व्रज भाषा में जैसा वीर रस का वर्णन राजसिंह ने किया है वह अद्वितीय है। महाकवि वृन्द इनके आश्रित कवि थे। सं० १८०५ में स्वर्गवासी हुआ।

—राजस्थान का पिंगल साहित्य डॉ० मेनारिया पृ० १२७-१२६

पृ० १६४ ठाकर जोधसिंघ नाथावत चौमू—चौमू ठिकाने के ठाकुर मोहनसिंह का पुत्र

ठाकुर जोधसिंह नाथावत कछवाहा। वह महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह जयपुर का सामन्त था। जोधसिंह ने मरहठों के विरुद्ध ईश्वरीसिंह की सहायता की थी। राजमहल, के युद्ध में उसने महाराजा ईश्वरीसिंह के पक्ष में भाग लिया था। सन् १ ५८ ई० में महाराजा माधवसिंह जोधसिंह को रणथंभोर के प्रसिद्ध दुर्ग का किलेदार नियत किया था। वह सन् १७५९ में अपने पुत्र रामसिंह सहित रणथंभोर दुर्ग की रक्षा करते हुए काकोड़ की रणभूमि में काम आया।

—राजपूताने का इतिहास गहलोत तृतीय भाग पृ० २०४

पृ० १९७ गीत १४५ महाराणी अतरंगदे कछवाही जोधपुर—जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह राठोड़ प्रथम की महारानी अतरंगदे। वह शेखावाटी के स्वतंत्र राज्य खण्डेला के राजा वैरीसिंह (वरसिंहदेव) की राजकुमारी थी। इनका वि० सं० १६९१ भाद्र पद वदि तृतीया को जन्म हुआ था और सं० १७०६ जेष्ठ शुक्ला ८ को महाराजा जसवंतसिंह के साथ खण्डेला में पाणिग्रहण हुआ था। महाराजा जसवंतसिंह के राजकुमार पृथ्वीसिंह का जन्म इन्हीं महारानी के उदर से हुआ था। पृथ्वीसिंह से छोटी राजकुमारी रतनकुंमारी थी। महारानी अतरंगदेवी का पीहर का नाम जहांनकुमारी था। जहांनकुमारी ने संवत् १७२० वि० में जोधपुर के पूर्व में जानसागर नामक तालाब का निर्माण करवा अपने पुत्र राजकुमार पृथ्वीसिंह सहित तुलादान कर ब्राह्मणों, चारणों, रावों और मंदिरों की भेंट में लाखों रुपये व्यय किये थे। तालाब की प्रतिष्ठा के अवसर पर महाराजा जसवंतसिंह, उनके सरदार और राजमाताओं तथा अन्य महारानियों को भी दावतें पहरावनी तथा भेंट तथा सीखें देकर सम्मानित की थी।

—अजीतविलास, ठिकाना दांता का प्राचीन रिकार्डस्

पृ० १९८ गीत १४६ रांणी अतरंगदे कछवाही—शेखावाटी के खण्डेला राज्य के शाही मनसबदार राजा वैरीसिंह शेखावत की राजकुमारी और महाराजा जसवंतसिंह राठोड़ प्रथम की महारानी अतरगदे कछवाही। पहिले पृ० १९७ गीत १४५ की टिप्पणी देखो।

पृ० १९९ गीत १४७ ठाकर सावंतसिंघ चत्रभुजोत बगरू—जयपुर के चत्रभुजोत शाखा के कछवाहों के बगरू ठिकाने के ठाकुर सूरसिंह द्वितीय का पुत्र तथा उत्तराधिकारी अधिराज सांवतसिंह द्वितीय। सांवतसिंह के पूर्वजों में पदमसिंह आगरा के पास के युद्ध में मारा गया था। [illegible] महाराजा माधवसिंह प्रथम के समय रणथंभोर के युद्ध में काम आया था। गीत में सावंतसिंह के पराक्रम का वर्णन किया गया है।

—राजपूताने का इतिहास गहलोत तृतीय भाग पृ० २०५

पृ० २०० गीत १४८ रघुनाथसिंघ मेड़तिया मारोठ—मारवाड़ के मारोठ परगना का [illegible] मेड़तिया राठोड़। वह मारवाड़ के राव जोधा के नवें पुत्र राव दूदा [illegible] ठाकुर [illegible] ग्राम के ठाकुर का द्वितीय पुत्र था। रघु-[illegible] (जयपुर राज्य) में [illegible] चत्रभुजोत कछवाहों के यहां [illegible] सं० १६८६ में दिल्ली गया और शाहजादा औरंग-[illegible] के युद्ध में [illegible]। उस बादशाह शाहजहां की वृद्धावस्था में

उसके शाहजादों में उत्तराधिकार के लिए सं० १७१५ वि० में उज्जैन (धर्मत) तथा धौलपुर (शामूगढ) के रणक्षेत्र में युद्ध हुए तब वह औरंगजेब के पक्ष में रह कर लड़ा। औरंगजेब ने बादशाह बनने के पश्चात् सं० १७१७ वि० में रघुनाथसिंह को ११२ ग्रामों से मारोठ का परगना बख्शा। रघुनाथसिंह ने अपने ननिहाल और ससुराल (भारीजा के लाडखानियों के वहां उसका एक विवाह हुआ था) वालों की मदद प्राप्त कर मारोठ के गौड़ों से अनवरत दो वर्ष तक लड़ कर सं० १७१९ वि० में मारोठ पर अपना अधिकार स्थापित किया। फलस्वरूप रघुनाथसिंह ने खोरंडी, हुड़ील, भीलाल, घाटवा आदि ग्राम अपने परगने में से लाडखानियों को और कतिपय ग्राम चत्रभुजोत, राजावतों को दिए थे जिनमें राजावतों के अधिकार में केवल चितावा में चतुर्थांश रहा। शेष उनके अधिकार से छिन गए।

वह बादशाह औरंगजेब का आजीवन कृपापात्र रहा और उसके साथ अनवरत युद्धों में लड़ता रहा। उसका जन्म सं० १६६७ तथा मृत्यु १७४० वि० सं० में हुई थी। वह जैसा वीर था वैसा ही उदार भी था। उसने ब्राह्मणों के अतिरिक्त अणदराम चारण को लालावास में तीन हजार बीघा भूमि, प्रयागदास अलुओत को जसराणा तथा कविराजा भैरवदास रतनू को जिलिया की बावनी में चारणदास ग्रामदान किया था।

—ठिकाना कुचामन की ख्यात, रघुनाथसिंह मेड़तिया री झमाल, राजस्थान पुरालेखा विभाग बीकानेर का रेकर्डस्

पृ० २०१ गीत १४९ रांणी जसवंतदे हाडी जोधपुर—जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह राठौड़ प्रथम की पट्टरानी और बूंदी के महाराव शत्रुशाल हाडा की राजकुमारी जसवंतदे हाडी। वह बड़ी वीर प्रकृति की नारी थी। महाराजा जसवंतसिंह के निधन के बाद शिशु महाराजा अजितसिंह की रक्षा के दिल्ली के युद्ध में उसने राठौड़ दुर्गादास आदि के साथ बड़ा शौर्य दिखाया था। उसके उक्त युद्ध की प्रशंसा में राठौड़ दुर्गादास-रचित वीरगीत 'लाडी जसवंत तणी लड़ै' बड़ा प्रसिद्ध है। महारानी जसवंतदे ने जोधपुर में अपने पति की कल्याण-कामना हेतु कल्याण सागर तालाब बनवाया था जिसे आजकल रातानाडा कहते हैं। कल्याण सागर के तैयार होने पर उसने सुवर्ण तुलादान कर याचकों तथा भिक्षुओं को दान देकर यश प्राप्त किया था।

कल्याण सागर के पास ही राईका बाग नामक उद्यान बनाया जो आजकल राईका बाग राजप्रासाद के नाम से प्रसिद्ध है।

—अजीत विलास, मारवाड़ का इतिहास रेउ प्र० भाग पृ० २४४

पृ० २०३ गीत १५० महाराव प्रतापसिंघ अलवर—अलवर राज्य के संस्थापक महाराव प्रतापसिंह। वह कछवाहों की नरूका शाखा के राव मोहब्बतसिंह मांचेड़ी के जागीरदार का पुत्र था। इसका जन्म ई० सन् १७४० की ३ मई को हुआ था। वह मांचेड़ी राजगढ का स्वामी था और जयपुर नरेश महाराजा सवाई माधवसिंह प्रथम की सेवा में रहा। माधवसिंह की आज्ञा से उनियारा पर आक्रमण किया। सन् १७५९ में जब मरहठों ने रणथंभोर के दुर्ग को घेर लिया तब वह जयपुर की सेना के साथ रह कर काकोड़ के युद्ध में लड़ा और

मरहठों को पराजित किया। महाराजा माधवसिंह के पक्ष में इसने मांवंड़ा मंडोली के युद्ध में राजा जवाहरमल्ल भरतपुर को हराने में पूर्ण सहयोग दिया था। तदनन्तर सन् १७८९ ई. में भरतपुर नरेश के विरुद्ध शाही सेनापति नजफखां की सहायता की। तदनन्तर २५ जून १७७५ ई० को अलवर दुर्ग पर अधिकार कर नरूका कछवाहों के नवीन राज्य की स्थापना की। सन् १७७८ ई० में वह नजफखां से लक्ष्मणगढ़ में लड़ा। वह महाराजा सवाई प्रतापसिंह जयपुर से वसवा स्थान पर लड़ा। इस प्रकार वह कभी भरतपुर, कभी नजफखां, कभी मरहठों और कभी जयपुर का पक्ष ग्रहण करता रहा। अन्त में २६ दिसम्बर १७९० में उसका देहांत हो गया। गीत में महाराजा माधवसिंह और महाराजा जवाहरमल्ल के बीच लड़े गए युद्ध का महाराजा माधवसिंह के राजकवि हुकमीचंद खिड़िया ने वर्णन किया है।

—राजपूताने का इतिहास गहलोत तृतीय भाग पृ. २५५-२६२, प्रतापरासो पृ. ७-२७

पृ० २०५ गीत १५१ राणी जसवंतदे हाडी जोधपुर—बूंदी के महाराव शत्रुशाल की राजकुमारी और महाराजा जसवंतसिंह राठौड़ जोधपुर की महारानी जसवंतदे हाडी। पहिले पृ. २०१ गीत १४६ की टिप्पणी देखो।

पृ० २०६ गीत १५२ ठाकर सूरसिघ चत्रभुजोत बगरू—जयपुर राज्य के बगरू ठिकाने का अधिराज ठाकुर शूरसिंह चत्रभुजोत कछवाहा। वह ठाकुर बाघसिंह का पुत्र था। यह महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय के शासनकाल में पंच मुसाहब तथा अपील-कोर्ट का जज रहा। गीत में उसके आतंक और प्रभाव का वर्णन किया गया है।

—राजपूताने का इतिहास गहलोत तृतीय भाग पृ० २०५.

परिशिष्ट २

गीतछंदानुक्रमणिका